मुह़र्रमुल ह़राम ता रबीउ़स्सानी के इस्लाह़ी मौज़ूआ़त पर 18 बयानात

SUNNATON BHARE BAYANAT (HINDI)

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINA

सुन्नतों भरे बयानात

(जिल्द अव्वल)

-: पेशकश :-

मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

(शो 'बए बयानाते दा 'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

ता़लिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ॊ = ئُ	ॢ = وٗ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

मुह़र्रमुल ह़राम से रबीउ़स्सानी तक के इस्लाही़
मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल 18 बयानात

सुन्नतों भरे बयानात

(जिल्द अव्वल)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शोबए बयानाते दावते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : सुन्नतों भरे बयानात (जिल्द अव्वल)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

त़बाअ़ते अव्वल : ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1440 / अगस्त 2019

तादाद : 2100 (इक्कीस सौ)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 4 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1438 हि.   **ह़वाला नम्बर :** 216

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"सुन्नतों भरे बयानात (जिल्द अव्वल)"

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दावते इस्लामी)

27-08-2017

Email : hindibook@dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन ***अन्डर लाइन*** कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन ***अन्डर लाइन*** कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

इजमाली फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
किताब पढ़ने की निय्यतें	6	**रबीउ़ल अव्वल के बयानात**	
तआ़रुफ़े इल्मिय्या (अज़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهٗ)	7	इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा	270
		इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा	296
पहले इसे पढ़ लीजिये !	9	ह़िल्मे मुस्त़फ़ा	326
मुह़र्रमुल ह़राम के बयानात		जमाले मुस्त़फ़ा	352
सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़श्क़े रसूल	12	सख़ावते मुस्त़फ़ा	382
		रबीउ़स्सानी के बयानात	
शाने सह़ाबा	38	**अल्लाह** की मह़ब्बत कैसे ह़ासिल हो ?	411
ह़सनैने करीमैन की शानो अ़ज़्मत	65	ग़ौसे पाक की करामात	438
यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम	96	फ़रामीने ग़ौसे आज़म	470
झूट की तबाहकारियां	128	मुसलमान की पर्दापोशी की फ़ज़ीलत	496
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के बयानात		तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	526
जवानी की इ़बादत	155	मआख़िज़ो मराजेअ़	539
सीरते दाता अ़ली हजवेरी	183	अल मदीनतुल इल्मिय्या की मत़बूआ़ कुतुब	547
आला ह़ज़रत का इ़श्क़े रसूल	208		
ताज़ीमे मुस्त़फ़ा	241	याद दाश्त	...

...

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? इरशाद फ़रमाया : वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे । (شعب الایمان،۶/۳۱۹،حدیث:۸۳۲۷)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"दावते इस्लामी" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "10 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ "यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (معجم کبیر،۶/۱۸۵،حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्दो सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾3﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾4﴿ क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾5﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी **सह़ाबी** या **बुज़ुर्ग** का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ पढ़ूंगा ﴾6﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "**याद दाश्त**" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾7﴿ दूसरों को येह **किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾8﴿ ह़दीसे पाक "تَھَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी" (مؤطاامام مالک،۲/۴۰۷،حدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾9﴿ आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा ﴾10﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दावते इस्लामी**" नेकी की दावत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दावते इस्लामी** के **उ़लमाओ मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शोबे** हैं :

﴾1﴿ शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत
﴾2﴿ शोबए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शोबए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शोबए तख़रीज
﴾5﴿ शोबए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शोबए तराजिमे कुतुब[1]

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे

1.....ता दमे तह़रीर (जुमादल ऊला 1439 हि.) शोबे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबाओ अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शोबए अमीरे अहले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दावते इस्लामी (15) रसाइले दावते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम।

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे खै़रो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह पाक "**दावते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

...

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक **उ़लमा की मिसाल** ज़मीन पर ऐसी ही है जैसे आस्मान पर सितारे जिन से ख़ुश्की और तरी में रहनुमाई होती है, पस जब सितारे मिट जाएं तो क़रीब है कि राह चलने वाले भटक जाएं।" (مسند احمد، ۳۱۴/۴، حدیث: ۱۲۶۰۰)

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

नेकी की दावत देने और **बुराई से मन्अ** करने का एक मुअस्सिर तरीन ज़रीआ "**बयान**" भी है, इस तरीक़े की अ़ज़मतो शान का अन्दाज़ा इस से लगाइये कि ह़ज़राते अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने तौह़ीदो रिसालत की तब्लीग़ के लिये इसे इख़्तियार फ़रमाया और ख़ुद ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस त़रीक़ए दावत को रौनक़ बख़्शी और आप बड़े ही दिल नशीन और ह़िक्मत भरे अन्दाज़ से बयान फ़रमाते, कभी गुज़श्ता उम्मतों के ह़ालात बताते कि किस त़रह़ मोमिनों ने नजात पाई और काफ़िर हलाक हुए(1), कभी वाज़ो नसीह़त फ़रमाते(2) और कभी आयाते क़ुरआनिया पढ़ कर मोमिनों के दिलों को तक़्विय्यत पहुंचाते और अहले निफ़ाक़ को डराते।

नीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "**बयान**" की अहम्मिय्यत को भी वाज़ेह़ फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मान बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार ख़ुत़्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया : "बेशक तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं, वोह जो चाहता है पहले करता है और जो चाहता है बाद में करता है और बिलाशुबा बाज़ बयान जादू (की त़रह़ असर अंगेज़) होते हैं।"(3)

वाक़ेई अगर बयान क़ुरआनो सुन्नत, नसीह़त आमोज़ फ़रामीन और दिल आवेज़ ह़िकायात व वाक़िआत से आरास्ता और अच्छी तरतीब से पैरास्ता हो और

1...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ...الخ، باب ماجاء فی الاستماع...الخ، ۲/۲۰، حدیث:۱۱۱۱
مجموعۃ رسائل ملا علی قاری، تحفۃ الخطیب وموعظۃ الحبیب، ۱/۸۰

2...مسلم، کتاب الجمعۃ، باب ذکر الخطبتین قبل الصلاۃ...الخ، ص ۳۳۳، حدیث: ۱۹۹۵

3...مسند احمد، مسند المکیین، ۵/۳۷۷، حدیث: ۱۵۸۶۱

उस में मुबल्लिग़ का इख़्लास शामिल हो जाए तो वोह तासीर का तीर बन कर सुनने वालों के दिलों में उतर जाता है । **अल्लाह** करीम सलामत रखे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अत्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा को कि इन की शफ़्क़तों से पूरी दुन्याए दावते इस्लामी में हर शबे जुम्आ़ को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में एक ही मौज़ूअ़ पर बयान होता है जो दावते इस्लामी की मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शोबा **"बयानाते दावते इस्लामी"** तय्यार करता है और येह बयान ह़त्तल मक़्दूर मज़्कूरा औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होता है, इस में मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी आयात, अह़ादीसे त़य्यिबा, अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन, ह़िकायाते सालिह़ीन, मदनी बहारें, 12 मदनी कामों में से किसी एक मदनी काम की तरग़ीब, मौक़अ़ की मुनासबत से अश्आ़र, दावते इस्लामी के एक शोबे और मक्तबतुल मदीना की एक किताब का तआ़रुफ़ नीज़ मुख़्तलिफ़ सुन्नतें और आदाब शामिल होते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे तराजिमे कुतुब के ज़रीए ता दमे तह़रीर इन बयानात का चार ज़बानों **"हिन्दी, सिंधी, बंगला और अंग्रेज़ी"** वग़ैरा में तर्जमा करवा के मुख़्तलिफ़ ममालिक में भेजा जाता है ।

मुबल्लिग़ इस्लामी भाइयों के लिये बिल ख़ुसूस और दीगर इस्लामी भाइयों के लिये बिल उ़मूम इन बयानात को किताबी शक्ल में पेश किया जा रहा है, पहली जिल्द आप के हाथों में है । किताबी शक्ल में लाने के लिये नज़्रे सानी, कुछ तरमीम व इज़ाफ़े, तफ़्तीशे तख़्रीज, फ़ोर्मेशन, पेज सेटिंग और प्रूफ़ रीडिंग वग़ैरा का काम अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के "शोबए बयानाते दावते इस्लामी" के चार इस्लामी भाइयों ने किया, बिल ख़ुसूस : **सय्यिद इमरान अख़्तर अ़त्त़ारी मदनी, फ़रमान अ़ली अ़त्त़ारी मदनी** और अबू मुह़म्मद **मुह़म्मद इमरान इलाही अ़त्त़ारी मदनी** سَلَّمَهُمُ الْغَنِى ने ख़ूब कोशिश फ़रमाई । इस की शरई तफ़्तीश दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम : **मुफ़्ती मुह़म्मद ह़स्सान**

अ़त्तारी मदनी, मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ीक़ अ़त्तारी मदनी और **मुफ़्ती अ़ब्दुल माजिद अ़त्तारी** मदनी زِیْدَعِلْمُھُمْ ने फ़रमाई है। इस जिल्द में चार इस्लामी महीनों **"मुह़र्रमुल ह़राम, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, रबीउ़ल अव्वल और रबीउ़स्सानी"** की मुनासबत से दर्जे ज़ैल 18 बयानात शामिल हैं :

(1)...फ़ारूक़े आज़म का इश्क़े रसूल (2)...शाने सह़ाबा (3)...ह़सनैने करीमैन की शानो अ़ज़मत (4)...यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम (5)...झूट की तबाहकारियां (6)...जवानी की इ़बादत (7)...सीरते दाता अ़ली हजवेरी (8)...आला ह़ज़रत का इश्क़े रसूल (9)...ताज़ीमे मुस्त़फ़ा (10)...इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा (11)...इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा (12)...ह़िल्मे मुस्त़फ़ा (13)...जमाले मुस्त़फ़ा (14)...सख़ावते मुस्त़फ़ा (15)...**अल्लाह** की मह़ब्बत कैसे ह़ासिल हो ? (16)...ग़ौसे पाक की करामात (17)...फ़रामीने ग़ौसे आज़म (18)...मुसलमान की पर्दापोशी के फ़ज़ाइल।

आप मुबल्लिग़ हों या न हों, येह किताब हर एक के लिये यक्सां मुफ़ीद है, मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ालआ़ फ़रमाइये और नेकी की दावत आ़म करने की निय्यत से बिल ख़ुसूस अइम्मा, ख़ुत़बा और वाइ़ज़ीन को तोह़फ़तन पेश कीजिये।

शोबए बयानाते दावते इस्लामी

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

...

मौत, मोह़ताजी और बीमारी

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तुम मरने के लिये जनते हो, वीरान होने के लिये तामीर करते हो, फ़ना होने वाली (दुन्या) पर लालच करते हो और बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को छोड़े हुए हो, मगर तीन ना पसन्दीदा चीज़ें बहुत बेहतरीन हैं : (1) मौत (2) मोह़ताजी और (3) बीमारी। (الزھدلابن المبارک،باب عن النھی عن طول الامل،ص۸۸،حدیث:۲۴۲)

www.dawateislami.net

चन्द अस्माए हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल

हर विर्द के अव्वलो आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये और अल्लाह पाक की मस्लहत पर नज़र रखिये :

﴾1﴿....یَااَللّٰہُ : जो हर नमाज़ के बाद 100 बार पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का बातिन कुशादा हो जाएगा।

﴾2﴿....ھُوَ اللّٰہُ الرَّحِیْمُ : जो हर नमाज़ के बाद 7 बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

﴾3﴿....یَاقُدُّوْسُ : का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ थकन से महफ़ूज़ रहेगा।

﴾4﴿....یَارَحْمٰنُ : जो कोई सुब्ह की नमाज़ के बाद 298 बार पढ़ेगा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ उस पर बहुत रह्म करेगा।

﴾5﴿....یَارَحِیْمُ : जो कोई हर रोज़ 500 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दौलत पाएगा और मख़्लूक़ उस पर मेहरबान और शफ़ीक़ होगी।

﴾6﴿....یَامَلِکُ : 90 बार जो ग़रीबो नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ग़ुर्बत से नजात पाएगा।

﴾7﴿....یَاسَلَامُ : 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा हासिल होगी।

﴾8﴿....یَامُؤْمِنُ : जो 115 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तनदुरुस्ती पाएगा।

﴾9﴿....یَامُھَیْمِنُ : 29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर आफ़तो बला से महफ़ूज़ रहेगा।

(मदनी पंज सूरह, स. 246 ता 247)

FAROOQE AA'ZAM KA ISHQE RASOOL
(HINDI BAYAAN)

फ़ारूके आ'ज़म का इश्के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : “तुम अपनी मजलिसों को **हु़ज़ूर नबिय्ये पाक** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** पढ़ कर और **उ़मर बिन ख़त्त़ाब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **ज़िक्र** से आरास्ता करो।”(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अपनी अपनी जगह बे मिस्लो बे मिसाल हैं, सब ही आस्माने हिदायत के तारे और **अल्लाह** करीम और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब हैं, लेकिन इन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है और सब सह़ाबा में अफ़्ज़ल ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं, इन्ही ख़ुलफ़ा में से दूसरे ख़लीफ़ए राशिद, अमीरुल मोमिनीन, **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **हैं,** आप का यौमे विसाल यकुम मुह़र्रमुल ह़राम है। आइये ! इसी मुनासबत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़िन्दगी के एक रौशन पहलू **“इश्के़ रसूल”** के बारे में कुछ पढ़ने सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़मज़दा देख कर उदास हो जाते और आप की दिलजूई

(1)...تاریخ بغداد، رقم ۳۷۷۴، ابو العباس جعفر بن محمد بن بشار، ۷/ ۲۱۶

के लिये त़रह़ त़रह़ की कोशिश करते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ज़िक्रे ख़ैर से पहले **"वसाइले बख़्शिश"** से **मन्क़बते फ़ारूक़े आज़म** के कुछ अश्आ़र सुनते हैं :

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आज़म का
ख़ुदा उन का मुह़म्मद मुस्त़फ़ा फ़ारूक़े आज़म का
करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रह़मत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूक़े आज़म का
भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोह सीधे रस्ते से
करम जिस बख़्त वर पर हो गया फ़ारूक़े आज़म का
इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें प्यासी हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासित़ा फ़ारूक़े आज़म का
शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आज़म का(1)

फ़ारूक़े आज़म और सरकार की दिलजूई !

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़मगीन ह़ालत में अपने मेहमान ख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा थे । मैं आप के गुलाम के पास आया और कहा : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरे दाख़िल होने की इजाज़त मांगो ।" उस ने वापस आ कर कहा : "मैं ने बारगाहे रिसालत में आप का ज़िक्र तो किया है मगर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब इरशाद नहीं फ़रमाया ।" कुछ देर

---

(1)....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 526,527

www.dawateislami.net

बाद मैं ने फिर कहा कि "मेरी ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगो।" वोह गया और वापस आ कर कहा : "मैं ने आप का ज़िक्र किया मगर कोई जवाब नहीं मिला।" मैं कुछ कहे बिग़ैर वापस पलटा तो ग़ुलाम ने आवाज़ दी कि "आप अन्दर आ जाइये ! इजाज़त मिल गई है।" चुनान्चे, मैं अन्दर गया, आप को सलाम किया, आप एक चटाई पर टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे, जिस के निशानात आप के पहलू पर वाज़ेह नज़र आ रहे थे फिर मैं खड़े खड़े आप की दिलजूई के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَسْتَأْنِسُ يَارَسُوْلَ الله यानी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप के साथ बातें कर के आप को मानूस करना चाहता हूं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाइये कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह भी गवारा न था कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी तक्लीफ़ या ग़म में मुब्तला हों, इसी लिये आप ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मानूस करना चाहा और बिल आख़िर आप अपने इस इरादे में कामयाब भी हो गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन की बातों पर मुस्कुरा दिये।

ज़रा ग़ौर कीजिये ! एक त़रफ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह आ़लम है कि वोह आप को ग़मज़दा देख कर उदास हो जाते और आप की दिलजूई के लिये त़रह़ त़रह़ की कोशिश करते और एक हम हैं कि शबो रोज़ गुनाहों में बसर करते हुए हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकत को अज़िय्यत पहुंचाते हैं मगर हमें इस का ज़रा भी एह़सास नहीं। **याद रखिये** ! इस बात में शक नहीं कि आज भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों के तमाम अह़वाल को मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं। चुनान्चे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते

1 ...بخاری، کتاب النکاح، باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها، ۳/ ۴۵۹، حدیث: ۵۱۹۱، ملتقطًا

हैं : "मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे लिये बेहतर है तुम मुझ से बातें करते हो और मैं तुम से और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिये बेहतर, तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किये जाएंगे, जब मैं कोई भलाई देखूंगा तो ह़म्दे इलाही बजा लाऊंगा और जब बुराई देखूंगा तो तुम्हारी बख़्शिश की दुआ़ करूंगा।"(1)

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : नबी صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हर उम्मती और उस के हर अ़मल से ख़बरदार हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहें अन्धेरे, उजाले, खुली, छुपी, मौजूद व मादूम हर चीज़ को देख लेती हैं। जिस की आंख में مَازَاغ का सुरमा हो, उस की निगाह हमारे ख़्वाबो ख़याल से ज़ियादा तेज़ है, हम ख़्वाबो ख़याल में हर चीज़ को देख लेते हैं, हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निगाह से हर चीज़ का मुशाहदा कर लेते हैं। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि यहां आमाल में दिल के आमाल भी दाख़िल हैं, लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दिलों की हर कैफ़िय्यत से ख़बरदार हैं।(2)

तुम हो शहीदो बसीर और मैं गुनह पर दिलेर
खोल दो चश्मे ह़या तुम पे करोड़ों दुरूद(3)

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे प्यारे नबी (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आप को **अल्लाह** तआ़ला ने काएनात के ज़र्रे ज़र्रे पे गवाह बना कर भेजा और जहां का कोई गोशा आप से पोशीदा न रहा, आप सब कुछ देख रहे हैं और येह भी देख रहे हैं कि मैं गुनाहों पे किस क़दर जरी व दिलेर हूं, मेरी शर्मो ह़या की

1...مسند بزار، زاذان عن عبد اللہ، ۵/ ۳۰۸، حدیث: ۱۹۲۵

2....मिरआतुल मनाजीह़, 1/ 439

3....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 266

www.dawateislami.net

आंख खोल दें ताकि गुनाह करते हुए शर्मा जाऊं, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **अल्लाह** पाक करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों के तमाम अह़वाल से बा ख़बर हैं तो हमारे नेक आमाल देख कर खुश और बुरे आमाल से ग़मगीन भी होते होंगे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा नेक आमाल करें, आप की ज़ाते बा बरकत पर कसरत से दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करें, सुन्नतों पर अ़मल करें और दूसरों को भी सिखाएं ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुश हो कर रोज़े मह़्शर शफ़ाअ़त फ़रमा कर जन्नत में हमें भी अपने साथ लेते जाएं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या इलाही जब पड़े मह़्शर में शोरे दारो गीर — अम्न देने वाले प्यारे पेश्वा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से — साह़िबे कौसर शहे जूदो अ़त़ा का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब खुरशीदे ह़श्र — सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गर्मिये मह़्शर से जब भड़कें बदन — दामने मह़बूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें — ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो[2]

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का तआ़रुफ़

ख़लीफ़ए दुवुम, जा नशीने पैग़म्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की कुन्यत "**अबू ह़फ़्स**" और लक़ब "**फ़ारूक़े आज़म**" है। एक रिवायत में है आप 39 मर्दों के बाद, दुआ़ए मुस्त़फ़ा से एलाने नबुव्वत के छटे साल ईमान लाए, इसी लिये आप को "**मुतम्मिमुल अरबई़न**" यानी "**40 का अ़दद पूरा करने वाला**" कहते हैं। आप के इस्लाम क़बूल करने से मुसलमानों को बेह़द खुशी

1 ....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 952

2 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 132,133

www.dawateislami.net

हुई और उन को बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर ह़रमे मोह़तरम में अ़लानिय्या नमाज़ अदा फ़रमाई। आप इस्लामी जंगों में मुजाहदाना शान के साथ बर सरे पैकार रहे और तमाम मन्सूबा बन्दियों में शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीर की हैसिय्यत से वफ़ादार व रफ़ीक़े कार रहे। ख़लीफ़ए अव्वल, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने बाद इन्हें ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया, आप ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह कर जा नशीनिये मुस्त़फ़ा की तमाम तर ज़िम्मेदारियों को बहुत ही अच्छे अन्दाज़ से सर अन्जाम दिया, बिल आख़िर नमाज़े फ़ज्र में एक बदबख़्त ने आप पर ख़न्जर से वार किया और आप ज़ख़्मों की ताब न लाते हुए तीसरे दिन शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए। ब वक़्ते वफ़ात आप की उ़म्र शरीफ़ 63 बरस थी। ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और गौहरे नायाब, फ़ैज़ाने नबुव्वत से फ़ैज़याब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रौज़ए मुबारका में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पहलू में मदफ़ून हुए, जो सरकारे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक पहलू में आराम फ़रमा हैं।[1]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आज़म का[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...الرّیاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، ۱ / ۲۸۵، ۴۰۸، ۴۱۸، ملخصا

2 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 527

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन, भाई, बहन, औलाद और माल व जाएदाद से महृब्बत इन्सान में फ़ित्री तौ़र पर होती है। अगर कोई शख़्स अपने अहलो अ़याल और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को भुला कर इन की महृब्बत को दिल से निकाल भी दे तो उस के ईमान में कोई ख़राबी नहीं आएगी और उस का ईमान ब दस्तूर क़ाइम रहेगा, क्यूंकि इन अफ़राद को मानना, इन की महृब्बत को दिल में बसाए रखना, ईमान के लिये ज़रूरी नहीं जब कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना, आप की ताज़ीम करना, आप से महृब्बत रखना, ईमान के लिये जुज़्वे ला युन्फ़क (यानी वोह हिस्सा जो जुदा न हो सके) है, लिहाज़ा कामिल मोमिन के लिये ज़रूरी है कि उसे तमाम रिश्तों और काएनात की हर शै से बढ़ कर महृबूब तरीन सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात हो।

हर शै से महृबूब

बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : हम बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था। सय्यिदुना फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ اِلَّا مِنْ نَفْسِی "यानी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुझे मेरी जान के इलावा हर चीज़ से ज़ियादा महृबूब हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ حَتّٰی اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْكَ مِنْ نَفْسِكَ "यानी नहीं ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! (ऐ उ़मर ! तुम्हारी महृब्बत उस वक़्त तक कामिल नहीं होगी) जब तक मैं तुम्हारे नज़दीक तुम्हारी जान से भी ज़ियादा महृबूब न हो जाऊं।" सय्यिदुना फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : وَاللّٰهِ لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ "यानी या रसूलल्लाह

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप मुझे मेरी जान से भी ज़ियादा महबूब हैं।" येह सुन कर आप ने इरशाद फ़रमाया : اَلْاٰنَ يَاعُمَرُ "यानी ऐ उ़मर ! अब (तुम्हारी महब्बत कामिल हो गई)।"(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह हुक्म सिर्फ़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये ही नहीं बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले एक एक मुसलमान के लिये है, क्यूंकि कोई भी मोमिन उस वक़्त तक कामिल ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वोह हर शै से बढ़ कर प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत न करे। चुनान्चे,

ईमाने कामिल की अ़लामत

फ़रमाने मुस्तफ़ा है : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ "यानी तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।"(2)

यक़ीनन ! एक मुसलमान को प्यारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसी ही महब्बत होनी चाहिये क्यूंकि येही उस की ज़िन्दगी का सब से क़ीमती असासा है।

तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं
येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये
मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1...بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت یمین النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۴/ ۲۸۳، حدیث: ۶۶۳۲

2...بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، ۱/ ۱۷، حدیث: ۱۵

जैसे मेरे सरकार हैं ऐसा नहीं कोई

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़े रसूल के क्या कहने ! जब आप को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद आती, तो बे क़रार हो जाते और फ़िराक़े मह़बूब में गिर्या व ज़ारी करते। चुनान्चे, आप के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करते, तो रोने लगते और फ़रमाते : "प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा रह़्म दिल, यतीम के लिये वालिद और लोगों में दिली तौर पर सब से ज़ियादा बहादुर थे, आप निखरे निखरे चेहरे वाले, महकती ख़ुश्बू वाले और ह़सब के एतिबार से सब से ज़ियादा मुकर्रम थे, अल ग़रज़ अव्वलीनो आख़िरीन में आप की मिस्ल कोई नहीं।[1]

है कलामे इलाही में शम्सो दुह़ा तेरे चेहरए नूरे फ़ज़ा की क़सम
क़समे शबे तार में राज़ येह था कि ह़बीब की ज़ुल्फ़े दोता की क़सम
तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े ह़ुस्नो अदा की क़सम[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये करीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे आक़ाओ मौला हैं, हम सब आप के अदना ग़ुलाम हैं और ग़ुलाम चाहे कैसे ही आला मर्तबे पर क्यूं न पहुंच जाए मगर अपने मौला की मह़ब्बत और उस की अ़क़ीदत हमेशा उस के दिल में क़ाइम रहती है, वोह उस के एह़सानात को कभी फ़रामोश नहीं करता, हर एक के सामने फ़ख़्रिय्या अन्दाज़ में अपने आक़ा की तारीफ़ करता और उस का ग़ुलाम होने में ख़ुशी मह़सूस करता है। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी एक सच्चे

1 ...جمع الجوامع، ١٠/ ١٢، حديث: ٣٣

2 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 80

आ़शिक़े रसूल, क़त़ई जन्नती और सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में आला मर्तबे पर फ़ाइज़ सह़ाबिये रसूल हैं। आप भी मह़ब्बते रसूल में सरशार हो कर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ादिम और ग़ुलाम होने पर फ़ख्र मह़सूस करते थे। चुनान्चे,

मैं ग़ुलामे मुस्त़फ़ा हूं

मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ होने के बाद मिम्बरे रसूल पर खड़े हो कर ख़ुत़बा दिया और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी व सोह़बत के शरफ़ को इन अल्फ़ाज़ में बयान किया : اِنِّیۡ کُنۡتُ مَعَ رَسُوۡلِ اللّٰہِ فَکُنۡتُ عَبۡدَہٗ وَخَادِمَہٗ यानी मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सोह़बत याफ़्ता और आप का ग़ुलाम व ख़ादिम हूं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का येह दावा सिर्फ़ ज़बान की ह़द तक नहीं था बल्कि आप वाक़ेई सच्चे आ़शिक़े रसूल थे कि आप ने सारी ज़िन्दगी क़ुरआनो ह़दीस और सुन्नतों पर अ़मल करते हुए बसर फ़रमाई। लेकिन अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! हम इ़श्क़े रसूल का दम भरते और इस त़रह़ के दावे तो करते नज़र आते हैं कि :

जान भी मैं तो दे दूं ख़ुदा की क़सम !   कोई मांगे अगर मुस्त़फ़ा के लिये[2]

मगर हमारा किरदार इस के बर अ़क्स दिखाई देता है। याद रखिये ! मह़ब्बते रसूल सिर्फ़ इस बात का नाम नहीं कि इजतिमाए ज़िक्रो नात और जुलूसे मीलाद में बुलन्द आवाज़ से झूम झूम कर नात शरीफ़ पढ़ी जाए, हाथ उठा कर ज़ोर ज़ोर से नारे लगाए जाएं और फिर सारी रात जागने के बाद नमाज़े फ़ज्र पढ़े

1...مستدرک، کتاب العلم، خطبۃ عمر رضی اللہ عنہ بعد ماولی... الخ، ۱/۳۳۲، حدیث:۴۴۵

2....काले बिच्छू, स. 14

बिगै़र ही सो जाएं, आ़म दिनों में भी पांचों नमाजे़ं ह़त्ताकि जुम्आ़ तक न पढ़ें, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ मुन्डवाएं या एक मुठ्ठी से घटाएं, सुन्नतों को छोड़ कर नित नए फे़शन अपनाएं, हु़स्ने अख़्लाक़ के बजाए बद अख़्लाक़ी से पेश आएं तो ऐसी मह़ब्बत कामिल कैसे होगी ? जब कि ह़क़ीक़ी मह़ब्बत तो इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हु़क़ूक़ की अदाएगी में सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से मुक़द्दम रखें कि आप के लाए हुए दीन को दिलो जान से तस्लीम कर के अ़मल पैरा हों, आप की ताज़ीम बजा लाएं, हर शख़्स और हर चीज़ यानी अपनी ज़ात, औलाद, मां–बाप, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और अपने मालो अस्बाब पर आप की रिज़ा व ख़ुशनूदी को तरजीह़ दें[1] और जिस काम से आप ने मन्अ़ फ़रमाया, उस से बचने की कोशिश करते रहें, अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत उस का इरतिकाब कर बैठें, तो **अल्लाह** पाक की रह़मत से बख़्शे जाने और रोज़े मह़शर आप की शफ़ाअ़त पाने की उम्मीद रखते हुए सच्ची तौबा करें और आयिन्दा उस की त़रफ़ जाने का ख़याल भी अपने दिल में न लाएं। आइये ! सच्चे दिल से इस बात का अ़हद करते हैं कि आज के बाद हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। बल्कि आज तक जितनी नमाजे़ं क़ज़ा हुई हैं तौबा कर के उन्हें अदा भी करेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वादा ख़िलाफ़ी, धोका देही वगै़रा गुनाहों से बचते रहेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। फे़शन परस्ती को छोड़ कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास पहनेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। फ़िल्में, ड्रामे, गाने बाजे छोड़ कर सिर्फ़ मदनी चैनल देखेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।

मैं बचना चाहता हूं हाए फिर भी बच नहीं पाता
गुनाहों की पड़ी है ऐसी आ़दत या रसूलल्लाह

---

1 ...اشعۃ اللمعات، کتاب الایمان، فصل اول، ۱/ ۵۰ ملخصاً

कमर आमाले बद ने हाए ! मेरी तोड़ कर रख दी
तबाही से बचा लो जाने रह़मत या रसूलल्लाह
मेरे मुंह की सियाही से अन्धेरी रात शर्माए
मेरा चेहरा हो ताबां नूरे इ़ज़्ज़त या रसूलल्लाह
ब वक़्ते नज़्अ़ आक़ा हो न जाउं मैं कहीं बरबाद
मेरा ईमान रख लेना सलामत या रसूलल्लाह[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कामिल मह़ब्बत की अ़लामतों में से एक येह भी है कि मुह़िब यानी मह़ब्बत करने वाले को अपने मह़बूब से तअ़ल्लुक़ रखने वाली हर हर चीज़ से मह़ब्बत हो । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बते रसूल के क्या कहने ! आप न सिर्फ़ **अल्लाह** पाक के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात से मह़ब्बत फ़रमाते बल्कि आप की औलाद, अज़्वाज, अस्ह़ाब बल्कि हर वोह चीज़ जिसे आप से निस्बत हो जाती उस से भी वालिहाना अ़क़ीदत और मह़ब्बत फ़रमाते और येही ह़क़ीक़ी मह़ब्बत के तक़ाज़ों में से है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा के बे शुमार वाक़िआ़त ऐसे हैं, जिन से इसी ह़क़ीक़ी मह़ब्बत व इश्क़ का वालिहाना इज़्हार होता है। चुनान्चे,

वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया

अल्लाह पाक पारह 30, सूरतुल बलद की पहली और दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाता है :

لَاۤ اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِۙ(۱) وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِھٰذَا الْبَلَدِۙ(۲) (پ۳۰، البلد: ۱، ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे इस शहर की क़सम कि ऐ मह़बूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो ।

---

1 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 328

मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ् (इत्तिफ़ाक़) है कि इस आयते करीमा में अल्लाह पाक जिस शहर की क़सम याद फ़रमा रहा है, वोह मक्कए मुकर्रमा है। इसी आयत की तरफ़ इशारा करते हुए हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर फ़िदा हों ! बारगाहे इलाही में आप को जो फ़ज़ीलत ह़ासिल है वोह किसी और को नहीं कि अल्लाह पाक ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका की क़सम याद फ़रमाई है न कि दूसरे अम्बिया की और आप का मक़ामो मर्तबा उस के हां इतना बुलन्द है कि "لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ" के ज़रीए अल्लाह पाक ने आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से मालूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा से इस लिये मह़ब्बत फ़रमाते कि आप के मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से भी ऐसी ही मह़ब्बत फ़रमाते थे, बल्कि इस से भी ज़ियादा कि आप मदीनए मुनव्वरा में मदफ़न की दुआ़ फ़रमाया करते थे। चुनान्चे,

शहरे मदीना में शहादत की मौत

मरवी है कि आप बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِىْ شَهَادَةً فِىْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِىْ فِىْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ यानी ऐ अल्लाह पाक ! मुझे

---

1 ...شرح زرقانی علی المواهب، الفصل الخامس فی قسمہ تعالٰی... الخ، ۸/ ۴۹۳

अपनी राह में शहादत और अपने महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में मौत अ़ता फ़रमा।[1] आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दोनों दुआएं मक़्बूल व मुस्तजाब हुईं।

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। آمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूके़ आज़म का[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई किसी से महब्बत का दम भरता है तो वोह उस जैसा बनने, उस की अदाओं को अपनाने और उस की पैरवी में ही सारी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता है। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्के़ रसूल का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप हर मुआ़मले में मुस्त़फ़ा जाने रहमत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ (पैरवी) करते। चुनान्चे,

ख़लीफ़ए सानी और इत्तिबाए रसूल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि मेरे वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नई क़मीस पहनी तो छुरी मंगवाई और फ़रमाया : "ऐ बेटे ! इस की लम्बी आस्तीनों को सिरे से पकड़ कर खींचो और उंगलियों के बराबर करो, जो ज़ाइद हो उसे काट दो।" फ़रमाते हैं : मैं ने उसे काटा तो बिल्कुल सीधी न कटी बल्कि ऊपर नीचे से कटी। मैं ने अ़र्ज़ की : अब्बाजान ! "अगर इसे क़ैंची

1 ...بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھیۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم ... الخ، ۱/ ۶۲۲، حدیث: ۱۸۹۰
2 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 527

से काटा जाता, तो बेहतर होता।" फ़रमाया : "बेटा ! इसे ऐसे ही रहने दो क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे ही काटते देखा था।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर फ़रमाते हैं : छुरी से कटने की वज्ह से क़मीस के धागे आप के क़दमों पर गिरते रहते लेकिन क़ाबिले इस्तिमाल होने तक फिर भी उसे पहनते रहे।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाते मुबारका में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इश्के़ रसूल और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा किस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि इत्तिबाए़ रसूल में आप ने भी छुरी ही से आस्तीन काटी, वोह सह़ीह़ न कटी, फिर भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस क़मीस को पहनने में कोई शर्म व आ़र मह़सूस न की, येह कमाल दरजे की पैरवी थी। इसी त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सुन्नतों से मह़ब्बत और इस पर अ़मल का येह आ़लम था कि दुन्यावी आसाइश और बेवफ़ा मुआ़शरे की झूटी "**मुरव्वत**" उन से सुन्नत न छुड़ा सकती थी। चुनान्चे,

गिरा हुवा लुक़्मा खाने में आ़र मह़सूस न की

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना माक़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (जो कि मुसलमानों के सरदार व पेश्वा थे एक मरतबा) खाना खा रहे थे कि हाथ से लुक़्मा गिर गया, आप ने उठाया और साफ़ कर के खा लिया। येह देख कर गंवारों ने आंखों से एक दूसरे को इशारा किया (कि देखो येह क्या कर रहे हैं) किसी ने आप से कहा : "अल्लाह पाक सरदार का भला करे, येह गंवार तिरछी निगाहों से इशारा करते हैं कि इतने बड़े मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बावुजूद गिरा हुवा लुक़्मा उठा कर खा लिया ह़ालांकि उन के

1...مستدرک، کتاب اللباس، کان نبی اللہ یکرہ... الخ، ۵/ ۲۷۵، حدیث:۷۴۹۸

www.dawateislami.net

सामने येह खाना मौजूद है। हज़रते सय्यिदुना माक़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इन अ़जमियों की वज्ह से मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकता जिसे मैं ने मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुन रखा है, हम एक दूसरे को हुक्म देते थे कि लुक़्मा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लिया जाए शैत़ान के लिये न छोड़ा जाए।''(1)

رُوحِ ایماں مَغزِ قرآں جانِ دیں　　ہَست حُبِّ رَحمۃٌ لِّلعٰلَمِین

शेर का ख़ुलासा : हमारे प्यारे आक़ा, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ईमान की रूह़, कुरआने करीम का मग़्ज़ (ख़ुलासा) और दीन की जान है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि जलीलुल क़द्र सह़ाबी और मुसलमानों के सरदार हज़रते सय्यिदुना माक़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे। आप ने अ़जमियों के इशारों की बिल्कुल भी परवा न की और बे धड़क सुन्नत पर अ़मल जारी रखा। आज बाज़ नादान मुसलमान ऐसे भी हैं कि ''**मॉडर्न माह़ोल**'' में दाढ़ी मुबारक जैसी अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत के तर्क को مَعَاذَ اللّٰہ ''**ह़िक्मते अ़मली**'' तसव्वुर करते हैं। ह़क़ीक़ी ह़िक्मते अ़मली येही है कि लाख बुरा माह़ोल हो, अग़्यार का ज़ोर हो, बे दीनों का शोर हो, अल ग़रज़ कैसा ही दौर हो, आप दाढ़ी मुबारक, इमामा शरीफ़ और सुन्नतों भरे सादा लिबास में मलबूस रहिये, खाने पीने और रोज़ मर्रा के मामूलात में सुन्नतों का दामन थामे रहिये, अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश जारी रखिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चराग़ से चराग़ जलता चला जाएगा, ह़क़ का बोल बाला होगा, शैत़ान का मुंह काला होगा, हर त़रफ़ सुन्नतों

1... ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب اللقمۃ اذا سقطت، ۴/ ۱۷، حدیث: ۳۲۷۸

का उजाला होगा, दुन्या का हर आ़शिक़, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मतवाला होगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर घर नूरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उजाला होगा।

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले
तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलादे रसूल को अपनी औलाद पर तरजीह़ दी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में जब मदाइन की फ़त्ह़ ह़ासिल हुई और माले ग़नीमत मदीनए मुनव्वरा में आया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी में चटाइयां बिछवाईं और सारा माले ग़नीमत उन पर ढेर करवा दिया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان माल लेने जम्अ़ हो गए। सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए और कहने लगे : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! **अल्लाह** पाक ने मुसलमानों को जो माल अ़त़ा फ़रमाया है, उस में से मेरा ह़िस्सा मुझे अ़त़ा फ़रमा दें।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आप के लिये बड़ी पज़ीराई और करामत (यानी इ़ज़्ज़त) है। येह कहते हुए आप ने एक हज़ार दिरहम उन्हें दे दिये। उन्हों ने अपना ह़िस्सा लिया और चले गए, उन के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर अपना ह़िस्सा मांगा, आप ने उन्हें भी एक हज़ार दिरहम दिये और वोही फ़रमाया जो बड़े शहज़ादे से फ़रमाया था। फिर आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने खड़े हो कर अपना

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 428

www.dawateislami.net

हिस्सा मांगा। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे लिये भी पज़ीराई और करामत है और उन्हें 500 दिरहम अ़ता फ़रमाए, उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं उस वक़्त भी हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तल्वार उठा कर जिहाद में शरीक होता था जब ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا कम सिन बच्चे थे इस के बा वुजूद आप ने उन्हें एक एक हज़ार दिरहम और मुझे 500 अ़ता किये ?"

येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ठीक है (अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें भी उन के बराबर हि़स्सा दूं तो) जाओ पहले तुम उन के वालिद जैसा वालिद, वालिदा जैसी वालिदा, नाना जैसा नाना, नानी जैसी नानी, चचा जैसा चचा और उन के मामूं जैसा मामूं लाओ ! और येह तुम कभी नहीं ला सकते : क्यूंकि "اَبُوْهُمَا فَعَلِیُّ الْمُرْتَضٰی उन के वालिद **अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, اُمُّهُمَا فَاطِمَةُ الزَّهْرَاء वालिदा सय्यिदा **फ़ाति़मतुज़्ज़हरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا, جَدُّهُمَا مُحَمَّدُنِ الْمُصْطَفٰی नाना **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, جَدَّتُهُمَا خَدِيْجَةُ الْكُبْرٰی नानी सय्यिदा **ख़दीजतुल कुब्रा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا, عَمُّهُمَا جَعْفَرُ بْنُ اَبِیْ طَالِب चचा ह़ज़रते **जाफ़र बिन अबी त़ालिब** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, خَالُهُمَا اِبْرَاهِيْمُ بْنُ رَسُوْلِ الله मामूं ह़ज़रते **इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, خَالَتَاهُمَا رُقَيَّة وَاُمُّ كُلْثُوْم اِبْنَتَا رَسُوْلِ الله और उन की **ख़ालाएं** रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटियां सय्यिदा रुक़य्या और सय्यिदा **उम्मे कुल्सूम** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) हैं।"(1)

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अहले बैत से इश्क़ो मह़ब्बत का येह निहायत ही अनोखा अन्दाज़ है कि अपनी सगी औलाद के मुक़ाबले में अहले बैत के शहज़ादों को दो गुना अ़ता फ़रमाया। इस वाक़िए में हमारे लिये भी येह मदनी फूल

1 ...الرياض النضرة، ذكر وقوفه عن كتاب الله، ١/٣٤٠ ملتقطا

मौजूद है कि हम भी सादाते किराम से महब्बत व शफ़्क़त से पेश आएं और उन का ख़ूब अदबो एह़तिराम बजा लाएं कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत और आप का जुज़ होने की वज्ह से सादाते किराम ख़ास ताज़ीमो तौक़ीर के मुस्तह़िक़ हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अहले बैत से महब्बत आज आप के उ़श्शाक़ में भी सीना ब सीना चली आ रही है। येही वज्ह है कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सादाते किराम की ताज़ीमो तौक़ीर बजा लाने में पेश पेश रहते हैं। मुलाक़ात के वक़्त अगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बता दिया जाए कि येह **सय्यिद साह़िब** हैं तो बारहा देखा गया है कि आप निहायत ही आ़जिज़ी से **सय्यिद ज़ादे** का हाथ चूम लिया करते हैं और उन्हें अपने बराबर में बिठाते हैं, सादाते किराम के शहज़ादों से बे पनाह महब्बत और शफ़्क़त से पेश आते हैं। जब कभी शीरनी वग़ैरा बांटने की तरकीब होती है तो **सय्यिदों** को दो गुना पेश फ़रमाते हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो! अगर्चे सादाते किराम से महब्बत करने वाले अफ़राद की कमी नहीं मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस! बाज़ ऐसे लोग भी हैं जो सादाते किराम की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत से ना वाक़िफ़ हैं या फिर उन की ख़िदमत करने में सुस्ती का शिकार हैं, अपनी औलाद को तो दुन्या की हर आसाइश देने के लिये तय्यार रहें लेकिन जिन के सदक़े येह नेमतें मिलीं उन की औलाद (यानी सादाते किराम) की ख़िदमात के लिये एक रूपिया भी जेबे ख़ास से ह़ाज़िर करने से कतराते हैं, ह़ालांकि सादाते किराम की ख़िदमत व ख़ैर ख़्वाही के बड़े फ़ज़ाइल हैं। चुनान्चे,

सादात की ख़ैर ख़्वाही की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मेरे

www.dawateislami.net

अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक किया तो मैं क़ियामत के दिन उसे उस का सिला अ़ता फ़रमाऊंगा ।[1]

लिहाज़ा **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी के हुसूल और अपनी दुन्याओ आख़िरत बेहतर बनाने के लिये हमें भी सादाते किराम के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये और उन की ख़िदमत करते रहना चाहिये ।

हम को सारे सय्यिदों से प्यार है — اِنْ شَآءَاللہ दो जहां में अपना बेड़ा पार है[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप सय्यिदुना फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इश्क़े रसूल से भरपूर प्यारे प्यारे वाक़िआ़त पढ़ना चाहते हैं तो दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 274 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल इश्क़े रसूल के जाम पिलाने वाली बहुत ही प्यारी किताब "**सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल**" ज़रूर पढ़िये । इस किताब को **दावते इस्लामी** की वेब साइट से पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) कर के प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

इसी त़रह़ दिल में इश्क़े रसूल व इश्क़े सह़ाबाओ अहले बैत की शम्अ़ को मज़ीद फ़रोज़ां करने के लिये **दावते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये ! اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आमाले सालेह़ा (नेक आमाल) की क़ीमती दौलत ह़ासिल होगी, गुनाहों से नफ़रत का ज़ेहन बनेगा और हमारी आख़िरत भी संवर जाएगी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...الکامل لابن عدی، رقم ۱۳۸۹، عیسی بن عبد اللہ بن محمد، ۶/ ۴۲۵

2 ....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 280

www.dawateislami.net

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़े रसूल के ह़वाले से प्यारे प्यारे वाक़िआ़त और ज़िमनन अहम मदनी फूल भी चुनने की सआ़दत ह़ासिल की। मसलन

... **अल्लाह** पाक की अ़ता से इसी इश्क़े कामिल के तुफ़ैल सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़त व वक़ार मिला।

... सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इश्क़े रसूल की आला व उ़म्दा मिसाल क़ाइम कर के क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों को आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्क़ करने का सलीक़ा सिखा दिया।

... आज के इस पुर फ़ितन दौर में ज़रूरत इस बात की है कि हम ऐसे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं, जहां आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा का तज़किरा होता है, इन के इश्क़े रसूल के वाक़िआ़त सुनाए जाते हैं, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हमारे दिल में भी इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ रौशन होगी और अ़मल का जज़्बा बढ़ेगा।

... اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसा प्यारा मदनी माह़ोल **दावते इस्लामी** पेश कर रही है, लिहाज़ा हम सब भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और हर हफ़्ते होने वाले मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश जारी रखें, हमारी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, हम भी सुन्नतों के पाबन्द और नेक मुसलमान बन जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

दुआ है कि **अल्लाह** पाक हमें सच्चा आशिक़े रसूल बनाए और इश्क़े रसूल के तक़ाज़ों को पूरा करते हुए, ख़ूब ख़ूब सुन्नतें फैलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दावते इस्लामी के मदनी माहोल में नेकी की दावत और सुन्नतों की ख़िदमत के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मुतअ़द्दद शोबाजात का क़ियाम अ़मल में लाया गया है, इन्ही में से एक शोबा मजलिस "ख़ुसूसी इस्लामी भाई" भी है। दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों को ख़ुसूसी इस्लामी भाई कहा जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मजलिस, ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों में नेकी की दावत आ़म करने और उन्हें मुआ़शरे का बा किरदार फ़र्द बनाने में मसरूफ़े अ़मल है, नीज़ मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल किताबें शाएअ़ करने का अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) रखती है बल्कि गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों को इ़ल्मे दीन सिखाने के साथ साथ अ़स्री उ़लूम से रू शनास करवाने के लिये बहुत कुछ करने का इरादा रखती है। नाबीना इस्लामी भाइयों के लिये अ़न क़रीब **मद्रसतुल मदीना** की तरकीब भी की जाएगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

***अल्लाह* करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो !**[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बड़ी बरकतें हैं, कई बुराइयों के दिल दादह बिगड़े हुए लोग इस माह़ोल की बरकत से नेकियों के ह़रीस बन गए, तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

1 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

मदनी माह़ोल की तरबियत

एक इस्लामी भाई दावते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल की बरकात का तज़्किरा कुछ इस त़रह़ करते हैं : मैं क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर रहा था मगर अफ़्सोस ! मेरी अ़मली ह़ालत बहुत ख़राब थी । नेकियों से कोसों दूर, आवारा लड़कों की त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ार रहा था । सुन्नतों पर अ़मल करने का शौक़ था न ही इ़बादते इलाही बजा लाने का ज़ौक़ । मेरे उजड़े गुलिस्तां में अ़मल की मदनी बहार कुछ इस त़रह़ आई, मेरे एक अ़ज़ीज़ जिन की दुकान पर अक्सर मेरा आना जाना रहता था, एक दिन वोह मुझ से कहने लगे : आप क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर रहे हैं, लेकिन आप की आ़दातो अत़्वार आ़म लड़कों की त़रह़ ही हैं, आप अपने सर पर इ़मामा तो दूर की बात टोपी तक नहीं पहनते, इस त़रह़ आप और स्कूल व कॉलेज के आ़म लड़कों में क्या फ़र्क़ रह गया ? मज़ीद कहने लगे : मेरा भांजा भी दावते इस्लामी के **मद्रसतुल मदीना** में क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है, मगर उस का अख़्लाक़ व किरदार, त़रीक़ए गुफ़्तार नीज़ अपने पराए से मिलने का अन्दाज़ क़ाबिले रश्क है । रमज़ानुल मुबारक की छुट्टियों में जब वोह घर आए तो **मद्रसतुल मदीना** में होने वाली अ़मली तरबियत देख कर सब घरवाले बेह़द ख़ुश हुए, उन का मामूल था कि सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाते पीते, घर में दाख़िल होते वक़्त बुलन्द आवाज़ से सलाम करते, वालिदैन के हाथ चूमते, नज़रें झुका कर गुफ़्तगू करते, खाने के दौरान सुन्नतें बयान करते और सब घरवालों को सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दिलाते । **मद्रसतुल मदीना** के त़ालिबे इ़ल्म की येह मदनी बहार सुन कर मुझे अपनी बद अ़मली पर नदामत होने लगी, चुनान्चे,

मैं ने हाथों हाथ दावते इस्लामी के **मद्रसतुल मदीना** में दाख़िला लेने की निय्यत की और उसी साल दावते इस्लामी के **मद्रसतुल मदीना** (फ़ैज़ाने मदीना) में दाख़िला ले कर मदनी माहोल का फ़ैज़ान पाने में मश्ग़ूल हो गया। कुछ ही अ़र्से में हैरत अंगेज़ त़ौर पर मुझ में नुमायां तब्दीली वाक़ेअ़ होने लगी। आहिस्ता आहिस्ता मैं भी दावते इस्लामी के मदनी रंग में रंगता चला गया, इमामा शरीफ़ का ताज हर वक़्त मेरे सर पर रहने लगा, नमाज़े पंजगाना का पाबन्द बन गया, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में भी शिर्कत करने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सिने 1998 ईसवी में **मद्रसतुल मदीना** से क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल की और इस के बाद **जामिअ़तुल मदीना** में दाख़िला ले कर आ़लिम कोर्स (दर्से निज़ामी) करने में मश्ग़ूल हो गया। **जामिअ़तुल मदीना** के सुन्नतों भरे मदनी माहोल में मेरा किरदार मज़ीद अच्छा हो गया, जहां इल्मे दीन का इक्तिसाब हुवा, वहीं अपने इल्म पर अ़मल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के ज़रीए़ उसे दूसरों तक पहुंचाने और मदनी कामों के ज़रीए़ इस्लाहे़ उम्मत का सुन्हरी मौक़अ़ भी हाथ आया। नीज़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर क़ादिरी अ़त्तारी बनने का शरफ़ भी नसीब हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत से दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) मुकम्मल कर चुका हूं और दीने मतीन की ख़िदमत में कोशां हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और

www.dawateislami.net

जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

छींकने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से छींकने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनते हैं। पहले दो **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿...**अल्लाह** पाक को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द।(2)

﴾2﴿...जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे, तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِيْن और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहता है, तो फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए।(3) ...छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है।(4) ...छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना चाहिये(5) बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहे। ...सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन يَرْحَمُكَ الله (यानी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला खुद सुन ले।(6) ...जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ (यानी

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یدہ علی فیہ، ۴/ ۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶

3...معجم کبیر، ۱۱/ ۳۵۸، حدیث: ۱۲۲۸۴

4...ردالمحتار، کتاب الحضر و الاباحة، فصل فی البیع، ۹/ ۶۸۴

5....तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, सूरए फ़ातिह़ा तह़तुल आयत : 1 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मुअक्कदा लिखा है।

6....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16,3 / 476,477

अल्लाह पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे ।)[1] ...जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से महफ़ूज़ रहेगा ।[2]

...हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा ।[3]

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1)... **312** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120** सफ़्ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल, आए सुन्नत के फूल, देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

...

नेक पड़ोसी की बरकत

मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक नेक मुसलमान की वज्ह से उस के पड़ोस के **100** घरों से मुसीबत दूर फ़रमा देता है । (معجم اوسط، ۳/ ۱۲۹)

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/ ۳۲۶

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, 6/ 396

3 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الدعاء، باب فی العطسۃ اذا عطس...الخ، ۷/ ۱۳۱، حدیث:۱

4 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

www.dawateislami.net

رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن

शाने सहाबा

4-October-2018

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोजे़ क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा, जिस ने मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।[1]

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उन की रसाई है
गर उन की रसाई है लो जब तो बन आई है[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बए ईसार

हज़रते सय्यिदुना अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जंगे यरमूक के दिन मैं अपने चचाज़ाद भाई को तलाश कर रहा था, मेरे पास एक बरतन में इतना पानी था जो सिर्फ़ एक शख़्स को सेराब कर देता, मैं ने सोचा अगर उन में ज़िन्दगी की कोई रमक़ (यानी थोड़ी सी भी जान) बाक़ी होगी तो मैं उन्हें येह पानी पिलाऊंगा और इस से उन के चेहरे को साफ़ करूंगा। जूंही मैं उन के पास पहुंचा तो देखा कि वोह ख़ून में लतपत थे, मैं ने पूछा : क्या मैं आप को पानी पिलाऊं ? उन्हों ने इशारे से कहा : हां ! इतने में अचानक किसी के कराहने की आवाज़ आई। मेरे

---

1 ... مسند فردوس، باب الياء، ٢/ ٤٧١، حديث: ٨٢١٠

2 ....हदाइक़े बख़्शिश, स. 192

चचाज़ाद भाई ने कहा : येह पानी उन के पास ले जाओ । मैं ने देखा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । मैं ने उन्हें पानी पेश किया, उन्हों ने भी किसी के कराहने की आवाज़ सुनी तो इशारे से फ़रमाया : येह पानी उन्हें पिला दो । मैं उन के पास पहुंचा तो वोह जामे शहादत नोश फ़रमा चुके थे । मैं वापस ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया तो वोह भी ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले थे । फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास आया तो देखा कि वोह भी शहीद हो चुके हैं ।[1]

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शानो शौकत भी किस क़दर अर्फ़ओ़ आला थी ! बा वुजूद येह कि ज़ख़्मों से चूर चूर हैं, प्यास की शिद्दत भी अपने उ़रूज पर है, मगर क़ुरबान जाइये ! इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के जज़्बए ईसार पर कि इस आ़लम में भी दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की तकालीफ़ का इस क़दर एह़सास था कि अपनी प्यास को क़ुरबान कर दिया । ज़रा ग़ौर कीजिये कि ऐसे होशरुबा (होश उड़ा देने वाले) आ़लम में कि जब अ़क़्ल भी काम करना छोड़ देती है और हर शख़्स को सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र होती है, मगर इन ह़ज़रात को "या शैख़ अपनी अपनी देख" के बजाए दूसरों की फ़िक्र सताए जा रही है कि अगर मैं पी लूंगा तो मेरा मुसलमान भाई प्यासा रह जाएगा । बिलाशुबा येह इन की उ़म्दा तालीमो तरबियत, बुलन्द पाया हिम्मत और **अल्लाह** करीम और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कामिल मह़ब्बत का नतीजा था, इन्ही आला सिफ़ात की वज्ह से सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद आज भी रुश्दो हिदायत के इन रौशन सितारों का ज़िक्रे ख़ैर मुसलमानों को दिली सुकून पहुंचाता है और इन की शानो अ़ज़मत के नग़्मों की गूंज हर त़रफ़ सुनाई देती है ।

---

1 ...عیون الحکایات، الحکایۃ الثالثۃ والعشرون، ص۴۹

दो आलम न क्यूं हो निसारे सहाबा
कि है अर्श मन्ज़िल वक़ारे सहाबा

अमीं हैं येह कुरआनो दीने ख़ुदा के
मदारे हुदा एतिबारे सहाबा

सहाबा हैं ताजे रिसालत के लश्कर
रसूले ख़ुदा ताजदारे सहाबा

इन्ही में हैं सिद्दीक़ो फ़ारूक़ो उस्मां
इन्ही में हैं अली शह सुवारे सहाबा

पसे मर्ग ऐ आज़मी येह दुआ है
बनूं मैं गुबारे मज़ारे सहाबा[1]

सहाबी की तारीफ़

हज़रते अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जिन ख़ुश नसीबों ने ईमान की हालत में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत का शरफ़ हासिल किया और ईमान ही पर ख़ातिमा हुवा उन ख़ुश नसीबों को "**सहाबी**" कहते हैं।[2] सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की तादाद एक लाख से ज़ियादा है। मरवी है कि हिज्जतुल विदाअ में तक़रीबन एक लाख चौदह हज़ार सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हज के लिये मक्कए मुकर्रमा में जम्अ हुए। बाज़ रिवायात से पता चलता है कि हिज्जतुल विदाअ में सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की तादाद तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार थी।[3] तमाम सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के नाम मालूम नहीं, जिन के मालूम हैं (उन की तादाद) सात हज़ार है।[4] (तमाम सहाबा में) ख़ुलफ़ाए अरबआ के बाद बक़िय्या अशरए मुबश्शरा, हज़राते हसनैन (यानी हज़रते इमामे हसन और हज़रते

1....करामाते सहाबा, स. 30

2...فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضائل اصحاب النبی...الخ، ۸/ ۳، ۴ ملخصًا

3...مدارج النبوت، ذکر حجۃ الوداع، ۲/ ۳۸۷

4....मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत, हिस्सा 3 स. 400

इमामे हुसैन), अस्हाबे बद्र और अस्हाबे बैअ़तुर्रिज़्वान के लिये अफ़्ज़लिय्यत है और येह सब क़त्ई (यक़ीनी) जन्नती हैं।[1] क़ुरआने करीम में जा बजा सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हुस्ने अ़मल, हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने ईमान का तज़्किरा है और उन्हें दुन्या ही में मग़्फ़िरत व बख़्शिश और इन्आ़माते उख़रवी की खुश ख़बरी सुना दी गई। ग़ौर कीजिये कि जिन के औसाफ़े ह़मीदा की खुद **अल्लाह** पाक तारीफ़ फ़रमाए, उन की अ़ज़्मतो रिफ़्अ़त का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है। चुनान्चे,

शाने सहाबा ब ज़बाने क़ुरआन

पारह 9, सूरतुल अनफ़ाल, आयत नम्बर 4 में इरशाद होता है :

اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌۚ (۴) (پ۹، الانفال:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येही सच्चे मुसलमान हैं, इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।

पारह 11, सूरतुत्तौबह, आयत नम्बर 100 में इरशाद होता है :

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ (۱۰۰) (پ۱۱، التوبة:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उस में रहें येही बड़ी कामयाबी है।

---

1 ....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1,1 / 249

पारह 26, सूरतुल फ़त्ह़, आयत नम्बर 29 में इरशाद होता है :

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا٘ سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۛۚ وَ مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ۠﴿۲۹﴾ (پ۲۶، الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सजदे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सजदों के निशान से येह उन की सिफ़त तौरेत में है और उन की सिफ़त इन्जील में जैसे एक खेती उस ने अपना पठ्ठा निकाला फिर उसे त़ाक़त दी फिर दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है ताकि उन से काफ़िरों के दिल जलें। अल्लाह ने वादा किया उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं बख़्शिश और बड़े सवाब का।

पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 218 में इरशाद होता है :

اُولٰٓىٕكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۱۸﴾ (پ۲، البقرة:۲۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह रह़मते इलाही के उम्मीदवार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयाते त़य्यिबा से येह ह़क़ीक़त रोज़े रौशन की त़रह़ इयां हो जाती है कि मह़बूबे रब्बे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان किस क़दर अर्फ़अ़ो आला इ़ज़्ज़तो शान के मालिक

www.dawateislami.net

थे कि जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के हुसूल और दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये वक़्फ़ कर रखी थीं, इन मर्दाने अ़रब ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाना ब शाना रह कर एह़याए दीन की ख़ात़िर ऐसी ऐसी कुरबानियां पेश कीं, जिन्हें फ़रामोश नहीं किया जा सकता, अल्लाह करीम ने मैदाने कारज़ार के इन शह सुवारों को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी के तुफ़ैल न सिर्फ़ अपनी बख़्शिश व रिज़ामन्दी और जन्नत की ह़क़दारी वग़ैरा जैसे अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मात से नवाज़ा बल्कि उन्हें मिलने वाली अ़त़ाओं और नवाज़िशों का अपने पाकीज़ा कलाम कुरआने करीम में जा बजा ज़िक्र किया ताकि ता क़ियामत आने वाले मुसलमानों के दिलों में उन की शानो अ़ज़मत मज़ीद मुस्तह़कम (पुख़्ता) हो जाए। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी कभी तो बिल उ़मूम तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए और कभी नाम ब नाम उन की शानो अ़ज़मत और क़द्रो मन्ज़िलत उजागर फ़रमाई। चुनान्चे,

नेकूकार हस्तियां

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَكْرِمُوْا اَصْحَابِیْ فَاِنَّھُمْ خِیَارُكُمْ(1) "यानी मेरे सह़ाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं।" मज़ीद फ़रमाया : خَیْرُاُمَّتِیْ اَلْقَرْنُ الَّذِیْنَ یَلُوْنِیْ ثُمَّ الَّذِیْنَ یَلُوْنَھُمْ ثُمَّ الَّذِیْنَ یَلُوْنَھُمْ(2) "यानी मेरी उम्मत में सब से बेहतर मेरे ज़माने वाले (यानी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) हैं फिर उन के बाद के लोग (यानी ताबेई़न) फिर उन के बाद के लोग (यानी तबए़ ताबेई़न) हैं।"

1...مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، الفصل الثانی، ۲/۴۱۳، حدیث: ۶۰۱۲

2...مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فضل الصحابۃ...الخ، ص۱۰۵۲، حدیث: ۶۴۶۹

बाज़ वोह सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी हैं जिन के नुमायां कारनामों की वज्ह से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की शानो अ़ज़मत नाम ले कर कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाई कि **अबू बक्र** मेरी उम्मत के सब से ज़ियादा **नर्म दिल** और **रह़म दिल** शख़्स हैं। **उ़मर बिन ख़त़्त़ाब** मेरी उम्मत के **बेहतरीन** और सब से ज़ियादा **इन्साफ़** करने वाले शख़्स हैं। **उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान** मेरी उम्मत के सब से ज़ियादा **बा ह़या** और **इ़ज़्ज़त वाले** और **अ़ली बिन अबू त़ालिब** मेरी उम्मत के **अ़क़्लमन्द** और सब से ज़ियादा **बहादुर** शख़्स हैं। **अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द** मेरी उम्मत के **नेक** और **अमानतदार** शख़्स हैं **अबू ज़र** सब से ज़ियादा **ज़ाहिद** और **सच्चे** इन्सान हैं। **अबू दर्दा** मेरी उम्मत के सब से ज़ियादा **इ़बादत गुज़ार** व **मुत्तक़ी** और **मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान** मेरी उम्मत के सब से ज़ियादा **बुर्दबार** और **सख़ी** शख़्स हैं।(1) मज़ीद फ़रमाया : अहले अ़रब में से सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाला **मैं हूं**, अहले फ़ारस में से **सलमान**, अहले रूम में से **सुहैब**, और अहले ह़बशा में से **बिलाल** सब से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।(2) तमाम सह़ाबा मेरे नज़्दीक मुअ़ज़्ज़ज़ और मह़बूब हैं, अगर्चे वोह ह़बशी गुलाम हों।(3)

नुमायां हैं इस्लाम के गुलिस्तां में — हर इक गुल पे रंगे बहारे सह़ाबा(4)

हिदायत के चश्मो चराग़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मौलाए कुल, फ़ख़्रे रुसुल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की कैसी शानो अ़ज़मत बयान

❶...المطالب العالی، کتاب المناقب، باب ما اشترک فیہ جماعۃ من الصحابۃ، ۸ / ۴۱۲، حدیث: ۳۹۹۸

❷...معجم اوسط، ۲ / ۲۰۶، حدیث: ۳۰۳۶

❸...المسند للشاشی، ما روی ابو عبد اللہ عبد الرحمٰن بن عسلیۃ الصنابحی، ۳ / ۱۴۲، حدیث: ۱۲۱۵

❹....करामाते सह़ाबा, स. 30

फ़रमाई कि मेरी उम्मत मेरे सहाबा की ख़ूब ताज़ीमो तौक़ीर करे। लिहाज़ा फ़रामीने मुस्त़फ़ा पर अ़मल करते हुए हमें भी तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से सच्ची महब्बत रखनी चाहिये और उन की सीरतो किरदार पर अ़मल करते हुए अपनी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये, क्यूंकि येही राहे हिदायत के वोह रौशन सितारे हैं जिन के बारे में मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ فَبِاَيِّهِمِ اقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ[1] "यानी मेरे सहाबा सितारों की मानिन्द हैं, इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे।"

शर्हे ह़दीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस ह़दीस की शर्ह में फ़रमाते हैं : سُبْحَانَ الله! कैसी नफ़ीस तश्बीह है, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अपने सहाबा को हिदायत के तारे फ़रमाया और दूसरी ह़दीस में अपने अहले बैत को कश्तिये नूह़ फ़रमाया, समुन्दर का मुसाफ़िर कश्ती का भी ह़ाजतमन्द होता है और तारों की रहबरी का भी कि जहाज़ सितारों की रहनुमाई पर ही समुन्दर में चलते हैं। इस त़रह़ उम्मते मुस्लिमा अपनी ईमानी ज़िन्दगी में अहले बैते अत़्हार के भी मोह़ताज हैं और सहाबए किबार के भी ह़ाजतमन्द, उम्मत के लिये सहाबा (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की इक़्तिदा में ही इहतिदा यानी हिदायत है।[2]

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार, अस्ह़ाबे हुज़ूर नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की[3]

---

1 ...مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، الفصل الثالث، ٢/٤١٤، حديث: ٦٠١٨

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, 8/ 345

3 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153

www.dawateislami.net

उम्मत में सहाबा की अहम्मिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बे मिस्ल किरदार और पाकीज़ा अत्वार, उम्मत की इस्लाह व मदनी तरबियत के हवाले से बहुत अहम्मिय्यत के हामिल हैं, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "مَثَلُ اَصۡحَابِیۡ فِیۡ اُمَّتِیۡ كَالۡمِلۡحِ فِی الطَّعَامِ لَا يَصۡلَحُ الطَّعَامُ اِلَّا بِالۡمِلۡحِ यानी मेरी उम्मत में मेरे सहाबा की मिसाल खाने में नमक की सी है कि खाना बिग़ैर नमक के दुरुस्त नहीं होता।"[1] यानी जैसे नमक होता है थोड़ा, मगर सारे खाने को दुरुस्त कर देता है, ऐसे ही मेरे सहाबा मेरी उम्मत में हैं थोड़े, मगर सब की इस्लाह इन्ही के ज़रीए से है। रेल का पहला डब्बा जो इन्जन से मुत्तसिल है, वोह सारी रेल को इन्जन का फ़ैज़ पहुंचाता है इन्जन से वोह (पहला डब्बा) खिंचता है और सारे डब्बे उस के ज़रीए खिंचते हैं।[2]

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक मौक़अ़ पर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत पर रौशनी डालते हुए फ़रमाया : जो सीधी राह चलना चाहे, तो उसे चाहिये कि वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्गों की राह चले कि ज़िन्दा (लोग) फ़ितने से महफ़ूज़ नहीं, उन के बारे में येह अन्देशा मौजूद है कि वोह किसी फ़ितने में मुब्तला हो जाएं, क़ाबिले तक़्लीद और लाइक़े पैरवी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबा हैं। येह हज़रात उम्मत में सब से अफ़्ज़ल, सब से ज़ियादा नेकूकार, सब से बढ़ कर इ़ल्म रखने वाले हैं, इन के आमाल दिखलावे व

1 ...شرح السُّنة، كتاب فضائل الصحابة، باب فضل الصحابة رضی اللّٰہ عنھم، ۷/۱۷۴، حديث: ۳۷۵۶

2 ....मिरआतुल मनाजीह, 8/ 343

रिया से पाक हैं येह वोह लोग हैं कि जिन्हें **अल्लाह** करीम ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त व सोह़बत और ख़िदमते दीन के लिये चुना, लिहाज़ा इन का फ़ज़्लो कमाल पहचानो, इन के आसार व त़रीक़ों की पैरवी करो, जिस क़दर मुमकिन हो इन के अख़्लाक़ व सीरत को इख़्तियार करो कि बेशक येह लोग दुरुस्त राह पर क़ाइम थे।[1]

ख़िलाफ़त इमामत विलायत करामत *हर इक फ़ज़्ल पर इक़्तिदारे सह़ाबा*[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कितने ख़ूब सूरत अन्दाज़ में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़्मतो अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल इरशाद फ़रमाए। यक़ीनन मुअ़ल्लिमे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तरबियत याफ़्ता हर एक सह़ाबी रुश्दो हिदायत का सर चश्मा है। क्यूंकि पूरी उम्मत में सिर्फ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ही को सोह़बते मुस्त़फ़ा से फ़ैज़याब होने का शरफ़ ह़ासिल हुवा, इसी वज्ह से उन्हें ऐसी अ़ज़्मतो शराफ़त नसीब हुई जो किसी ग़ैरे सह़ाबी को ह़ासिल नहीं हो सकती। चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : तुम्हारा उहुद पहाड़ जितना सोना ख़ैरात करना, मेरे किसी सह़ाबी के मुठ्ठी भर जव ख़ैरात करने बल्कि उस के आधे के बराबर भी नहीं हो सकता।[3]

शर्हे ह़दीस

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यानी मेरा सह़ाबी

---

1 ...مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، الفصل الثالث، ۱/۵۷، حديث: ۱۹۳
2 ....करामाते सह़ाबा, स. 30
3 ...بخاری، كتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو كنت متخذا خليلا، ۲/ ۵۲۲، حديث: ۳۶۷۳

www.dawateislami.net

क़रीबन सवा सेर जव ख़ैरात करे और इन के इ़लावा कोई मुसलमान ख़्वाह ग़ौसो कुत़ुब हो या आ़म मुसलमान, पहाड़ भर सोना ख़ैरात करे तो उस का सोना कु़र्बे इलाही और क़बूलिय्यत में सहा़बी के सवा सेर को नहीं पहुंच सकता, येह ही ह़ाल रोज़ा, नमाज़ और सारी इ़बादात का है। जब मस्जिदे नबवी की नमाज़ दूसरी जगह की नमाज़ों से पचास हज़ार गुना (ज़ियादा सवाब वाली) है, तो जिन्हों ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कु़र्ब और दीदार पाया उन का क्या पूछना और उन की इ़बादात का क्या कहना ?[1]

कु़र्बे मुस्त़फ़ा की बरकतें

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ किसी मुसलमान की बड़ी से बड़ी नेकी सहा़बए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की छोटी सी नेकी के बराबर नहीं हो सकती, इसी त़रह़ कोई कितना ही बड़ा वली, ग़ौस और कु़त़ुब बन जाए और उस की ज़ात से ब कसरत करामात का सुदूर भी होता रहे लेकिन वोह फिर भी किसी सहा़बी के मक़ाम को नहीं पहुंच सकता। शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : तमाम उ़लमाए उम्मत व अकाबिरे उम्मत का इस मस्अले पर इत्तिफ़ाक़ है कि सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم **"अफ़्ज़लुल औलिया"** हैं यानी क़ियामत तक के तमाम औलिया अगर्चे वोह दरजए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं, मगर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वोह किसी सहा़बी के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते। ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्ए़ नबुव्वत के परवानों को मर्तबए विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है और उन मुक़द्दस हस्तियों को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि दूसरे तमाम

1....मिरआतुल मनाजीह़, 8/335, मुलतक़त़न

www.dawateislami.net

औलिया के लिये इस मेराजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इस में शक नहीं कि हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से इस क़दर ज़ियादा करामतों का सुदूर नहीं हुवा, जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से करामतें मन्क़ूल हैं, लेकिन वाज़ेह रहे कि कसरते करामत अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं, क्यूंकि विलायत दर हक़ीक़त क़ुर्बे इलाही का नाम है। क़ुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा हासिल होगा, उसी क़दर उस की विलायत का दरजा बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم चूंकि निगाहे नबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हैं, इस लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन बुज़ुर्गों को जो क़ुर्ब व तक़र्रुब हासिल है, वोह दूसरे औलिया उल्लाह को हासिल नहीं। अगर्चे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से बहुत कम करामतें सादिर (जारी) हुईं, लेकिन फिर भी सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का दरजए विलायत दूसरे औलियाए किराम से बहुत ज़ियादा अफ़्ज़लो आला और बुलन्दो बाला है।(1)

येह मोहरें हैं फ़रमाने ख़त्मुर्रुसुल की　　है दीने ख़ुदा शाहकारे सहाबा(2)

मालूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان की शान ऐसी बे मिसाल है कि कोई भी उन के मक़ामो मर्तबे तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकता। इन्ही मुबारक हस्तियों ने दीन की सर बुलन्दी के लिये अपनी जानी व माली क़ुरबानियां पेश कीं, दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त के लिये घर बार छोड़ कर सफ़र की मुश्किलात में कभी सब्र का दामन न छोड़ा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं, हमारे हाथों में क़ुरआने करीम की सूरत में अह़कामे इलाही और अह़ादीसे करीमा की सूरत में फ़रामीने नबवी भी इन्ही मुक़द्दस हस्तियों के शबो रोज़ की मेह़नतों और कोशिशों

1....करामाते सहाबा, स. 52

2....करामाते सहाबा, स. 30

www.dawateislami.net

का नतीजा है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने इन मोह़सिनीन की मह़ब्बतो अ़ज़्मत को दिल में बसाएं, इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए ज़िन्दगी बसर करें और इन की अदना सी बे अदबी व गुस्ताख़ी और त़ानो तश्नीअ़ से भी बाज़ रहें और हमेशा इन का ज़िक्रे ख़ैर करते रहें। उ़लमा फ़रमाते हैं : इन (सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) का जब (भी) ज़िक्र किया जाए तो ख़ैर ही के साथ होना फ़र्ज़ है।[1] याद रखिये ! हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये सिर्फ़ आप की मह़ब्बत का दावा ही काफ़ी नहीं बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का अदबो एह़तिराम भी ज़रूरी है वरना इन ह़ज़रात की बुराई करना हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब बन सकता है। चुनान्चे,

बुग़्ज़े सह़ाबा, नाराज़िये मुस्त़फ़ा का सबब है

अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली क़ह़त़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं कर्ख़ की जामेअ़ मस्जिद शरक़िय्या में दाख़िल हुवा, मैं ने सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, आप के हमराह दो आदमी और भी थे, जिन्हें मैं नहीं जानता था, मैं ने ख़िदमते अक़्दस में सलाम अ़र्ज़ किया मगर आप ने कोई जवाब न दिया, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप पर शबो रोज़ इतनी इतनी मरतबा दुरूद भेजता हूं, आप ने मुझे जवाबे सलाम से मह़रूम फ़रमा दिया ? इरशाद फ़रमाया : "तुम मुझ पर तो दुरूद भेजते हो लेकिन मेरे सह़ाबा पर त़ानो तश्नीअ़ करते हो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप के दस्ते अक़्दस पर तौबा करता हूं आयिन्दा ऐसा

---

1 ....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 1,1 / 252

नहीं करूंगा।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सलाम के जवाब में इरशाद) फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ[(1)]

सब सहा़बा का वसीला सय्यिदा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हु़सैन[(2)]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से पता चला कि हु़जू़र नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखते हुए, आप की ज़ाते वाला सिफ़ात पर दुरूदे पाक की कसरत के साथ साथ तमाम सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से भी मह़ब्बत रखनी चाहिये, مَعَاذَ اللّٰه कहीं ऐसा न हो कि बाज़ सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से तो बे पनाह इ़श्क़ो मह़ब्बत का इज़्हार हो और बाक़ी अस्हा़बे रसूल के लिये दिल में अ़दावत भरी हो अगर ऐसा हुवा तो बुग़्ज़ के सबब **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लानत होगी। जैसा कि

लानते ख़ुदावन्दी का मुस्तह़िक़

ह़ज़रते उ़वैम बिन साइ़दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे ख़ुश्बूदार है : "बेशक **अल्लाह** करीम ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिये मेरे अस्हा़ब को पसन्द फ़रमाया" फिर उन में से मेरे वज़ीर, मुआ़विन और रिश्तेदार बनाए, فَمَنْ سَبَّهُمْ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ पस जो उन्हें गाली देगा, उस पर **अल्लाह** पाक, उस के फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की लानत है, لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا "रोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक न उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।"[(3)]

---

1 ...سعادۃ الدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف المرائی...الخ، اللطیفۃ الخامسۃ والعشرون بعد المائۃ، ص ۱۲۳

2 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 259

3 ...الصواعق المحرقۃ، المقدمات، المقدمۃ الاولی، ص ۴

www.dawateislami.net

एक रिवायत में है, इरशाद फ़रमाया : मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह पाक से डरते रहो, मेरे बाद उन्हें (त़ानो तशनीअ़ का) निशाना मत बनाना, पस जिस ने उन से मह़ब्बत की तो उस ने मुझ से मह़ब्बत की वज्ह से ऐसा किया और जिस ने उन से बुग़्ज़ रखा तो उस ने (दर ह़क़ीक़त) मुझ से बुग़्ज़ की वज्ह से ऐसा किया, जिस ने उन्हें अज़िय्यत दी, उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी, उस ने अल्लाह करीम को अज़िय्यत दी और जिस ने अल्लाह करीम को ईज़ा दी अ़न क़रीब वोह उस की पकड़ फ़रमाएगा।(1)

एक ह़दीसे पाक में है : وَمَنْ اَسَاءَ الْقَوْلَ فِیْ اَصْحَابِیْ كَانَ مُخَالِفًا لِّسُنَّتِیْ "जिस ने मेरे अस्ह़ाब के मुतअ़ल्लिक़ बुरी बात कही तो वोह मेरे त़रीक़े से हट गया وَمَاْوٰىهُ النَّارُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ और उस का ठिकाना आग है और क्या ही बुरी जगह है पलटने की।"(2)

कहीं ईमान बरबाद न हो जाए

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बुग़्ज़ रखने वाले ब हुक्मे ह़दीस, अल्लाह करीम और फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की लानत के ह़क़दार हैं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान में गुस्ताख़ी करने वाले और उन गुस्ताख़ों की सोह़बत में बैठने वाले अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी मोल ले कर अपनी आख़िरत बरबाद करते हैं और मौत के वक़्त बुरे ख़ातिमे का भी अन्देशा है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "**शर्ह़ुस्सुदूर**" में नक़्ल करते हैं : "एक आदमी को वक़्ते मौत कलिमा पढ़ने की

---

(1)...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سب اصحاب النبی، ۵/۴۶۳، حدیث: ۳۸۸۸

(2)...الریاض النضرة، الباب الاول، ذکر ماجاء فی الحث علی حبهم والاحسان الیهم . . . الخ، ۱/۲۲

तल्क़ीन की गई तो उस ने कहा : मुझ से नहीं पढ़ा जा रहा, क्यूंकि मेरा उठना बैठना ऐसे लोगों के साथ था जो मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र** व ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बुरा भला कहने का कहते थे।"[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शान में गुस्ताख़ी करने वालों की सोह़बत का येह वबाल हुवा कि उस शख़्स को मरते वक़्त कलिमा नसीब नहीं हुवा और जो खुद सह़ाबए किराम की तौहीन करते हैं, ऐसों को लोगों के लिये इ़ब्रत का नमूना बना दिया जाता है। आइये ! इस ज़िम्न में गुस्ताख़ाने सह़ाबा के दो इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

गुस्ताख़ाने सह़ाबा का अन्जाम

﴾1﴿...ह़ज़रते सय्यिदुना साद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, इसी दौरान आप का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम की शाने अ़ज़मत निशान में गुस्ताख़ी व बे अदबी के अल्फ़ाज़ बक रहा था। आप ने उस गुस्ताख़ से फ़रमाया : तुम मेरे भाइयों की गुस्ताख़ी व बे अदबी से बाज़ आ जाओ वरना मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ बद दुआ़ कर दूंगा। उस गुस्ताख़ व बे बाक ने बका कि येह मुझे ऐसे ख़ौफ़ज़दा कर रहे हैं जैसे येह कोई नबी हों (कि जिस की कोई दुआ़ रद नहीं होती)। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वुज़ू कर के मस्जिद में दाख़िल हुए, दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं और बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या **अल्लाह** पाक ! अगर इस शख़्स ने तेरे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बेहतरीन सह़ाबियों की तौहीन कर के तुझे नाराज़ किया है तो

[1] ...شرح الصدور، باب ما یقول الانسان فی مرض الموت...الخ، ص ٣٨

www.dawateislami.net

आज इसे सज़ा दे कर मुझे एक निशानी दिखा और इसे मोमिनों के लिये इब्रत बना। (अभी इतना ही कहा था कि) अचानक एक (दीवाना) ऊंट लोगों की सफ़ों को चीरता हुवा आया और उसे दांतों से काटा, फिर ऊंट ने उसे बुरी तरह कुचल डाला हत्ताकि वोह मौत के घाट उतर गया। रावी फ़रमाते हैं : (उस गुस्ताख़ के हलाक होने के बाद) लोग दौड़ते हुए हज़रते सय्यिदुना साद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे : ऐ अबू इस्हाक़ ! **अल्लाह** पाक ने आप की दुआ क़बूल फ़रमा ली।[1] (और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का दुश्मन हलाक हो गया।)

जिस क़दर जिन्नो बशर में थे सहाबा शाह के
सब को भी बेशक, ख़ुसूसन चार यारों को सलाम[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿...हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते सय्यिदुना अबू हसीब बशीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बताया कि मैं तिजारत किया करता था और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से काफ़ी मालदार था। मुझे हर तरह की आसाइशें मुयस्सर थीं। एक मरतबा मेरे एक मज़दूर ने मुझे ख़बर दी कि फुलां मुसाफ़िर ख़ाने में एक शख़्स मर गया है, लावारिस है, उस की लाश बे गोरो कफ़न पड़ी है। चुनान्चे, मैं मुसाफ़िर ख़ाने पहुंचा तो एक शख़्स को मुर्दा हालत में पाया, मैं ने एक चादर उस पर डाल दी, उस के साथियों ने मुझे बताया कि येह शख़्स बहुत इबादत गुज़ार और नेक था, लेकिन आज इसे कफ़न भी मुयस्सर नहीं और हमारे पास इतनी रक़म नहीं कि इस की तजहीज़ो तक्फ़ीन कर सकें। मैं ने येह सुना

1...دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ماجاء فی دعاء رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، ۱۹۰/۲
ابن عساکر، سعد بن مالک ابی وقاص...الخ، ۳۴۷،۳۴۶/۲۰

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 610

तो उजरत दे कर एक शख़्स को कफ़न लेने के लिये और एक को क़ब्र खोदने के लिये भेजा और हम उस के लिये कच्ची ईंटें तय्यार करने लगे, हम इन्ही कामों में मश्ग़ूल थे कि यकायक वोह मुर्दा उठ बैठा और बड़ी भयानक आवाज़ में चीख़ने लगा : हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! जब उस के साथियों ने येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखा तो दूर हट गए। मैं उस के क़रीब गया और उस का बाज़ू पकड़ कर हिलाया और पूछा : तू कौन है और तेरा क्या मुआ़मला है ? वोह कहने लगा : बद क़िस्मती से मुझे ऐसे बुरे लोगों की सोहबत मिली जो ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** और ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आज़म** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को गालियां दिया करते थे। उन की सोह़बते बद की वज्ह से मैं भी उन के साथ मिल कर शैख़ैने करीमैन को गालियां दिया करता और उन से नफ़रत करता था।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने उस की येह बात सुन कर اِسْتِغْفار पढ़ा और कहा : ऐ बदबख़्त ! फिर तो तुझे सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये। (फिर मैं ने उस से पूछा) तू मरने के बाद ज़िन्दा कैसे हो गया ? तो उस ने जवाब दिया : मेरे नेक आमाल ने मुझे कोई फ़ाएदा न दिया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की गुस्ताख़ी की वज्ह से मुझे मरने के बाद घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया गया और वहां मुझे मेरा ठिकाना दिखाया गया, वहां की आग बहुत भड़क रही थी। फिर मुझ से कहा गया : अ़न क़रीब तुझे दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ताकि तू अपने बद अ़क़ीदा साथियों को अपने दर्दनाक अन्जाम की ख़बर दे और उन्हें बताए कि जो कोई **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों से दुश्मनी रखता है, उस का आख़िरत में कैसा दर्दनाक अन्जाम होता है, जब तू उन्हें अपने बारे में बता देगा तो तुझे दोबारा तेरे अस्ली ठिकाने (यानी जहन्नम) में डाल दिया जाएगा। येह ख़बर देने के लिये मुझे दोबारा ज़िन्दा किया गया है ताकि मेरी इस ह़ालत से

गुस्ताख़ाने सहाबा इब्रत हासिल करें और अपनी गुस्ताख़ियों से बाज़ आ जाएं, वरना जो कोई उन हज़रात की शान में गुस्ताख़ी करेगा, उस का अन्जाम भी मेरी तरह होगा। इतना कहने के बाद वोह शख़्स दोबारा मुर्दा हालत में हो गया। उस की येह इब्रतनाक बातें मेरे इलावा दूर खड़े दीगर लोगों ने भी सुनीं, इतने में मज़दूर कफ़न ख़रीद लाया, मैं ने वोह कफ़न लिया और कहा : मैं ऐसे बद नसीब शख़्स की तजहीज़ो तक्फ़ीन हरगिज़ नहीं करूंगा जो **शैख़ैने करीमैन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ हो, तुम अपने साथी को संभालो मैं इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता। इस के बाद मैं वहां से वापस चला आया। बाद में मुझे बताया गया कि उस के बद अक़ीदा साथियों ने ही उसे ग़ुस्ल व कफ़न दिया और उन्ही चन्द लोगों ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, उन के इलावा किसी ने भी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करना गवारा न किया।[1]

महफ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का गुस्ताख़ किस क़दर इब्रतनाक अन्जाम से दो चार हुवा। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि शैख़ैने करीमैन और तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के गुस्ताख़ों से दूर रहते हुए आशिक़ाने रसूल व मुहिब्बाने सहाबाओ औलिया की सोहबत इख़्तियार करें, उन अज़ीम हस्तियों की उल्फ़त का दिया (यानी चराग़) अपने दिल में रौशन कर के दोनों जहां की भलाइयों के हक़दार बन जाएं। **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की महब्बत क़ब्रो ह़श्र में बेहद कार आमद है। चुनान्चे,

1...عیونُ الحکایات، الحکایۃ الخامسۃ والثلاثون بعد المائۃ، ص ۱۵۲، ملخصًا

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

हिकायत : शैख़ैन का वसीला काम आ गया

एक शख़्स का बयान है : मेरे उस्ताद के एक साथी फ़ौत हो गए। उस्ताद साहिब ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مافعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ "यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला किया ?" जवाब दिया : अल्लाह पाक ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी। पूछा : मुन्कर नकीर के साथ कैसी रही ? जवाब दिया : उन्हों ने मुझे बिठा कर जब सुवालात शुरूअ़ किये तो अल्लाह पाक ने मेरे दिल में येह बात डाल दी कि मैं उन से कहूं : तुम्हें **अबू बक्र** व **उमर** का वासिता मुझे छोड़ दो। येह सुन कर एक ने दूसरे से कहा : इस ने बड़ी बुज़ुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है, लिहाज़ा इसे छोड़ दो। तो वोह मुझे छोड़ कर वहां से तशरीफ़ ले गए।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत करने वाले अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब हैं बल्कि ऐसे खुश नसीबों को रोज़े जज़ा अहमदे मुज्तबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कुर्बे ख़ास भी नसीब होगा। चुनान्चे,

कुर्बे मुस्तफ़ा पाने वाला ख़ुश नसीब

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मेरे सहाबा, अज़्वाज और अहले बैत से अ़क़ीदत रखता है और उन में से किसी पर ताान नहीं करता और इन की महब्बत पर दुन्या से इन्तिक़ाल करता है, वोह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दरजे में होगा।"[2]

1 ...شرح الصدور، باب فتنة القبر وسوال الملكين، حديث عائشة، ص ١٤١

2 ...الرياض النضرة، الباب الاول، ذكر ماجاء فی الحث علی حبهم والاحسان اليهم . . . الخ، ٢٢/١

मुहि़ब्बाने सह़ाबा के लिये निफ़ाक़ से बराअत की बिशारत भी है। चुनान्चे,

निफ़ाक़ से बराअत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَحْسَنَ الْقَوْلَ فِیْ اَصْحَابِیْ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ النِّفَاقِ यानी जिस ने मेरे अस्ह़ाब के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी बात कही तो वोह निफ़ाक़ से बरी हो गया।(1)

रह़मतें लाखों अबू बक्रो उ़मर उ़स्मान पर — मेरे मौला ह़ैदरे कर्रार पर लाखों सलाम
है यक़ीनन हर सह़ाबी जां निसारे मुस्त़फ़ा — हर मुहाजिर और हर अन्सार पर लाखों सलाम(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुतुब का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान इस क़दर बुलन्दो बाला है कि अ़र्सए दराज़ से उन की सीरते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ किये जा चुके हैं और ता ह़ाल येह सिलसिला जारियो सारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दावते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की जानिब से अ़शरए मुबश्शरा में से शैख़ैने करीमैन (सय्यिदुना अबू बक्र और सय्यिदुना उ़मर) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की मुबारक सीरत पर ज़ख़ीम कुतुब बनाम "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" और दो जिल्दों पर मुश्तमिल "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म**" और छे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरत पर मुख़्तसर रसाइल भी शाएअ़ हो चुके हैं। इस के इ़लावा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की करामात पर मुश्तमिल बहुत ही प्यारी किताब "**करामाते सह़ाबा**" भी मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल की जा सकती है। नीज़ सह़ाबियात की सीरते

1...الریاض النضرۃ، الباب الاول، ذکر ماجاء فی الحث علی حبھم والاحسان الیھم...الخ، ۱/۲۲

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 601

www.dawateislami.net

त़य्यिबा पर मुश्तमिल कुतुब "**फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन, फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा, शाने ख़ातूने जन्नत**" भी शाएअ़ हो चुकी हैं।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इन कुतुबो रसाइल को पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउनलोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शानो अ़ज़मत के बारे में बयान सुना। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बाद तमाम इन्सानों में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ही सब से ज़ियादा ताज़ीमो तौक़ीर के लाइक़ हैं। येह वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं, जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दावत पर लब्बैक कहते हुए इस्लाम क़बूल किया और अपने तन मन धन से इस्लाम के पैग़ाम को दुन्या के कोने कोने में पहुंचाया। इन मुबारक हस्तियों ने पर्चमे इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये ऐसी बे मिसाल क़ुरबानियां दीं जिन का आज तसव्वुर भी मुश्किल है।

दुआ़ है : अल्लाह पाक हमें भी शम्ए़ रिसालत के इन परवानों की सच्ची उल्फ़तो मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए और इन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मजलिसे "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी नेकी की दावत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद शोबाजात का

क़ियाम अ़मल में लाया गया है, जिन में से एक शोबा **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** भी है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की गिरां क़दर तसानीफ़ को दौरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ह़त्तल मक्दूर आसान अन्दाज़ में पेश करना है। "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के मुख़्तलिफ़ शोबाजात में कमो बेश 70 **मदनी उ़लमा** तह़रीर व तालीफ़ और तह़क़ीक़ी कामों में मसरूफ़े अ़मल हैं। **अल्लाह** पाक दावते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाइयां नसीब फ़रमाए। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना" लगाना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ नेकी की दावत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना "**सदाए मदीना लगाना**" भी है। **दावते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं। यक़ीनन फ़ी ज़माना मुसलमान दीन से बहुत दूर और फ़िक्रे आख़िरत को छोड़ कर दुन्या की फ़िक्र में मसरूफ़ हैं। सुनने नवाफ़िल तो दूर की बात लोगों की अक्सरिय्यत फ़र्ज़ नमाज़ें तक क़ज़ा कर देती हैं। इसी वज्ह से हमारी मसाजिद वीरान हो गईं, ऐसे में इन्हें दोबारा आबाद करने का अ़ज़्म करना और इसी अ़ज़्म की तक्मील के लिये मुसलसल कोशिश करना यक़ीनन सआ़दत की बात है। लिहाज़ा कोशिश कीजिये ! और मसाजिद की आबादकारी के लिये रोज़ाना सदाए मदीना लगाने का मामूल बना लीजिये। जैसा कि

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन और सदाए मदीना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मामूल था कि आप जब नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ लाते तो रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुए आते, नीज़ अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बाद अगर मस्जिद में कोई सोया होता तो उसे भी जगाते।(1)

याद रखिये ! अगर हमारी इनफ़िरादी कोशिश से एक इस्लामी भाई भी नमाज़ी बन गया तो उसे तो नेक आमाल का सवाब मिलेगा ही, साथ ही साथ हम भी उस सवाब से माला माल होंगे। क्यूंकि ‟नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है।”(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसलमान बनने के लिये ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुआ़शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से राहे रास्त पर आ चुके हैं। चुनान्चे,

मदनी बहार

मथुरा (हिन्द) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है, मैं एक मॉडर्न नौजवान था, फ़िल्में ड्रामे देखना मेरा मश्ग़ला था, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाला ऑडियो बयान **‟T.V की तबाहकारियां”** सुनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा, जिस ने मेरी काया पलट दी, मैं दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो गया। (कुछ अ़र्से बाद) मुझे *Appendix* की बीमारी हो गई और

1...الطبقات لابن سعد، رقم ۵۶، عمر بن خطاب، ۳/۲۶۳

2...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر کفاعله، ۴/۳۰۵، حدیث: ۲۶۷۹

डॉक्टर ने ऑपरेशन का मश्वरा दिया। मैं घबरा गया, ऐसे में दावते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की इनफ़िरादी कोशिश से ज़िन्दगी में पहली बार आ़शिक़ाने रसूल के साथ **तीन दिन के लिये सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से बिग़ैर ऑपरेशन के मेरा मरज़ जाता रहा और मेरे जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए, अब हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करता, हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाता और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की ख़ातिर घूम फिर कर **सदाए मदीना** लगाता हूं।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ‘‘जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।’’(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चलने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले ‘‘**163 मदनी फूल**’’ से चलने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं। **पारह 15, सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 37** में इरशादे रब्बुल इ़बाद है :

1....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 247

2...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذبالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ (پ۱۵، بنی اسرآئیل:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

...**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, (अब) वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा।[1] ...रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो कुछ आगे झुक कर चलते, गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं।[2] ...अगर कोई रुकावट न हो, तो रास्ते के कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें। ...राह चलने में परेशान नज़री (यानी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े से चलिये। ...चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो। ...रास्ते में दो औरतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रिये कि ह़दीसे पाक में इस की मुमानअ़त आई है।[3] ...बाज़ लोगों की आ़दत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी आड़े आए उसे लातें मारते हुए चलते हैं, येह बिल्कुल ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रहता है नीज़ अख़्बारात या लिखाई वाले डब्बों, पेकिटों और मिनरल वॉटर की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लातें मारना भी बे अदबी है।

---

1 ...مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم التبختر فی المشی...الخ، ص۸۹۱، حدیث:۵۴۶۷

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی صفۃ النبی، ۵/ ۳۶۴، حدیث:۳۶۵۷

3 ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطریق، ۴/۴۷۰، حدیث:۵۲۷۳

www.dawateislami.net

तृरह तृरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ दो कुतुब (1)....**312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** हिस्सा 16 और (2)....**120 सफ़ह़ात** की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

जो भी शैदाई है मदनी क़ाफ़िलों का या ख़ुदा
दो जहां में उस का बेड़ा पार फ़रमा या ख़ुदा[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाह को अच्छा जानना कैसा ?

सुवाल : गुनाह को अच्छा जानना कैसा ?

जवाब : सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तृरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मासिय्यत (यानी **अल्लाह** व रसूल की नाफ़रमानी) करे उस को अच्छा बताना उस के येह माना होते हैं कि गुनाह, गुनाह नहीं और जिस गुनाह का सुबूत नस्से क़तृई से हो उस के मासिय्यत से होने का इन्कार कुफ़्र है मसलन शराबी, जुवारी, चोर वग़ैरहुम सब ही अच्छे हों तो येह अफ़्आ़ल गुनाह न हुए और इन को गुनाह न जानना क़ुरआने मजीद का इन्कार है।" (फ़तावा अमजदिय्या, 4/455)

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

आ़लिम की सोह़बत इख़्तियार करने के फ़वाइद

...आ़लिमे दीन की सोह़बत इख़्तियार करने से क्या फ़वाइदो समरात ह़ासिल होते हैं ?

...आ़लिमे दीन की सोह़बत इख़्तियार करने के फ़वाइदो समरात बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुह़म्मद समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स आ़लिम की मजलिस में गया, बैठा अगर कुछ ह़ासिल करने की त़ाक़त न भी थी तो भी उसे सात इ़ज़्ज़तें ह़ासिल होंगी : (1) त़ालिबे इ़ल्मों की सी फ़ज़ीलत पाएगा (2) जब तक वहां बैठा रहेगा गुनाहों से बचा रहेगा (3) घर से निकलते ही उस पर रह़मत का फ़ैज़ान शुरूअ़ हो जाएगा (4) उन की मइ़य्यत (साथ होने) में उन पर नाज़िल होने वाली रह़मतों से नवाज़ा जाएगा (5) जब तक सुनता रहेगा नेकियां लिखी जाती रहेंगी (6) उ़लमा की मह़फ़िल की बरकत की वज्ह से फ़िरिश्ते उसे रिज़ाए इलाही के परों से ढांपे रखेंगे (7) उस का हर उठता क़दम गुनाहों का कफ़्फ़ारा, बुलन्दिये दरजात का बाइ़स और नेकियों में इज़ाफ़े का सबब बनेगा। फिर अल्लाह पाक उसे मज़ीद छे इन्आ़मात से नवाज़ेगा : (1) उ़लमा की मजलिस को पसन्द करने की वज्ह से अल्लाह करीम उसे करामत अ़त़ा फ़रमाएगा (2) जो भी उस की पैरवी करेगा तो उन की नेकियों में कमी किये बिग़ैर उतना ही सवाब उसे ह़ासिल होगा (3) उन में से किसी की बख़्शिश की गई तो उस की शफ़ाअ़त करेगा (4) बदकारों की मह़फ़िल से उस का दिल उकता जाएगा (5) त़लबा और नेक लोगों के रास्ते में दाख़िल होगा (6) अल्लाह पाक के अह़काम की पैरवी करने वाला होगा क्यूं कि फ़रमाने इलाही है :

كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ

(پ۳، اٰل عمرٰن:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह वाले हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो।

येह सब इ़ज़्ज़तें तो उस शख़्स को ह़ासिल होंगी जिस ने कुछ याद न किया, जिस ने सीख कर याद भी किया उसे कई गुना अज्र मिलेगा।

(تنبیہ الغافلین، ص۲۳۷تا۲۳۸)

HASNAINE KARIMAIN KI SHANO AZAMAT

(HINDI BAYAAN)

हसनैने करीमैन की शानो अज़मत

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझ से कहा कि, रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मुह़म्मद ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक सलाम भेजे, मैं उस पर 10 सलाम भेजूं !(1)

रब्बे आला की नेमत पे आला दुरूद ह़क़ तआ़ला की मिन्नत पे लाखों सलाम(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुह़र्रमुल ह़राम शरीफ़ का बा बरकत महीना जारियो सारी है, इस मुबारक महीने को अहले बैते अत़्हार और इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे तिश्ना काम सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा और इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के साथ एक ख़ास निस्बत है, इसी मुनासबत से ह़सनैने करीमैन की शानो अ़ज़मत के बारे में पढ़ने सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। चुनान्चे,

ह़सनैने करीमैन और भयानक अज़्दहा !

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम बारगाहे रिसालत में बैठे थे कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़सन व

1 ...نسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ص ۲۲۲، حدیث: ۱۲۹۲

2 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 298

www.dawateislami.net

हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) मिल नहीं रहे ना जाने कहां चले गए हैं, दिन ख़ूब निकला हुवा था, आप ने सहाबए किराम (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) से इरशाद फ़रमाया : चलो मेरे बेटों को तलाश करो, हर एक तलाश के लिये किसी न किसी रास्ते चल दिया जब कि मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल पड़ा, आप मुसलसल चलते रहे, हत्ताकि हम एक पहाड़ के दामन में पहुंच गए, (देखा कि) हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) एक दूसरे से चिमटे हुए हैं और एक अज़्दहा उन के पास अपनी दुम पर खड़ा है और उस के मुंह से आग के शोले निकल रहे हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ी से आगे बढ़े तो वोह अज़्दहा आप को देख कर सुकड़ गया और फिर पथ्थरों में छुप गया, आप हसनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا के पास तशरीफ़ लाए और दोनों को अलग अलग कर के उन के चेहरों को साफ़ किया और इरशाद फ़रमाया : मेरे मां बाप तुम पर कुरबान ! तुम **अल्लाह** पाक के हां कितनी इ़ज़्ज़त वाले हो ! ! ![1]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हसनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) से इस क़दर मह़ब्बत फ़रमाते थे कि दोनों शहज़ादों को तक्लीफ़ में मुब्तला देखना आप को गवारा न था, इसी लिये जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बताया गया कि हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) गुम हो गए हैं तो आप ने बे क़रार हो कर सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के साथ उन की तलाश शुरूअ़ कर दी। और भी बहुत सी अह़ादीसे मुबारका में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दोनों शहज़ादों से बे इन्तिहा मह़ब्बत का सुबूत मिलता है। चुनान्चे,

---

1... معجم کبیر، ۳/ ۶۵، حدیث: ۲۶۷۷

www.dawateislami.net

महबूबे खुदा के सब से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : अहले बैत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़ियादा प्यारा कौन है ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : हसन और हुसैन। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया करते कि मेरे बच्चों को मेरे पास बुलाओ, फिर उन्हें सूंघते और अपने साथ चिमटा लेते थे।(1)

शर्हे हदीस

मशहूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : "महब्बत की बहुत क़िस्में हैं : औलाद से महब्बत और क़िस्म की है, अज़्वाज से और क़िस्म की, दोस्तों से और क़िस्म की। औलाद में हज़राते हसनैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बहुत प्यारे हैं, अज़्वाज में हज़रते आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) महबूबए महबूबे रब्बिल आलमीन हैं, दोस्त व अहबाब में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत प्यारे हैं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उन्हें क्यूं न सूंघते, वोह दोनों तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के फूल थे, फूल सूंघे ही जाते हैं, उन्हें कलेजे से लगाना, लिपटाना इन्तिहाई महब्बत व प्यार के लिये था। इस से मालूम हुवा कि छोटे बच्चों को सूंघना, उन से प्यार करना, उन्हें लिपटाना, चिमटाना सुन्नते रसूलुल्लाह है।"(2)

---

1 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن... الخ، ۵/ ۴۲۸، حدیث: ۳۷۹۷

2 ....मिरआतुल मनाजीह, 8/ 478

सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी बात को अश्आ़र की सूरत में यूं बयान फ़रमाया :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की

ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन ह़ज़रात की मह़ब्बत दिलों में मज़ीद पुख़्ता करने और इन की सीरत व किरदार पर अ़मल करने की निय्यत से इन का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं।

नाम, कुन्यत और अल्क़ाबात

ह़सनैने करीमैन में से बड़े ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। आप की कुन्यत "**अबू मुह़म्मद**" और लक़ब "**तक़ी व सय्यिद**" है, मारूफ़ लक़ब "**सिब्तु रसूलिल्लाह**" और "**रैह़ानतुर्रसूल**" है (यानी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे और फूल हैं)। आप जन्नती जवानों के सरदार हैं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादते मुबारका 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी की शब में मदीनए त़य्यिबा में हुई। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सातवें रोज़ आप का अ़क़ीक़ा किया और ह़ल्क़ करवा कर हुक्म दिया कि बालों के वज़्न के बराबर चांदी सदक़ा की जाए।[2]

आप का नाम, इमामुल अम्बिया, सय्यिदुल अस्ख़िया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रखा। वाक़िआ़ कुछ यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत का मुज़्दा पहुंचाया। तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़

1....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79

2...تاریخ الخلفاء، الحسن بن علی بن ابی طالب، ص۱۴۹۔روضۃ الشھداء(مترجم)،۱/ ۳۹۲

www.dawateislami.net

लाए और इरशाद फ़रमाया : अस्मा ! मेरे फ़रज़न्द को लाओ, आप ने (इमामे ह़सन को) एक कपड़े में (लपेट कर) ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर किया। आप ने दाएं कान में अज़ान दी और बाएं में तक्बीर कही और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम ने इस फ़रज़न्दे अर्जुमन्द का क्या नाम रखा है ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी क्या मजाल कि बे इज़्न व इजाज़त नाम रखने पर सबक़त करता, लेकिन अब जो दरयाफ़्त फ़रमाया है तो मेरा ख़याल है कि "**ह़र्ब**" नाम रखा जाए, बाक़ी आप मुख़्तार हैं। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का नाम **ह़सन** रखा।(1)

ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया   राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम(2)

शेर की वज़ाह़त : वोह इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो कि सख़ियों के सरदार हैं, जो अपने नानाजान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे कांधों पर सुवार होते थे, उन की ज़ाते मुबारक पर लाखों सलाम।

सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के छोटे भाई सय्यिदुश्शुहदा, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की विलादत 5 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 4 हिजरी मदीनए मुनव्वरा में हुई। ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप का नाम "**हु़सैन**" रखा, आप की कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" और इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रह़ आप का लक़ब भी "**सिब्त़ु रसूलिल्लाह**" और "**रैह़ानतुन्नबी**" है। आप भी जन्नती जवानों के सरदार हैं।(3)

---

(1)....सवानेह़े करबला, स. 92, मुलख़्ख़सन। रौज़तुश्शुहदा (मुतर्जिम) 1/ 396,397

(2)....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309

(3)... اسد الغابۃ، رقم ۱۱۷۳، الحسین بن علی، ۲/ ۲۵، ۲۶ ملتقطاً

سیر اعلام النبلاء، رقم ۲۷۰، الحسین الشھید...الخ، ۴/ ۴۰۲، ۴۰۴

नाम अच्छे रखा करो !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपनी औलाद के नाम अच्छे तजवीज़ करने चाहियें और बुज़ुर्गाने दीन के नामों पर नाम रखने चाहियें, अभी हम ने सुना कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे नवासों के नाम ख़ुद तजवीज़ फ़रमाए और इरशाद फ़रमाया कि "मैं ने इन के नाम ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام के बेटों के नामों पर रखे हैं।"(1) आइये ! इसी ज़िम्न में नाम रखने के कुछ आदाब भी सुन लेते हैं। अच्छे नाम रखना औलाद के हुक़ूक़ में से है और वालिदैन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा भी है, जिसे वोह उ़म्र भर अपने सीने से लगाए रखता है, यहां तक कि जब मैदाने ह़श्र बपा होगा तो वोह उसी नाम से मालिके काएनात عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बुलाया जाएगा, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे, लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।"(2)

इस ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने बच्चे का नाम किसी गुलूकार, फ़िल्मी अदाकार या مَعَاذَاللّٰہ कुफ़्फ़ार के नाम पर रखते हैं, इस से बद तरीन ज़िल्लत क्या होगी कि मुसलमान की औलाद को कल मैदाने मह़शर में कुफ़्फ़ार के नामों से पुकारा जाए। وَالْعِیَاذُبِاللّٰہ हमारे मुआ़शरे में बच्चे के नाम का इन्तिख़ाब करने की ज़िम्मेदारी उ़मूमन किसी क़रीबी रिश्तेदार मसलन दादी, फूफी, चचा वग़ैरा को सोंप दी जाती है और बाज़ अवक़ात इ़ल्मे दीन से दूरी की वज्ह से वोह बच्चों के ऐसे नाम रख देते हैं, जिन के कोई मआ़नी नहीं होते या फिर अच्छे मआ़नी नहीं होते, या फिर शरअ़न दुरुस्त नहीं होते, ऐसे नाम रखने से बचना

1 ...اسد الغابۃ، رقم ۱۱۷۳، الحسین بن علی، ۲/۲۶

2 ...ابی داود، کتاب الادب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث ۴۹۴۸

चाहिये, बाज़ अवक़ात ऐसा नाम भी तलाश किया जाता है जो घर, ख़ानदान या मह़ल्ले में दूर दूर तक किसी का न हो, जो भी सुने तो कह उठे कि येह नाम तो पहली बार सुना है, कैसा ज़बरदस्त नाम रखा है ? येह अल्फ़ाज़ सुन कर नाम रखने वाला फूले नहीं समाता, लेकिन ऐसों को एक लम्ह़े के लिये सोच लेना चाहिये कि कहीं येह ख़ुशी **हुब्बे जाह** (यानी तारीफ़ की ख़्वाहिश) के मरज़ का नतीजा तो नहीं, लिहाज़ा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबारका और सह़ाबए किराम व ताबेईने इ़ज़्ज़ाम और औलिया उल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के नामों पर नाम रखने चाहियें, जिस का एक फ़ाएदा तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ (यानी बुज़ुर्गों) से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों का नाम रखने की बरकत से उस की ज़िन्दगी में मदनी असरात भी मुरत्तब होंगे। नामों के ह़वाले से मज़ीद दिलचस्प और ह़ैरत अंगेज़ मालूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 180 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नाम रखने के अह़काम**" का मुत़ालआ़ कीजिये कि इस किताब में बच्चों के सेंकड़ों अच्छे नामों की फ़ेहरिस्त मौजूद है, नीज़ नाम रखने के बारे में कसीर मदनी फूल जगह जगह अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नानाए ह़सनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ऐसी शानो अ़ज़मत बयान फ़रमाई है जिसे सुन कर اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल में उन की मह़ब्बत मज़ीद बढ़ेगी। चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा हों। चुनान्चे,

फ़ज़ाइले ह़सनैन ब ज़बाने मुस्त़फ़ा

مَنْ اَحَبَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمَا فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ....(1) यानी जिस

ने ह़सन व हुसैन से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने इन से अ़दावत (दुश्मनी) की उस ने मुझ से अ़दावत रखी ।(1)

(2)....هُمَا رَيْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْيَا यानी ह़सन व हुसैन दुन्या में मेरे दो फूल हैं ।(2)

आ़शिक़े सह़ाबाओ अहले बैत, सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
कीजिये रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल(3)

(3)....اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ यानी ह़सन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं ।(4)

ह़सनैने करीमैन से मह़ब्बत वाजिब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब येह आयते मुबारका :

قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ؕ (پ۲۵،شورٰی:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की मह़ब्बत ।

नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : आप के वोह कौन से क़राबत दार हैं जिन से मह़ब्बत करना हम पर वाजिब

1 ...ابن ماجه، كتاب السنة، باب فی فضائل اصحاب رسول اللّٰه، ۱/۹۶، حديث:۱۴۳
2 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین، ۲/ ۵۴۷، حدیث:۳۷۵۳
3 ....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 77
4 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی ... الخ، ۵/۴۲۶، حدیث:۳۷۹۳

है ? इरशाद फ़रमाया : अ़लिय्युल मुर्तज़ा, फ़ातिमतुज़्ज़हरा और इन के बेटे ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا)[1]

बुला लो हम ग़रीबों को बुला लो या रसूलल्लाह

पए शब्बीरो शब्बर फ़ातिमा हैदर मदीने में[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि अहले बैत की मह़ब्बत वाजिब व ज़रूरी है, हर मुसलमान के नज़दीक अपनी जानो माल, इ़ज़्ज़तो आबरू, मां बाप और औलाद से भी ज़ियादा मह़बूब, अहले बैते किराम होने चाहियें । इन मुबारक हस्तियों की मह़ब्बत, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत है और मह़ब्बते रसूल ईमाने कामिल की निशानी है । चुनान्चे,

ईमाने कामिल की निशानी

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "لَا یُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ نَّفْسِہٖ" यानी कोई बन्दा कामिल मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मुझे अपनी जान से बढ़ कर न चाहे "وَ ذَاتِیْ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ ذَاتِہٖ" और मेरी ज़ात, उसे अपनी ज़ात से बढ़ कर मह़बूब न हो "وَتَکُوْنَ عِتْرَتِیْ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ عِتْرَتِہٖ" और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से ज़ियादा प्यारी न हो "وَ یَکُوْنَ اَھْلِیْ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ اَھْلِہٖ" और मेरे अहले बैत उसे अपने घरवालों से बढ़ कर प्यारे और मह़बूब न हों ।[3]

---

1 ...معجم کبیر، ۳/ ۴۷، حدیث: ۲۶۴۱

2 ....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 281

3 ...شعب الایمان، باب فی حب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، فصل فی برائتہ فی النبوۃ، ۲/ ۱۸۹، حدیث: ۱۵۰۵

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइले अहले बैत ब ज़बाने क़ुरआन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अहले बैते अत़्हार عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की शान बयान करते हुए **अल्लाह** पाक **पारह 22, सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 33** में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا یُرِیۡدُ اللّٰہُ لِیُذۡہِبَ عَنۡکُمُ الرِّجۡسَ اَہۡلَ الۡبَیۡتِ وَ یُطَہِّرَکُمۡ تَطۡہِیۡرًا ﴿ۚ۳۳﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घरवालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे ।

अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम की राए है कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के ह़क़ में नाज़िल हुई ।

एक रिवायत में है कि हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन ह़ज़रात के साथ अपनी बाक़ी साहिब ज़ादियों, क़राबतदारों और अज़्वाजे मुत़ह्हरात को भी शामिल फ़रमाया ।(1)

इमाम त़बरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : यानी ऐ आले मुह़म्मद ! **अल्लाह** तआ़ला चाहता है कि तुम से बुरी बातों और फ़ोह़्श चीज़ों को दूर रखे और तुम्हें गुनाहों के मैल कुचैल से पाको साफ़ कर दे ।(2)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : येह आयते करीमा अहले बैते किराम के फ़ज़ाइल का मम्बअ़ है और मालूम होता है कि तमाम अख़्लाक़े

1 ...الصواعق المحرقۃ، الباب الحادی عشر، الفصل الاول، ص ۱۴۴

2 ...تفسیر طبری، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۳۳، ۱۰/ ۲۹۶

www.dawateislami.net

दनिय्या (घटिया अख़्लाक़) व अह्वाले मज़्मूमा (ना पसन्दीदा अह्वाल) से इन की ततहीर (पाकी व तहारत) फ़रमाई गई। बाज़ अहादीस में मरवी है कि अहले बैत, नार पर हराम (यानी अहले बैत जन्नती) हैं और येही इस ततहीर का फ़ाएदा और समरा है और जो चीज़ इन के अह्वाले शरीफ़ा के लाइक़ न हो उस से इन का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इन्हें महफ़ूज़ रखता और बचाता है।[1]

हमें भी अहले बैत से मह़ब्बत क़ाइम रखते हुए इन के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करनी चाहिये, **अल्लाह** पाक इन के सदक़े हमें भी गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और जन्नत में इन नेक हस्तियों का क़ुर्ब अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

पारहाए सुहुफ़ ग़ुन्चहाए क़ुदुस अहले बैते नबुव्वत पे लाखों सलाम
आबे ततहीर से जिस में पौदे जमे उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम
ख़ूने ख़ैरुर्रुसुल से है जिन का ख़मीर उन की बे लौस त़ीनत पे लाखों सलाम[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़सनैने करीमैन से इतनी मह़ब्बत थी कि कभी दोनों शहज़ादों को अपने कांधों पर सुवार कर लिया करते, नमाज़ में सजदे की ह़ालत में पुश्ते अत़्हर पर सुवार होते तो आप सजदा त़वील कर देते और जब सजदे से **सरे अन्वर** उठाते तो उन्हें आराम से ज़मीन पर बिठा देते। चुनान्चे,

ह़सनैने करीमैन की नाज़ बरदारियां

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक रोज़ हम इक़्तिदाए मुस्त़फ़ा में नमाज़े इशा अदा कर रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब

[1]....सवानेहे करबला, स. 82

[2]....हदाइक़े बख़्शिश, स. 309

www.dawateislami.net

सजदे में गए तो इमामे ह़सन और इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) आप की पुश्ते मुबारक पर सुवार हो गए। आप ने सजदे से सर उठाया तो उन को नर्मी से पकड़ कर ज़मीन पर बिठा दिया, दोबारा सजदे में गए तो दोनों शहज़ादों ने फिर ऐसे ही किया ह़त्ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ मुकम्मल फ़रमा ली फिर इन दोनों को अपनी मुक़द्दस रानों पर बिठा लिया।[1] इसी त़रह़ बचपन में एक मरतबा ख़ुत़बे के दौरान दोनों शहज़ादे गिरते पड़ते मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़बा छोड़ कर उन के पास गए और उठा कर उन्हें अपने सामने बिठा लिया।[2]

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से शफ़्क़त व मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बोसा दिया, अपने सीने से लगा लिया और सूंघने लगे, इस क़दर शफ़्क़त व मह़ब्बत देख कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा भी एक बेटा है जो अब जवानी की दहलीज़ पर क़दम रख चुका है, मगर मैं ने उसे कभी नहीं चूमा। आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे दिल से **रह़मत** निकाल ली है तो इस में मेरा क्या क़ुसूर है ?[3]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अपने बच्चों के साथ प्यारो मह़ब्बत से पेश आएं, हर मुआ़मले में उन के साथ मुश्फ़िक़ाना बरताव करें और

1... مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۵۹۲، حدیث: ۱۰۶۶۴

البدایۃ والنہایۃ، ثم دخلت سنۃ احدی وستین، شیٔ من فضائلہ، ۵/۷۱۶

2... ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی ... الخ، ۵/۴۲۹، حدیث ۳۷۹۹

3... مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب حب الصبیان من رحمۃ اللہ تعالی، ۴/۱۶۱، حدیث: ۴۸۴۶

उन्हें अपने साथ मानूस रखें। बात बात पर मार पीट करना, झिड़कना, आंखें दिखाना नुक़्सान का बाइस बन सकता है, बच्चों की दिलजूई और उन की बेहतर तरबियत व परवरिश की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। बच्चों की बेहतर तरबियत के लिये मक्तबतुल मदीना की दो मत़्बूआ़ कुतुब "**तरबियते औलाद**" और "**औलाद के हुक़ूक़**" का मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद रहेगा। बच्चों से शफ़्क़त व महब्बत का बरताव करते हुए उन्हें खुश रखने की कोशिश करनी चाहिये कि बच्चों को खुश रखने की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्चे,

बच्चों को खुश रखने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में एक घर है जिसे "दारुल फ़रह़" (यानी खुशी का घर) कहा जाता है। इस में वोही लोग दाख़िल होंगे जो बच्चों को खुश करते हैं।"(1)

बच्चों से कैसा बरताव किया जाए ?

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सुवाल हुवा कि "बाप पर औलाद के क्या हुक़ूक़ हैं ?" तो जवाब में फ़रमाया : बाप "खुदा की इन अमानतों के साथ मेहरो लुत़्फ़ (शफ़्क़त व महब्बत) का बरताव रखे, इन्हें प्यार करे, बदन से लिपटाए, कन्धे पर चढ़ाए। इन के हंसने, खेलने, बहलने की बातें करे, इन की दिलजूई, दिलदारी, रिआ़यत व मुह़ाफ़ज़त हर वक़्त ह़त्ताकि नमाज़ व ख़ुत़्बे में भी मल्ह़ूज़ रखे। नया मेवा, नया फल पहले इन्हीं को दे कि वोह भी ताज़े

---

(1) ...الکامل لابن عدی، رقم ۴۵، ابو محمد احمد بن حفص بن عمر، ۱/۳۲۸

www.dawateislami.net

फल हैं, नए को नया मुनासिब है। कभी कभी ह़स्बे मक्दूर (ह़स्बे इस्तित़ाअ़त) इन्हें शीरीनी वग़ैरा खाने, पहनने, खेलने की अच्छी चीज़ (जो) कि शरअ़न जाइज़ है, देता रहे। बहलाने के लिये झूटा वादा न करे, बल्कि बच्चे से भी वादा वोही जाइज़ है जिस को पूरा करने का इरादा रखता हो। चन्द बच्चे हों तो जो चीज़ दे सब को बराबर व यक्सां दे, एक को दूसरे पर दीनी फ़ज़ीलत के बिग़ैर तरजीह़ न दे।"(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बच्चों से मह़ब्बत का एक अन्दाज़ येह भी है कि हर त़रह़ से उन का ख़याल रखा जाए, आने वाले ख़त़रात से उन्हें मह़फ़ूज़ रखने के लिये इक्दामात किये जाएं, जैसा कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को दम फ़रमाया करते थे और इरशाद फ़रमाते कि मैं तुम्हें कलिमातुल्लाह (**अल्लाह** के कलिमात) की पनाह में देता हूं। चुनान्चे,

दम-दुरूद करने का जवाज़

बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को कलिमाते तअ़व्वुज़ के साथ दम फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते : तुम्हारे जद्दे अमजद यानी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام भी अपने साह़िबज़ादों ह़ज़रते इस्माईल व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِمَا السَّلَام को इन्ही कलिमात के साथ दम फ़रमाया करते थे। (कलिमाते तअ़व्वुज़ येह हैं :) اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ

1....फ़तावा रज़विय्या, 24/453 मुलख़्ख़सन

"यानी मैं **अल्लाह** पाक के कामिल कलिमात के ज़रीए हर शैतान व ज़हरीले जानवर और हर नज़रे बद से पनाह मांगता हूं।"(1)

शर्हे हदीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : कलीमातुल्लाह (**अल्लाह** के कलिमात) से मुराद सारे अस्माए इलाहिय्या (**अल्लाह** के नाम) हैं, चूंकि वोह हर नक़्स (कमी) और ख़राबी से पाक हैं, इस लिये इन्हें **ताम्मात** कहा गया, जैसे **अल्लाह** की पनाह लेना ज़रूरी है, ऐसे ही उस के नामों की पनाह भी ज़रूरी है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : जिन्न और नज़रे बद से भी इन्सान बीमार हो जाता है, जिन्न का असर कुरआने करीम से साबित है।(2)

कुरआने पाक में बीमारियों से शिफ़ा है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक से दम वग़ैरा के जवाज़ का सुबूत मिलता है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने प्यारे नवासों को दम फ़रमाया करते थे। कुरआने मजीद की आयाते मुबारका के ज़रीए बीमारों पर दम करने से मुतअ़ल्लिक़ कई रिवायात मौजूद हैं : चुनान्चे,

मुस्लिम शरीफ़ में है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहल में से जब कोई बीमार होता तो आप उस पर قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس पढ़ कर दम फ़रमाते।(3)

---

1 ...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب:۱۱، ۲/۴۲۹، حدیث:۳۳۷۱

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 2/ 409 मुलतक़तन

3 ...مسلم، کتاب السلام، باب رقیۃ المریض بالمعوذات و النفث، ص ۹۲۹، حدیث: ۵۷۱۴

www.dawateislami.net

सय्यिदी आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जाइज़ तावीज़ कि कुरआने करीम या अस्माए इलाहिय्या (यानी **अल्लाह** पाक के नामों) या दीगर अज़्कार व दावात (दुआओं) से हो, उस में अस्लन (बिल्कुल) हरज नहीं बल्कि मुस्तहब है । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे ही मक़ाम में फ़रमाया कि مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَّنْفَعَ اَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ[1] यानी तुम में जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को नफ़्अ़ पहुंचा सके (तो उसे नफ़्अ़) पहुंचाए ।''[2]

ख़िलाफ़े शरअ़ तावीज़ात व कलिमात का हुक्म

अलबत्ता ग़ैर शरई तावीज़ात और ग़ैर शरई कलिमात वाले दम नाजाइज़ हैं जैसा कि सय्यिदी आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''वोह मक़्सूद जिस के लिये वोह तावीज़ या अ़मल किया जाए, अगर ख़िलाफ़े शरअ़ हो, नाजाइज़ हो जाएगा, जैसे औ़रतें तस्ख़ीरे शौहर (शौहर को मग़लूब करने) के लिये तावीज़ कराती हैं, येह हुक्मे शरअ़ का अ़क्स (यानी ख़िलाफ़े शरीअ़त) है, यूंही तफ़रीक़ व अ़दावत (यानी आपस में जुदाई डालने और दुश्मनी पैदा करने) के अ़मल व तावीज़ कि महारिम (रिश्तेदारों) में किये जाएं, मसलन भाई को भाई से जुदा करना, येह क़त्ए़ रेह़्म है और क़त्ए़ रेह़्म ह़राम, यूंही ज़न व शौ (मियां-बीवी) में निफ़ाक़ डलवाना (भी ह़राम है) ।[3]

मजलिसे मक्तूबातो तावीज़ाते अ़त्तारिय्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ी ज़माना शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन के जज़्बे के तह़त जहां दीगर शोबाजात क़ाइम फ़रमाए हैं,

1 ...مسلم، کتاب الطب، باب استحباب رقیۃ من العین... الخ، ص۹۳۱، حدیث:۵۷۳۱

2 ......फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 168

3 ......फ़तावा रज़विय्या, 24/196

वहीं "मजलिसे मक्तूबातो तावीज़ाते अ़त्तारिय्या" का शोबा भी क़ाइम फ़रमाया है, जिस के तहूत न सिर्फ़ मक्तूबात के ज़रीए परेशान हालों की गमख़्वारी की जाती है, बल्कि अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّه के अ़ताकर्दा तावीज़ात और औरादो वज़ाइफ़ के ज़रीए मुख़्तलिफ़ परेशानियों का हल और बीमारों का इलाज करने की कोशिश की जाती है, हर माह तक़रीबन एक लाख पच्चीस हज़ार मरीज़ों को चार लाख से ज़ाइद तावीज़ात और औराद दिये जाते हैं, येह तावीज़ात आप "तावीज़ाते अ़त्तारिय्या" के बस्ते से फ़ी सबीलिल्लाह ब आसानी हासिल कर सकते हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक सीने तक मुशाबेह इक वहां से पाउं तक

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हसनैने करीमैन की शानो अज़मत और प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उन से महब्बत व शफ़्क़त के बारे में सुना, मज़ीद कुछ सुनते हैं ताकि हमारा ईमान ताज़ा और महब्बते अहले बैत में इज़ाफ़ा हो। चुनान्चे, आशिक़े सहाबाओ अहले बैत, सय्यिदी आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हसनैने करीमैन की शानो अज़मत यूं बयान करते हैं :

मादूम न था सायए शाहे सक़्लैन
उस नूर की जल्वा गह थी ज़ाते हसनैन
तम्सील ने उस साया के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन[2]

---

1 ......वसाइले बख़्शिश, स. 315

2 ......हदाइक़े बख़्शिश, स. 444

शेर की वज़ाहत : यूं तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक साया सूरज की धूप और चांद की रौशनी में ज़मीन पर न पड़ता था, मगर जब आप के फ़ैज़ान का साया हसनैने करीमैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا पर पड़ा तो सरे अन्वर से सीनए मुबारका तक इमामे हसन और वहां से क़दमैने शरीफ़ैन तक इमामे हुसैन मुशाबेह हो गए।

और क़सीदए नूर में लिखते हैं :

एक सीने तक मुशाबेह इक वहां से पाउं तक
हुस्ने सिब्तैन इन के जामों में है नीमा नूर का
साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से इयां
ख़त्ते तौअम में लिखा है येह दो वर्क़ा नूर का(1)

याद रखिये ! सय्यिदी आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शाइरी क़ुरआनो हदीस की तर्जमानी और बुज़ुर्गों के अक़्वाल व अह़वाल के मुताबिक़ है। आला हज़रत ने हसनैने करीमैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाबहत को यूं ही नहीं लिख दिया बल्कि

तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि सय्यिदुल औलिया, मौला मुश्किल कुशा, शेरे ख़ुदा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : **हसन** मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर से ले कर सीनए मुबारका तक मुशाबेह और **हुसैन** सीनए मुबारका से क़दमैने शरीफ़ैन तक मुशाबेह थे।(2)

---

(1)......हदाइक़े बख़्शिश, स. 249

(2)...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی ... الخ، ۵ / ۴۳۰، حدیث: ۳۸۰۴

www.dawateislami.net

शर्हे हदीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अज़ सर ता क़दम बिल्कुल हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साहिब ज़ादगान यानी हसनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا में येह मुशाबहत तक़्सीम कर दी गई थी, हज़रते इमामे हुसैन की पिन्डली क़दम शरीफ़ तक और एड़ी बिल्कुल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुदरती मुशाबहत भी **अल्लाह** तआला की नेमत है जो अपने किसी अमल को हुज़ूर के मुशाबेह कर दे तो उस की बख़्शिश हो जाती है, तो जिसे ख़ुदा तआला अपने महबूब के मुशाबेह करे, उस की महबूबिय्यत का क्या हाल होगा ![1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अहले बैत और प्यारे नवासों से बे इन्तिहा महब्बत करते देखा तो आप से निस्बत की वज्ह से येह हज़रात भी उन से महब्बत व शफ़्क़त से पेश आते और आप के विसाले ज़ाहिरी के बाद भी अहले बैते अतहार और बिल ख़ुसूस **हसनैने करीमैन** का बेहद ख़याल रखा करते। चुनान्चे,

सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत से महब्बत

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब ख़लीफ़तुर्रसूल मुन्तख़ब हुए तो मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़राबत दारी की वज्ह

1....मिरआतुल मनाजीह, 8 / 480

www.dawateislami.net

से आप अहले बैते अत़हार का बहुत ख़याल रखा करते और फ़रमाया करते थे कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़ारिब (रिश्तेदार) मुझे अपने रिश्तेदारों से ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं।"(1)

फ़ारूक़े आज़म की इमामे हुसैन से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन सईद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : मेरे पास आते रहा करें। एक मरतबा आप उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मुलाक़ात हुई, इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन से पूछा : कहां से आ रहे हैं ? कहा : वालिद साह़िब के पास गया था लेकिन ह़ाज़िरी की इजाज़त नहीं मिली (लिहाज़ा लौट आया)। येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी लौट आए। बाद में अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने फ़रमाया : ऐ हुसैन ! हमारे पास क्यूं नहीं आते ? आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : मैं ह़ाज़िर हुवा था लेकिन आप के शहज़ादे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने बताया कि मुझे अपने वालिद की बारगाह में ह़ाज़िरी की इजाज़त नहीं मिली, लिहाज़ा मैं भी लौट आया (कि जब उन्हें इजाज़त नहीं मिली तो मुझे क्यूं कर मिलेगी)। येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : मेरे नज़दीक आप का मर्तबा अ़ब्दुल्लाह से कहीं ज़ियादा है, मेरे सर पर येह जो बाल हैं येह आप ही ने तो उगाए हैं।(2)

1...بخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی نضیر.....الخ، ۳ / ۲۹، حدیث: ۴۰۳۶

2...ابن عساکر، الحسین بن علی ... الخ، ۱۴/ ۱۷۵

www.dawateislami.net

मौला अ़ली की बेटे पर शफ़्क़त

हज़रते सय्यिदुना अस्बग़ बिन नुबाता رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हुए तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बेटे की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए, हम भी साथ थे। आप ने ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हुए फ़रमाया : अब त़बीअ़त कैसी है ? अ़र्ज़ की : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेहतर हूं। फ़रमाया : अगर **अल्लाह** पाक ने चाहा तो बेहतर ही रहोगे। हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मुझे सहारा दीजिये। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपने सीने से टेक लगा कर बिठा दिया। हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया था कि ऐ मेरे बेटे ! जन्नत में एक दरख़्त है जिसे शजरतुल बल्वा कहा जाता हैं, आज़्माइश में मुब्तला लोगों को क़ियामत के दिन उस दरख़्त के पास जम्अ़ किया जाएगा, जब कि उस वक़्त न मीज़ान रखा गया होगा और न ही आमाल नामे खोले गए होंगे, उन्हें पूरा पूरा अज्र दिया जाएगा। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (پ۲۳، الزمر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की अपने शहज़ादे इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से शफ़्क़त व मह़ब्बत का इ़ल्म हुवा, वहीं इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के

---

1 ...الدعاء للطبرانی، جواب المریض اذا سئل عن نفسه، ص۳۴۷، حدیث: ۱۱۳۸

www.dawateislami.net

बयान कर्दा फ़रमाने मुस्तफ़ा से येह भी मालूम हुवा कि परेशानियों, मुसीबतों और आज़्माइशों पर सब्र करने वालों को क़ियामत के दिन उन के सब्र का पूरा पूरा अज्र दिया जाएगा। याद रखिये ! अल्लाह पाक के हर काम में हज़ारहा हिक्मतें पोशीदा होती हैं, जिन का हमें इल्म नहीं होता। लिहाज़ा हर एक के सामने अपनी परेशानी, ग़रीबी व मुफ़्लिसी का रोना रोने, अपने दुखड़े सुनाने और तंगदस्ती के सबब مَعَاذَ اللّٰه रब तआला की ज़ात पर बेजा एतिराज़ात कर के अपनी ज़बान से कुफ़्रिय्यात बकने के बजाए, आज़्माइशों और तक्लीफ़ों का सामना करते हुए सब्रो तहम्मुल से काम लेना चाहिये, क्यूंकि येह मुसीबतें और बलाएं गुनाहों के कफ़्फ़ारे और दरजात में बुलन्दी का बाइस होती हैं। चुनान्चे,

आफ़िय्यत में रहने वालों की तमन्ना

अल्लाह पाक के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत अहले बला (यानी बीमारों और आफ़तज़दों) को जब सवाब अता किया जाएगा तो आफ़िय्यत वाले तमन्ना करेंगे कि काश ! दुन्या में हमारी खालें कैंचियों से काटी जातीं।(1)

शर्हे हदीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस हदीसे पाक के जुज़ "**काश ! दुन्या में हमारी खालें कैंचियों से काटी जातीं**" के तहत फ़रमाते हैं : "यानी (आफ़िय्यत में रहने वाले येह) तमन्ना व आरज़ू करेंगे कि हम पर दुन्या में ऐसी बीमारियां आई होतीं, ताकि हम को भी वोह सवाब आज मिलता जो दूसरे बीमारों और आफ़तज़दों को मिल रहा है"।(2)

---

1 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب ۵۹، ۴/ ۱۸۰، حدیث: ۲۴۱۰

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 2/ 424

बाज़ अवक़ात मुसलमान अपनी ख़स्ताहाली और काफ़िरों की ऐ़शो इ़श्रत से भरपूर ज़िन्दगी को देख कर भी वस्वसों का शिकार हो जाता है और उस के ज़ेहन में त़रह़ त़रह़ के सुवालात पैदा होते हैं, ह़ालांकि इस में भी **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की बहुत बड़ी ह़िक्मत पोशीदा है। चुनान्चे,

मोमिन को आज़माइश में मुब्तला करने की ह़िक्मत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मोमिन बन्दा तेरी इत़ाअ़त करता और तेरी ना फ़रमानी से बचता है (लेकिन) तू उस के लिये दुन्या तंग फ़रमा कर उसे आज़माइशों में डालता है जब कि काफ़िर तेरी इत़ाअ़त नहीं करता बल्कि तुझ पर और तेरी ना फ़रमानी पर जुरअत करता है, फिर भी तू उस से मुसीबत को दूर रखता और दुन्या उस के लिये कुशादा कर देता है ? (इस में क्या ह़िक्मत है ?) तो **अल्लाह** पाक ने उन की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि बेशक बन्दे भी मेरे हैं और मुसीबत भी मेरे इख़्तियार में है और सब मेरी ह़म्द के साथ मेरी तस्बीह़ करते हैं। मोमिन बन्दे के कुछ **गुनाह** होते हैं तो मैं उस से दुन्या को दूर कर के उसे मुसीबतों में मुब्तला करता हूं नतीजतन वोह मुसीबतें उस के **गुनाहों का कफ़्फ़ारा** बन जाती हैं, फिर जब वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उसे उस की नेकियों की जज़ा दूंगा। रहा काफ़िर तो उस के कुछ अच्छे काम होते हैं, मैं उसे वफ़िर दुन्या दे कर और मुसीबतों से दूर रख कर उसे दुन्या में ही अच्छे काम का बदला दे देता हूं फिर जब वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उसे उस की बुराइयों की सज़ा दूंगा।[1]

1... احیاء العلوم، کتاب الصبر و الشکر، الرکن الثالث... الخ، ۱۴۲/۴

www.dawateislami.net

बहर ह़ाल मुसलमान होने की ह़ैसिय्यत से हमें **अल्लाह** पाक के हर काम को ह़िक्मत पर मुश्तमिल समझना चाहिये और मुसीबत पर सब्र का मुज़ाहरा करते हुए अज्रो सवाब का ख़ूब ख़ूब ज़ख़ीरा करना चाहिये। दुआ़ है कि **अल्लाह** पाक हमें बे सब्री व नाशुक्री की आफ़त से बचा कर सब्रो शुक्र की नेमत से नवाज़े। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सनैने करीमैन की आपस की मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी मुसलमान के लिये येह बात जाइज़ नहीं कि वोह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन रात से ज़ियादा क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करे। उन में जो बातचीत करने में पहल करेगा, वोह जन्नत की त़रफ़ जाने में भी सबक़त करेगा।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची कि ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन के दरमियान कोई शकर रन्जी हो गई है। चुनान्चे, मैं इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : लोग आप ह़ज़रात की इक़्तिदा करते हैं और आप हैं कि एक दूसरे से नाराज़ और बाहम क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ किये हुए हैं। आप चूंकि छोटे हैं लिहाज़ा अभी इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाएं और उन्हें राज़ी करें। इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर मैं ने अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुए न सुना होता कि "दो आदमियों के दरमियान क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ हो जाए, तो उन में जो बातचीत करने में पहल करेगा वोह पहले जन्नत में जाएगा।" मैं मुलाक़ात करने में ज़रूर पहल करता, मगर मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि मैं उन से पहले जन्नत में चला जाऊं।

(1)... الزھدلابن مبارک،باب النیۃمع قلۃ الاملۃ...الخ،ص۲۵۲،حدیث:۷۲۶

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सारा वाक़िआ़ सुनाया तो आप ने फ़रमाया : मेरे भाई हुसैन ने जो बात कही वोह दुरुस्त है। फिर आप इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए, उन से मुलाक़ात की और यूं दोनो भाइयों के मा बैन जो शकर रन्जी थी वोह दूर हो गई।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन रात से ज़ियादा क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करे। मगर अफ़्सोस ! आज कल ज़रा ज़रा सी बात पर लोग नाराज़ हो जाते हैं और एक दूसरे की शक्ल तक देखना गवारा नहीं करते, मामूली रन्जिश पर ख़ानदानों में जुदाई हो जाती और बाज़ अवक़ात ख़ूनी रिश्ते भी क़त्लो ग़ारतगिरी पर उतर आते हैं। येह मदनी माह़ोल से दूरी और इल्मे दीन की कमी की वज्ह से होता है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि इल्मे दीन के हुसूल के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत को अपना मामूल बनाएं, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म का ढेरों ज़ख़ीरा हाथ आएगा यूं जहालत के सबब होने वाले गुनाहों से बचने में भी कामयाब होंगे।

मग़फ़िरत से मह़रूम

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमेरात को बारगाहे इलाही में लोगों के आमाल पेश होते हैं, तो अल्लाह पाक आपस में अ़दावत रखने और क़त़ए़ रेह़मी करने (यानी रिश्ता तोड़ने) वालों के इलावा सब की बख़्शिश फ़रमा देता है।(2)

---

1 ...ذخائر العقبی فی مناقب ذوی القربی للطبری، ذکر فضیلۃ لھما، ص ۱۳۷

2 ...معجم کبیر، ۱/ ۱۶۷، حدیث: ۴۰۹

क़त्ए रेह़मी का वबाल

हज़रते सय्यिदुना आमश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक मरतबा सुब्ह़ के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, फ़रमाया : मैं क़ात़ेए़ रेह़म (यानी रिश्तेदारी तोड़ने वाले) को **अल्लाह** पाक की क़सम देता हूं कि यहां से उठ जाए ताकि हम दुआ़ करें, क्यूंकि क़ात़ेए़ रेह़म पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं। (यानी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रह़मते इलाही शामिले ह़ाल नहीं होगी और हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी)।[1]

नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो ज़रा ज़रा सी बात पर रिश्तेदारों से क़त़्ए रेह़मी कर लेते हैं, बयान कर्दा रिवायात में उन के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। मदनी इल्तिजा है कि हम में से अगर कोई किसी रिश्तेदार से नाराज़ है तो अगर्चे रिश्तेदार ही का क़ुसूर हो, सुल्ह़ के लिये पहल कीजिये और ख़ुद आगे बढ़ कर ख़न्दा पेशानी के साथ उस से मिल कर तअ़ल्लुक़ात संवार लीजिये। अगर मुआ़फ़ी मांगने में पहल भी करनी पड़े तो रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ी मांगने में पहल कर लेनी चाहिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सर बुलन्दी पाएंगे कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ الله "यानी जो **अल्लाह** पाक के लिये आ़जिज़ी करता है, **अल्लाह** पाक उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।"[2]

लिहाज़ा रिश्तेदारों से सुल्ह़ सफ़ाई रखने के साथ साथ उन से ह़ुस्ने सुलूक का मुज़ाहरा भी करते रहना चाहिये कि इस में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है। चुनान्चे,

---

1 ...معجم کبیر،۹/ ۱۵۸، حدیث:۸۷۹۳

2 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع ... الخ، ۶/ ۲۷۶، حدیث:۸۱۴۰

सिलए रेह़मी के फ़वाइद

हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : **सिलए रेह़मी के 10 फ़ाएदे हैं :** (1)....**अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल होती है (2)....लोगों की ख़ुशी का सबब है (3)....फ़िरिश्तों को मसर्रत होती है (4)....मुसलमानों की त़रफ़ से उस शख़्स की तारीफ़ होती है (5)....शैत़ान को उस से रन्ज पहुंचता है (6)....उ़म्र बढ़ती है (7)....रिज़्क़ में बरकत होती है (8)....फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अज्दाद ख़ुश होते हैं (9)....आपस में मह़ब्बत बढ़ती है और (10)....वफ़ात के बाद उस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूंकि लोग उस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर करते हैं ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सिलए रेह़मी के फ़ज़ाइलो बरकात के बारे में मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ किताब "**नेकी की दावत** सफ़ह़ा 156 ता 161" रिसाला "**हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली**" और "**एह़तिरामे मुस्लिम**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये । दावते इस्लामी की वेबसाइट से इस किताब और रसाइल को पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउनलोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ह़सनैने करीमैन की शानो अ़ज़मत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुनने के साथ साथ मज़ीद भी मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । मसलन :

1...تنبیہ الغافلین،باب صلۃ الرحم، ص۷۳

...हमारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन दोनों शहज़ादों से बे पनाह महब्बत फ़रमाया करते थे, कभी अपने मुबारक कांधों पर बिठा लिया करते तो कभी पीठ पर, कभी इन की ख़ातिर सजदा त़वील फ़रमाते तो कभी इन्हें सीने से लगाते, पेशानी पर बोसा देते और इन्हें फूलों की त़रह़ सूंघा करते।

...आज़माइशों और मसाइबो आलाम पर सब्र की सूरत में मिलने वाले सवाब के मुतअ़ल्लिक़ सुना कि उन्हें उन का पूरा पूरा अज्रो सवाब दिया जाएगा।

...सिलए रेह़मी के बारे में सुना कि इस की क्या फ़ज़ीलत है, सिलए रेह़मी की सूरत में क्या क्या फ़वाइद ह़ासिल होते हैं और क़त़ए़ रेह़मी के क्या नुक़्सानात हैं !

दुआ़ है कि **अल्लाह** पाक हमें ह़सनैने करीमैन से महब्बत रखने और इन की सीरत पर अ़मल करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "फ़िक्रे मदीना"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ नेकी की दावत आ़म करने के लिये **दावते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना करना**" यानी अपने आमाल का मुह़ासबा करते हुए **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना भी है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी न सिर्फ़ ख़ुद फ़िक्रे आख़िरत में अपने आमाल का मुह़ासबा करते बल्कि लोगों को भी इस का ज़ेहन दिया करते जैसा की अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े

आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! अपने आमाल का मुहासबा कर लो इस से पहले कि क़ियामत आ जाए और तुम से उन का हिसाब लिया जाए ।(1) शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الۡعَالِی ने इस पुर फ़ितन दौर में फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेहन बनाने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल मदनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं । इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और जामिआ़त के त़लबा के लिये 92, त़ालिबात के लिये 83 और मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों के लिये 40 मदनी इन्आ़मात हैं, इसी त़रह़ ख़ुसूसी यानी गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों और क़ैदियों के लिये भी मदनी इन्आ़मात मुरत्तब फ़रमाए हैं । मदनी इन्आ़मात का रिसाला मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब किया जा सकता है, इस का बग़ौर मुत़ालआ़ करने के बाद आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि येह दर अस्ल ख़ुद एह़तिसाबी का एक जामेअ़ निज़ाम है जिसे अपना लेने के बाद नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से आहिस्ता आहिस्ता दूर हो जाती हैं और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनता है । तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है । चुनान्चे,

मदनी इन्आ़मात के रिसाले की बरकत

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि दावते इस्लामी से वाबस्ता हैं, उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे बड़े भाईजान को मदनी इन्आ़मात का रिसाला तोह़फ़े में दिया, वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक

1 ...حلية الاولياء، ذكر الصحابة من المهاجرين، عمر بن الخطاب، ١/ ٨٨، حديث: ١٣٥

मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बरदस्त फ़ोर्मोला दिया गया है। मदनी इन्आमात का रिसाला मिलने की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को नमाज़ का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और मदनी इन्आ़मात का रिसाला भी पुर करते हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पानी पीने के चन्द मदनी फूल सुनते हैं

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ...ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰہ पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा करो(2) ...नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या उस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।(3) मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो, (यानी सांस लेते वक़्त ग्लास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से ठन्डा

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذبالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...ترمذی، کتاب الاشربة، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، ۳/ ۳۵۲، حدیث: ۱۸۹۲

3...ابی داود، کتاب الاشربة، باب فی النفخ فی الشراب، ۳/ ۴۷۴، حدیث: ۳۷۲۸

www.dawateislami.net

न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे ठन्डी हो जाए फिर पियो।[1] अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं ...पीने से पहले بِسْمِ الله पढ़ लीजिये ...चूस कर छोटे छोटे घूंट पियें, बड़े बड़े घूंट पीने से जिगर की बीमारी पैदा होती है ...पानी तीन सांस में पियें ...बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ...पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़्सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है[2] ...पी चुकने के बाद اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये ...ग्लास में बचे हुए मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्तिमाल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फैंकना न चाहिये। ...मन्क़ूल है : سُؤْرُالْمُؤمِنِ شِفَاءٌ यानी मुसलमान के झूटे में शिफ़ा है[3] ...पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बाद ख़ाली ग्लास को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये।

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब **(1)... 312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और **(2)...120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आओ ! मदनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र   सुन्नतें सीखेंगे उस में اِنْ شَآءَ الله सर बसर[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

...

1....मिरआतुल मनाजीह़, 6/ 77

2...اتحاف السادة المتقين، كتاب اداب الاكل، الباب الاول، ۵/۵۹۴

3...فتاوی الکبری لابن حجر، کتاب النکاح، باب الولیمة، ۴/۱۱۷

4....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

यतीम किसे कहते हैं ?

सुवाल : यतीम किसे कहते हैं ? नीज़ कितनी उ़म्र तक बच्चा या बच्ची यतीम रहते हैं ?

जवाब : वोह नाबालिग़ बच्चा या बच्ची जिस का बाप फ़ौत हो गया हो वोह यतीम है । (دُرِّمختار، کتاب الوصایا، باب الوصیۃ للاقارب وغیرھم، ۱۰/ ۴۱۶)

बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक यतीम रहते हैं जब तक बालिग़ न हों, जूंही बालिग़ हुए यतीम न रहे जैसा कि मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बालिग़ हो कर बच्चा यतीम नहीं रहता । इन्सान का वोह बच्चा यतीम है जिस का बाप फ़ौत हो गया हो, जानवर का वोह बच्चा यतीम है जिस की मां मर जाए, मोती वोह यतीम है जो सीप में अकेला हो उसे दुर्रे यतीम कहते हैं बड़ा क़ीमती होता है ।

(नूरुल इरफ़ान, पारह 4, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 2)

लड़के और लड़की के बालिग़ होने की उ़म्र

सुवाल : लड़का और लड़की कब बालिग़ होते हैं ?

जवाब : हिजरी सिन के ह़िसाब से 12 से 15 साल की उ़म्र के दौरान जब भी लड़के को इन्ज़ाल हो या सोते में एह़तिलाम हो या उस के जिमाअ़ से औ़रत ह़ामिला हो गई हो तो उसी वक़्त बालिग़ हो गया और उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया । अगर ऐसा न हुवा तो हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 बरस का होते ही बालिग़ हो जाएगा । इसी त़रह़ हिजरी सिन के ह़िसाब से 9 से 15 साल की उ़म्र के दौरान लड़की को जब भी एह़तिलाम हो या ह़ैज़ आ जाए या ह़म्ल ठहर जाए तो बालिग़ा हो गई वरना हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 साल की होते ही बालिग़ा है । (الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الحجر، فصل: بلوغ الغلام بالاحتلام، ۹/ ۲۵۹تا۲۶۰، ملخصًا)

सुवाल : क्या नाबालिग़ की ज़ाती रक़म मदनी अ़त़िय्यात में वुसूल की जा सकती है ?

जवाब : नाबालिग़ की ज़ाती रक़म मदनी अ़त़िय्यात में हरगिज़ वुसूल न फ़रमाइये, हां अगर नाबालिग़ के ज़रीए़ उस के वालिदैन या सरपरस्त अपने ज़ाती अ़त़िय्यात भेजें तो वुसूल किये जा सकते हैं ।

(चन्दा करने की शरई एह़तियातें, स. 31)

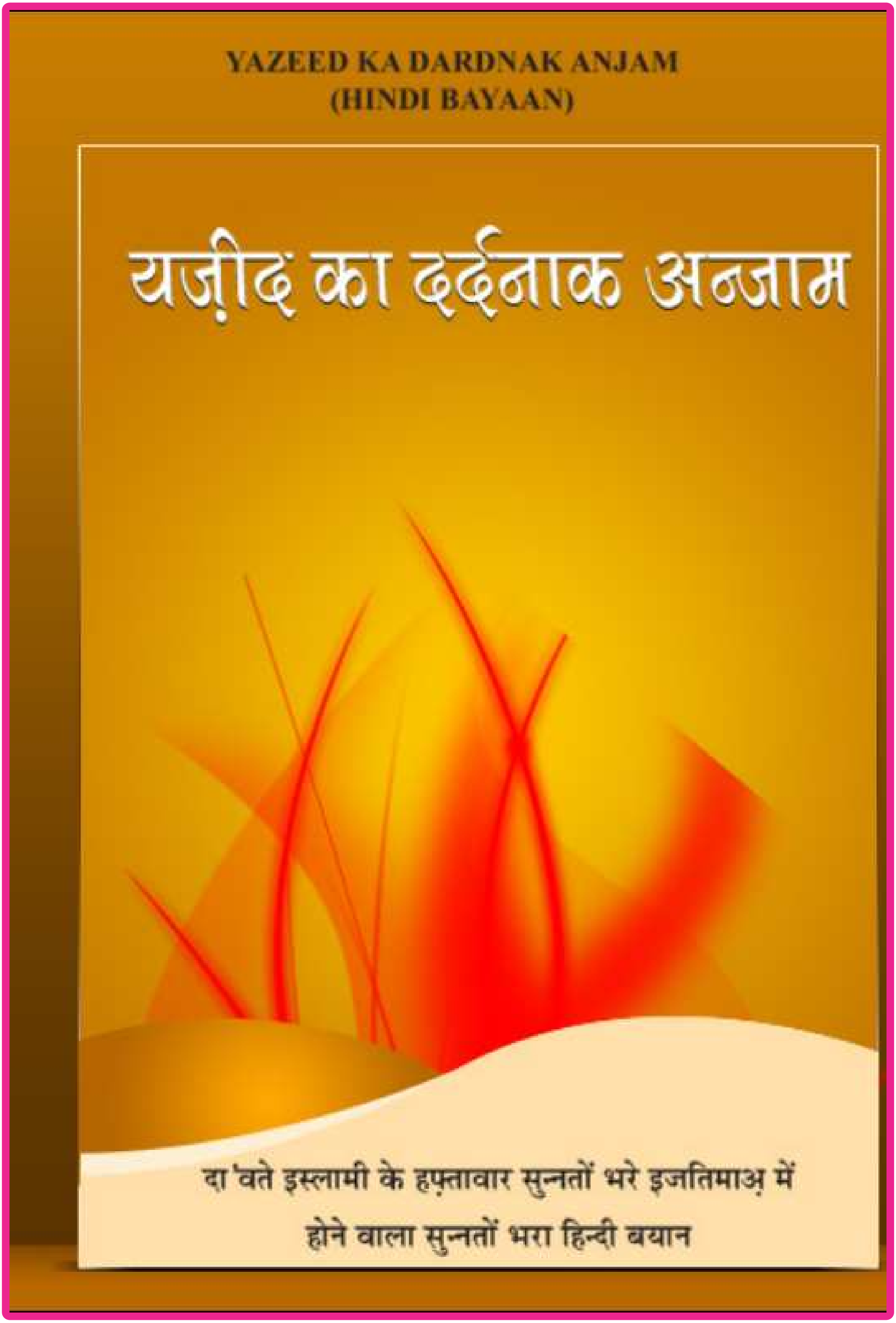
YAZEED KA DARDNAK ANJAM
(HINDI BAYAAN)
यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसैन बिन अहमद कव्वाज़ बिस्तामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे अबू सालेह़ मुअज़्ज़िन को ख़्वाब में देखने की ख़्वाहिश थी। चुनान्चे, मैं ने बारगाहे इलाही में उन्हें ख़्वाब में देखने की दुआ़ की तो मक़्बूल हुई, मैं ने उन्हें ख़्वाब में अच्छी हालत में देखा, तो कहा : ऐ अबू सालेह़ ! मुझे अपने यहां के ह़ालात की कुछ ख़बर दीजिये। उन्हों ने फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती तो मैं हलाक हो गया था।(1)

चारए बे चारगां पर हों दुरूदें सद हज़ार
बे कसों के ह़ामियो ग़मख़्वार पर लाखों सलाम(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुह़र्रमुल ह़राम का महीना जारियो सारी है और येह वोह महीना है, जिस में वाक़िआ़ए करबला पेश आया, जिस में यज़ीद और उस के ह़ामियों ने नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत कमो बेश 72 क़ाबिले एह़तिराम हस्तियों के साथ न सिर्फ़

1...سعادۃ الدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف المرائی...الخ، اللطیفۃ الثلاثون، ص١٣٦

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 601

www.dawateislami.net

इन्तिहाई ना मुनासिब सुलूक किया बल्कि इन में से बहुत सों के ख़ूने नाहक़ से भी अपने हाथों को रंगीन कर के ज़ुल्मो ज़ियादती का वोह तूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा किया कि जिस की दास्तान आ़शिक़ाने सह़ाबाओ अहले बैत के लिये इन्तिहाई अज़िय्यत का बाइ़स है। यज़ीदे पलीद, इब्ने ज़ियाद और जो लोग भी उन बदबख़्तों के साथ इन मुबारक हस्तियों की ईज़ा रसानी और शहादत के ज़िम्मेदार थे, उन सब का दुन्या में भी इ़ब्रतनाक अन्जाम हुवा। आइये ! इसी मुनासबत से यज़ीदे पलीद की फ़ितना अंगेज़ियों और उस के दर्दनाक अन्जाम के बारे में कुछ सुनते हैं :

यज़ीदे पलीद कौन था ?

यज़ीद वोह बद नसीब शख़्स है जिस की पेशानी पर अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़त्ल का सियाह दाग़ है और जिस पर हर ज़माने में दुन्याए इस्लाम मलामत करती रही है और क़ियामत तक उस का नाम ह़क़ारत (ज़िल्लत) के साथ लिया जाएगा। येह बद बात़िन, सियाह दिल 25 हिजरी में दिमश्क़ में पैदा हुवा। निहायत मोटा, बदनुमा, बहुत ज़ियादा बालों वाला, बद अख़्लाक़, बद मिज़ाज, फ़ासिक़, फ़ाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बे अदब, गुस्ताख़ था। इस की शरारतें और बेहूदगियां ऐसी थीं कि जिन से बद मुआ़शों को भी शर्म आए। यज़ीद मुह़र्रमात (जिन औ़रतों से निकाह़ ह़राम है उन) के साथ निकाह़ को रवाज देने वाला, सूद और दीगर ह़राम कामों को अ़लानिय्या करवाने वाला था।[1]

यज़ीदे पलीद के बारे में ग़ैबी ख़बर

हु़ज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी अपने मुबारक ज़माने में वक़्तन फ़ वक़्तन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को **यज़ीदे पलीद** के फ़ितने से आगाह फ़रमाते रहे। चुनान्चे,

1....सवानेह़े करबला, स. 111 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : اَوَّلُ مَنْ يُّبَدِّلُ سُنَّتِیْ رَجُلٌ مِّنْ بَنِیْ اُمَيَّةَ يُقَالُ لَهٗ يَزِيْدُ यानी मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला बनू उमय्या का एक शख़्स होगा, जिस का नाम **यज़ीद** होगा।(1)

एक रिवायत में है : मेरी उम्मत में अ़दलो इन्साफ़ क़ाइम रहेगा, यहां तक कि पहला रख़्ना अन्दाज़, बनू उमय्या का एक शख़्स होगा, जिस का नाम **यज़ीद** होगा।(2)

लड़कों की हुक्मरानी से पनाह

यज़ीदे पलीद की फ़ितना अंगेज़ियों के बारे में ग़ैबों पर ख़बरदार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इन्ही पेशगोइयों की वज्ह से मश्हूर सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह दुआ मांगा करते थे : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ رَّاْسِ السِّتِّيْنَ وَاِمَارَةِ الصِّبْيَانِ "यानी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं 60 हिजरी के आग़ाज़ और लड़कों की हुकूमत से तेरी पनाह में आता हूं।" चुनान्चे, आप की येह दुआ क़बूल हुई और 59 हिजरी (मदीनए तृय्यिबा) में आप का इन्तिक़ाल हो गया (और ठीक 60 हिजरी में यज़ीदे पलीद मस्नदे सल्तनत पर बिराजमान हुवा।)(3)

यज़ीदे पलीद की जफ़ाकारियां

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यज़ीदे पलीद की हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दुश्मनी की वज्ह बयान करते और शहादते इमामे हुसैन के बाद यज़ीद की तरफ़

1...ابن عساکر، رقم ۸۲۹۲، ابو سفیان یزید بن صخر، ۶۵/ ۲۵۰، حدیث: ۱۳۲۶۴

2...مسند حارث، کتاب الامارت، باب فی ولاۃ سوء، ۲/ ۶۴۲، حدیث: ۶۱۲

3...مسند اسحاق، ۱/ ۴۴

से मक्के और मदीने के मुसलमानों पर ढाए जाने वाले ज़ुल्मो ज़ियादती का तज़किरा करते हुए फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वुजूदे मुबारक यज़ीद की आज़ादियों के लिये एक ज़बरदस्त मोह़तसिब (यानी ह़िसाब लेने वाला) था, वोह जानता था कि आप के ज़मानए मुबारक में उसे खुल कर खेलने का मौक़अ़ न मिलेगा और उस की किसी भी उल्टी ह़रकत और गुमराही पर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब्र न फ़रमाएंगे, उसे नज़र आता था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे दीनदार का कोड़ा हर वक़्त उस के सर पर घूम रहा है, इसी वज्ह से वोह और भी ज़ियादा आप की जान का दुश्मन था और इसी लिये आप की शहादत उस के लिये बाइसे मसर्रत हुई। इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का साया उठना था कि यज़ीद खुल कर खेला (यानी बिल्कुल आज़ाद हो गया) और अन्वाओ़ अक़्साम के मआ़सी (यानी गुनाहों) की गर्म बाज़ारी हो गई। ह़राम कारी, भाई बहन का निकाह़, सूद, शराब, अ़लानिय्या राइज हुए, नमाज़ों की पाबन्दी उठ गई, बग़ावत व सरकशी इन्तिहा को पहुंची, ख़बासत ने यहां तक ज़ोर किया कि मुस्लिम बिन उ़क़्बा को बारह हज़ार या बीस हज़ार का लश्करे गिरां ले कर मदीनए त़य्यिबा की चढ़ाई के लिये भेजा। येह 63 हिजरी का वाक़िआ़ है। इस ना मुराद लश्कर ने मदीनए त़य्यिबा में वोह तूफ़ान बरपा किया कि **अल्लाह** पाक की पनाह ! क़त्लो ग़ारत और त़रह़ त़रह़ के मज़ालिम, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमसायों पर किये। वहां के रहने वालों के घर लूट लिये, 700 सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को शहीद किया और दूसरे आ़म बाशिन्दे मिला कर 10 हज़ार से ज़ियादा को शहीद किया, लड़कों को क़ैद कर लिया, ऐसी ऐसी बद तमीज़ियां कीं, जिन का ज़िक्र करना ना गवार है। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतूनों में घोड़े बांधे, तीन दिन तक मस्जिद शरीफ़ में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके। सिर्फ़ ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मजनूं बन कर वहां ह़ाज़िर रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "यज़ीद की बुरी ह़रकात इस ह़द तक पहुंचीं कि

www.dawateislami.net

हमें अन्देशा होने लगा कि इस की बदकारियों की वज्ह से कहीं आस्मान से पथ्थर न बरसें।"[1] फिर येह शरीर लश्कर, मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुवा, रास्ते में अमीरे लश्कर मर गया और दूसरा शख़्स उस का क़ाइम मक़ाम किया गया। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर उन बे दीनों ने मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने का आला जिस से पथ्थर फेंक कर मारा जाता है उस की ज़द बड़ी ज़बरदस्त और दूर की मार होती है उस) से पथ्थरों की बारिश की। इस संग बारी से ह़रम शरीफ़ का सिह़ने मुबारक पथ्थरों से भर गया और मस्जिदे ह़राम के सुतून टूट पड़े और काबए मुक़द्दसा के ग़िलाफ़ शरीफ़ और छत को उन बे दीनों ने जला दिया। इसी छत में उस दुम्बे के सींग भी तबर्रुक के त़ौर पर मह़फ़ूज़ थे, जो ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام के फ़िदये में क़ुरबान किया गया था, वोह (सींग) भी जल गए, काबए मुक़द्दसा कई रोज़ तक बे लिबास रहा और वहां के बाशिन्दे (यज़ीदी लश्कर की त़रफ़ से पहुंचने वाली) सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यज़ीदे पलीद जब तक ज़िन्दा रहा, ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाता रहा। उस की पूरी ज़िन्दगी बे रह़मी की अफ़्सोस नाक दास्तान है, यज़ीद के हाथ मक्का व मदीना और शुहदाए करबला के मज़्लूमों के ख़ून से रंगे हुए हैं, इक़्तिदार की हवस ने उसे पागल और अफ़रादी क़ुव्वत ने उसे मग़रूर बना डाला था, चाहिये तो येह था कि वोह राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, जिगर गोशए मुर्तज़ा, दिलबन्दे फ़ात़िमा, सुल्त़ाने करबला, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्नाकाम के फ़ज़ाइलो कमालात से मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा को पेशे नज़र रख कर उन की क़द्रो मन्ज़िलत का एतिराफ़ करता, उन की और उन के रुफ़क़ा की ख़िदमत कर के जन्नत पा लेता, मगर आह ! उस ने तो शैत़ाने लईन और नफ़्से अम्मारा की ग़ुलामी का त़ौक़ अपने

1 ...الصواعق المحرقة، الباب الحادی عشر، الخاتمة فی بیان اعتقاد اھل السنة و.....الخ، ص۲۲۱، ملخصًا
2 ....सवानेहे करबला, स. 177 ता 179, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

गले में डाले रखा और मुसल्सल हटधर्मी का मुज़ाहरा करता रहा, बिल आख़िर अपने नापाक मन्सूबे को अ़मली जामा पहनाते हुए उस ज़ालिमो जाबिर और फ़ासिक़ो फ़ाजिर ने गुलशने अहले बैत को जिस बे दर्दी के साथ उजाड़ा और प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाज़ुक व ख़ुशनुमा फूलों को जिस बे दर्दी से मसला उस के तसव्वुर से ही रूह़ कांप जाती और पलकें भीग जाती हैं।

गुलशने नबुव्वत के फूल

उन गुस्ताख़ों, बे अदबों और ग़द्दारों ने इस बात की कोई परवा न की, कि अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से अपनी मह़ब्बत और उन की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत को किस क़दर ताकीद के साथ बयान फ़रमाया कि هُمَا رَيْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْيَا ''यानी ह़सन और हुसैन दुन्या में मेरे दो फूल हैं।''(1) नीज़ इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّة ''यानी ह़सन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं।''(2)

सुल्त़ाने करबला, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि बहुत ज़ियादा रह़्म दिल थे, इसी लिये आप यज़ीदे पलीद के ज़ालिमो जाबिर साथियों को मैदाने जंग में दावते फ़िक्र देते रहे, नीज़ अपनी अहम्मिय्यत बतला कर उन्हें जंगो जिदाल और ज़ुल्मो सितम से बाज़ आने की मुसल्सल नसीह़त फ़रमाते रहे। चुनान्चे,

नवासए रसूल का ख़ुत़्बा

मैदाने करबला में हुज्जत पूरी करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने घोड़े पर सुवार हो कर यज़ीदी लश्कर का रुख़ किया और इस

---

1 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۳

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی...الخ، ۵/۴۲۶، حدیث: ۳۷۹۳

क़दर बुलन्द आवाज़ में पुकारा कि जिसे तमाम लोगों ने सुना। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्द बाज़ी का मुज़ाहरा न करो, ह़त्ताकि मैं तुम्हें उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त न कर लूं कि जो मुझ पर लाज़िम हो चुका है और अपने आने का उ़ज़्र बयान न कर लूं। पस अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल कर लो, मेरी बात की तस्दीक़ करो और मेरे बारे में इन्साफ़ से काम लो तो तुम इस मुआ़मले में बा मुराद हो जाओगे और तुम से मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई मुआख़ज़ा (यानी सुवाल) न होगा। हां ! अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल नहीं करते तो सुनो !

اِنَّ وَلِیِّۦَ اللّٰهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖۗ وَهُوَ یَتَوَلَّى الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۹۶﴾

(پ۹، الاعراف:۱۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी और वोह नेकों को दोस्त रखता है।

फिर फ़रमाया : तुम मेरी निस्बत के बारे में ग़ौर कर लो कि मैं कौन हूं...?, क्या तुम्हारे लिये मेरा क़त्ल जाइज़ व दुरुस्त है...? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं...? क्या सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे वालिद के चचा नहीं...? क्या ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे चचा नहीं...? क्या तुम तक मेरे और मेरे भाई से मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद न पहुंचा था कि ह़सन व ह़ुसैन नौजवानाने जन्नत के सरदार हैं...? तुम मेरी बात की तस्दीक़ करो कि येही ह़क़ है क्यूंकि जब से मुझे इ़ल्म हुवा है कि **अल्लाह** पाक को झूट सख़्त ना पसन्द है उस वक़्त से मैं ने कभी ग़लत़ बयानी नहीं की और अगर इस बात में तुम मुझे सच्चा नहीं समझते तो उन ह़ज़रात जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अबू सईद, सहल बिन साद, ज़ैद बिन अरक़म और अनस बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) से पूछ लो कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरे मुतअ़ल्लिक़ येह फ़ज़ाइल सुन रखे हैं या नहीं..?, क्या मेरी इस नसीह़त में

www.dawateislami.net

तुम्हारे लिये कोई ऐसी बात नहीं जो तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोक सके...? अब भी अगर तुम्हें मेरी बात में या मेरे नवासए रसूल होने में कोई शक हो तो सुन लो ! ब ख़ुदा ! मशरिक़ो मग़रिब में मेरे सिवा रूए ज़मीन पर कोई नबी का नवासा मौजूद नहीं, ज़रा बताओ तो सही ! क्या तुम्हें मुझ से अपने किसी मक़्तूल का बदला तृलब करना है ? या मैं ने तुम्हारा माल ज़ाएअ़ कर दिया है कि उस के बदले माल चाहते हो ? या फिर अपने ज़ख़्मियों का क़िसास दरकार है (**आख़िर किस चीज़ का बदला चाहते हो**)...? वोह बदबख़्त ख़ामोश रहे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ शबस बिन रिबई ! ऐ ह़ज्जार बिन अबजर ! ऐ क़ैस बिन अश्अ़स ! ऐ ज़ैद बिन ह़ारिस ! क्या तुम लोगों ने ही मुझे ख़ुतूत़ भेज कर नहीं बुलवाया था ? वोह साफ़ मुकर गए और बोले : हम ने तो ऐसा नहीं किया था। आप ने फ़रमाया : क्यूं नहीं, ख़ुदा पाक की क़सम ! तुम ही ने तो ऐसा किया था। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरी बैअ़त करना पसन्द नहीं करते तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी मह़फ़ूज़ जगह चला जाऊं। बद नसीब क़ैस बिन अश्अ़स बोला : अगर आप इब्ने ज़ियाद के हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म कर लें (तो छुटकारे की कोई सूरत निकल सकती है)। आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक की क़सम ! मैं हरगिज़ उस की बैअ़त नहीं करूंगा। अल्लाह के बन्दो ! मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूं, इस से कि तुम मुझे संगसार करो। मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं, हर उस मुतकब्बिर से जो ह़िसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता।[1]

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! मालो ज़र और ओ़हदों की लालच ने यज़ीदी लश्कर की आंखों पर गुमराही की पट्टी बांध दी थी, वोह बद नसीब लोग दुन्याए नापाएदार की फ़ानी मह़ब्बत से सरशार और शोहरत व इक़्तिदार की हवस में गिरिफ़्तार थे, उन के दिल पथ्थर से भी ज़ियादा सख़्त हो चुके थे, उन पर

1...الکامل فی التاریخ، سنۃ احدی وستین، ذکر مقتل الحسین، ۳/۴۱۸، ۴۱۹، ملتقطا

www.dawateislami.net

बदबख़्ती और शैत़ानिय्यत ग़ालिब आ चुकी थी, लिहाज़ा उन पर इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्लिसाना नसीह़तों और इरशादात का कोई असर न हुवा, क्यूंकि वोह ख़ूं ख़्वार दरिन्दे तो आप के ख़ून के प्यासे थे, लिहाज़ा इन नसीह़तों के बा वुजूद आप से जंग करने पर ब ज़िद रहे।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एलाने जंग

गै़बदान आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चूंकि वाक़िअ़ए करबला का पहले ही से इ़ल्म था और जानते थे कि मेरा कलिमा पढ़ने वाले ही मेरे अहले बैत को ख़ाको ख़ून में नहलाएंगे, लिहाज़ा विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल ही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा और ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से इरशाद फ़रमा दिया था : اَنَا سِلْمٌ لِّمَنْ سَالَمْتُمْ، وَحَرْبٌ لِّمَنْ حَارَبْتُمْ यानी जो तुम से सुल्ह़ करेगा, मैं उस के लिये सुल्ह़ जू हूं और जो तुम से जंग करेगा, मैं उस से जंग करने वाला हूं।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस ग़लीज़ इक़्तिदार की ख़ात़िर इन बद किरदार व बद अत़्वार यज़ीदियों ने **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लड़ाई मोल लेते हुए मैदाने करबला में ख़ानदाने अहले बैत पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाईं, वोह इक़्तिदार इन के लिये तबाहियो बरबादी का परवाना साबित हुवा। यूं तो दीन की मदद व नुस्रत की सआ़दत अहले ह़क़ को ही ह़ासिल होती है, मगर बाज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि **अल्लाह** पाक ज़ालिमों, ना फ़रमानों, और फ़ाजिरों को इक़्तिदार अ़त़ा कर के उन के ज़रीए़ भी अपने दीन का काम लेता और ज़ालिमों को उन के हाथों हलाक करवाता है : जैसा कि **पारह 8 सूरतुल अन्आ़म, आयत नम्बर 129** में इरशादे रब्बानी है :

---

(1)... ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فی فضائل اصحاب رسول اللّٰہ، فضل الحسن و...الخ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۴۵

www.dawateislami.net

وَ كَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

(پ۸، الانعام: ۱۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का।

और ह़दीस शरीफ़ में है : اِنَّ اللہَ لَیُؤَیِّدُ ھٰذَا الدِّیْنَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ यानी बेशक **अल्लाह** पाक इस दीन का काम फ़ाजिर (यानी गुनाहगार) शख़्स से भी करवा लेता है।[1]

क़ातिलाने हुसैन से इन्तिक़ाम

चुनान्चे, शहीदों के ख़ूने नाह़क़ का बदला लेने के लिये **अल्लाह** पाक ने ठीक छे साल बाद मुख़्तार सक़फ़ी जैसे कज़्ज़ाब यानी झूटे और ज़ालिम शख़्स को मुक़र्रर फ़रमाया, जिस ने एक एक यज़ीदी को चुन चुन कर निहायत सफ़्फ़ाकी और बे दर्दी के साथ मौत के घाट उतार दिया और यके बाद दीगरे इब्ने ज़ियाद, इब्ने साद, शिमर, क़ैस बिन अश्अ़स किन्दी, ख़ौली बिन यज़ीद, सिनान बिन अनस नख़ई, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस, यज़ीद बिन मालिक और बाक़ी तमाम बद

बख़्त जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल में शरीक या कोशां थे, त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें दे कर क़त्ल किये गए और उन की लाशें घोड़ों की टापों से पामाल कराई गईं।[2]

उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद की हलाकत

उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद, यज़ीद की त़रफ़ से कूफ़ा का वाली (गवर्नर) मुक़र्रर किया गया था। इसी बद निहाद के हुक्म से ह़ज़रते इमाम और आप के अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को येह तमाम ईज़ाएं पहुंचाई गईं, येही इब्ने ज़ियाद (मक़ामे)

---

1 ...بخاری، کتاب القدر، باب العمل بالخواتیم، ۴/۲۷۴، حدیث: ۶۶۰۶

2 ....सवानेहे करबला, स. 183, मुलख़्ख़सन

मोसिल में 30 हज़ार फ़ौज के साथ उतरा। (वाक़िअ़ए करबला के ठीक छे साल बाद) मुख़्तार ने इब्राहीम बिन मालिक अश्तर को इस के मुक़ाबले के लिये एक लश्कर दे कर भेजा, मोसिल से 15 कोस के फ़ासिले पर दरियाए फ़ुरात के कनारे दोनों लश्करों में मुक़ाबला हुवा और सुब्ह़ से शाम तक ख़ूब जंग रही। जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफ़्ताब क़रीबे ग़ुरूब था, उस वक़्त इब्राहीम की फ़ौज ग़ालिब आई, इब्ने ज़ियाद को शिकस्त हुई (और) उस के हमराही भागे। इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए, उसे ज़िन्दा न छोड़ा जाए। चुनान्चे, बहुत से हलाक किये गए। इसी हंगामे में इब्ने ज़ियाद भी फ़ुरात के कनारे मुहर्रम की दसवीं तारीख़ 67 हिजरी में मारा गया और उस का सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया, इब्राहीम ने (वोह नापाक सर) मुख़्तार के पास कूफ़ा में भिजवाया, मुख़्तार ने दारुल अमारत (यानी दारुल हुकूमत) कूफ़ा को आरास्ता किया और अहले कूफ़ा को जम्अ़ कर के इब्ने ज़ियाद का नापाक सर उसी जगह रखवाया, जिस जगह उस मग़रूरे हुकूमत व बन्दए दुन्या ने ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरे मुबारक रखा था। मुख़्तार ने अहले कूफ़ा को ख़िताब कर के कहा कि ऐ अहले कूफ़ा! देख लो कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ूने नाह़क़ ने इब्ने ज़ियाद को न छोड़ा, आज इस ना मुराद का सर इस ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ यहां रखा हुवा है, छे साल हुए हैं, वोही तारीख़ है, वोही जगह है, ख़ुदावन्दे आ़लम ने इस मग़रूर, फ़िरऔ़ने ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ हलाक किया, इसी कूफ़ा और इसी दारुल अमारत में इस बे दीन के क़त्लो हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।(1)

आ गया आ गया!

अ़म्मारा बिन उ़मैर से मरवी है कि जब उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियादे बद निहाद और उस के साथियों के (कटे हुए) सर ला कर मस्जिद के सिह़न में रखे गए

(1)....सवानेहे करबला, स. 182

तो मैं भी उन के पास गया, लोग कहने लगे "आ गया आ गया" (मैं ने देखा) तो एक सांप आया जो तमाम सरों के दरमियान से होता हुवा उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियादे बद निहाद के (सर के पास पहुंच कर उस के) नथनों में दाख़िल हो गया और थोड़ी देर ठहर कर निकला फिर चला गया, ह़त्ताकि (निगाहों से) ओझल हो गया (कुछ ही देर बाद) लोग फिर कहने लगे : "आ गया आ गया" दो या तीन मरतबा ऐसा ही हुवा।(1) (اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ)

शुहदा का ख़ून रंग लाता है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उन्हें (यानी यज़ीदियों) को नहीं मालूम था कि ख़ूने शुहदा रंग लाएगा और सल्त़नत के पुर्ज़े उड़ जाएंगे, एक एक शख़्स जो क़त्ले हुसैन में शरीक हुवा है, त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से हलाक होगा, वोही फ़ुरात का कनारा होगा, वोही आ़शूरा (यानी 10 मुह़र्रमुल ह़राम) का दिन, वोही ज़ालिमों की क़ौम होगी और मुख़्तार के घोड़े उन्हें रौंदते होंगे, उन की जमाअ़तों की कसरत उन के काम न आएगी, उन के हाथ पाउं काटे जाएंगे, घर लूटे जाएंगे, सूलियां दी जाएंगी, लाशें सड़ेंगी, दुन्या में हर शख़्स तुफ़ तुफ़ करेगा, इस हलाकत पर ख़ुशी मनाई जाएगी, मारिकए जंग में अगर्चे उन की तादाद हज़ारों की होगी मगर चूहों और कुत्तों की त़रह़ उन्हें जान बचानी मुश्किल होगी, जहां पाए जाएंगे मार दिये जाएंगे, दुन्या में क़ियामत तक उन पर नफ़रत व मलामत की जाएगी।(2)

1...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، ۵/۴۳۱، حدیث: ۳۸۰۵

2....सवानेह़े करबला, स. 184

ऐ तिश्नगाने ख़ूने जवानाने अहले बैत
देखा कि तुम को ज़ुल्म की कैसी सज़ा मिली
कुत्तों की त़रह़ लाशे तुम्हारे सड़ा किये
घूरे पे भी न गोर को तुम्हारी जा मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए
मर्दूदो ! तुम को ज़िल्लते हर दो सरा मिली
तुम ने उजाड़ा ज़हरा का बोस्तान
तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ मिली
दुन्या परस्तो ! दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें
दुन्या मिली न ऐ़शो त़रब की हवा मिली
आख़िर दिखाया रंग शहीदों के ख़ून ने
सर कट गए अमां न तुम्हें इक ज़रा मिली
पाई है क्या नई़म उन्हों ने अभी सज़ा
देखेंगे वोह जह़ीम में जिस दिन सज़ा मिली (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह तो था यज़ीदियों और यज़ीद के दस्ते रास्त (दायां हाथ) इब्ने ज़ियाद बद निहाद के बद तरीन और ज़िल्लत नाक अन्जाम का मजमूई और मुख़्तसर तज़्किरा कि किस त़रह़ मुख़्तार सक़फ़ी के हुक्म पर उस के लश्कर ने यज़ीदी फ़ौज के एक एक शख़्स को मौत के घाट उतारा, अब ज़रा यज़ीदे पलीद के अन्जाम के बारे में भी मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

1....सवानेहे़ करबला, स. 181

यज़ीदे पलीद ज़िल्लतो रुस्वाई की मौत मरा

वाक़िअ़ए करबला के कुछ ही दिनों के बाद यज़ीद एक हलाकत ख़ेज़ और इन्तिहाई मूज़ी मरज़ में मुब्तला हुवा, पेट के दर्द और आंतों के ज़ख़्मों की तक्लीफ़ से ऐसे तड़पता रहता था जैसे पानी के बिग़ैर मछली, हिम्स में जब उसे अपनी मौत का यक़ीन हो गया तो अपने बड़े लड़के मुआ़विय्या को बिस्तरे मर्ग पर बुलाया और उमूरे सल्त़नत के बारे में कुछ कहना ही चाहता था कि बे साख़्ता बेटे के मुंह से चीख़ निकली और निहायत ज़िल्लतो ह़क़ारत के साथ येह कहते हुए बाप की पेशकश को ठुकरा दिया कि जिस ताजो तख़्त पर आले रसूल के ख़ून के धब्बे हैं, मैं उसे हरगिज़ क़बूल नहीं कर सकता, ख़ुदा इस मन्हूस सल्त़नत की विरासत से मुझे मह़रूम रखे, जिस की बुन्यादें नवासए रसूल के ख़ून पर रखी गई हैं। यज़ीद अपने बेटे के मुंह से येह अल्फ़ाज़ सुन कर तड़प गया और शिद्दते रन्जो अलम से बिस्तर पर पाउं पटख़ने लगा, मौत से कुछ दिन पहले यज़ीद की आंतें सड़ गईं और उस में कीड़े पड़ गए, तक्लीफ़ की शिद्दत से ख़िन्ज़ीर की त़रह़ चीख़ता था, पानी का क़त़रा ह़ल्क़ से नीचे उतरने के बाद निश्तर की त़रह़ चुभने लगता था, अ़जीब क़हरे इलाही की मार थी, पानी के बिग़ैर भी तड़पता था और पानी पा कर भी चीख़ता था, बिल आख़िर इसी दर्द की शिद्दत से तड़प तड़प कर उस की जान निकली, लाश में ऐसी हौलनाक बदबू थी कि क़रीब जाना मुश्किल था, जैसे तैसे कर के उसे क़ब्र के घड़े में उतार दिया गया।[1]

यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

1....तारीख़े करबला, स. 345

अपने रिसाले "**इमामे हुसैन की करामात**" में यज़ीदे पलीद के अन्जाम के बारे में एक और वाक़िआ़ नक़्ल करते हुए लिखते हैं : यज़ीदे पलीद की मौत का एक सबब येह भी बताया जाता है कि वोह एक रूमिय्युन्नस्ल लड़की के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो गया था, मगर वोह लड़की अन्दरूनी त़ौर पर उस से नफ़रत करती थी, एक दिन रंग रलियां मनाने के बहाने उस ने यज़ीद को दूर वीराने में तन्हा बुलाया, वहां की ठन्डी हवाओं ने यज़ीद को बदमस्त कर दिया, उस दोशीज़ा ने येह कहते हुए कि "**जो बे ग़ैरत व ना बकार (यानी निकम्मा) अपने नबी के नवासे का ग़द्दार हो वोह मेरा कब वफ़ादार हो सकता है**" ख़न्जरे आबदार (तेज़ धार) के पै दर पै वार कर के चीर फाड़ कर उस को वहीं फेंक दिया। चन्द रोज़ तक उस की लाश चील कव्वों की दावत में रही। बिल आख़िर ढूंडते हुए उस के अहाली मवाली (यानी नौकर चाकर) वहां पहुंचे और गढ़ा खोद कर उस की सड़ी हुई लाश को वहीं दाब (दफ़्ना) आए।[1]

अब ज़रा उस की क़ब्र का ह़ाल भी सुनते चलिये। चुनान्चे,

यज़ीद की क़ब्र का ह़ाल

दिमश्क़ के पुराने क़ब्रिस्तान बाबुस्सग़ीर के कुछ आगे यज़ीद की क़ब्र का निशान था, जिस पर आज से कई सालों पहले लोग ईंटें पथ्थर मारते थे, अक्सर वहां ईंटों का ढेर लगा रहता था, अब वहां शीशा (और) लोहा गलाने की भट्टी लगी हुई है, उस कारख़ाने में शीशे के बरतन बनाए जाते हैं, लोहे और कांच को गलाने की भट्टी बिल्कुल ठीक जिस जगह क़ब्र थी वहां बनी हुई है। गोया यज़ीद की क़ब्र पर हर वक़्त आग जलती रहती है।[2]

1....इमामे हुसैन की करामात, स. 47, औराक़े ग़म, स. 550

2....शहादते नवासए सय्यिदुल अबरार, 918-919

वोह तख़्त है किस क़ब्र में वोह ताज कहां है
ऐ ख़ाक बता ज़ोरे यज़ीद आज कहां है
न ही शिमर का वोह सितम रहा न यज़ीद की वोह जफ़ा रही
जो रहा तो नाम हुसैन का, जिसे ज़िन्दा रखती है करबला

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा कीजिये कि अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ दुश्मनी रखने और उन्हें अज़िय्यत पहुंचाने वालों का कैसा बद तरीन अन्जाम होता है कि मरने के बाद उन्हें कफ़न भी नसीब नहीं होता, दुन्या में भी ज़िल्लत उन का मुक़द्दर बन जाती है और आख़िरत में भी रुस्वाई और जहन्नम की आग के मुस्तहि़क़ होते हैं। चुनान्चे,

अहले बैत को तक्लीफ़ देने का अन्जाम

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने मेरे अहले बैत पर ज़ुल्म किया और मुझे मेरी इ़तरत (यानी औलाद) के बारे में अज़िय्यत दी, उस पर जन्नत ह़राम कर दी गई।[1]

एक रिवायत में है कि अगर कोई शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ के एक कोने और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़े हो कर नमाज़ पढ़े, रोज़े रखे और फिर अहले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वोह जहन्नम में जाएगा।[2]

वोह रसूलुल्लाह को क्या मुंह दिखाएंगे ?

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिन लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया है,

1....बरकाते आले रसूल, स. 259

2...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب مبغض اھل البیت...الخ، ۱۲۹/۴، حدیث: ۴۷۶۶

www.dawateislami.net

अगर वोह **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से बख़्शे भी गए तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क्या मुंह दिखाएंगे । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत में मेरा दख़्ल होता और मुझे जन्नत और दोज़ख़ का इख़्तियार दिया जाता तो मैं दोज़ख़ इख़्तियार करता, इस ख़ौफ़ से कि जन्नत में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने किस मुंह से जाऊंगा ।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यज़ीदे पलीद पर चूंकि अपनी हुकूमत व सल्त़नत बचाने का भूत सुवार था, लिहाज़ा इस बदबख़्त ने इक्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर गुलशने फ़ाति़मा को इस क़दर बे दर्दी के साथ पामाल किया कि सुन कर जिस्म का रूआं रूआं कांप उठता, दिल रन्जीदा हो जाता और आंखों से बे साख़्ता अश्क रवां हो जाते हैं । बहर ह़ाल यज़ीदियों के अन्जामे बद से येह भी पता चला कि अल्लाह वालों की दुश्मनी दुन्याओ आख़िरत में ख़सारे का बाइ़स है, क्यूंकि वाक़िअ़ए करबला में जितने अफ़राद शहीद हुए, वोह सब के सब **अल्लाह** पाक के मुक़र्रब तरीन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام में से थे और जो बद नसीब **अल्लाह** पाक के औलिया से दुश्मनी रखता है, उसे **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से एलाने जंग दिया जा चुका है । चुनान्चे,

एलाने जंग

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : مَنْ عَادٰی لِیْ وَلِیًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ यानी जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की, मैं उस से एलाने जंग करता हूं ।(2)

---

1 ...تنبیہ المغترین، الباب الاوّل، من اخلاق السلف الصالح، ص ۴۷

2 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! अगर्चे यज़ीदे पलीद अज़् खुद इब्ने ज़ियाद बद निहाद की फ़ौज में शामिल न रहा मगर शहीदानो असीराने करबला पर जिस क़दर भी ज़ुल्मो जफ़ा ढाए गए, उन में इब्ने ज़ियाद बद निहाद को न सिर्फ़ यज़ीदे पलीद की भरपूर रिज़ामन्दी और मुकम्मल ताईदो हिमायत हासिल रही बल्कि उसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स के हुक्म पर ज़ालिमों के सरदार इब्ने ज़ियाद बद निहाद और उस के लश्करियों ने अहले बैते अत्हार की सरे आम गुस्ताख़ियां कीं और तपती धूप में मैदाने करबला की सर ज़मीन को जां निसारों के खून से रंगीन किया, लिहाज़ा यज़ीद जैसे पलीद व बदबख़्त को बे कुसूर क़रार देना, अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से गद्दारी, मुहिब्बाने अहले बैत की दिल आज़ारी, **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी नीज़ **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब और जहन्नम की हक़दारी का सबब है। इस मुआमले में सहाबए किराम और ताबेईने इज़्ज़ाम का तर्ज़े अमल हमारे लिये मश्अले राह है कि वोह हज़राते अहले बैते अत्हार बिल खुसूस इमामे आली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इज़्ज़तो नामूस के सच्चे मुहाफ़िज़ थे, यज़ीदे पलीद से उन्हें सख़्त नफ़रत थी नीज़ येह नुफ़ूसे कुदसिय्या उस पलीद को अमीरुल मोमिनीन कहने वाले बदबख़्तों को सख़्त से सख़्त सज़ा देते थे। चुनान्चे,

तुम यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहते हो ?

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه यज़ीदे पलीद को "**अमीरुल मोमिनीन**" नहीं कहते थे और अगर कोई आप के सामने उसे "**अमीरुल मोमिनीन**" कहता तो उसे सज़ा देते। चुनान्चे, मरवी है कि आप के सामने एक बार दौराने गुफ़्तगू किसी ने यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहा तो आप ने उस से फ़रमाया : तुम यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहते हो ? फिर उसे 20 कोड़े मारने का हुक्म दिया।(1)

1...تاریخ الخلفاء، یزید بن معاویہ ابو خالد الاموی، ص ۱۶۲

www.dawateislami.net

यज़ीद को "पलीद" कहना कैसा ?

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में जब यज़ीद के बारे में सुवाल किया गया कि यज़ीद को पलीद कहना शरअ़न जाइज़ है या नहीं, नीज़ उस के नाम के साथ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहना दुरुस्त है या नहीं ? तो आप ने फ़रमाया : यज़ीद बेशक पलीद था, उसे पलीद कहना और लिखना जाइज़ है, और उसे رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه न कहेगा मगर नासिबी (यानी अपने सीने में ह़ज़रते अ़ली और ह़सन व हुसैन (رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) से बुग़्ज़ो कीना रखने वाला जो) कि अहले बैते रिसालत का दुश्मन है, وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى[1]

क्या कामिलुल ईमान शख़्स यज़ीद का ह़िमायती हो सकता है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : कुछ लोग हमारे मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं कि हम यज़ीद के ह़िमायती हैं। तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : बेटा ! क्या अल्लाह पाक पर ईमान रखने वाला भी यज़ीद का ह़िमायती हो सकता है ? क्या इस क़त्ल से बढ़ कर कोई फ़साद होगा ?[2]

मेरा बाप ना लाइक़ था

यज़ीद का बेटा मुआ़विय्या बड़ा नेक व सालेह़ था, क़त्ले हुसैन की वज्ह से अपने बाप यज़ीद ग़द्दार व मक्कार से सख़्त नफ़रत करता था। येह (अपने बाप यज़ीदे पलीद के बारे में) कहने लगा : मेरे बाप को हुकूमत दी गई,

1....फ़तावा रज़विय्या, 14 / 603, मुलख़्ख़सन

2...الصواعق المحرقہ، الباب الحادی عشر، الخاتمۃ فی بیان اعتقاد اھل السنۃ والجماعۃ.....الخ، ص۲۲۲ ملخصا

वोह ना लाइक़ था, नवासए रसूल से लड़ा, उस की उ़म्र कम और नस्ल तबाह कर दी गई, वोह अपनी क़ब्र में गुनाहों के सबब गिरवी रख दिया गया (यानी ता क़ियामत मुब्तलाए अ़ज़ाब हो गया), फिर रोते हुए कहा : हम पर सब से ज़ियादा गिरां उस की बुरी मौत और बुरा ठिकाना है, उस बदबख़्त ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलाद को क़त्ल किया, शराब ह़लाल की और काबे की बे हुरमती की।(1)

यज़ीद को "शहज़ादा" कहने वाला मुस्तह़िक़े नार है

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यज़ीदे पलीद फ़ासिक़, फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर (यानी गुनाहे कबीरा करने वाला) था, مَعَاذَ اللّٰہ उस से और रैह़ानए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क्या निस्बत ? आज कल जो बाज़ गुमराह कहते हैं कि हमें उन के मुआ़मले में क्या दख़्ल ? हमारे वोह (यानी इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भी शहज़ादे, वोह (यज़ीदे पलीद) भी शहज़ादे। ऐसा बकने वाला मर्दूद, ख़ारिजी, नासिबी (यानी अपने सीने में ह़ज़रते अ़ली और ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) से बुग़्ज़ो कीना रखने वाला और) मुस्तह़िक़े जहन्नम है।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जब तक ज़मीनो आस्मान का वुजूद बाक़ी रहेगा, वाक़िअ़ए करबला आ़शिक़ाने सह़ाबाओ अहले बैत को सब्रो तह़म्मुल, ईसारो क़ुरबानी और गुलशने इस्लाम की आबयारी का दर्स व पैग़ाम देता रहेगा। जफ़ाकार व सितम शिआ़र यज़ीदियों ने जिस बे मुरव्वती और बे दीनी का मुज़ाहरा किया यक़ीनन तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिल सकती,

1 ...الصواعق المحرقہ، الباب الحادی عشر، الخاتمۃ فی بیان اعتقاد اھل السنۃ و.....الخ، ص ۲۲۴، ملخصًا

2 ....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1,1 / 261

बा वुजूद येह कि घर का घर सब लुट गया, कई बीबियां बेवा और बच्चे यतीम हो गए, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथी, हाशिमी जवान, मुस्लिम बिन अ़क़ील व औलादे अ़क़ील, फ़रज़न्दाने अ़ली व शहज़ादगाने ह़सनैने करीमैन رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن यज़ीदी लश्कर के ज़हरीले तीरो तल्वार और नेज़ों से छलनी हो कर वक़्फ़े वक़्फ़े से नवासए रसूल के क़दमों पर निसार होते रहे, यज़ीदियों की बे मुरव्वती व बे ग़ैरती का आ़लम येह था कि दूध पीता नन्हा अ़ली असग़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शिद्दते प्यास से तड़पता रहा, बिल आख़िर तीर का शिकार हो कर शहादत से सरफ़राज़ हुवा, अल ग़रज़ गुमराहिय्यत के अ़लम बरदारों ने चमने ज़हरा के हरे भरे बोस्तान को दिन दहाड़े तहस नहस (तबाहो बरबाद) कर के रख दिया, मगर क़ुरबान जाइये मैदाने कारज़ार (मैदाने जंग) के बहादुर शहसुवारों, अहले बैते अत़हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के रौशन तारों और गुलशने फ़ातिमा के जिगर पारों की हिम्मत और सब्रो इस्तिक़्लाल पर कि इस क़दर दिलसोज़ मसाइबो आलाम में मुसल्सल तीन दिन भूक व प्यास बरदाश्त कर के भी सब्रो इस्तिक़ामत के साथ बात़िल के ख़िलाफ़ डटे रहे और सब्र का दामन मज़बूती से थामे रखा, क्यूंकि येह एक आज़्माइश थी और अल्लाह वालों की हमेशा से येह शान रही है कि आज़्माइशों में सब्र व बरदाश्त से काम लेते हैं। चुनान्चे,

शहज़ादए हुसैन का सब्रो इस्तिक़्लाल

अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने में जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन (इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन) رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ैद किया गया, बेड़ियां और हथकड़ियां डाल दी गईं, पहरेदार खड़े कर दिये गए, तो इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप को इस ह़ालत में देख कर रो पड़े और कहा : काश ! आप की जगह मुझे क़ैद कर दिया जाता। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने

फ़रमाया : क्या तुम्हारा येह ख़याल है कि इस क़ैदो बन्दिश से मुझे कर्ब व बे चैनी है। हक़ीक़त येह है कि अगर मैं चाहूं तो इस में से कुछ भी न रहे, येह फ़रमा कर बेड़ियों में से पाउं और हथकड़ियों में से हाथ निकाल दिये।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पैग़ामे करबला

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिलाशुबा असीरानो शहीदाने करबला का येह सब्र क़ाबिले तह्सीन और लाइक़े तक़्लीद है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अगर हम पर भी कोई ना गहानी मुसीबत आ जाए, मसलन क़रीबी अज़ीज़ वफ़ात पा जाएं या बच्चा बीमार पड़ जाए, डाका पड़ जाए या कोई हादिसा पेश आ जाए, रक़म या गाड़ी वग़ैरा गुम या चोरी हो जाए, सर्दी, गर्मी या लोडशेडिंग व महंगाई शिद्दत इख़्तियार कर जाए या नौकरी से निकाल दिया जाए, अल ग़रज़ बलाओं का हुजूम ही क्यूं न हो जाए, उस वक़्त मज़्लूमीने करबला के मसाइबो आलाम को याद कर के सब्रो इस्तिक़्लाल का मुज़ाहरा करते हुए सब्र सब्र और सिर्फ़ सब्र से काम लीजिये कि मुसीबतों पर सब्र करने वालों को **अल्लाह** पाक अपने फ़ज़्लो करम से बरोज़े क़ियामत बे शुमार इन्आमो इकराम से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। चुनान्चे,

मसाइबो आलाम पर सब्र की फ़ज़ीलत

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : जब मैं अपने किसी बन्दे के बदन या उस की औलाद या उस के माल की तरफ़ कोई मुसीबत भेजूं, फिर वोह सब्रे जमील के साथ इस का इस्तिक़्बाल करे, तो क़ियामत के दिन मुझे उस से हया आएगी कि मैं उस के लिये मीज़ान रखूं या उस का नामए आमाल खोलूं।[2]

1...المنتظم، سنۃ اربع وتسعین، ۵۳۰-علی بن الحسین...الخ، ۶/ ۳۳۰، ملخصا

2...نوادر الاصول، الاصل الخامس والثمانون والمائۃ، ۲/ ۷۰۰، حدیث: ۹۲۳

www.dawateislami.net

अलबत्ता अगर सब्र का दामन हाथ से छोड़ा या बिला वज्हे शरई किसी पर इज़्हार कर के ना शुक्री के अल्फ़ाज़ मुंह से निकालने की नादानी कर डाली तो याद रखिये ! सवाब हासिल होना तो कुजा, उलटा ख़सारे का बाइस हो जाएगा। चुनान्चे,

बे सब्री का नुक़्सान

मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मुसीबत के वक़्त रानों पर हाथ मारना, अज्र को बरबाद कर देता है।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जिसे कोई मुसीबत पहुंचे फिर वोह इस की वज्ह से अपने कपड़े फाड़े या रुख़्सार (गाल) पीटे या गिरेबान चाक करे या बाल नोचे तो गोया उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जंग के लिये नेज़ा उठा लिया।[2]

दुआ है कि अल्लाह पाक हमें भी असीरानो शुहदाए करबला رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के सदक़े मुसीबतों पर सब्र करने और ऐसे मौक़अ़ पर शिक्वाओ शिकायत करने से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यज़ीदे पलीद की दुन्या और मालो दौलत से महब्बत ही की वज्ह से येह सानेहा हुवा, उस ज़ालिमे बद अन्जाम को इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी से अपने इक्तिदार को ख़त़रा महसूस होता था, हालांकि हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुन्याए ना पाएदार से क्या सरोकार ! आप तो उम्मते मुस्लिमा के

---

1 ...مسند فردوس، ۲/ ۴۲، حدیث: ۳۷۱۷

2 ...الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ والاربعون، ص ۲۲۶

www.dawateislami.net

दिलों के ताजदार थे, हैं और रहती दुन्या तक रहेंगे। मगर उस बदबख़्त ने मालो दौलत की हवस के नशे में बद मस्त हो कर अपनी आख़िरत के साथ साथ दुन्या भी तबाहो बरबाद कर डाली, वाक़ेई दुन्या की महब्बत हर फ़ितनाओ फ़साद का सबब है। चुनान्चे,

मालो दौलत और दुन्या की महब्बत का वबाल

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है : حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ यानी दुन्या की महब्बत हर बुराई की जड़ है।[1]

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिसे दुन्या की महब्बत का शरबत पिलाया गया, वोह तीन तक्लीफ़ देह व परेशान कुन चीज़ों में ज़रूर मुब्तला होगा : (1) ऐसी सख़्ती जिस से उस की थकन दूर न होगी, (2) ऐसी हिर्स जिस से वोह ग़नी न होगा (3) ऐसी ख़्वाहिश जिस की तक्मील न कर सकेगा। क्यूंकि दुन्या ता़लिबा (तलब करने वाली) और मत़लूबा (जिसे तलब किया जाए) है, लिहाज़ा जिस ने दुन्या को तलब किया, आख़िरत उस के मरने तक उसे तलाश करती रहेगी, जब वोह मर जाएगा तो वोह उसे पकड़ लेगी और जिस ने आख़िरत तलब की तो दुन्या उसे ढूंडती रहेगी यहां तक कि वोह उस में से अपना पूरा रिज़्क़ हासिल कर ले।[2]

एक रिवायत में है कि दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते, जितना कि मालो दौलत की हिर्स और हुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं।[3]

---

❶...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/ ۳۳۸، حدیث: ۱۰۵۰۱

❷...معجم کبیر، ۱۰/ ۱۶۲، حدیث: ۱۰۳۲۸

❸...ترمذی، کتاب الزھد، باب ما جاء فی اخذ المال، ۴/ ۱۶۶، حدیث: ۲۳۸۳

www.dawateislami.net

याद रहे ! जो शख़्स अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र में रहता है, वोह दुन्या की रंगीनियों और उस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ता। लिहाज़ा हमें भी दुन्या की फ़ानी लज़्ज़तों में मगन रहने के बजाए हर वक़्त अपने ईमान की सलामती और क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी की फ़िक्र करनी चाहिये, यक़ीनन एक मुसलमान के लिये सब से क़ीमती सरमाया उस का ईमान है, अगर ईमान सलामत रहा तो नजात की उम्मीद की जा सकती है और अगर مَعَاذَاللّٰه गुनाहों की कसरत व नुहूसत के सबब ईमान ही बरबाद हो गया तो फिर नजात की कोई सूरत न होगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "सवानेहे करबला" का तआरुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़िअ़ए करबला की मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये **दावते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 192 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**सवानेहे करबला**" का मुत़ालआ़ कीजिये। इस किताब में अहले बैत और ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल के साथ साथ मारिकए करबला के वाक़िआ़त के मुख़्तलिफ़ पहलूओं को काफ़ी तफ़्सील के साथ बयान किया गया है। लिहाज़ा इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाइये।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इस किताब को पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना का तआरुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबाओ अहले बैत رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का फ़ैज़ पाने और दीगर नेक कामों में इस्तिक़ामत हासिल करने के लिये दावते

www.dawateislami.net

इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्याओ आख़िरत की ढेरों भलाइयां ह़ासिल होंगी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दावते इस्लामी** कमो बेश 103 शोबाजात में सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही में से एक शोबा जामिअ़तुल मदीना भी है। दावते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम **जामिअ़तुल मदीना** की सब से पहली शाख़ सिने 1995 ईसवी में खोली गई और अब तक اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक मसलन हिन्द, जुनूबी अफ़्रीक़ा, इंग्लेन्ड, नेपाल और बंग्लादेश वग़ैरा में भी जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन और जामिअ़तुल मदीना लिलबनात क़ाइम हैं, जिन में हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इल्मे दीन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ अपनी इल्मी प्यास बुझा रहे हैं, बल्कि दूसरों को भी नूरे इल्म से मुनव्वर करने में मसरूफ़ हैं। दावते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना की नुमायां ख़ुसूसिय्यात में एक येह भी है कि त़लबा को न सिर्फ़ दीनी तालीम से आरास्ता किया जाता है बल्कि उन की अख़्लाक़ी और रूह़ानी तरबियत की त़रफ़ भी भरपूर तवज्जोह दी जाती है।

अमीरे अहले सुन्नत की त़लबा से मह़ब्बत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ त़लबा से अपनी मह़ब्बत का इज़्हार करते हुए फ़रमाते हैं : मैं दावते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना के त़लबए किराम से बहुत मह़ब्बत करता हूं और इन के सदक़े से अपने लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत किया करता हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जामिअ़तुल मदीना के त़लबा नमाज़े पंजगाना के इलावा दीगर नवाफ़िल भी पढ़ते हैं और मुतअ़द्दद त़लबा

मिल कर सलातुत्तौबा, तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त की नमाज़ों का एहतिमाम भी करते हैं। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अपने बच्चों को जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा कर उन की और अपनी दुन्याओ आख़िरत को बेहतर बनाएं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो! आज के बयान में हम ने यज़ीदे पलीद और इस की नापाक फ़ौज की फ़ितना परवरी, ज़ुल्मो ज़ियादती और ज़िल्लत आमेज़ अन्जाम के बारे में सुना।

...नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के फ़ितनाओ फ़साद और ज़ुल्मो ज़ियादती के बारे में पहले ही वाज़ेह़ त़ौर पर इरशाद फ़रमा दिया था कि "सब से पहले मेरी सुन्नत का बदलने वाला बनू उमय्या का यज़ीद नामी शख़्स होगा" नीज़ येह भी इरशाद फ़रमाया कि "मेरी उम्मत में अ़दलो इन्साफ़ क़ाइम रहेगा फिर बनू उमय्या का यज़ीद नामी एक शख़्स आ कर इस अ़दलो इन्साफ़ में रख़्ना अन्दाज़ी करेगा" और फिर येही हुवा कि उस बदबख़्त ने अ़दलो इन्साफ़ की बुन्यादें खोद कर तारीख़ के सफ़ह़ात पर ज़ुल्मो ज़ियादती की वोह दास्तान लिखी कि जिसे पढ़ सुन कर बदन लरज़ीदा और आंखें आबदीदा हो जाती हैं।

...मसाइबो आलाम पर सब्र की फ़ज़ीलत और उस पर मुरत्तब होने वाले दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद और बे सब्री के नुक़्सानात के बारे में सुना।

...औलिया उल्लाह के साथ बुग़्ज़ो अ़दावत रखने वालों से अल्लाह पाक ने एलाने जंग फ़रमाया है, इसी त़रह़ अहले बैत के मक़ामो मर्तबे को वाज़ेह़ करते हुए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अहले बैत का दोस्त मेरा दोस्त

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

और अहले बैत का दुश्मन मेरा दुश्मन है। दुन्या की महब्बत और मालो दौलत की हिर्स व लालच हर बुराई की जड़ है।

...यज़ीदे पलीद, इब्ने ज़ियाद और इन के हिमायतियों के बारे में सुना कि किस तरह चुन चुन कर इन्हें इब्रतनाक सज़ा दी गई।

...यक़ीनन यज़ीद और यज़ीदियों के इन नापाक कामों की वज्ह से ता क़ियामत दुन्या इन्हें बुरे अल्क़ाब से याद करेगी, जैसा कि आला हज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी यज़ीद को पलीद कहने की शरई इजाज़त और इस के बारे में अच्छे अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करने मसलन इस पलीद को अमीरुल मोमिनीन कहने लिखने या इस के साथ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहने लिखने की मुमानअत फ़रमाई नीज़ यज़ीदे पलीद के लिये अच्छे अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करने वालों की मज़म्मत बयान करते हुए उन्हें अहले बैत से दुश्मनी रखने वालों में शुमार फ़रमाया। बल्कि ख़लीफ़ए राशिद हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तो यज़ीद को **"अमीरुल मोमिनीन"** कहने वाले एक शख़्स को कोड़े भी लगवाए।

दुआ है कि **अल्लाह** पाक हमें सहाबए किराम व अहले बैते इज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की महब्बत पर जीना मरना नसीब फ़रमाए।

آمِيْن بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"

प्यारे इस्लामी भाइयो! सहाबए किराम व अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की महब्बत व उल्फ़त का जाम पीने पिलाने, शुहदाए करबला की बे मिस्ल कुरबानियों की यादें ताज़ा करने और इन के मदनी पैग़ाम को दुन्या भर में आम करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दावते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में

www.dawateislami.net

बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम "राहे खुदा में सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र भी है" अहादीसे मुबारका में जा बजा राहे खुदा में सफ़र के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। चुनान्चे,

राहे खुदा में सफ़र की बरकतें

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस का दिल राहे खुदा में ख़ौफ़ की वज्ह से धड़कने लगता है तो अल्लाह पाक उस पर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देता है।"(1)

एक रिवायत में है कि "जिस बन्दे के पाउं राहे खुदा में गर्द आलूद हों, उसे जहन्नम की आग न छूएगी।"(2)

तरग़ीबो तह़रीस के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है।

इसी माहोल ने अदना को आला कर दिया देखो

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं अपने वालिदैन का इकलौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द दरजा ढीट और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता। मां बाप समझाते तो उन्हें झाड़ देता। वोह बेचारे बाज़ अवक़ात रो पड़ते। दुआएं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं। उस अ़ज़ीम लम्ह़े पर लाखों सलाम, जिस लम्ह़े मुझे दावते इस्लामी वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत

---

1 ...مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/ ۳۶۹، حدیث: ۲۴۶۰۲

2 ...بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب من اغبرت قدماہ... الخ، ۲/ ۲۵۷، حدیث: ۲۸۱۱

मिली और उस ने महब्बत व प्यार से इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मुझ पापियो बदकार को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया। चुनान्चे, मैं आशिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। न जाने आशिक़ाने रसूल ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का पथ्थरनुमा दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था, मोम बन गया, मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं मदनी क़ाफ़िले से नमाज़ी बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साहिब की दस्तबोसी की और अम्मी जान के क़दम चूमे। घरवाले हैरान थे कि इसे क्या हो गया ! कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था, वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल की सोहबत ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने यानी सदाए मदीना[1] लगाने की ज़िम्मेदारी मिली हुई है।

कर सफ़र आएंगे तो सुधर जाएंगे अब न सुस्ती करें, क़ाफ़िले में चलो[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की तरफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"[3]

1....दावते इस्लामी के मदनी माहोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं।

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 672

3...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذبالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

www.dawateislami.net

इमामा शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब

पहले दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा हों : ...जमाअ़त और इमामे के साथ नमाज़ 10 हज़ार नेकियों के बराबर है।[(1)] इमामे के साथ एक जुम्आ़ बिगै़र इमामे के 70 जुम्ओं के बराबर है।[(2)] ...इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बान्धिये।[(3)] ... इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बदनुमा हो।[(4)] ...रूमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इमामा ही हो गया और छोटा रूमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मकरूह है।[(5)] ...इमामे को जब अज़ सरे नौ बांधना हो तो जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ खोले और यक बारगी ज़मीन पर न फेंक दे।[(6)] ...अगर ज़रूरतन उतारा और दोबारा बांधने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा।[(7)]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1...مسند فردوس، ۲/ ۳۱، حدیث: ۳۶۲۱

2...ابن عساکر، رقم ۴۳۹۹، ابو محمد عبدان بن زرین المقری، ۳۷/ ۳۵۵، حدیث: ۷۵۳۳

3...کشف الالتباس فی استحباب اللباس، ص ۳۸

4....फ़तावा रज़विय्या, 22/186

5....फ़तावा रज़विय्या, 7/299

6...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع فی اللبس...الخ، ۵/ ۳۳۰

7....फ़तावा रज़विय्या, 6/214

www.dawateislami.net

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ दो कुतुब (1)... **312 सफ़हात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअत**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़हात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

...

सज्दए तिलावत का तरीक़ा

खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए। पहले, पीछे दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बाद खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तहब। (عالمگیری،۱/ ۱۳۵)

सज्दए तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है न उस में **तशह्हुद** है न सलाम। (تنویر الابصار مع ردالمحتار،۲/ ۵۸۰)

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

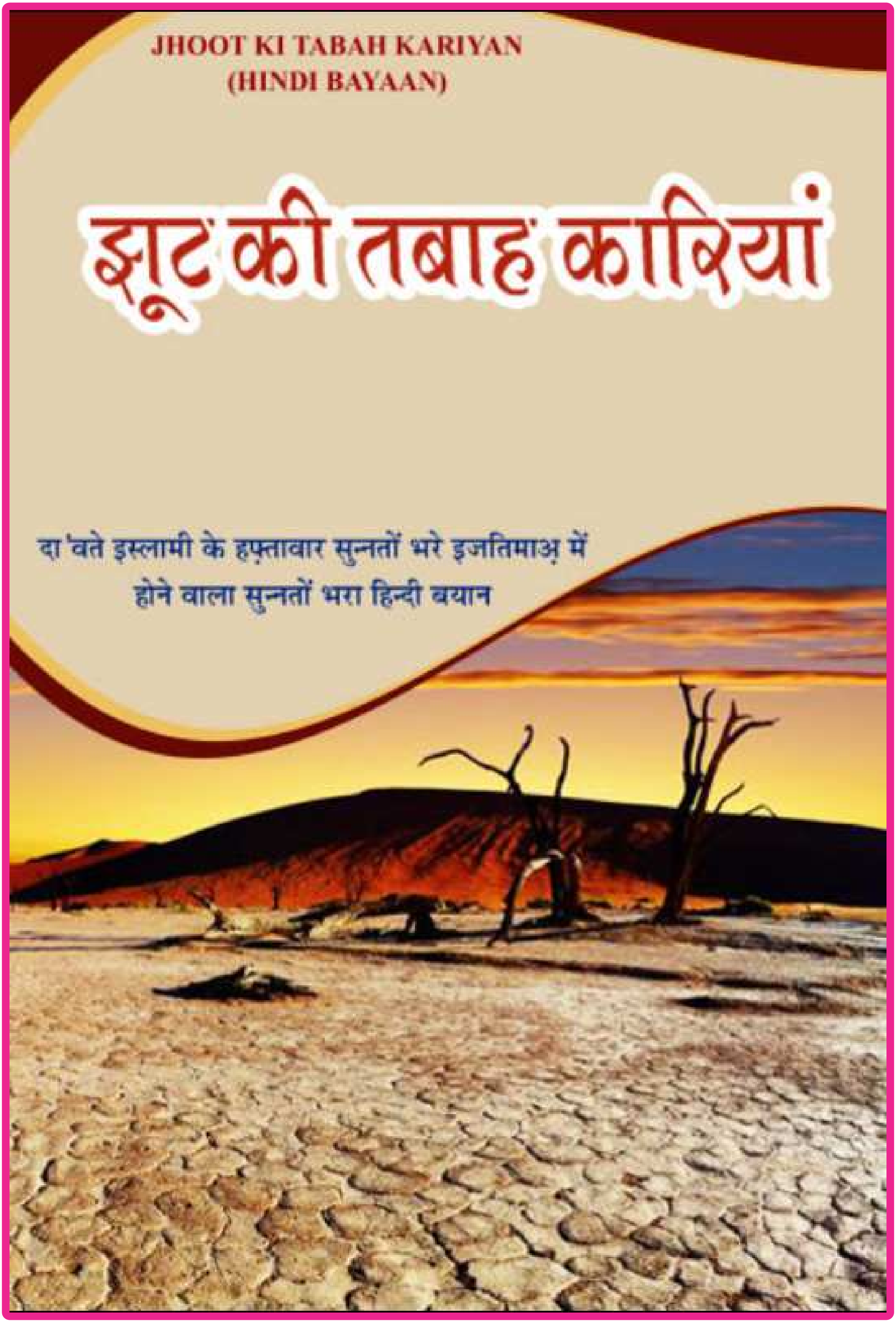
JHOOT KI TABAH KARIYAN
(HINDI BAYAAN)
झूट की तबाह कारियां
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने भाई हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात के लिये गए, वोह बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे थे, (ख़ुशी की वज्ह पूछी गई तो) बताया कि आज रात मैं ख़्वाब में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा, आप ने मुझे एक डोल (यानी बरतन) अ़त़ा फ़रमाया, जिस में पानी था, मैं ने पेट भर कर पिया, जिस की ठन्डक अभी तक मह़सूस कर रहा हूं। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : आप को येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा ? फ़रमाया : ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वज्ह से।[1]

दीदार की भीक कब बटेगी ? मंगता है उम्मीद वार आक़ा ![2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

झूटा चोर

एक शख़्स ने अपने **चचा के बेटे** (Cousin) का माल चुरा लिया, मालिक ने चोर को ह़रमे पाक में पकड़ लिया और कहा : येह मेरा माल है ! चोर ने

---

1 ...سعادة الدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف المرائی... الخ، اللطیفة الخامسة والثمانون، ص ۱۴۹

2 ....ज़ौक़े नात, स. 46

www.dawateislami.net

कहा : तुम झूट बोलते हो ! उस शख़्स ने कहा : ऐसी बात है तो क़सम खा कर दिखाओ ! येह सुन कर उस चोर ने (काबा शरीफ़ के सामने) "**मक़ामे इब्राहीम**" के पास खड़े हो कर क़सम खा ली, येह देख कर माल के मालिक ने "**रुक्ने यमानी**" और "**मक़ामे इब्राहीम**" के दरमियान खड़े हो कर दुआ़ के लिये हाथ उठा लिये, अभी वोह दुआ़ मांग ही रहा था कि चोर पागल हो गया और वोह मक्का शरीफ़ में इस त़रह़ चीख़ने चिल्लाने लगा : "मुझे क्या हो गया ? और माल को क्या हो गया ! और माल के मालिक को क्या हो गया !" येह ख़बर **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दादाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पहुंची, तो आप तशरीफ़ लाए और वोह माल जम्अ़ कर के जिस का था, उस शख़्स को दे दिया और वोह उसे ले कर चला गया, जब कि वोह चोर पागलों की त़रह़ (भागता और) चीख़ता चिल्लाता रहा, यहां तक कि एक पहाड़ से नीचे गिर कर मर गया और जंगली जानवर उस को खा गए।[(1)]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! चोरी करने, झूटी क़सम खाने और झूट बोलने वाला कैसे इ़ब्रतनाक अन्जाम से दोचार हुवा। याद रखिये ! झूट तमाम गुनाहों की जड़ और तमाम बुरी आ़दतों में सब से बुरी ख़स्लत है। झूट ज़बान से बोला जाए ख़्वाह अ़मल से ज़ाहिर किया जाए बहर सूरत क़ाबिले मज़म्मत है।

झूट किसे कहते हैं

झूट का मत़लब येह है कि "**ह़क़ीक़त के बर अ़क्स कोई बात की जाए।**"[(2)] यानी अगर किसी ने पूछा : आप हफ़्तावार इजतिमाअ़ में तशरीफ़ लाए

❶...اخبار مکۃ للازرقی، باب ماجاء فی الحطیم و این موضعہ، ۲/۲۶

❷...شرح مسلم للنووی، مقدمۃ، باب الکشف عن معایب رواۃ الحدیث، ۱/۹۴

www.dawateislami.net

थे ? और जवाबन कह दिया : जी हां ! (ह़ालांकि शिर्कत नहीं की) । क्या आप ने खाना खा लिया है ? और जवाबन कह दिया : जी हां ! (ह़ालांकि खाना नहीं खाया था) तो येह झूट हुवा, क्यूंकि वाक़ेअ़ (ह़क़ीक़त) के ख़िलाफ़ है। झूट बोलना ऐसी बुरी आ़दत है कि हर मज़्हब में इसे बुराई समझा जाता है, दीने इस्लाम ने इस से बचने की बहुत ताकीद की है, क़ुरआने पाक ने कई मक़ामात पर इस की मज़म्मत बयान फ़रमाई और झूट बोलने वालों पर ख़ुदा की लानत भी है। चुनान्चे,

क़ुरआन में झूट की मज़म्मत

﴾1﴿...**पारह 17, सूरतुल ह़ज, आयत नम्बर 30** में इरशाद होता है :

وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿۳۰﴾ (پ۱۷، الحج: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बचो झूटी बात से ।

﴾2﴿...**पारह 14, सूरतुन्नह़्ल, आयत नम्बर 105** में इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا یَفْتَرِی الْكَذِبَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ (پ۱۴، النحل: ۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : झूट बोहतान वोही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और वोही झूटे हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : झूट बोलना और इफ़्तिरा करना (यानी बोहतान लगाना) बे ईमानों ही का काम है।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह आयते मुक़द्दसा इस बात पर क़वी दलील है कि झूट तमाम कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह और बद तरीन बुराई है, क्यूंकि झूट बोलने और झूटा इल्ज़ाम लगाने की जुरअत वोही शख़्स करता

1....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 14, अन्नह़्ल, तह़्तुल आयत : 105

www.dawateislami.net

है, जिसे अल्लाह पाक की निशानियों पर यक़ीन न हो या वोह जो ग़ैर मुस्लिम हो और अल्लाह पाक का झूट की मज़म्मत में इस त़रह़ का कलाम फ़रमाना, निहायत ही सख़्त तम्बीह है।(1)

नेकियों में दिल लगे हर दम बना आ़मिले सुन्नत ऐ नानाए हुसैन !
झूट से बुग़्ज़ो ह़सद से हम बचें कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन !(2)

ईमान कमज़ोर कर देने वाला मरज़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये ! झूट बोलने वाले की क़ुरआने पाक में कैसी मज़म्मत बयान फ़रमाई गई है। बार बार झूट बोलना ईमान की कमज़ोरी पर दलालत करता और झूटे शख़्स के बात़िनी बिगाड़ का भी सबब बनता है, झूट एक ऐसा मरज़ है जो ईमान को कमज़ोर व नातुवां करता चला जाता है। झूट का मरज़ लाह़िक़ होने का अन्दाज़ भी निराला और ग़ैर मह़सूस होता है, इन्सान हर बार झूट बोलते हुए येही सोचता है कि एक बार झूट बोलने से कौन सा बड़ा नुक़्सान हो जाएगा। ह़ालांकि मुआ़शरे में बिगाड़ उ़मूमन झूट बोलने की वज्ह से ही होता है। ब कसरत झूट बोलने वाला अल्लाह पाक के हां बहुत बड़ा झूटा लिख दिया जाता और जहन्नम का मुस्तह़िक़ हो जाता है। आइये झूट की मज़म्मत पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं।

झूट की मज़म्मत पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : सच बोलना नेकी है और नेकी जन्नत में ले जाती है और झूट बोलना फ़िस्क़ो फ़ुजूर (गुनाह) है और येह दोज़ख़ में ले जाता है।(3)

1...تفسیر کبیر، پ۱۴، النحل، تحت الآیۃ:۱۰۵، ۷/۲۷۲ملتقطا
2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 258
3...مسلم، کتاب الادب، باب قبح الکذب...الخ، ص۱۰۷۷، حدیث:۲۶۳۷

www.dawateislami.net

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : बेशक सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और बेशक बन्दा सच बोलता रहता है यहां तक कि **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सिद्दीक़ (यानी बहुत सच बोलने वाला) लिख दिया जाता है। जब कि झूट गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है और बेशक बन्दा झूट बोलता रहता है, यहां तक कि **अल्लाह** पाक के नज़्दीक कज़्ज़ाब (यानी बहुत बड़ा झूटा) लिख दिया जाता है।[1]

﴾3﴿...एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जहन्नम में ले जाने वाला अ़मल कौन सा है ? इरशाद फ़रमाया : झूट बोलना, जब बन्दा झूट बोलता है तो गुनाह करता है और जब गुनाह करता है तो नाशुक्री करता है और जब नाशुक्री करता है तो जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।[2]

हाए ना फ़रमानियां बदकारियां बे बाकियां आह! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है
ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स! गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात से पता चला ! झूट कितनी हलाकत खे़ज़ बीमारी है कि मुसल्सल झूट बोलने की वज्ह से बन्दा **अल्लाह** पाक के नज़्दीक बहुत बड़ा झूटा लिख दिया जाता है। हम में से कोई हरगिज़ येह नहीं चाहेगा कि हमारा नाम थाने में मुजरिमों के रजिस्टर में दर्ज कर दिया जाए और अगर ऐसा हो जाए तो हमारे दिन का चैन और रातों की नींद व सुकून बरबाद हो

1...بخاری، کتاب الادب، باب قول اللّٰہ تعالٰی یاایھا الذین امنوا...الخ، ۴/۱۲۵، حدیث:۶۰۹۴

2...مسند احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص، ۲/۵۸۹، حدیث:۶۶۵۲

3....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 478

जाए, ग़ौर कीजिये ! जब मुजरिमों की फ़ेहरिस्त में अपना नाम देखना किसी को मन्ज़ूर नहीं तो ख़ुदाए वाहिदो क़हहार عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक अगर किसी को झूटों की फ़ेहरिस्त में डाल दिया जाए और मुसल्सल झूट बोलने की वज्ह से उसे बहुत बड़ा झूटा लिख दिया जाए, एक मुसलमान को येह भी गवारा नहीं होना चाहिये। इसी तरह अगर किसी को मालूम हो कि फ़ुलां रास्ते में क़दम क़दम पर ख़तरा है, उस पर जाने से जानो माल का नुक़्सान भी हो सकता है, तो अक़्लमन्द शख़्स हमेशा उस रास्ते पर जाने से बचता रहेगा, मगर अफ़्सोस ! हमें अपनी दुन्या बेहतर बनाने की फ़िक्र तो हर दम लगी रहती है, लेकिन अपनी आख़िरत अच्छी बनाने की कोशिश से यक्सर ग़ाफ़िल हैं, हम जानते हैं कि झूट जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला एक ख़तरनाक रास्ता है, मगर हम तमाम तर ख़तरात को नज़र अन्दाज़ करते हुए बड़ी तेज़ी से उस रास्ते पर चले जा रहे हैं, अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! अब तो झूट बोलने वालों ने مَعَاذَاللّٰه झूट को बुराई समझना ही छोड़ दिया। दुन्या में झूट बोल कर चन्द टकों का फ़ाएदा उठाने वाले, झूटे चुटकुलों के ज़रीए दूसरों को हंसाने वाले, झूटे ख़्वाब सुना कर दूसरों का दिल बहलाने वाले, अपने नाम के साथ झूटे अल्क़ाबात लगा कर हुब्बे जाह (इज़्ज़तो शोहरत की महब्बत) का सामान करने वाले याद रखें ! कि मरने के बाद झूट का अज़ाब हरगिज़ हरगिज़ बरदाश्त न हो सकेगा। चुनान्चे,

जबड़े चीरने का अज़ाब

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स मेरे पास आया और कहा : मेरे साथ चलिये ! मैं उस के साथ चल दिया, यकायक मैं ने ख़ुद को दो आदमियों

के पास पाया, एक खड़ा और दूसरा बैठा था, जो खड़ा था उस के हाथ में लोहे का ज़म्बूर था, जिसे वोह बैठे हुए शख़्स के जबड़े में डाल कर उसे गुद्दी तक चीर देता, फिर दूसरे जबड़े में डाल कर उसे भी चीर देता, इतने में पहले वाला जबड़ा अपनी अस्ली ह़ालत पर लौट आता, मैं ने अपने साथ वाले से पूछा : येह क्या है ? तो उस ने कहा : येह झूटा शख़्स है, इसे क़ियामत तक क़ब्र में येही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा ।[1]

मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि "**झूटा**" दोज़ख़ में कुत्ते की शक्ल में, "**ह़सद करने वाला**" सुअर की शक्ल में और "**ग़ीबत करने वाला**" बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा ।[2]

ख़त़ाओं को मेरी मिटा या इलाही ! मुझे नेक ख़स्लत बना या इलाही !
मुझे ग़ीबतो चुग़ली व बद गुमानी की आफ़ात से तू बचा या इलाही !
ज़बान और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना अ़त़ा हो पए मुस्त़फ़ा या इलाही ![3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में जहां ह़सद के मज़्मूम जज़्बे को दिल में जगह देने वालों और लोगों की ग़ीबत करने वालों के लिये दर्से इ़ब्रत है, वहीं झूट बोलने वालों के लिये भी सबक़ मौजूद है । झूट बोल कर इस फ़ानी दुन्या में वक़्ती कामयाबी पाने वाला फूले नहीं समाता, लेकिन क़ब्रो आख़िरत में सिवाए कफ़े अफ़्सोस (यानी अफ़्सोस से हाथ मलने) के उस के पास कोई और

1....مساوئ الاخلاق للخرائطی، باب ماجاء فی الکذب...الخ، ص:۷۲، حدیث:۱۳۱۔ جھوٹا چور، ص ۱۴

2....تنبیہ المغترین، الباب الثالث فی جملۃ اخری من الاخلاق، ومنہا سد باب الغیبۃ...الخ، ص ۱۹۴

3....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 100,101

www.dawateislami.net

चारा न होगा। ज़रा ग़ौर कीजिये ! दुन्या में दाढ़ का दर्द न सह सकने वाला, आख़िरत में जबड़े चीरे जाने पर होने वाली तक्लीफ़ किस त़रह़ बरदाश्त कर सकेगा ? दुन्या में एक मच्छर के काट लेने पर बे क़रार हो जाने वाला, झूट बोलने की वज्ह से क़ब्र में होने वाले अ़ज़ाब को किस त़रह़ सह सकेगा ? लिहाज़ा हमें तमाम गुनाहों के साथ साथ झूट जैसे बदतरीन गुनाह से भी बचने की कोशिश करनी चाहिये।

मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं

हर त़रह़ के गुनाहों ख़ुसूसन झूट से बचने और सच की आ़दत बनाने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं। याद रखिये ! ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दिया जाए तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है, इसी त़रह़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला, **अल्लाह** पाक व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी "**अनमोल हीरा**" बन कर ख़ूब जग मगाता है। अगर हम भी झूट, ग़ीबत, चुग़ली, फ़िल्में ड्रामे देखने दिखाने, गाने बाजे सुनने, सुनाने जैसी बुरी आ़दतों से पीछा छुड़ाना चाहते हैं तो हाथों हाथ इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अ़मली त़ौर पर दावते इस्लामी के मदनी कामों में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते रहें, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबियत के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार करें, कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और अपनी आख़िरत संवारने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात के रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर कर के ज़िम्मेदार को हर मदनी (इस्लामी) माह की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लें। इस के साथ साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़, हफ़्तावार इजतिमाई त़ौर पर देखे जाने

www.dawateislami.net

वाले "मदनी मुज़ाकरे" में ख़ुद भी शिर्कत करते रहें और दूसरों तक भी इस की दावत पहुंचाते रहें, दावते इस्लामी का हर दिल अ़ज़ीज़, 100 फ़ीसद इस्लामी चैनल "**मदनी चैनल**" ख़ुद भी देखें और दूसरों को भी देखने की तरग़ीब दिलाते रहें। अगर इन मदनी कामों में मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ शिर्कत और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब हो गई तो **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत मज़ीद पुख़्ता होगी, सह़ाबाओ औलिया का मुबारक फ़ैज़ान जारियो सारी होगा, गुनाहों से दिल बेज़ार होगा और फ़िक्रे आख़िरत के साथ सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी बसर करने का भी ज़ेहन बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब सिखाता है हर दम सदा मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर अ़मल का नतीजा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम दुन्या में जो अ़मल करते हैं, उस के नताइज भी हमारे सामने आते रहते हैं। अगर अ़मल नेक हो तो उस का नतीजा भी अच्छा होगा और अगर बुरा हो तो यक़ीनन उस का नतीजा भी बुरा ही सामने आएगा। चूंकि झूट बुरे आमाल से तअ़ल्लुक़ रखता है तो इस के नताइज भी बुरे ही निकलते हैं। बसा अवक़ात झूट बोलने में ब ज़ाहिर फ़ाएदा मह़सूस हो रहा होता है, मगर अन्जाम बिल आख़िर बुरा ही होता है, अगर दुन्या में बुरा नतीजा सामने न भी आए, तब भी क़ब्रो

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 647

आख़िरत में इस के सबब ज़रूर पकड़ हो सकती है। आइये ! अह़ादीसे मुबारका में बयान कर्दा झूट की मुख़्तलिफ़ तबाहकारियां सुनते हैं। चुनान्चे,

झूट के भयानक नताइज

...जब बन्दा झूट बोलता है, तो उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हट जाता है।(1) ...झूट बोलना बहुत बड़ी ख़ियानत है।(2) ...झूट ईमान के मुख़ालिफ़ है।(3) ...लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलने वाले के लिये हलाकत है।(4) ...लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलने वाला आस्मानो ज़मीन के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा जहन्नम की गहराई में गिरता है।(5) ...झूट बोलने से मुंह काला हो जाता है।(6) ...झूटी बात कहना कबीरा गुनाह है।(7) ...झूट बोलना निफ़ाक़ की अ़लामतों और मुनाफ़िक़ की निशानियों में से है।(8) ...झूट बोलने वाले क़ियामत के दिन, अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा अफ़राद में शामिल होंगे।(9)

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा चुप रहने का अल्लाह सलीक़ा तू सिखा दे !
मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं ! अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे !(10)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

❶...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الصدق والکذب، ۳/۳۹۲، حدیث: ۱۹۷۹
❷...ابوداود، کتاب الادب، باب فی المعاریض، ۴/۳۸۱، حدیث: ۴۹۷۱
❸...مسند احمد، مسند ابی بکر الصدیق، ۱/۲۲، حدیث: ۱۶
❹...ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء من تکلم بالکلمة لیضحک الناس، ۴/۱۴۲، حدیث: ۲۳۲۲
❺...شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۱۳، حدیث: ۴۸۳۲
❻...شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۰۸، حدیث: ۴۸۱۳
❼...معجم کبیر، ۱۸/۱۴۰، حدیث: ۲۹۳، ملخصا
❽...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، ص۵۳، حدیث: ۲۱۰
❾...مساوئ الاخلاق للخرائطی، باب ذم النفاق والتعوذ باللّٰہ منہ، ص۱۴۴، حدیث: ۲۹۹
❿....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 115

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा कीजिये कि झूट आख़िरत के लिये किस क़दर नुक़्सान देह है। लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है जो झूट से पीछा छुड़ा कर हमेशा सच का दामन थामे रहे। सच बोलने से इन्सान न सिर्फ़ झूट की इन वईदों से बच सकेगा बल्कि सच बोलने के फ़वाइद से भी माला माल होगा। चुनान्चे,

सच बोलने के फ़वाइद

मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (सच बोलने के फ़वाइद बयान करते हुए) फ़रमाते हैं : ...जो शख़्स सच बोलने का आ़दी हो जाए, अल्लाह पाक उसे नेक कार बना देगा। ...उस की आ़दत अच्छे काम करने की हो जाएगी। ...इस की बरकत से वोह मरते वक़्त तक नेक रहेगा। ...बुराइयों से बचेगा। ...जो अल्लाह पाक के नज़्दीक सिद्दीक़ हो जाए उस का ख़ातिमा अच्छा होता है। ...वोह हर क़िस्म के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहता है। ...हर क़िस्म का सवाब पाता है। ...दुन्या भी उसे सच्चा कहने, अच्छा समझने लगती है। ...उस की इ़ज़्ज़त लोगों के दिलों में बैठ जाती है।[(1)] ... सच एक ऐसा नूर है जो सच बोलने वालों के दिलों की हिदायत का सबब बनता है, जिस क़दर उन्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल होता है, उतना ही उन्हें वोह नूर ह़ासिल होता जाता है।[(2)]

1....मिरआतुल मनाजीह़, 6/ 452

2...روح البیان، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ:۳۵، ۷/۱۷۵

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सच बोलने वाले ख़ुश नसीब लोग कैसे कैसे अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल और दुन्याओ आख़िरत के इन्आ़मात से सरफ़राज़ होते हैं, लिहाज़ा अगर हम भी इन इन्आ़मात व फ़ज़ाइल के हुसूल के ख़्वाहिशमन्द हैं तो हमें भी अपने आप को सच का ख़ूगर (आ़दी) बनाना होगा। वाके़ई जहां सच बोलने के उख़रवी फ़ज़ाइलो बरकात ह़ासिल होते हैं, वहीं बसा अवक़ात बड़ी बड़ी दुन्यवी परेशानियों से भी नजात मिल जाती है। चुनान्चे,

सच्चा चरवाहा

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने बाज़ अस्ह़ाब के साथ सफ़र में थे, रास्ते में एक जगह ठहरे और खाने के लिये दस्तर ख़्वान बिछाया, इतने में एक चरवाहा (यानी बकरियां चराने वाला) वहां आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आइये, दस्तर ख़्वान से कुछ ले लीजिये। उस ने अ़र्ज़ की : मेरा रोज़ा है, आप ने फ़रमाया : एक तो सख़्त गर्मी और दूसरा तुम पहाड़ों में बकरियां चरा रहे हो, फिर भी (नफ़्ल) रोज़ा रखे हुए हो। उस ने कहा : अल्लाह पाक की क़सम ! मैं येह इस लिये कर रहा हूं ताकि गुज़रे दिनों की तलाफ़ी कर सकूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की परहेज़गारी का इमतिह़ान लेने के इरादे से फ़रमाया : क्या तुम अपनी बकरियों में से एक बकरी हमें बेचोगे ? हम इस की क़ीमत अदा करेंगे और रोज़ा इफ़्त़ार करने के लिये तुम्हें गोश्त भी देंगे। उस ने जवाब दिया : येह बकरियां मेरी नहीं, मेरे मालिक की हैं। आप ने आज़माने के लिये फ़रमाया : मालिक से कह देना कि भेड़िया, इन में से एक को ले गया है, ग़ुलाम ने कहा : तो फिर अल्लाह पाक कहां है ? (यानी अल्लाह पाक तो देख रहा है, वोह तो ह़क़ीक़त को जानता है और इस पर मेरी पकड़ फ़रमाएगा !) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मदीनए मुनव्वरा

वापस तशरीफ़ लाए तो उस के मालिक से गुलाम और सारी बकरियां ख़रीद लीं, फिर चरवाहे को आज़ाद कर दिया और बकरियां भी उसे तोह़फ़े में दे दीं।[(1)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सच बोलने से जान बच गई

मन्क़ूल है कि एक दिन ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ चन्द क़ैदियों को क़त्ल करवा रहा था, एक क़ैदी उठ कर कहने लगा : ऐ अमीर ! मेरा तुम पर एक ह़क़ है। ह़ज्जाज ने पूछा : वोह क्या ? कहने लगा : एक दिन फ़ुलां शख़्स तुम्हें बुरा भला कह रहा था, तो मैं ने तुम्हारा दिफ़ाअ़ (यानी बचाव) किया था। ह़ज्जाज बोला : इस का गवाह कौन है ? उस शख़्स ने (लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर) कहा : मैं **अल्लाह** पाक का वासित़ा दे कर कहता हूं, जिस ने वोह गुफ़्तगू सुनी थी वोह गवाही दे। एक दूसरे क़ैदी ने उठ कर कहा : हां ! येह वाक़िआ़ मेरे सामने पेश आया था। ह़ज्जाज ने कहा : पहले क़ैदी को रिहा कर दो, फिर गवाही देने वाले से पूछा : तुझे क्या रुकावट थी कि तू ने उस क़ैदी की त़रह़ मेरा दिफ़ाअ़ (यानी बचाव) न किया ? उस ने सच्चाई से काम लेते हुए कहा : "मेरे दिल में तुम्हारी पुरानी दुश्मनी थी।" ह़ज्जाज ने कहा : इसे भी रिहा कर दो, क्यूंकि इस ने बड़ी हिम्मत के साथ **सच** बोला है।[(2)]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा सच बोलने वाला हमेशा कामयाब होता है, क्यूंकि "**सांच को आंच नहीं**" यानी सच बोलने वाले को कोई ख़त़रा नहीं, वोह सरासर फ़ाएदे में ही है। मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में झूट एक वबाई मरज़ की सूरत इख़्तियार करता जा रहा है। मर्द हो या औ़रत, छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब, वज़ीर हो या उस का मुशीर, अफ़्सर हो या कोई चौकीदार, अल ग़रज़ ! मुआ़शरे की ग़ालिब अक्सरिय्यत इस

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الامانات ووجوب ادائھا الی اھلھا، ۴/ ۳۲۹، حدیث: ۵۲۹۱، ملخصا

2 ...وفیات الاعیان، رقم ۱۴۹، ابو محمد الحجاج بن یوسف، ۲/ ۲۸

मरज़ का शिकार नज़र आती है। बद क़िस्मती से आज कल ऐसे मवाक़ेअ़ पर भी झूट का सहारा ले लिया जाता है, जहां सच बोलने की सूरत में कोई दुन्यवी नुक़्सान भी नहीं होता।

बच्चों से झूट बोलना

इन्ही सूरतों में से एक, वालिदैन का अपने कम उ़म्र बच्चों से झूट बोलना भी है। उ़मूमन देखा जाता है कि वालिदैन छोटे बच्चों से अपनी **बात मनवाने के लिये** त़रह़ त़रह़ के झूट बोलते हैं। जैसे इधर आओ बेटा ! चीज़ ले लो, फिर चले जाना, (ह़ालांकि कुछ देना नहीं होता) या छोटे बच्चे को बहलाने के लिये येह कहना कि बेटा चुप हो जाओ, हम तुम्हें खिलौने ला कर देंगे (जब कि ऐसा इरादा नहीं होता)। इसी त़रह़ बात न मानने पर उन्हें **डराने के लिये झूट बोल देना।** जैसे जल्दी सो जाओ वरना बिल्ली या कुत्ता आ जाएगा वग़ैरा वग़ैरा। याद रखिये ! इस त़रह़ के तमाम जुम्ले झूट को शामिल हैं और कहने वाला जहां ख़ुद झूट के सबब सख़्त गुनहगार होता है, वहीं इन झूटे जुम्लों से बच्चे की अख़्लाक़ी तरबियत पर भी गहरा असर पड़ता है, जिस के नतीजे में वोह बचपन ही से सच सुनने और सच बोलने से मह़रूम हो कर झूट सुनने और झूट बोलने का आ़दी बन जाता है। ऐसे माह़ोल में परवरिश पाने वाला बच्चा जैसे ही थोड़ा समझदार होता है, बात बात पे झूट बोलने लगता है, लिहाज़ा हमें अपने बच्चों से भी झूट नहीं बोलना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ फ़रमा थे, मेरी वालिदा ने मुझे बुलाया कि इधर आओ ! तुम्हें कुछ देती हूं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या चीज़ देने का इरादा है ? अ़र्ज़

www.dawateislami.net

की : खजूर दूंगी । इरशाद फ़रमाया : अगर कुछ न देना होता तो येह तुम्हारे ज़िम्मे झूट लिखा जाता ।[1]

सच्ची बात सिखाते येह हैं सीधी राह चलाते येह हैं

अपनी बनी हम आप बिगाड़ें कौन बनाए ? बनाते येह हैं [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह बात ब ख़ूबी मालूम हो गई कि बच्चों के साथ भी झूट बोलने की शरअ़न इजाज़त नहीं, लिहाज़ा आज तक जिस ने ऐसा किया उसे फ़ौरन सच्ची तौबा करनी चाहिये और हमेशा सच की आ़दत अपनानी चाहिये । ख़ुद भी झूट से बचिये और अपनी औलाद को भी इस बुरी आ़दत से बचाने का सामान कीजिये । इस के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 36 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**झूटा चोर**" का ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और अपने बच्चों को भी येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाइये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ झूट बोलने की आ़दत से जान छूट जाएगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

झूटे अल्क़ाबात लगाना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे हां चन्द ऐसी इस्त़िलाह़ात हैं, जो किसी ख़ास मन्सब या ख़ास डिग्री (सनद-Degree) पर दलालत करती हैं, लेकिन धोका, फ़रेब और बहुत ज़ियादा झूट बोलने के सबब, इन इस्त़िलाह़ात को ऐसे लोग भी इस्तिमाल करते नज़र आते हैं, जिन का इन डिग्रियों और ओ़हदों से दूर दूर का तअ़ल्लुक़ नहीं होता, अगर कुछ तअ़ल्लुक़ और निस्बत

1...ابوداود، کتاب الادب، باب فی التشدید فی الکذب، ۴/۳۸۷، حدیث: ۴۹۹۱

2....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 481,482

हो भी जाए, तब भी येह अफ़राद इन इस्तिलाहात को इस्तिमाल करने के मजाज़ नहीं होते। उ़मूमन वोह लोग कि जिन्हें अदवियात का थोड़ा बहुत इ़ल्म हो जाए या जो बत़ौरे डिस्पेन्सर (Dispenser), या किसी क्लीनिक (Clinic) में बत़ौरे हेल्पर (Helper यानी मुआ़विन) काम कर चुके हों, तो वोह भी अपने आप को न सिर्फ़ "डॉक्टर (Doctor)" कहते दिखाई देते हैं बल्कि अपने लिये "डॉक्टर" का लफ़्ज़ कहलवाना पसन्द भी करते हैं, ह़ालांकि "डॉक्टर" का लफ़्ज़ एक ख़ास डिग्री की निशान देही करता है और इसे वोही शख़्स इस्तिमाल कर सकता है जो इस का अह्ल भी हो। इस के इ़लावा किसी और का इसे इस्तिमाल करना क़ानूनन जुर्म और शरअ़न झूट कहलाएगा। इसी त़रह़ बाज़ अफ़राद को जब चन्द जड़ी बूटियों का इ़ल्म हो जाए या इ़ल्मे त़िब के बाज़ नुस्ख़े पता चल जाएं तो वोह भी अपने नाम के साथ "**ह़कीम साह़िब**" कहलवाने और लिखने में बड़ा फ़ख़्र मह़सूस करते हैं। ह़ालांकि येह सरासर **झूट** और **धोका** है। इसी त़रह़ झूट का बाज़ार इस क़दर गर्म है कि बाज़ इ़ल्म से कोरे (ख़ाली) लोग भी उ़लमा की सफ़ में घुसने से दरेग़ नहीं करते, यहां तक देखा गया है कि निरे जाहिल लोग भी अपने लिये "**अ़ल्लामाओ फ़ह्हामा**" (बहुत ज़ियादा इ़ल्म रखने वाला, बहुत समझ बूझ रखने वाला) वग़ैरा जैसे अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करने में ज़रा नहीं हिचकिचाते। ह़ालांकि ऐसा करना सरासर झूट और निरा वबाल है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे मुआ़शरे में पाई जाने वाली बात़िनी बीमारियों में से एक बहुत ही ख़त़रनाक बीमारी "हुब्बे जाह" भी है, जिस का मत़लब है शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना।(1) और येह ख़्वाहिश हर फ़साद की जड़ है। बसा अवक़ात येह दीन को भी तबाहो बरबाद कर देती है, इस लिये इस से बचना बहुत ज़रूरी है। एक मुसलमान के लिये ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने इ़ब्रत निशान ही काफ़ी है कि दो भूके भेड़िये

(1)...احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان ذم الشھرۃ...الخ، ۳/۳۴۰

बकरियों के रेवड़ में उतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे जाहो माल (यानी मालो दौलत और इ़ज़्ज़तो शोहरत की मह़ब्बत) मुसलमान के दीन में मचाती है।(1) बयान कर्दा ह़दीसे पाक से मालूम हुवा कि हुब्बे जाह में हलाकत ही हलाकत है। इस नापाक बीमारी की आफ़तों के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र बिशर हाफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **"मैं किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो अपनी शोहरत चाहता हो और उस का दीन तबाहो बरबाद और वोह ख़ुद ज़लीलो ख़्वार न हुवा हो !"**(2)

ग़ैर सय्यिद का सादात बनना

अन्दाज़ा लगाइये कि अपनी शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना कैसा ख़त़रनाक मरज़ है। इसी मरज़ का शिकार बाज़ अफ़राद ऐसे भी होते हैं कि लोगों से इ़ज़्ज़त पाने के लिये झूट का सहारा लेते हुए अपनी ज़ात बदलने से भी गुरेज़ नहीं करते। बर्रे सग़ीर पाको हिन्द में "**सय्यिद**" का लफ़्ज़ ऐसे लोगों के लिये बोला जाता है, जिन का सिलसिलए नसब अपने वालिद की त़रफ़ से हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलता हो। हमारे हां जाहो ह़श्मत और क़द्रो मन्ज़िलत को पाने के लिये बाज़ ग़ैर सय्यिद अफ़राद भी अपने आप को "सादात" कहलवाते हैं, ह़ालांकि येह बात ह़क़ीक़त से बहुत दूर होती है।

याद रहे ! अपने ह़क़ीक़ी बाप को छोड़ कर किसी दूसरे को अपना बाप बताना या अपने ख़ानदान व नसब को छोड़ कर किसी दूसरे ख़ानदान से अपना नसब जोड़ना ह़राम और दोज़ख़ में ले जाने वाला काम है। अह़ादीसे मुबारका में इस बारे में बड़ी सख़्त वई़दें आई हैं। चुनान्चे,

---

1...ترمذی، کتاب الزھد، باب۴۳، ۴/ ۱۶۶، حدیث: ۲۳۸۳

2...احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ و الریاء، بیان ذم الشھرۃ...الخ، ۳/ ۳۴۰

नसब तब्दील करने का वबाल

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने बाप के इ़लावा किसी को अपना बाप बनाने का दावा करे वोह जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं सूंघेगा, ह़ालांकि जन्नत की ख़ुश्बू 500 बरस की राह से मह़सूस की जाएगी।(1)

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो अपने बाप के इ़लावा किसी को अपना बाप बनाने का दावा करे, ह़ालांकि वोह जानता है कि वोह उस का बाप नहीं है, तो उस पर जन्नत ह़राम है।(2)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **प्यारे इस्लामी भाइयो !** यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ले पालक बच्चे का दिल रखने के लिये उस पर अपने आप को ह़क़ीक़ी बाप ज़ाहिर करते हैं और वोह भी बेचारा उ़म्र भर उसी को अपना ह़क़ीक़ी बाप समझता है, अपने सच्चे बाप को ईसाले सवाब और उस के लिये दुआ़ करने तक से मह़रूम रहता है। याद रखिये ! ज़रूरी दस्तावेज़ात, शनाख़्ती कार्ड, पास पोर्ट और शादी कार्ड वग़ैरा में भी ह़क़ीक़ी बाप की जगह मुंह बोले बाप का नाम लिखवाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। त़लाक़ शुदा या बेवा औ़रतें भी अपने अगले घर के बच्चों को उन के ह़क़ीक़ी बाप के मुतअ़ल्लिक़ अन्धेरे में रख कर आख़िरत की बरबादी का सामान न करें। आ़म बोल चाल में किसी को **अब्बाजान** कह देने में ह़रज नहीं जब कि सब को मालूम हो कि यहां "जिस्मानी

1...ابن ماجۃ، کتاب الحدود، باب من ادعی الی غیر ابیہ...الخ، ۳/ ۲۵۴، حدیث:۲۶۱۱

2...بخاری، کتاب الفرائض، باب من ادعی الی غیر ابیہ، ۴/ ۳۲۶، حدیث:۶۷۶۶

रिश्ता" मुराद नहीं। हां अगर ऐसे "**अब्बा जान**" को भी किसी ने सगा बाप ज़ाहिर किया तो गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है।[1]

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : आज कल बे शुमार लोग अपने आप को सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी व उ़स्मानी व सय्यिद कहने लगे हैं ! उन्हें सोचना चाहिये कि वोह लोग ऐसा कर के कितने बड़े गुनाह के दलदल में फंसे हुए हैं। ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को सिरात़े मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इस ह़राम व जहन्नमी काम से उन लोगों को तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[2] (आमीन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ाक़ में झूट बोलना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि झूट हमारे मुआ़शरे में एक वायरस (जरासीम) की त़रह़ फैला हुवा है। शायद ही हमारी कोई बैठक यानी मजलिस झूट से मह़फ़ूज़ होती हो, ख़ुसूसन मज़ाक़ में झूट बोलना तो बहुत आ़म है, ख़ुश गप्पियों के लिये मह़फ़िल सजाना और फिर उसे रंग देने के लिये झूटे चुटकुले, झूटी कहानियां और झूटे क़िस्से सुना कर लोगों को हंसाना, इसी त़रह़ मोबाइल फ़ोन के ज़रीए़ अफ़्वाहें उड़ाना, सोश्यल मीडिया (Social Media) के ज़रीए़ किसी की त़रफ़ झूटी बात मन्सूब कर के फैलाना तो गोया मायूब ही नहीं समझा जाता, ह़ालांकि इन सब बातों में शैत़ान की ख़ुशी और अपनी आख़िरत की बरबादी है। झूट की मुरव्वजा सूरतों में से एक और ख़त़रनाक सूरत कोर्ट (अ़दालत) में झूटी गवाही देना भी है। झूट की येह सूरत यानी कोर्ट में झूटी गवाही देना सब में ख़त़रनाक है,

1....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 379

2....जहन्नम के ख़त़रात, स. 182 मुलख़्ख़सन

क्यूंकि इस से लोगों के हुकूक़ और इ़ज़्ज़तो आबरू को नुक़्सान पहुंचता और मुआ़शरती निज़ाम में ख़लल वाक़ेअ़ होता है।

झूटी गवाही और झूटी क़समें

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "झूटी गवाही, **अल्लाह** पाक के साथ शिर्क के बराबर है।"(1) इसी त़रह़ झूटी क़समें खाना भी इन्तिहाई बुरी ख़स्लत है, हमारे यहां झूटी क़समें खा कर तरक़्क़ी पाने को बड़ा कारनामा समझा जाता है और जो झूट से दामन बचाते हुए हमेशा सच बोलने का आ़दी हो, उसे बे वुक़ूफ़, कम अ़क़्ल, नादान और अह़मक़ समझा जाता और बसा अवक़ात सच को तरक़्क़ी की राह में रुकावट तसव्वुर किया जाता है। येही वज्ह है कि बसा अवक़ात मज़्मूम मक़ासिद के लिये झूटी क़सम उठाने से भी दरेग़ नहीं किया जाता। ह़ालांकि येह भी गुनाहे कबीरा है। आइये ! झूटी क़समें खाने की मज़म्मत पर मुश्तमिल दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं :

झूटी क़समों की मज़म्मत

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : "शिर्क, वालिदैन की ना फ़रमानी, झूटी क़सम खाना और किसी को क़त्ल करना कबीरा गुनाह हैं।"(2)

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : "जो अपनी क़सम के ज़रीए़ किसी मुसलमान का ह़क़ छीने, तो **अल्लाह** पाक उस पर जहन्नम वाजिब और जन्नत ह़राम कर देगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! अगर वोह मामूली शै हो तो ? इरशाद फ़रमाया : अगर्चे लोबान ही हो।(3)

1...ترمذی، کتاب الشھادات، باب ماجاء فی شھادۃ الزور، ۴/۱۳۳، حدیث:۲۳۰۷

2...بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب الیمین الغموس، ۴/۲۹۵، حدیث: ۶۶۷۵

3...مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم...الخ، ص۷۶، حدیث:۳۵۳

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने झूटी क़समें खाने, दूसरों का माल दबाने वालों के लिये जहन्नम में दाख़िले की वईद सुनाई है। बयान कर्दा सूरतों के इलावा भी दीगर कई सूरतों में झूट बोला जाता है। जैसे झूटी तारीफ़ें करना, झूटे ख़्वाब सुनाना, झूटी वकालत करना, झूटे वादे करना, झूटी ख़बरें फैलाना, यकुम अप्रेल पर झूट बोल कर अप्रेल फ़ूल मनाना, अल ग़रज़ ! बे शुमार सूरतों में झूट एक नासूर (ना ख़त्म होने वाले ज़ख़्म) की त़रह़ मुआ़शरे में फैलता जा रहा है। झूट और इस जैसी दीगर ज़ाहिरियो बात़िनी बीमारियों से बचने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, ज़बान को ग़ैर ज़रूरी बातों से बचाने के लिये ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगा लीजिये, हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत को अपना मामूल बना लीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्याओ आख़िरत की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

झूट बोलने की जाइज़ सूरतें

याद रखिये ! झूट नाजाइज़ व गुनाह है, मगर बाज़ सूरतें ऐसी भी हैं कि जिन में किसी ग़रज़े सह़ीह़ और ज़रूरत के पेशे नज़र शरीअ़त ने झूट बोलने की इजाज़त भी दी है और इस में गुनाह नहीं अलबत्ता "जिस अच्छे मक़्सद को सच बोल कर ह़ासिल किया जा सकता हो और झूट बोल कर भी, तो उस को ह़ासिल करने के लिये झूट बोलना ह़राम है" और "अगर अच्छा मक़्सद झूट से ह़ासिल होता हो और सच बोलने में ह़ासिल न होगा" तो अब बाज़ सूरतों में झूट भी जाइज़ बल्कि बाज़ सूरतों में वाजिब है, जैसे :

www.dawateislami.net

﴾1﴿...किसी बे गुनाह को ज़ालिम शख़्स क़त्ल करना चाहता है या ईज़ा देना चाहता है और वोह उस के डर से छुपा हुवा है, ज़ालिम ने किसी से दरयाफ़्त किया कि वोह कहां है ? तो वोह अगर्चे जानता हो तो कह सकता है मुझे मालूम नहीं।

﴾2﴿...किसी की अमानत इस के पास है, कोई छीनने के लिये पूछता है कि अमानत कहां है ? तो येह इन्कार कर सकता है कि मेरे पास उस की अमानत नहीं।[1]

﴾3﴿...इसी त़रह़ दो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है, तो एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी तारीफ़ करता है या उस ने तुम्हें सलाम कहा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए।

﴾4﴿...नीज़ बीवी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे (तो भी झूट नहीं)।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने झूट की तबाह कारियों के मुतअ़ल्लिक़ सुना, यक़ीनन झूट सब बुराइयों की जड़ है, अगर कोई झूट से बचने का पुख़्ता इरादा कर ले तो सच बोलने की बरकत से दीगर कई गुनाहों से भी बच सकता है। झूटा शख़्स आख़िरत में तो रुस्वा होगा ही, बसा अवक़ात दुन्या में भी ऐसा शख़्स ज़लीलो ख़्वार होता है। झूट बोलने वाले से फ़िरिश्ता एक मील दूर चला जाता है और वोह **अल्लाह** पाक का ना पसन्दीदा बन्दा बन जाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि दीगर गुनाहों के साथ साथ "झूट" के

1...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۷۰۵

2...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع عشر فی الغناء...الخ، ۵/۳۵۲

ख़िलाफ़ एलाने जंग करते हुए तमाम गुनाहों से बचने की कोशिश जारी रखें। **अल्लाह** पाक हमें अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे वुकला व जजिज़ का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वकालत हमारे मुआ़शरे का अहम तरीन शोबा है, तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी जहां कमो बेश 103 शोबाजात में दीने इस्लाम का पैग़ाम आ़म कर रही है, वहीं "वकालत" से मुन्सलिक अफ़राद की इस्लाह़ के लिये "**मजलिसे वुकला व जजिज़**" के ज़रीए़ नेकी की दावत फैला रही है और इन्हें दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करते हुए, इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने और फ़िक्रे आख़िरत करने का मदनी ज़ेहन भी बना रही है।

***अल्लाह** करम ऐसा करे तुझ पे जहां में　　ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो*[1]

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मद्रसतुल मदीना बालिग़ान"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलने, सुन्नतों पर अ़मल करने और नेकी की दावत को आ़म करने के लिये **दावते इस्लामी** के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के **12 मदनी कामों** में से रोज़ाना एक मदनी काम "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" भी है। कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुक़द्दस कलाम है, इस का पढ़ना पढ़ाना, और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है लेकिन येह सवाब उसी वक़्त

1....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

मिलेगा जब कि दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढ़ा गया हो वरना बसा अवक़ात सवाब के बजाए बन्दा अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बन जाता है। इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बिलाशुबा इतनी तज्वीद जिस से तस्ह़ीह़े हुरूफ़ हो (क़वाइदे तज्वीद के मुत़ाबिक़ हुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके) और ग़लत़ ख़्वानी (यानी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, फ़र्ज़े ऐ़न है।"(1)

क़ुरआने मजीद सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ यानी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने क़ुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दावते इस्लामी** के तह़त दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में बे शुमार मदारिस ब नाम **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** क़ाइम हैं, इन तमाम मदारिस में फ़ी सबीलिल्लाह दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ क़ुरआने पाक पढ़ाया जाता, मुख़्तलिफ़ दुआएं याद करवाई जाती और सुन्नतें भी सिखाई जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से कई इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ हुई है। एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं एक फ़ेशन परस्त नौजवान था, दुन्या की मौज मस्ती में गुम, अपनी आख़िरत के अन्जाम से ग़ाफ़िल अय्यामे ह़यात बसर कर रहा था कि मेरी सोई हुई क़िस्मत

1....फ़तावा रज़विय्या, 6/343

2...بخاری، کتاب فضائل القران، باب خیر کم من تعلم...الخ، ۳/ ۴۱۰، حدیث: ۵۰۲۷

www.dawateislami.net

जाग उठी, मुझे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की रूहानी फ़ज़ाएं तो क्या मुयस्सर आईं, मेरी ख़ुश बख़्ती के सफ़र का आग़ाज़ हो गया। मद्रसतुल मदीना की बरकात ने मेरे तारीक दिल को ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा के चराग़ से मुनव्वर कर दिया। इस में मुझे क़ुरआने करीम की तालीम के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी मिला और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत भी नसीब हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने की बरकत से मेरी ज़िन्दगी में मदनी बहार आ गई, फ़ेशन परस्ती व मौज मस्ती से नजात ह़ासिल हो गई और मैं दावते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचाने की सआ़दत ह़ासिल है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

आदाबे क़ुरआन के ह़वाले से मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

...क़ुरआने मजीद को जुज़दान व ग़िलाफ़ में रखना अदब है। सह़ाबाओ ताबेईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के ज़माने से इस पर मुसलमानों का अ़मल है।(2)

...क़ुरआने मजीद के आदाब में येह भी है कि उस की त़रफ़ पीठ न की जाए, न

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2....बहारे शरीअ़त, 3 / 496

www.dawateislami.net

पाउं फैलाए जाएं, न पाउं को उस से ऊंचा करें न येह कि ख़ुद ऊंची जगह पर हो और कु़रआने मजीद नीचे हो ।[1] ...बे ख़याली में कु़रआने करीम अगर हाथ से छूट कर या ता़क़ वग़ैरा पर से ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया (यानी गिर पड़ा) तो न गुनाह है न कोई कफ़्फ़ारा । ...गुस्ताख़ी की निय्यत से किसी ने مَعَاذَاللہ कु़रआने पाक ज़मीन पर दे मारा या ब निय्यते तौहीन इस पर पाउं रख दिया तो काफ़िर हो गया । ...अगर कु़रआने मजीद हाथ में उठा कर या उस पर हाथ रख कर ह़लफ़ या क़सम का लफ़्ज़ बोल कर कोई बात की तो येह बहुत "सख़्त क़सम" हुई और अगर ह़ल्फ़ या क़सम का लफ़्ज़ न बोला तो सिर्फ़ कु़रआने करीम हाथ में उठा कर या उस पर हाथ रख कर बात करना न क़सम है न उस का कोई कफ़्फ़ारा ।[2] ...अगर मस्जिद में बहुत सारे कु़रआने पाक जम्अ़ हो गए और सब इस्तिमाल में नहीं आ रहे, रखे रखे बोसीदा हो रहे हैं तब भी उन्हें हदिय्यतन दे कर (यानी बेच कर) उन की क़ीमत मस्जिद में सर्फ़ नहीं कर सकते । अलबत्ता ऐसी सूरत में वोह कु़रआने पाक दीगर मसाजिद व मदारिस में रखने के लिये तक़्सीम किये जा सकते हैं ।[3] ...कु़रआने मजीद पुराना बोसीदा हो गया इस क़ाबिल न रहा कि इस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के औराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह दफ़्न कर दिया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये लह़द बनाई जाए (यानी गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस औराक़ समा

1 ....बहारे शरीअ़त, 3 / 496

2 ....फ़तावा रज़विय्या, 13/574,575

3 ....फ़तावा रज़विय्या, 16/164

www.dawateislami.net

जाएं) ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें ताकि उस पर मिट्टी न पड़े, ...मुस्हफ़ शरीफ़ बोसीदा हो जाए तो उसे जलाया न जाए।[1]

मैं अदब क़ुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं
हर घड़ी ऐ मेरे मौला तुझ से मैं डरता रहूं

तृरह तृरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

......

नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो 100 बरस खड़ा रहना एक क़दम चलने से बेहतर समझता। (ابن ماجہ، ۱/۵۰۲، حدیث:۹۴۶)

1...فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس فی اداب المسجد...الخ، ۵/۳۲۳

2....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

www.dawateislami.net

क्या टेलिफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त है ?

सुवाल : क्या टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त है ?

जवाब : ऐसा निकाह़ जिस में ईजाब करने वाला किसी और मक़ाम पर हो और क़बूल करने वाला दूसरे मक़ाम पर तो येह निकाह़ नहीं होगा। निकाह़ में ईजाबो क़बूल दोनों का एक मजलिस में होना ज़रूरी है जैसा कि फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूरो मारूफ़ किताब दुर्रे मुख़्तार में है : ईजाब तमाम उ़क़ूद में मजलिस से ग़ाइब किसी शख़्स के क़बूल पर मौक़ूफ़ नहीं हो सकता। वोह अ़क़्दे निकाह़ हो या ख़रीदो फ़रोख़्त या इन के इ़लावा कोई और अ़क़्द। ग़ाइब वाली सूरत में ईजाब बात़िल हो जाएगा और बाद में उसे जाइज़ क़रार देने से भी निकाह़ सह़ीह़ न होगा।

(درمختار، کتاب النکاح، ۴/ ۲۱۲)

फ़तावा हिन्दिय्या में है : निकाह़ के लिये दो गवाहों का एक साथ ईजाबो क़बूल के अल्फ़ाज़ सुनना शर्त़ है। (فتاوی ھندیة، کتاب النکاح، الباب الاول فی تفسیرہ...الخ، ۱/۲۶۸) जब कि टेलीफ़ोन पर दोनों गवाह एक साथ नहीं सुन सकते नीज़ टेलीफ़ोन पर बोलने वाला फ़र्द कौन है ? उ़मूमन इस की पहचान भी मुश्किल होती है क्यूंकि टेलीफ़ोन पर एक की आवाज़ दूसरे से मिलती जुलती हो सकती है इस वज्ह से इस के सुनने वाला गवाह नहीं बन सकता जैसा कि **फ़तावा हिन्दिय्या** में है : अगर पर्दे के अन्दर से इक़रार सुना तो रवा (जाइज़) नहीं है कि किसी शख़्स पर गवाही दे क्यूंकि इस में ग़ैर का एह़तिमाल है इस लिये कि आवाज़, आवाज़ के मुशाबेह हुवा करती है।

(فتاوی ھندیة، کتاب الشھادة، الباب الثانی فی بیان تحمل الشھادة.....الخ، ۳/ ۴۵۲)

सुवाल : क्या कोई ऐसी सूरत नहीं जिस से टेलीफ़ोन पर निकाह़ करना दुरुस्त हो जाए ?

जवाब : टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त होने की येह सूरत हो सकती है कि लड़का किसी को अपना वकील बनाते हुए येह कहे कि मैं फ़ुलाना बिन्ते फ़ुलां बिन फ़ुलां से इतने ह़क़्क़े महर के बदले में निकाह़ करना चाहता हूं या लड़की कहे कि मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां से इतने ह़क़्क़े महर के बदले निकाह़ करना चाहती हूं। अब वोह वकील लड़के या लड़की की त़रफ़ से दूसरी जगह दो गवाहों के सामने मजलिसे निकाह़ में ईजाबो क़बूल करे तो इस त़रह़ निकाह़ हो जाएगा।

(तज्दीदे ईमान व तज्दीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा : क़िस्त़ 18" स. 12)

JAWANI ME IBADAT KE FAZAIL
(HINDI BAYAAN)

जवानी में इबादत के फ़ज़ाइल

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश्बूदार है : बेशक **अल्लाह** पाक ने मेरी क़ब्र पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर दुरूदे पाक पढ़ा है।(1)

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वोह कान   *काने लाले करामत पे लाखों सलाम*(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान का मौज़ूअ़ "**जवानी में इबादत के फ़ज़ाइल**" है। आ़म तौ़र पर जवानी के दिनों में बे फ़िक्री बरती जाती है और इन ह़सीन लमह़ात की बे क़दरी बुढ़ापे में पछतावे का सबब बनती है। लिहाज़ा जब तक जवानी बाक़ी और सिह़्ह़त सलामत है इसे ज़ियादा से ज़ियादा इबादत में गुज़ारना बहुत ज़रूरी है।

इबादत गुज़ार नौजवान

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक नौजवान को आबादी और लोगों से अलग थलग जंगल में मसरूफ़े इबादत देखा। मैं ने सलाम किया, उस ने जवाब दिया। फिर मैं ने उस से कहा : ऐ नौजवान ! तुम ऐसी वीरान जगह

---

1 ...مسند بزار، مسند عمار بن یاسر، ۴/۲۵۴، حدیث:۱۴۲۵

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 300

www.dawateislami.net

में हो, जहां तुम्हारा कोई मददगार है, न रफ़ीक़। उस ने कहा : क्यूं नहीं, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा मददगार भी है और रफ़ीक़ भी। मैं ने पूछा : वोह मददगार व रफ़ीक़ कहां है ? उस ने जवाब दिया : वोह अपनी इ़ज़्ज़त के साथ मेरे ऊपर, अपने इल्मो हि़क्मत से मेरे साथ, अपनी हिदायत के साथ मेरे सामने, अपनी नेमत के साथ मेरे दाएं और अपनी अ़ज़मत के साथ मेरे बाएं है। ऐसी बातें सुन कर मैं ने अ़र्ज़ की : क्या आप मुझे अपनी सोह़बत इख़्तियार करने की इजाज़त देंगे ? तो वोह कहने लगा : आप की रफ़ाक़त मुझे इ़बादत से ग़ाफ़िल कर देगी और मैं इस बात को पसन्द नहीं करता, और मशरिक़ ता मग़रिब ज़मीन का बादशाह मेरे लिये काफ़ी है। मैं ने पूछा : आप को इस जगह में वह़शत नहीं होती ? उस ने मुझे जवाब दिया : जिस का ह़बीब व अनीस, **अल्लाह** पाक हो उसे क्यूं कर वह़शत होगी ? मैं ने पूछा : खाना कहां से खाते हैं ? जवाब दिया : जब उस ने अपने लुत़्फ़ो करम से मां के तारीक पेट में भी मुझे ग़िज़ा दी तो क्या अब वोह मेरी कफ़ालत नहीं फ़रमाएगा ? मेरे लिये उस के पास मुक़र्रर रिज़्क़ है और उस का वक़्त भी लिखा हुवा है।

फिर मैं ने उस से दुआ़ की दरख़्वास्त की तो उस ने मुझे यूं दुआ़ दी : **अल्लाह** पाक आप की आंखों को अपनी ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, दिल को अपने ख़ौफ़ से भर दे और आप को उन लोगों में से न बनाए जो उस के ग़ैर में मश्ग़ूल हो कर इ़बादत से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। जब वोह जाने के लिये खड़ा हुवा तो मैं ने क़रीब हो कर अ़र्ज़ की : ऐ मेरे भाई ! आप से दोबारा मुलाक़ात कब होगी ? तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : आज के बाद दुन्या में तो आप से मुलाक़ात न होगी। हां ! बरोज़े क़ियामत जब सब लोग जम्अ़ होंगे तो अगर आप मुझ से मिलना चाहें तो दीदारे इलाही करने वालों में मुझे तलाश कीजियेगा। मैं ने पूछा : आप ने येह कहां से जान लिया ? जवाब दिया : उस की इ़ज़्ज़त की क़सम ! उसी

www.dawateislami.net

की त़रफ़ से, क्यूंकि मैं ने अपनी आंखों को ह़राम कर्दा चीज़ों से और अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के ह़ुसूल से बाज़ रखा और तारीक रातों में उस की इ़बादत के लिये तन्हाई इख़्तियार की पस इस के बदले वोह मुझे अपना दीदार कराएगा। फिर वोह नौजवान ग़ाइब हो गया, इस के बाद फिर कभी उस से मुलाक़ात न हो सकी।[1]

रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में उस नौजवान ने जवानी के ज़माने में ही दुन्या की रंगीनियों से नात़ा तोड़ कर इ़बादतो रियाज़त में ख़ुद को मश्ग़ूल रखा और शरीअ़त की ह़राम कर्दा अश्या देखने से बाज़ रहा और अकेले उस जंगल में रहने से भी गुरेज़ न किया। इस ह़िकायत में ख़ास त़ौर पर उन नौजवानों के लिये नसीह़त के बे शुमार मदनी फूल हैं जो अपनी जवानी के नशे में मदहोश रहते, नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर गुनाहों में मुलव्वस रहते और रब तआ़ला की नाराज़ी का सामान करते हैं। ऐसों को चाहिये कि जवानी की अहम्मिय्यत को समझते हुए उस के क़ीमती लम्ह़ात को फ़ुज़ूलियात में बरबाद करने के बजाए इ़बादते इलाही में गुज़ारें कि ज़िन्दगी में येह नेमत सिर्फ़ एक बार मिलती है।

जवानी एक बार ही मिलती है

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सिह़्ह़त, जवानी, मालदारी और ज़िन्दगी को ज़ाएअ़ न

1 ...الروض الفائق، المجلس الحادی والثلاثون، ص١٢٦

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105

www.dawateislami.net

जाने दो, इस में नेक आमाल कर लो कि येह नेमतें बार बार नहीं मिलतीं। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) जवानी खेलकूद में गंवा कर बुढ़ापे में जब कि आज़ा बेकार हो जाएं, कसरते इबादत की ख़्वाहिश करना बे वुकूफ़ी है जो (अ़मल) करना है, जवानी में कर लो कि जवान नेक आदमी का, बहुत बड़ा दरजा है।[1]

रियाज़त के येही दिन हैं बुढ़ापे में कहां हिम्मत
जो कुछ करना हो अब कर लो अभी नूरी जवां तुम हो[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जवानी यक़ीनन **अल्लाह** पाक की अ़ताकर्दा नेमतों में से एक अ़ज़ीम नेमत है कि जिस का कोई मोल नहीं, एक बार चली जाए तो फिर अरबों, खरबों रुपै ख़र्च करने से भी ह़ासिल नहीं होती, अगर हम ने दुन्या में रहते हुए अपनी जवानी **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो इबादत में बसर की होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत ह़सरतो नदामत से बच सकेंगे, वरना इस नेमत की नाक़द्री के सबब शदीद ज़िल्लतो ख़्वारी उठानी पड़ सकती है। क्यूंकि क़ियामत के दिन जवानी से मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया जाएगा। चुनान्चे,

पांच सुवालात

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न उठा सकेगा जब तक उस से पांच चीज़ों के बारे में सुवाल न कर लिया जाए : (1)...उ़म्र किन कामों में गुज़ारी ? (2)...जवानी किन कामों में सर्फ़ की ? (3)...माल कहां से कमाया ?

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 7/16 मुलख़्ख़सन

2.....सामाने बख़्शिश, स. 143

(4)...कहां ख़र्च किया ? और (5)...अपने इल्म पर कहां तक अ़मल किया ?[1]

जो खुश नसीब अपनी जवानी की क़द्र करते हुए नफ़्सानी ख़्वाहिशात से मुंह मोड़ कर ख़ालिसतन अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये अपने शबो रोज़ इबादतो रियाज़त में बसर करता है वोह दुन्याओ आख़िरत की ढेरों भलाइयां पा लेता है। आइये ! इस ज़िम्न में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा सुनते हैं :

इबादत गुज़ार नौजवान का मक़ाम

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : जवानी में इबादत करने वाले को बुढ़ापे में इबादत करने वाले पर ऐसी ही फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसी मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को तमाम नबियों पर है।[2]

72 सिद्दीक़ीन के सवाब का ह़क़दार

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : जिस नौजवान ने लज़्ज़ते दुन्या और इस के ऐशो इशरत को छोड़ दिया और जवानी में अल्लाह पाक की इताअ़त की जानिब पेश क़दमी की तो अल्लाह पाक उस खुश नसीब को 72 सिद्दीक़ीन के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाएगा।[3]

अल्लाह पाक का ह़क़ीक़ी बन्दा

﴾3﴿...इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह पाक अपनी मख़्लूक़ में उस ख़ूब सूरत नौजवान को ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है जिस ने अपनी जवानी और हुस्नो जमाल को इबादत में सर्फ़ किया और अल्लाह पाक फ़िरिश्तों के सामने ऐसे बन्दे पर फ़ख़्र करते हुए इरशाद फ़रमाता है कि **“येह मेरा ह़क़ीक़ी बन्दा है।”**[4]

---

1 ... ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ...الخ، باب فی القیامۃ، ۴/۱۸۸، حدیث: ۲۴۲۴

2 ... الترغیب فی فضائل الاعمال، باب فضل عبادۃ الشاب...الخ، ص۷۸، حدیث: ۲۲۸

3 ... حلیۃ الاولیاء، شریح بن الحارث الکندی، ۴/۱۵۱، حدیث: ۵۰۸۳

4 ... الترغیب فی فضائل الاعمال، باب فضل عبادۃ الشاب...الخ، ص۷۸، حدیث: ۲۲۹

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक का महबूब बन्दा

﴾4﴿...इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह पाक उस नौजवान से महब्बत फ़रमाता है जिस ने अपनी जवानी को इताअ़ते ख़ुदावन्दी में फ़ना कर दिया हो।[1]

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे मेरे ग़ौस का वासिता या इलाही[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जवानी के क़द्र दानों पर अल्लाह पाक कैसा ख़ास फ़ज़्लो करम फ़रमाता है कि उन्हें अपने महबूब बन्दों में शामिल फ़रमा लेता है। लिहाज़ा नौजवानों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि अगर बुढ़ापे में सुकूनो इत्मीनान वाली ज़िन्दगी गुज़ारने के ख़्वाहिशमन्द हैं तो नेमते जवानी को ग़नीमत जानते हुए इस फ़ानी दुन्या के पीछे भागने के बजाए अपने नफ़्स को इबादतो रियाज़त की जानिब माइल करने की कोशिश कीजिये। अगर्चे येह बड़ा दुश्वार है क्यूंकि जवानी में उम्मीदें और ख़्वाहिशें उ़रूज पर होती हैं, लेकिन अगर हम हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुए इबादतो रियाज़त से सजी आप की पाकीज़ा ज़िन्दगी के मुताबिक़ अ़मल करेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में भी मदनी बहारें आ जाएंगी।

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ौक़े इबादत

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, हज़रते सय्यिदुना अ़ता और हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अ़म्र (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाहे आ़लिया में हाज़िर हुए।

1...حلیۃ الاولیاء، عبد الملک بن عمر بن عبد العزیز، ۵/ ۳۹۴، حدیث: ۷۴۹۶

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا ने अ़र्ज़ की : हमें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में कोई तअ़ज्जुब खे़ज़ बात बताइये। तो आप रो पड़ीं और फ़रमाया : एक रात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे हां तशरीफ़ लाए और अभी मेरे पास बैठे ही थे कि फ़रमाने लगे : आइशा ! मुझे इजाज़त दो कि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत कर लूं। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे अपनी ख़्वाहिश के मुक़ाबले में आप का रब तआ़ला के क़रीब होना ज़ियादा पसन्द है। चुनान्चे, आप घर के एक कोने में खड़े हो कर अश्कबारी फ़रमाने लगे। फिर अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के कुरआने करीम पढ़ना शुरूअ़ किया तो दोबारा रोना शुरूअ़ कर दिया ह़त्ताकि चश्माने मुबारक से निकलने वाले आंसू ज़मीन तक जा पहुंचे। इतने में हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हाज़िर हुए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रोता देख कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! किस चीज़ ने आप को रुलाया ? ह़ालांकि **अल्लाह** पाक आप के तुफ़ैल आप के अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्शेगा। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?[(1)]

रोता है जो रातों को उम्मत की मह़ब्बत में — *वोह शाफ़ेए मह़शर है सरदार मदीने का*
रातों को जो रोता है और ख़ाक पे सोता है — *ग़म ख़्वार है, सादा है मुख़्तार मदीने का*
क़ब्ज़े में दो आ़लम हैं पर हाथ का तक्या है — *सोता है चटाई पर सरदार मदीने का*[(2)]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि हमारे बख़्शे बख़्शाए आक़ा, हम आ़सियों को बख़्शवाने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मासूम बल्कि मासूमों

1...دُرّۃ الناصحین، المجلس الخامس والستون: فی بیان البکاء، ص ۲۵۳

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 180

www.dawateislami.net

(यानी फ़िरिश्तों) और इबादत गुज़ारों के सरदार होने के बा वुजूद किस क़दर गिर्या व ज़ारी के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की इबादत किया करते हालांकि आप की शानो अज़्मत इस क़दर बुलन्दो बाला है कि अल्लाह पाक ने आप को मालिको मुख़्तार बनाया और ऐसा कि आप बि इज़्ने इलाही अपने इख़्तियार से रोज़े महशर गुनाहगारों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे । चुनान्चे,

मक़ामे मुस्तफ़ा

हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने हक़्क़े तर्जुमान से अपनी शाने रिफ़्अत निशान यूं बयान फ़रमाई कि जब लोग उठाए जाएंगे तो सब से पहले मैं अपनी क़ब्रे अन्वर से बाहर आऊंगा, जब लोग गुरौह की सूरत में आएंगे तो मैं ही उन का राहनुमा होऊंगा, जब लोग ख़ामोश होंगे (कोई बारगाहे इलाही में बात न करेगा) तो मैं ही उन का ख़तीब (यानी उन की तरफ़ से अर्ज़ो मारूज़ करने और रब तआला का पैग़ाम उन्हें सुनाने वाला) होऊंगा, जब वोह रोके जाएंगे तो मैं ही उन का सिफ़ारिशी होऊंगा, जब वोह ना उम्मीद व मायूस हो जाएंगे तो मैं ही उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला होऊंगा । बुज़ुर्गी और (अल्लाह पाक के) ख़ज़ानों की चाबियां, उस दिन मेरे हाथों में होंगी और मैं सारी औलादे आदम में अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा बुज़ुर्गी वाला हूं और कोई फ़ख़्र नहीं और एक हज़ार ख़िदमत गार मेरे इर्द गिर्द घूमेंगे गोया वोह बिखरे हुए मोती या पोशीदा रखे हुए अन्डे हैं ।(1)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरबान जाइये ! अव्वलीनो आख़िरीन के सरदार और रब तआला की अ़ता से मालिको मुख़्तार होने के बा वुजूद भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

(1)... ترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی فضل النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۵/۳۵۲، حدیث: ۳۶۳۰
دارمی، المقدمہ، باب ما اعطی النبی صلی اللہ علیہ وسلم من الفضل، ۱/۳۹، حدیث: ۸۳

www.dawateislami.net

के शौक़े इबादत का येह आ़लम था कि कसरते इबादत के सबब मुबारक क़दमों पर वरम (सूजन) के आसार नुमायां हो जाते और आप उम्मत के गुनाहगारों की बख़्शिश के लिये आहो ज़ारी फ़रमाया करते। इस में बिल ख़ुसूस उन नौजवानों के लिये नसीह़त के मदनी फूल मौजूद हैं जिन का दिल इबादत की जानिब माइल नहीं होता और वोह सारी सारी रात फ़ुज़ूलियात व लग़्विय्यात में बरबाद कर देते हैं, लिहाज़ा ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि ख़ुदारा ! मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक आंसूओं को याद कीजिये, दुन्याओ आख़िरत में कामयाबी पाने के लिये अह़कामे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी, सुन्नतों की पैरवी और उख़रवी इन्आ़मात पाने की ह़िर्स में ख़ूब ख़ूब नेकियां कीजिये।

याद रखिये ! जवानी में इबादत की तौफ़ीक़ नसीब होना किसी नेमते उ़ज़्मा (बहुत बड़ी नेमत) से कम नहीं क्यूंकि जवानी की देहलीज़ पर क़दम रखते ही इन्सान, शैत़ान की ख़त़रनाक चालों, नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशों, बुरे दोस्तों की सोह़बतों, फ़ानी दुन्या की रंगीनियों और दुन्यवी मुस्तक़्बिल बेहतर बनाने की फ़िक्रों में मुब्तला हो कर दौलत कमाने के नाजाइज़ त़रीक़ों के सबब गुनाहों की अन्धेरियों में भटकता फिरता है और इबादतो रियाज़त की त़रफ़ माइल नहीं हो पाता। याद रखिये ! हमें बहुत ही मुख़्तसर वक़्त के लिये दुन्या में भेजा गया है और इस वक़्फ़े में क़ब्रो ह़श्र के त़वील तरीन मुआ़मलात के लिये तय्यारी भी करनी है, लिहाज़ा समझदार वोही है जो इस मुख़्तसर वक़्त को ग़नीमत जानते हुए क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाए और लम्ह़ा भर भी अपना क़ीमती वक़्त फ़ुज़ूल कामों में बरबाद न करे क्यूंकि मालूम नहीं कि आयिन्दा लम्ह़े वोह ज़िन्दा भी रहेगा या मौत उसे एक लम्बे अ़र्से के लिये गहरी नींद सुला देगी। लिहाज़ा जवानी और ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए नेकियों में मश्ग़ूल हो जाइये।

जवानी को बुढ़ापे से पहले ग़नीमत जानो

हदीसे पाक में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत जानो : (1)...बुढ़ापे से पहले जवानी को (2)...बीमारी से पहले तनदुरुस्ती को (3)...फ़क़ीरी से पहले अमीरी को (4)...मसरूफ़िय्यत से पहले फ़ुरसत को और (5)...मौत से पहले ज़िन्दगी को ।"(1)

अगर हम भी अपनी जवानी को ग़फ़्लत में गंवाने के बजाए क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में लगाएंगे तो इस की बरकत से न सिर्फ़ हमारी दुन्या बेहतर होगी बल्कि क़ब्र में भी रब तआला की नवाज़िशों की छमाछम बारिशें होंगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

आइये ! इस ज़िम्न में एक बहुत ही प्यारी हिकायत सुनते हैं। चुनान्चे,

हिकायत : सालेह नौजवान के लिये दो जन्नतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के ज़माने में एक सालेह नौजवान हर वक़्त मस्जिद में मशग़ूले इबादत रहता था, अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه भी उस पर रश्क फ़रमाते थे, वोह रात की नमाज़ पढ़ कर अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत के लिये चला जाता, उस के रास्ते में एक औरत का घर पड़ता था जो उसे फ़ित्ने में डालना चाहती थी, वोह रोज़ाना उस की राह में बैठती थी, एक रात जब वोह नौजवान उस के पास से गुज़रा तो वोह उसे बहकाने लगी हत्ताकि नौजवान उस के पीछे हो लिया, जब वोह दरवाज़े पर पहुंचा तो वोह औरत घर में दाख़िल हो गई, नौजवान ने जैसे ही दरवाज़े में दाख़िल होना चाहा तो उसे कुरआने करीम की येह आयत याद आ गई :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ (پ۹، الاعراف:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

1...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ماذکر عن نبینا فی الزھد، ۸/ ۱۲۷، حدیث: ۱۸

www.dawateislami.net

आयत याद आते ही वोह बेहोश हो कर गिर पड़ा औ़रत ने अपनी लौंडी के साथ मिल कर नौजवान को उठाया और उस के घर के बाहर डाल कर चली गई, दूसरी त़रफ़ वालिद साहि़ब परेशान हो कर तलाश में घर से निकले तो क्या देखा कि बेटा दरवाज़े पर बेहोश पड़ा है, अहले ख़ाना की मदद से उठा कर घर लाए, काफ़ी रात गुज़रने के बाद नौजवान को होश आया तो वालिद साहि़ब ने पूछा : बेटा तुम्हें क्या हुवा था ? उस ने अ़र्ज़ की : सब ख़ैरिय्यत है। वालिद ने कहा : मैं तुम से पूछ रहा हूं। तो उस ने पूरा ह़ाल कह सुनाया, वालिद ने पूछा : बेटा ! तुम्हें कौन सी आयत याद आई थी तो उस ने जैसे ही वोह आयते त़य्यिबा दोहराई तो फिर से बेहोश हो कर गिर पड़ा, जब उसे हिला कर देखा तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। उन्हों ने उसे ग़ुस्ल व कफ़न दिया और रात ही में ले जा कर दफ़्ना दिया। सुब्ह़ जब येह ख़बर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंची तो आप ने उस के वालिद के पास आ कर ताज़ियत की और फ़रमाया : तुम ने मुझे रात ही को ख़बर क्यूं न दी ? वालिद ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! इस लिये कि रात का वक़्त था। फ़रमाया : हमें उस नौजवान की क़ब्र पर ले चलो। पस आप अपने साथियों के हमराह उस की क़ब्र पर तशरीफ़ लाए तो उसे पुकारा : ऐ फ़ुलां ! रब्बे करीम का इरशाद है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾

(پ۲۷، الرحمٰن: ۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के ह़ुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

उस सालेह़ नौजवान ने क़ब्र के अन्दर से दो मरतबा जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन ! मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह दो जन्नतें अ़त़ा फ़रमा दी हैं ![1]

---

❶... ابن عساکر، رقم ۵۳۲۰، ابو الحسن عمرو بن جامع الکوفی، ۴۵/ ۴۵۰

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! देखा आप ने कि उस नौजवान ने ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब अपनी सारी ज़िन्दगी गुनाहों से बचते हुए नेकियों में बसर की लिहाज़ा जब उसे शैत़ानी ख़याल की ठेस पहुंची तो ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से ख़बरदार हो गया और एक बड़े गुनाह से मह़फ़ूज़ रहा पस मरने के बाद येह इबादत और ख़ौफ़ो ख़शिय्यत उस की बख़्शिशो मग़फ़िरत का ज़रीआ़ बन गए और जन्नत की आला नेमतें नसीब हुईं। याद रखिये ! येह हुस्नो जवानी दौलते फ़ानी है और इस पर ग़ुरूरो तकब्बुर ह़माक़तो नादानी है।

ढल जाएगी येह जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है
तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तनदुरुस्ती व जवानी पर इतराने और शबो रोज़ गुनाहों में ज़ाएअ़ करने के बजाए इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ इबादात का मामूल बनाए रखिये, ऐसे में अगर बुढ़ापा आ गया और इबादत की लगन भी बाक़ी रही तो सिह़ह़त व हिम्मत न होने के बा वुजूद اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस लाचारी के आ़लम में भी जवानी की इबादतों जैसा सवाब मिलता रहेगा। चुनान्चे,

मुफ़्त का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब कोई मुसलमान अर्ज़लुल उ़म्र (सब से नाक़िस उ़म्र) को पहुंच जाए कि जानने के बाद कुछ न जाने और न समझे तो **अल्लाह** पाक उस के लिये उसी जैसी नेकियां लिखता रहता है जो वोह अपनी सिह़ह़त के ज़माने में किया करता था।(1)

1 ......مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/ ۲۹۳، حدیث: ۳۶۲۲

www.dawateislami.net

शर्हे ह़दीस

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो बूढ़ा आदमी बुढ़ापे की वज्ह से ज़ियादा इ़बादत न कर सके, मगर जवानी में बड़ी (ख़ूब) इ़बादतें करता रहा हो तो अल्लाह तआ़ला उसे माज़ूर क़रार दे कर उस के नामए आमाल में वोही जवानी की इ़बादत लिखता है।"(1)

इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दा न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुढ़ापे में भी जवानी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने रजब ह़म्बली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जवानी में इ़बादत करने से मुतअ़ल्लिक़ बहुत प्यारी बात फ़रमाते हैं : जिस ने अल्लाह पाक को उस वक़्त याद रखा जब वोह जवान और तनदुरुस्त था तो अल्लाह पाक उस का उस वक़्त ख़याल रखेगा जब वोह बूढ़ा और कमज़ोर हो जाएगा और उसे बुढ़ापे में भी अच्छी क़ुव्वते समाअ़त, बसारत, त़ाक़त और ज़हानत अ़त़ा फ़रमाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुत्तृय्यिब त़बरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने 100 साल से ज़ियादा उ़म्र पाई, आप ज़ेहनी व जिस्मानी लिह़ाज़ से तनदुरुस्त और तवाना थे, किसी ने आप से सिह़्ह़त का राज़ पूछा तो फ़रमाया : "मैं ने जवानी में अपनी जिस्मानी सलाहिय्यतों को गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा और आज जब मैं बूढ़ा हो गया हूं तो अल्लाह पाक ने इन्हें मेरे लिये बाक़ी रखा है। इस

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 7/89

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 316

के बर अ़क्स ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक बूढ़े शख़्स को देखा कि जो भीक मांग रहा था, आप ने फ़रमाया : इस शख़्स ने जवानी में **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ को ज़ाएअ़ किया तो **अल्लाह** पाक ने बुढ़ापे में इस की क़ुव्वत को ज़ाएअ़ फ़रमा दिया।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों ने अपनी जवानी के गुलशन को इ़बादतो रियाज़त के पानी से सेराब किया और गुनाहों से बचते रहे तो **अल्लाह** पाक ने बुढ़ापे में भी उन पर जवानी के असरात बाक़ी रखे। मगर अफ़्सोस ! हमारी नौजवान नस्ल इ़बादतो तिलावत में मश्ग़ूल रहने के बजाए मोबाइल फ़ोन, इन्टरनेट, सोश्यल मीडिया (Social Media) और टीवी के ग़लत़ इस्तिमाल के सबब अपना क़ीमती वक़्त बे दर्दी व बे फ़िक्री के साथ बरबाद करती नज़र आती है। मोबाइल फ़ोन जदीद टेक्नोलोजी का एक हिस्सा, वक़्त की ज़रूरत और राबित़े का अहम ज़रीआ़ है। जहां येह हमारे लिये मुफ़ीद है वहीं इस का ग़लत़ इस्तिमाल बहुत से नुक़्सानात का बाइस भी बन रहा है। हमारे स्कूल व कॉलेज के वोह त़लबाओ त़ालिबात जिन्हें हम मुस्तक़्बिल के मेमार कहते हैं वोह इस आफ़ते बद का शिकार हो चुके हैं, कोई विडियो गेम्ज़ का दीवाना है तो कोई फ़िल्मी गानों का मतवाला, किसी का मेमोरी कार्ड हयासोज़ विडियोज़ से भरा हुवा है तो कोई नाइट पेकेजिज़ से फ़ाएदा उठाते हुए सारी सारी रात बेहूदा और फ़ोह़श गुफ़्तगू में गुज़ार रहा है। इसी त़रह़ इन्टरनेट, दौरे जदीद की अहम और मुफ़ीद ईजाद है इस के दीनी और दुन्यवी बे शुमार फ़वाइद हैं मगर इस के ज़रीए़ भी नौजवानों में बहुत सी बुराइयां आ़म होती जा रही हैं।

1 ...مجموع رسائل ابن رجب، نور الاقتباس فی مشکاة...الخ، ۳/ ۱۰۰

इन्टरनेट छुरी की मानिन्द है

इन्टरनेट एक छुरी की मानिन्द है, जिस का सहीह़ और ग़लत़ दोनों ही इस्तिमाल हैं मगर अफ़्सोस ! हमारे मुआ़शरे में इन्टरनेट का ग़लत़ इस्तिमाल ज़ियादा है, इन्टरनेट पर मौजूद, फ़ोह़्श मज़ामीन और कहानियों, गन्दी तस्वीरों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को भड़काने वाली बेहूदा फ़िल्मों और ड्रामों ने नौजवान नस्ल के अख़्लाक़ो किरदार और आ़दातो अत़वार को तबाहो बरबाद कर दिया है। सारी सारी रात इन्टरनेट पर बड़ी बे दर्दी के साथ अपना पैसा, क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ करने, झूट बोलने, धोका देने, ब्लेक मेल करने जैसी बुराइयां हमारे मुआ़शरे के नौजवानों में बड़ी तेज़ी से आ़म होती जा रही हैं। पहले तो इन्टरनेट का इस्तिमाल सिर्फ़ कम्प्यूटर तक महदूद था मगर जब से येह सहूलत मोबाइल फ़ोन पर आई है तो छोटी उ़म्र के बच्चे ख़ास त़ौर पर इस वबा के शिकार हो कर अपना मुस्तक़्बिल ज़ाएअ़ कर रहे हैं। इस बीमारी में मुब्तला नौजवान तालीम से मह़रूम हो कर मुआ़शरे में कोई अहम मक़ाम पाने के बजाए अख़्लाक़ व तमीज़ खो कर ज़लीलो ख़्वार होते नज़र आ रहे हैं। ख़ुदारा ! ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये ! और अपनी इस्लाह़ के साथ साथ अपनी औलाद की इस्लाह़ का भी ज़ेहन बनाइये। अगर हमें अपने बच्चों को इस जदीद टेक्नोलोजी से मुतआ़रिफ़ करवाना ही है तो इस का सहीह़ इस्तिमाल भी सिखाएं और इन की निगरानी भी करते रहें। इन्टरनेट का फ़ाएदा उठाते हुए अपना और अपनी औलाद का क़ीमती वक़्त सहीह़ जगह इस्तिमाल करने के लिये दावते इस्लामी की वेब साइट विज़िट कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वेब साइट पर क़ुरआने पाक, तर्जमए कन्ज़ुल ईमान, तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, सीरत और तसव्वुफ़ वग़ैरा मौज़ूआत पर मुश्तमिल उर्दू, इंग्लिश, अ़रबी, हिन्दी, गुजराती और दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में कुतुबो रसाइल का न सिर्फ़ ऑन लाइन मुत़ालआ़ किया जा सकता है बल्कि फ़्री डाउन लोड और

प्रिन्ट आउट की सहूलत भी दस्तयाब है। इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی से किये गए मुख़्तलिफ़ सुवालात के दिलचस्प जवाबात पर मुश्तमिल मदनी मुज़ाकरे, निगराने शूरा व मुबल्लिग़ीने दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात, ह़म्दो नात, मन्क़बत और इस्लाह़ आमोज़ शॉर्ट क्लिप्स (Short clips) भी मौजूद हैं, जिन्हें आप डाउन लोड (Download) कर के सोश्यल मीडिया (Social Media) का सह़ीह़ इस्तिमाल करते हुए, दूसरे इस्लामी भाइयों को शेर (Share) भी कर सकते हैं।

शरई़ मसाइल में रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये ऑन लाइन दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत और दुखी इन्सानिय्यत की ग़मख़्वारी और रूह़ानी इ़लाज के लिये तावीज़ाते अ़त्तारिय्या के साथ साथ ऑन लाइन काट और इस्तिख़ारा भी करवा सकते हैं। नीज़ दावते इस्लामी के चन्द शोबाजात का तआ़रुफ़ भी मौजूद है, कमो बेश 103 शोबाजात और दावते इस्लामी के दीगर कई मदनी कामों में होने वाले लाखों रुपै के अख़राजात में ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट माली मुआ़वनत का मुकम्मल त़रीक़ए कार भी दिया गया है जिस के ज़रीए़ आप सदक़ाते वाजिबा (मसलन ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र, रोज़ों का फ़िदया और क़सम का कफ़्फ़ारा वग़ैरा) और नफ़्ली सदक़ातो ख़ैरात से नेकी के कामों में ह़िस्सा ले सकते हैं। इस वेब साइट पर सॉफ़्टवेर की सूरत में अल मदीना लाइब्रेरी भी दस्तयाब है जिसे कम्प्यूटर में इन्स्टॉल (Install) कर के सर्चिंग ऑप्शन (Searching Option) की मदद से 200 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल से इस्तिफ़ादा कर सकते हैं, नीज़ अवक़ातुस्सलात सॉफ़्टवेर के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ ममालिक और शहरों में सह़रो इफ़्त़ार और नमाज़ के अवक़ात मालूम कर सकते हैं। अल्लाह पाक हमें दौरे जदीद की इन ईजादात का सह़ीह़ इस्तिमाल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इन के ग़लत़ इस्तिमाल से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकियों में दिल लगाने की कोशिश कीजिये और किसी गुनाह को छोटा समझ कर हरगिज़ न कीजिये क्यूंकि एक गुनाह कई बुराइयों का मजमूआ होता है। चुनान्चे,

एक गुनाह के साथ 10 बुराइयां

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बेशक गुनाह अगर्चे एक ही हो मगर अपने साथ 10 बुराइयां ले कर आता है : (1)...जब बन्दा गुनाह करता है तो अल्लाह पाक को नाराज़ करता है जब कि वोह इस गुनाह पर बन्दे की गिरिफ़्त कर सकता है। (2)...गुनाह करने वाला इब्लीसे लईन को ख़ुश करता है। (3)...जन्नत से दूर हो जाता है। (4)...जहन्नम के क़रीब आ जाता है। (5)...वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ यानी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है। (6)...वोह ख़ुद को नापाक कर बैठता है हालांकि वोह पाक था। (7)...वोह आमाल लिखने वाले फ़िरिश्तों को ईज़ा देता है। (8)...वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की क़ब्रे अन्वर में रन्जीदा करता है। (9)...वोह अपनी ना फ़रमानी पर ज़मीनो आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपने ख़िलाफ़ गवाह बना लेता है। (10)...वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और तमाम जहानों के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है।[1]

हमारी बिगड़ी हुई आदतें निकल जाएं मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई क़ाबिले ग़ौर मक़ाम है कि गुनाह अगर्चे एक ही होता है मगर इस की वज्ह से इन्सान 10 बुराइयों का शिकार हो जाता है, लिहाज़ा अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन रब

1...بحر الدموع، الفصل الثانی: عواقب المعصیة، ص ۳۰، ۳۱

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 76

www.dawateislami.net

तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा कीजिये। अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! बाज़ नादान जवानी के नशे और फ़ानी दुन्या के धोके में मुब्तला हो कर लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधते और गफ़्लत की चादर ताने सोए रहते, शरई अहकाम को पसे पुश्त डाल कर तौबा के मुआमले में टाल मटोल से काम लेते और खुद को इस तरह दिलासे देते हैं कि "अभी तो मेरे खेलने कूदने के दिन हैं", "फुलां को देखो वोह तो इतना बूढ़ा हो चुका है मगर अभी तक ज़िन्दा है जब कि मैं तो अभी तनदुरुस्त और जवान हूं।" यूं झूटी और खोखली उम्मीदों के सहारे ज़िन्दा रहते हैं। फिर जैसे जैसे जवानी का ज़वाल शुरूअ़ होता है बुढ़ापा भी अपनी जड़ें मज़बूत करता चला जाता है तब कहीं जा कर ऐसों को होश आता है कि अब तो मुझे तौबा कर के खुद को गुनाहों से बचाने और **अल्लाह** पाक की खूब खूब इबादात बजा लाने का पुख़्ता इरादा करना चाहिये। फिर अगर्चे बसा अवक़ात हिम्मत कर के नेकियां करने में कामयाब हो भी जाते हैं मगर जवानी की बहारों को याद कर के खूब दिल जलाते और अश्क बहाते हैं कि "ऐ काश ! मैं अपनी जवानी को इबादतो रियाज़त में बसर कर लेता।" मगर आह ! जवानी तो किसी गुज़रे "**कल**" की तरह जा चुकी और अब पलट कर कभी वापस नहीं आएगी।

तौबा में ताख़ीर मत कीजिये

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तौबा में ताख़ीर करने वालों को नसीहत के मदनी फूल देते हुए फ़रमाते हैं : जहां तक तौबा में ताख़ीर और टाल मटोल की बात है तो इस बात पर गौर करे कि अक्सर दोज़खी तौबा में ताख़ीर की वज्ह से चिल्लाते होंगे क्यूंकि टाल मटोल करने वाला अपने मुआमले की बुन्याद आयिन्दा ज़िन्दगी को बनाता है जो

www.dawateislami.net

कि उस के इख़्तियार में नहीं। मुमकिन है वोह "**कल**" तक ज़िन्दा न रहे और अगर बाक़ी रह भी जाए तो जिस त़रह़ "**आज**" गुनाह को नहीं छोड़ सकता मुमकिन है "**कल**" भी इस के तर्क पर क़ुदरत न पाए। काश ! वोह जानता कि "**आज**" उस की तौबा में रुकावट शहवत का ग़लबा है और शहवत तो "**कल**" भी उस से दूर न होगी बल्कि बढ़ जाएगी क्यूंकि आ़दत की वज्ह से येह मज़ीद पुख़्ता हो जाती है और जिस शहवत को इन्सान आ़दत के ज़रीए़ पुख़्ता कर लेता है वोह उस की त़रह़ नहीं जिसे उस ने पुख़्ता न किया। इसी सबब से तौबा में टाल मटोल करने वाले हलाक हुए, क्यूंकि वोह दो हम शक्ल चीज़ों में तो फ़र्क़ समझते हैं लेकिन येह नहीं सोचते कि शहवात से छुटकारा पाना मुश्किल है और इस मुआ़मले में तमाम अय्याम यक्सां हैं। तौबा में ताख़ीर करने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जिसे एक दरख़्त को उखाड़ना हो मगर जब वोह देखता है कि दरख़्त मज़बूत़ है और उसे सख़्त मशक़्क़त के बिग़ैर नहीं उखाड़ा जा सकता तो कहता है कि "मैं इसे एक साल बाद उखाड़ूंगा।" ह़ालांकि वोह जानता है कि दरख़्त जब तक क़ाइम रहता है, उस की जड़ें मज़बूत़ से मज़बूत़ तर होती जाती हैं और ख़ुद इस (तौबा में ताख़ीर करने वाले) की उ़म्र जूं जूं बढ़ती है येह कमज़ोर होता जाता है पस दुन्या में इस से बढ़ कर अह़मक़ कोई नहीं कि इस ने क़ुव्वत के बा वुजूद कमज़ोर का मुक़ाबला न किया और इस बात का मुन्तज़िर रहा कि जब येह ख़ुद कमज़ोर हो जाएगा और कमज़ोर शै मज़बूत़ हो जाएगी तो उस पर ग़लबा पाएगा।(1)

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

1... احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، الرکن الرابع فی دواء التوبۃ...الخ، ۴/۷۲

www.dawateislami.net

मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे — *मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे*
ज़मीं खा गई नौजवां कैसे कैसे — *हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे*
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है — *जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जवानी में शरई अह़काम और इत़ाअ़ते इलाही की बजा आवरी में सुस्ती करने और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा में ताख़ीर करने वाले नौजवानों को ख़्वाबे ग़फ़्लत से जगाने के लिये इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह नसीह़त काफ़ी है । अ़क़्लमन्द वोही है जो ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए गुनाहों से तौबा कर ले और अपनी बाक़ी मांदा ज़िन्दगी ज़ियादा से ज़ियादा इबादते इलाही में बसर करे, बिल ख़ुसूस नौजवानों को तौबा में हरगिज़ ताख़ीर नहीं करनी चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** पाक को नौजवान की तौबा बहुत पसन्द है । चुनान्चे,

﴾1﴿...रसूले बे मिसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی يُحِبُّ الشَّابَّ التَّائِبَ यानी बेशक **अल्लाह** पाक तौबा करने वाले नौजवान से मह़ब्बत फ़रमाता है ।[1]

﴾2﴿...एक जगह इरशाद फ़रमाया : مَا مِنْ شَيْءٍ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ مِنَ الشَّابِّ التَّائِبِ यानी **अल्लाह** पाक को तौबा करने वाले नौजवान से ज़ियादा पसन्दीदा कोई नहीं ।[2]

नौजवानों की इस्लाह़ और दावते इस्लामी का किरदार

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में क़ुरआनो सुन्नत से दूर, जवानी की मस्ती में मख़मूर, ह़िर्स व हवसे दुन्या के नशे में चूर और नफ़्सो शैत़ान के हाथों मजबूर हो कर गुनाहों के सैलाब में बहने वाले नौजवानों की इस्लाह़

1...المقاصد الحسنة، ص۱۳۰، حديث: ۲۴۱

2...مسند فردوس، ۴/۴۸، حديث: ۲۱۵۳

www.dawateislami.net

और अख़्लाक़ी तरबियत के लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगी़र गै़र सियासी तह़रीक **दावते इस्लामी** के तह़्त 63 रोज़ा मदनी तरबियती कोर्स भी होता है। इस कोर्स की इफ़ादिय्यत व अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "फै़ज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 510" पर फ़रमाते हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों से माला माल 63 रोज़ा (मदनी) तरबियती कोर्स आख़िरत के लिये इस क़दर नफ़्अ़ बख़्श है कि इस में जो कुछ सीखने को मिलता है, उस की तफ़्सीलात मालूम हो जाने के बाद शायद दीन का दर्द रखने वाला हर मुसलमान येह ह़सरत करेगा कि काश ! मुझे भी **63** रोज़ा (मदनी) तरबियती कोर्स करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाए ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (मदनी) तरबियती कोर्स का सिलसिला किया जाता है। इस में बाज़ वोह उ़लूम ह़ासिल होते हैं, जिन का सीखना हर आ़क़िल, बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (मदनी) तरबियती कोर्स में वुज़ू व ग़ुस्ल के इलावा नमाज़ का अ़मली त़रीक़ा सिखाया जाता, ग़ुस्ले मय्यित, तजहीज़ो तक्फ़ीन, नमाज़े जनाज़ा व नमाज़े ई़द की तरबियत होती है। मदनी क़ाइदे के ज़रीए़ दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआनी ह़ुरूफ़ की अदाएगी की तालीम दी जाती है और क़ुरआने करीम की आख़िरी 20 सूरतें ज़बानी ह़िफ़्ज़ और सूरतुल मुल्क की मश्क़ करवाई जाती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी तरबियती कोर्स की बरकत से बहुत से नौजवान दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो चुके हैं और उन की बे रौनक़ ज़िन्दगियों में मदनी बहारें आ गईं और वोह अपनी जवानी के पुर बहार अय्याम, **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर वक़्फ़ कर के इस मदनी मक़्सद कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" को आ़म करने वाले बन गए।

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा — तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माहोल
तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का — क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माहोल
नबी की महब्बत में रोने का अन्दाज़ — चले आओ सिखलाएगा मदनी माहोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه — तुम अपनाए रखो सदा मदनी माहोल[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिसाला "जवानी कैसे गुज़ारें ?" का तआरुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नौजवानों में इबादत का ज़ौक़ पैदा करने और सुन्नतों पर अ़मल का शौक़ बढ़ाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने 18 रबीउ़ल अव्वल सिने 1412 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 26 सितम्बर सिने 1991 ईसवी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में दावते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब में **"जवानी की इबादत के फ़ज़ाइल"** के उ़नवान से बयान फ़रमाया था।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने इस की मदद से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ **"जवानी कैसे गुज़ारें ?"** के नाम से एक रिसाला मुरत्तब किया है। इस रिसाले में क़ुरआनी आयात, नसीह़त आमोज़ अह़ादीसे पाक और मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों के ह़िक्मत से भरपूर वाक़िआत के ज़रीए़ नौजवान त़बक़े को इ़बादत की जानिब राग़िब करने, **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा ग़ुलाम बनाने और उन्हें क़ब्रो आख़िरत की फ़िक्र पैदा करने की तरग़ीब दिलाई गई है। आप भी इस रिसाले को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला जवानी के मक़्सद को समझने और इ़बादत में दिल लगाने में काफ़ी ह़द तक मुआ़विन साबित होगा।

---

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 646

दावते इस्लामी की वेब साइट से इसे पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने जवानी में इबादत के फ़ज़ाइल सुनने की सआदत हासिल की। जो लोग अपनी जवानी के गुलशन को इबादतो रियाज़त के खुशनुमा महकते फूलों से सजाते हैं, वोह **अल्लाह** पाक को बहुत महबूब होते हैं, उन की पेशानियों से इबादत का नूर झलकता है और वोह बुढ़ापे में भी सिह्हतमन्द व तनदुरुस्त रहते हैं और मरने के बाद जन्नत की अबदी नेमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। ऐ काश ! हम भी पंज वक्ता नमाज़े बा जमाअत मस्जिद की पहली सफ़ में पढ़ने वाले पक्के नमाज़ी, तहज्जुद, इशराको चाश्त के नवाफ़िल के आदी और सुन्नतों पर अमल करने वाले बन जाएं।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी

करम हो करम या खुदा या इलाही (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम, "मदनी इन्आमात पर अमल"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकियां करने, गुनाहों से बचने और नेकी की दावत को आम करने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली हल्के के 12 मदनी कामों में खूब बढ़ चढ़

(1).....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105

कर हिस्सा लीजिये। जैली हल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को नेकी की राह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में बहुत मुआविन हैं। इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम अपने आमाल का मुहासबा करते हुए "**मदनी इन्आमात पर अमल करना**", रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के मदनी इन्आमात का रिसाला पुर करना और हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवा देना भी है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी न सिर्फ़ ख़ुद फ़िक्रे आख़िरत में अपने आमाल का मुहासबा करते बल्कि लोगों को भी इस का ज़ेहन दिया करते जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अली कत्तानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि ब ज़ाहिर तो तुम दुन्या में रहो लेकिन दिल आख़िरत (की तय्यारी) में मशग़ूल रहे।(1)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन बनाने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़ों पर मुश्तमिल मदनी इन्आमात ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं, लिहाज़ा हमें भी रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए, मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मामूल बना लेना चाहिये और दावते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहना चाहिये, इस मदनी माहोल से वाबस्ता होने की बरकत से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की ढेरों ढेर भलाइयां हाथ आएंगी। आइये ! इस्लामी भाइयों के 72 मदनी इन्आमात में से मदनी इन्आम नम्बर 22 "**इनफ़िरादी कोशिश**" वाले मदनी इन्आम की बरकतों से माला माल एक मदनी बहार सुनते हैं :

1...طبقات الصوفية للسلمى، الطبقة الرابعة، ص ٢٨٣

www.dawateislami.net

मदनी बहार : मीठे बोलों में खो गए

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं बह़रे इस्यां (गुनाहों के समुन्दर) में मुस्तग्रक़ (डूबा हुवा) अपनी ज़िन्दगी के **"अनमोल हीरे"** ग़फ़्लत की नज़्र किये जा रहा था, रात गए तक दोस्तों के साथ खुश गप्पियों में मसरूफ़ रहना मेरा मामूल था। 18 रमज़ानुल मुबारक सिने 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 19 सितम्बर सिने 2008 ईसवी को ह़स्बे मामूल हम दोस्त मिल कर बैठे मज़ाक़ मस्ख़रियों में मश्ग़ूल थे और इस के सबब मजलिस से क़हक़हों के फ़व्वारे उबल रहे थे, इसी दौरान दावते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल हमारे पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने सलाम किया और बैठ गए, उन की आमद से हमारी मह़फ़िल में कुछ सन्जीदगी आई, उन्हों ने हमें निहायत उ़म्दा मदनी फूलों से नवाज़ा, उन के हुस्ने आवाज़ और मदनी अन्दाज़ से हमें इतना सुरूर मिला कि हम उन के मीठे बोलों में खो गए। कुछ देर बाद वोह जाने लगे तो हम ने अ़र्ज़ की : भाई ! मज़ीद कुछ देर तशरीफ़ रखिये ! और हमें अच्छी अच्छी बातें बताइये, नेकी की दावत का जज़्बा रखने वाले इस्लामी भाई ने हमारी दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली। दौराने गुफ़्तगू फ़िक्रे आख़िरत व इस्लाहे़ उम्मत का मौज़ूअ़ भी ज़ेरे बह़स रहा, इस आ़शिक़े रसूल की पुर तासीर इनफ़िरादी कोशिश ने हमारे दिलों पर गहरे असरात छोड़े। दूसरी रात हम फिर उसी जगह मह़फ़िल सजाए उन इस्लामी भाई के मुन्तज़िर थे। ह़स्बे उम्मीद वोह तशरीफ़ लाए और हमें दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चलने की दावत पेश की, उन के किरदार व गुफ़्तार को देख कर कम अज़ कम मैं तो इन्कार न कर सका और उन के साथ फ़ैज़ाने मदीना की पाकीज़ा फ़ज़ाओं में पहुंच गया। ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का जज़्बा दिल में

उजागर करने वाले रूह़ परवर मदनी माह़ोल ने मेरे दिल में मदनी इनक़िलाब बरपा कर दिया और यूं उस आ़शिक़े रसूल की "**इनफ़िरादी कोशिश**" की बरकत से मुझे दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल नसीब हो गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

हाथ मिलाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले 101 मदनी फूल से हाथ मिलाने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनते हैं : पहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ...."जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुए **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** पाक उन के दरमियान सौ (100) रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निनान्वे (99) रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।"(2) "जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ह़ा करते हैं और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले

---

(1)...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

(2)...معجم اوسط، ۵/ ۳۷۹، حدیث: ۷۶۷۲

www.dawateislami.net

पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"[1] दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से मुसाफ़हा करना यानी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है। ...रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं। ...हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ भी पढ़ लीजिये : يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ (यानी अल्लाह पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ...दो मुसलमान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी, हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी।[2] اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ...आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है। ... जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं। ...सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़हा किया जाए।[3] ...बाज़ लोग सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं। ...अगर अम्रद (यानी ख़ूब सूरत लड़के) से हाथ मिलाने में शहवत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शहवत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है।[4] मुसाफ़हा करते (यानी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा हाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हो और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।[5]

---

1 ...شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اھل الدین، فصل فی المصافحۃ...الخ، ۶/ ۴۷۱، حدیث: ۸۹۴۴

2 ...مسند احمد، مسند انس بن مالک، ۴/ ۲۸۶، حدیث: ۱۲۴۵۴

3 ...درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/ ۶۲۹

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/ ۹۸

5 ...درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/ ۶۲۹

www.dawateislami.net

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ दो कुतुब (1)... **312 सफ़हात** पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअत"** हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़हात** की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा

अगर बहते पानी मसलन दरिया, या नहर में नहाया तो थोड़ी देर इस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आज़ा को तीन बार हरकत दे। अगर तालाब वग़ैरा ठहरे पानी में नहाया तो आज़ा को तीन बार हरकत देने या जगह बदलने से तस्लीस यानी तीन बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (या नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुज़ू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उ़ज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में हरकत देना तीन बार धोने के क़ाइम मक़ाम है। (الدر المختار و رد المحتار،١/٣٢٠) वुज़ू और ग़ुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा।

(नमाज़ के अह़काम, ग़ुस्ल का त़रीक़ा. स. 113)

---

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

SEERATE DATA ALI HAJWERI

(HINDI BAYAAN)

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

सीरते दाता अ़ली हजवेरी

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम 10-10 बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।[1]

सब ने सफ़े मह़शर में ललकार दिया हम को
ऐ बे कसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

साबिरो शाकिर नौजवान

शाम का वक़्त था, रात की तारीकी आहिस्ता आहिस्ता हर शै को अपनी लपेट में ले रही थी, ख़ुरासान में एक बे साज़ो सामान मुसाफ़िर हाथ में अ़सा (लाठी) लिये हर चीज़ से बे नियाज़, बोसीदा, मोटा और खुरदरा टाट का लिबास पहने चला जा रहा था, जब आबादी के क़रीब पहुंचा तो रात गुज़ारने के इरादे से एक ऐसे मक़ाम पर ठहरा जहां ब ज़ाहिर दीनदार नज़र आने वाले कुछ अफ़राद भी मौजूद थे, जिन के चेहरे ख़ुशह़ाली व बे फ़िक्री से दमक रहे थे, जैसे ही उन की नज़र इस मफ़्लूकुल ह़ाल (ख़स्ता ह़ाल) शख़्स पर पड़ी, तो उन में से एक ने सख़्त लहजे

---

1 ...مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ما یقول اذا اصبح و اذا امسی، ۱۰/ ۱۶۳، حدیث: ۱۷۰۲۲

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 192

www.dawateislami.net

में सुवाल किया : "तुम कौन हो ?" उस ने नर्मी से जवाब दिया : मुसाफ़िर हूं, यहां रात बसर करने के लिये ठहरना चाहता हूं। वोह सब क़हक़हा लगा कर हंस पड़े और उसे ह़क़ारत से देखते हुए कहा : येह हम में से नहीं है। मुसाफ़िर उन की येह बात सुन कर ख़ुशी से खिल उठा और जवाब में कहा : वाक़ेई मैं तुम में से नहीं हूं। रात हुई तो उन में से एक ने उस के आगे सूखी रोटी ला कर रख दी और ख़ुद अपने दोस्तों की उस महफ़िल में शरीक हो गया, जिस में वोह अन्वाओ़ अक़्साम की उ़म्दा और लज़ीज़ ग़िज़ाओं से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के साथ साथ एक दूसरे से हंसी मज़ाक़ में भी मश्ग़ूल थे। वोह मुसाफ़िर को सूखी रोटी खाता देख कर हंसते, ख़रबूज़े खा कर छिलके उस पर फेंकते और त़ानो तशनीअ़ के तीर बरसाते रहे यानी बुरा भला कहते रहे मगर वोह साबिरो शाकिर नौजवान ख़ुशदिली से उन के सितम बरदाश्त करता रहा और कोई जवाबी कारवाई न की।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुराई को भलाई से टालने वाले

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में अपने साथ ना रवा व ना पसन्दीदा सुलूक पर सब्र करने वाले वोह बुज़ुर्ग **अल्लाह** पाक के बरगुज़ीदा वली, हुज़ूर दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ थे। यक़ीनन **अल्लाह** पाक के महबूब और बरगुज़ीदा बन्दों का येह मामूल होता है कि वोह आने वाली हर मुसीबत पर सब्रो शुक्र से काम लेते हैं। **अल्लाह** पाक जिस त़रह़ अपने बन्दों पर बे शुमार नेमतें निछावर फ़रमा कर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाता है, इसी त़रह़ बाज़ अवक़ात उन्हें मसाइबो आलाम के इमतिह़ान में डालता है

1...ماخوذاز کشف المحجوب، باب الملامۃ، ص ٦٢

और कामयाबी की सूरत में बुलन्दिये दरजात और बे शुमार दुन्यवी व उख़रवी इन्आ़मात के साथ ऐसों को येह मुज़्दए जां फ़िज़ा भी सुनाता है कि ''**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है।'' اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ (پ۲، البقرة:۱۵۳) याद रखिये ! ज़ाते बारी तआ़ला का कुर्ब वोह अ़ज़ीम नेमत है कि जिस के हुसूल की ख़ातिर अम्बियाए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने ऐसी ऐसी तकालीफ़ पर सब्र किया जिन के तसव्वुर से ही लर्ज़ा त़ारी हो जाता है। हमें भी येह निय्यत करनी चाहिये कि अगर कोई मुसीबत आई, किसी ने हमारा दिल दुखाया या बद सुलूकी से पेश आया तो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए सब्र से काम लेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मसाइबो आलाम पर सब्रो रिज़ा की फ़ज़ीलत

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : जब मैं अपने किसी बन्दे के बदन, औलाद या माल में कोई मुसीबत व तक्लीफ़ डालूं और वोह सब्रो रिज़ा के साथ उसे क़बूल करे तो अब मुझे ह़या आती है कि मैं क़ियामत के दिन उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आमाल खोलूं।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि दुन्या में ब ज़ाहिर कड़वे मह़सूस होने वाले सब्र के चन्द घूंट आख़िरत में कैसी मिठास का सबब बनेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने साथ पेश आने वाली बद सुलूकी पर कमाले सब्र का मुज़ाहरा किया तो **अल्लाह** पाक ने आप को वोह अ़ज़ीम मक़ामे विलायत अ़त़ा फ़रमाया कि आप को इस दुन्या से

1...نوادر الاصول، الاصل الخامس والثمانون والمائة، ۲/ ۷۰۰، حدیث: ۹۲۳

www.dawateislami.net

पर्दा किये कमो बेश 973 साल का अ़र्सा बीत चुका है मगर आज भी करोड़ों मुसलमानों के दिलों में आप की मह़ब्बतो अ़ज़्मत क़ाइमो दाइम है, लोग जूक़ दर जूक़ आप के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी की सआ़दत पाते और अपनी ख़ाली झोलियां मुरादों से भरते हैं ।

आइये ! इस अ़ज़ीम हस्ती की शान में, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की लिखी हुई मन्क़बत के कुछ अश्आ़र सुनते हैं :

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़त़ा दाता पिया
आप को ख़्वाजा पिया का वासित़ा दाता पिया
दो न दो मरज़ी तुम्हारी तुम मदीने का टिकट
मैं पुकारे जाऊंगा दाता पिया दाता पिया
दौलते दुन्या का साइल बन के मैं आया नहीं
मुझ को दीवाना मदीने का बना दाता पिया
काश मैं रोया करूं इश्क़े रसूले पाक में
सोज़ दो ऐसा पए अह़मद रज़ा दाता पिया
मुझ को दाता ताजदाराने जहां से क्या ग़रज़
मैं पुकारे जाऊंगा दाता पिया दाता पिया
झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन
मुझ को दीवाना मदीने का बना दाता पिया (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

....

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 533

आप का तआ़रुफ़

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम "अ़ली" वालिदे माजिद का नाम "उ़स्मान" है। आप का सिलसिलए नसब छे वासित़ों से सय्यिदुश्शुहदा हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से जा मिलता है। आप की कुन्यत "अबुल ह़सन" है।[1] जब कि मश्हूरो मारूफ़ लक़ब "गंज बख़्श" है। इस लक़ब की वज्हे तस्मिया (नाम रखने की वज्ह) कुछ यूं है कि ह़ज़रते ख़्वाजए ख़्वाजगान, सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो कुछ अ़र्से तक आप के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर ठहरे रहे और ह़ज़रते दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ुयूज़े बात़िनी से माला माल हो कर जब अल वदाई फ़ातिह़ा के लिये ह़ाज़िर हुए तो ज़बाने मुबारक पर बे साख़्ता येह शेर आ गया :

گنجِ بخشِ فَیضِ عالَم، مَظہَرِ نُورِ خُدا   ناقِصاں را پِیرِ کامِل، کامِلاں را رَہنُما[2]

सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बाने मुबारक से निकला हुवा लक़ब "गंज बख़्श" आज पूरे बर्रे सग़ीर में गूंज रहा है। यहां तक कि बाज़ लोग तो आप के इस्मे मुबारक (नाम) से भी ना वाक़िफ़ होते हैं और मह़ज़ "दाता गंज बख़्श" के लक़ब से ही याद करते हैं।[3]

दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादते बा सआ़दत कमो बेश सिने 400 हिजरी में ग़ज़्नी शहर में हुई। कुछ अ़र्से बाद आप का ख़ानदान मह़ल्ला हजवेर मुन्तक़िल हो गया, इसी निस्बत से हजवेरी कहलाते हैं।

ग़म मुझे मीठे मदीने का अ़त़ा कर दो शहा   मेरा सीना भी मदीना दो बना दाता पिया[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ...ماخوذ از بزرگانِ لاہور، ص ۲۲۲۔ سفینۃ الاولیاء، حضرت شیخ پیر علی ہجویری، ص ۱۶۴

2 ...ماخوذ از محفلِ اولیاء، ص ۳۸۸

3 ...معارفِ ہجویریہ، ۲/ ۵۰

4 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 533

राहे ख़ुदा में सफ़र

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने ज़माने के कई अ़ज़ीमुल मर्तबत (यानी बुलन्द रुत्बा) अइम्मए त़रीक़त व शरीअ़त से इ़ल्मो मारिफ़त के जाम पिये और उ़म्र का एक बड़ा ह़िस्सा सफ़र में गुज़ारा, जिस का मक़्सद **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों से मिलना, उन से फ़ैज़याब होना और अपने नफ़्स को मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों का आ़दी बना कर **अल्लाह** पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाना था। आप ने किरमान, सीस्तान, तुर्किस्तान, मा वरा अन्नहर, ख़ूज़िस्तान, त़ब्रिस्तान, आज़र बैजान, फ़ारस, इ़राक़, शाम, फ़िलिस्त़ीन और ह़िजाज़े मुक़द्दस समेत कई मुल्कों का सफ़र किया।(1)

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जवां उ़म्री ही में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील कर चुके थे, आप के इ़ल्मी मक़ाम का अन्दाज़ा इस वाक़िए़ से लगाया जा सकता है कि एक मरतबा सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का एक ग़ैर मुस्लिम फ़लसफ़ी से मुकालमा हुवा तो आप ने अपनी इ़ल्मी क़ाबिलिय्यत से ज़बरदस्त जवाबात के ज़रीए़ उसे ख़ामोश कर दिया, ह़ालांकि उस वक़्त आप की उ़म्र ज़ियादा न थी। इस मुकालमे को सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी की ज़िन्दगी के आख़िरी साल में भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की उ़म्रे मुबारक तक़रीबन 20 साल बनती है।(2)

मीठे मीठे मुस्त़फ़ा की बारगाहे पाक में कीजिये मेरी सिफ़ारिश आप या दाता पिया(3)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1...ماخوذ از اردو دائرۂ معارف اسلامیہ، داتا گنج بخش، ۹ / ۹۴

2...کشف المحجوب مترجم (ضیاء القرآن)، پیش لفظ، ص ۱۲، ملخصًا

3.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 534

www.dawateislami.net

इल्मे दीन के हुसूल का शौक़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इल्मे दीन ह़ासिल करने का किस क़दर शौक़ था ? इल्मे दीन के ह़ुसूल की ख़ात़िर आप ने इराक़, शाम और ह़िजाज़े मुक़द्दस समेत 10 से ज़ाइद ममालिक का सफ़र किया और इस राहे पुरख़ार में कई ना ख़ुशगवार वाक़िआत से भी हम कनार हुए मगर सब्रो रिज़ा के पैकर और रब तआला के शुक्र गुज़ार रहे । अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि एक त़रफ़ तो हमारे अस्लाफ़ का येह ह़ाल था कि ह़ुसूले इल्मे दीन के ज़राएअ़ इन्तिहाई दुश्वार होने के बा वुजूद येह मुबारक हस्तियां तन देही (मेह़नत व लगन) से इल्मे दीन ह़ासिल करते रहे और लोगों में नेकी की दावत आ़म करते रहे, इस के बर अ़क्स हमारा मुआ़मला येह है कि आज इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में जब कि इल्मे दीन ह़ासिल करना इन्तिहाई आसान हो चुका है, तमाम तर सहूलतों और आसाइशों के बा वुजूद भी हम इल्मे दीन से दूर हैं ह़त्ताकि फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की भी फ़ुरसत नहीं । हम ख़ुद को और अपनी औलाद को दुन्यवी फ़वाइद दिलवाने के लिये उ़लूमो फ़ुनून तो सिखाते हैं ताकि आला डिग्री ह़ासिल कर के हमारा नाम रौशन होने के साथ साथ औलाद का आ़रिज़ी मुस्तक़्बिल भी रौशन हो मगर अफ़्सोस ! हमें अपनी आख़िरत संवारने की बिल्कुल फ़िक्र नहीं । याद रखिये ! इल्मे दीन सीखना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है ।

कितना इल्म सीखना फ़र्ज़ है ?

ह़दीसे पाक में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ यानी इल्म का त़लब करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ।(1)

❶...ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، ۱/۱۴۶، حدیث: ۲۲۴

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़्ह़ा 342 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक के तह़त मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जो कुछ फ़रमाया उस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि बुन्यादी अ़क़ाइद का इ़ल्म ह़ासिल करे, जिस से आदमी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से काफ़िर या गुमराह हो जाता है। इस के बाद मसाइले नमाज़ यानी इस के फ़राइज़ो शराइत़ व मुफ़्सिदात (नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ त़ौर पर अदा कर सके। फिर जब रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (यानी ह़क़ीक़तन या हुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो ज़कात के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले ह़ज, निकाह़ करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, ताजिर हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, मुज़ारेअ़ यानी काश्तकार (और ज़मीनदार) पर खेतीबाड़ी के मसाइल, मुलाज़िम बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारे के मसाइल। وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس (यानी और इसी पर क़ियास करते हुए) हर मुसलमान आ़क़िलो बालिग़ मर्दो औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लालो ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है। नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) यानी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ियो इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।(1)

1.....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 23/623

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि दीन का बुन्यादी इ़ल्म न सीखना आख़िरत की तबाहियो बरबादी का सबब बन सकता है क्यूंकि जब नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, निकाह़, तिजारत, मज़दूरी और दीगर मुआ़मलात के बारे में दीनी मालूमात न होंगी तो यक़ीनन इन कामों में शरई ग़लतियां भी सरज़द हो जाएंगी जिन की वज्ह से आख़िरत में पकड़ हो सकती है। लिहाज़ा ज़िन्दगी की इन अनमोल साअ़तों को ग़नीमत जानते हुए हुसूले इ़ल्मे दीन के लिये कोशां रहिये और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से बचने और आख़िरत के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

गो ज़लीलो ख़्वार हूं पापी हूं मैं बदकार हूं   आप का हूं आप का हूं आप का दाता पिया[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मर्कज़ुल औलिया में तशरीफ़ आवरी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना येह वोह अ़ज़ीम काम है कि जिस की तक्मील के लिये अल्लाह पाक ने वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस दुन्या में मबऊ़स फ़रमाया। ह़त्ताकि ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इसी मक़्सद के लिये इस दुन्या में तशरीफ़ लाए। आप के बाद उम्मत को नेकी की दावत देने और इन की तरबियत का येही काम बारगाहे नबुव्वत के बराहे रास्त तरबियत याफ़्ता सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने संभाल लिया। इन के बाद भी हर दौर में बुज़ुर्गाने दीन ने इस्लामी तालीमात के नूर से लोगों के दिलों को मुनव्वर किया। ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी इसी मक़्सद को अपना शिआ़र बनाया और नेकी की दावत के इस अहम फ़रीज़े को निभाने के लिये मर्कज़ुल औलिया पहुंचे। आप ने इ़ल्मो

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 534

हिक्मत के ऐसे दरिया बहाए कि वोह शहर जो पहले कुफ़्र और शिर्क के अन्धेरों में डूबा हुवा था अब क़ल्अ़ए इस्लाम बन गया, आप के हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने किरदार और नर्म गुफ़्तार से कई दिलों में आप की महब्बत रासिख़ हो गई। मर्कज़ुल औलिया में आप के क़ियाम की मुद्दत तक़रीबन 30 साल है।(1)

इस सारे अ़र्से में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه शबो रोज़ दीन की तब्लीग़ में मश्ग़ूल रहे, आप की बे दाग़ सीरत, दिलकश गुफ़्तगू, पुरनूर शख़्सिय्यत और दिलों में उतर जाने वाले इरशादाते आ़लिया लोगों को कुफ़्रो ज़लालत (गुमराही) की दल दल से निकाल कर हिदायत की राह पर गामज़न करते रहे। मर्कज़ुल औलिया में आप ने अपनी क़ियाम गाह के पास ही एक जगह मस्जिद का संगे बुन्याद रखा और इस मस्जिद की तामीर के वक़्त आप ने खुद मज़दूरों की त़रह़ काम किया और बड़ी महब्बत और जज़्बे से इस की तामीर में पेश पेश रहे, मर्कज़ुल औलिया की येह पहली मस्जिद थी जो एक वलिय्युल्लाह के हाथों तामीर हुई।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूरी ज़िन्दगी ख़ूब महब्बतो लगन से ख़िदमते दीन का काम सर अन्जाम दिया, दुखी इन्सानिय्यत को अम्नो सुकून का पैग़ाम दिया और अपने मुरीदीन व मुहिब्बीन की दीनी व दुन्यावी ह़ाजतों को पूरा फ़रमाया। आज भी आप अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार से अपने अ़क़ीदत मन्दों की ह़ाजत रवाई फ़रमाते, इन की परेशानियां ह़ल फ़रमाते और अपने रूह़ानी फ़ैज़ान से जिसे चाहते हैं माला माल करते हैं।

मैं हूं इस्यां का मरीज़ और तुम त़बीबे आ़सियां
हो अ़ता मुझ को गुनाहों की दवा दाता पिया(3)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....माख़ूज़ अज़ अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 468
2.....माख़ूज़ अज़ अल्लाह के ख़ास बन्दे, स. 469
3.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 534

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलिया उल्लाह के मज़ारात पर हाज़िरी की बरकत से दुआएं क़बूल होती हैं, मुश्किलात व मसाइब से नजात मिलती है, ख़ास इस नज़रिये से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात पर जाना भी हमारे अस्लाफ़ का त़रीक़ा रहा है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का भी येह मामूल था कि आप बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن के मज़ारात पर हाज़िरी देते थे और मज़ारात पर हाज़िरी के सिलसिले में आप ने अपने कई वाक़िआत अपनी मश्हूरो मारूफ़ किताब "कश्फ़ुल मह़जूब" में दर्ज किये हैं। आइये इन में से चन्द वाक़िआत सुनते हैं :

दाता साहि़ब और ह़ाज़िरिये मज़ारात

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं एक रोज़ सफ़र करता हुवा मुल्के शाम में मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा, वहां मेरी आंख लग गई और मैं ने ख़ुद को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पाया। क्या देखता हूं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी शैबा के दरवाज़े पर मौजूद हैं और एक उ़म्र रसीदा शख़्स को किसी छोटे बच्चे की त़रह़ उठाए हुए हैं, मैं फ़र्ते़ मह़ब्बत से बे क़रार हो कर आप की त़रफ़ दौड़ा और आप के मुबारक क़दमों को बोसा दिया, दिल ही दिल में इस बात पर बड़ा ह़ैरान भी था कि येह ज़ईफ़ शख़्स कौन है? इतने में **अल्लाह** पाक के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुव्वते बात़िनी और इ़ल्मे ग़ैब के ज़रीए़ मेरी ह़ैरत व इस्तिजाब (तअ़ज्जुब) की कैफ़िय्यत जान गए और मुझ से मुख़ात़ब हो कर इरशाद फ़रमाया : **येह अबू ह़नीफ़ा हैं और तुम्हारे इमाम हैं।**[1]

1...كشف المحجوب،باب فی ذكر ائمتهم من...الخ،ص۱۰۱

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार मुझे एक मुश्किल दरपेश हुई, मैं ने उस के ह़ल की कोशिश की मगर कामयाब न हुवा, इस से क़ब्ल भी मुझ पर ऐसी ही मुश्किल आई थी तो मैं ने ह़ज़रते शैख़ अबू यज़ीद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी दी थी और मेरी वोह मुश्किल आसान हो गई थी। इस मरतबा भी मैं ने इरादा किया कि वहां ह़ाज़िरी दूं। चुनान्चे, अपनी मुश्किल के ह़ल के लिये तीन माह तक उन के मज़ारे मुबारक पर चिल्ला कशी की।[1]

﴾3﴿.....हुज़ूर दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास क़ासिम बिन महदी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में फ़रमाते हैं कि आज तक उन का मज़ार "मर्व" (तुर्कमानिस्तान) में मौजूद है और बहुत मश्हूरो मारूफ़ है, लोग वहां मुरादें मांगने जाते हैं और बड़ी बड़ी मुश्किलात ह़ल करने के लिये उन से त़ालिबे इमदाद होते हैं तो उन की इमदाद की जाती है, येह बात बहुत मुजर्रब (यानी कई बार की आज़माई हुई) है।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलियाए किराम ह़यात हैं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का भी येह अ़क़ीदा था कि न सिर्फ़ मज़ारात पर जाना बाइ़से बरकत है बल्कि वहां मुश्किलात भी ह़ल होती हैं और येह सब साह़िबे मज़ार ही का फ़ैज़ान होता है। मुमकिन है किसी को येह वस्वसा आए कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام का फ़ैज़ कैसे मिल सकता है ? क्यूंकि वोह तो वफ़ात पा चुके होते हैं। तो याद रखिये ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से मज़ारात में न सिर्फ़ ह़यात होते हैं बल्कि ज़ाइरीन (अपने मज़ारात की ज़ियारत करने वालों) की हिदायत व मदद भी फ़रमाते हैं।

---

1 ...كشف المحجوب، باب الملامة، ص ٦٥

2 ...كشف المحجوب، باب في ذكر ائمتهم من...الخ، ص ١٢٥

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अम्बिया, औलिया और शुहदा के अजसाम क़ब्रों में भी न तो मुतग़य्यिर होते हैं और न ही बोसीदा क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने उन के जिस्मों को इस ख़राबी से जो गोश्त के गलने सड़ने से पैदा होती है, मह़फ़ूज़ रखा है।(1)

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के औलिया इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गए हैं और अपने परवर दगार के पास ज़िन्दा हैं उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है, वोह ख़ुशह़ाल हैं और लोगों को इस का शुऊ़र नहीं।(2)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : औलिया उल्लाह की दोनों ह़ालतों (ज़िन्दगी व मौत) में अस्लन (कोई) फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।(3)

कौन कहता है वली सब मर गए ? क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की तसरीह़ात से येह मालूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, शुहदाए उ़ज़्ज़ाम और औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام सब अपने अपने मज़ारात में ज़िन्दा होते हैं और तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं। इसी लिये सिर्फ़ अ़वाम ही नहीं बल्कि बड़े बड़े उ़लमाओ अकाबिरीन का येह मामूल रहा है कि वोह अपनी मुश्किलात के ह़ल के लिये मज़ाराते मुक़द्दसा पर ह़ाज़िरी दिया करते थे। आइये इस बारे में तीन अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن सुनते हैं : चुनान्चे,

---

1 ...روح البیان، پ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ:۴۱، ۳/ ۴۳۹

2 ...اشعۃ اللمعات، کتاب الجھاد، باب حکم الاسراء، ۳/ ۴۲۳

3 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/ ۴۵۹، تحت الحدیث: ۱۳۶۶

www.dawateislami.net

हाज़िरिये मज़ारात, बरकत का सबब

﴾1﴿.....मश्हूर हम्बली मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना इमाम ख़ल्लाल अबू बक्र अहमद बिन मुहम्मद बग़दादी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई मुआमला दर पेश होता है मैं इमाम मूसा काज़िम बिन जाफ़र सादिक़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا के मज़ार पर हाज़िर हो कर आप का वसीला पेश करता हूं तो **अल्लाह** पाक मेरी मुश्किल आसान कर के मुझे मेरी मुराद अ़ता फ़रमा देता है।(1)

﴾2﴿.....करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेश्वा हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई हाजत पेश आती है तो मैं दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ मांगता हूं, **अल्लाह** पाक मेरी हाजत पूरी कर देता है।(2)

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सुलैमान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मुझे एक हाजत थी और मैं काफ़ी तंगदस्त भी था। मैं ने सय्यिदुना मारूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्रे अन्वर पर हाज़िरी दी, तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ी और इस का सवाब आप और तमाम मुसलमानों की अरवाह़ को पहुंचाया, फिर अपनी हाजत बयान की। जूंही मैं वहां से वापस आया तो मेरी हाजत पूरी हो चुकी थी।(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ...تاریخ بغداد، مقدمۃ المصنف، باب ما ذکر فی مقابر بغداد...الخ، ۱/ ۱۳۳

2 ...الخیرات الحسان، الفصل الخامس والثلاثون، ص ۹۴

3 ...الروض الفائق، المجلس الرابع والثلاثون فی مناقب معروف الکرخی، ص ۱۸۸

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िआत से मालूम हुवा कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मज़ारात पर दुआएं क़बूल होती हैं, नीज़ बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए किराम को ईसाले सवाब करने की अहम्मिय्यत भी पता चली, लिहाज़ा हमारा भी येह मामूल होना चाहिये कि जब भी किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी का शरफ़ हासिल हो तो साहिबे मज़ार को ईसाले सवाब भी ज़रूर किया करें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बड़ी बरकतें मिलेंगी।

ईसाले सवाब की अहम्मिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम क़ुशैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : एक बुज़ुर्ग का बयान है कि मैं हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهَا के हक़ में दुआ किया करता था, एक मरतबा मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा, फ़रमा रही थीं : "तुम्हारे तहाइफ़ (यानी दुआएं और ईसाले सवाब) नूर के थालों में नूरानी रूमालों से ढांपे हुए हमारे पास आते हैं।"(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से बरकतें हासिल करने के लिये इन के मज़ारात पर हाज़िरी के भी कुछ आदाब हैं। हाज़िरी से पहले क्या क्या अच्छी निय्यतें होनी चाहियें ? मज़ारात पर जा कर क्या दुआएं मांगनी चाहियें ? मज़ारात पर हाज़िरी के क्या क्या फ़वाइद हैं ? वग़ैरा वग़ैरा येह सब जानने के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ 48 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाला "**मज़ाराते औलिया की हिकायात**" हदिय्यतन हासिल कर के मुतालआ फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मालूमात में काफ़ी इज़ाफ़ा होगा। आइये इसी रिसाले के सफ़्हा 6 और 16 से मज़ारात पर हाज़िरी का त़रीक़ा और इस के मदनी फूल सुनते हैं :

---

(1)...رسالہ قشیریۃ، باب رؤیا القوم، ص ۴۲۴

www.dawateislami.net

मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब

(अगर कोई शख़्स वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा के बाद एक बार आयतुल कुरसी और तीन बार सूरतुल इख़्लास पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साह़िबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** पाक उस फ़ौतशुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़ता फ़रमाएगा।[(1)] फिर अच्छी अच्छी निय्यतें करने के बाद मज़ारात की त़रफ़ रवाना हो और (ज़ाइर यानी ज़ियारत करने वाले को चाहिये कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के) मज़ाराते त़य्यिबात पर ह़ाज़िर होने में पाइंती (यानी क़दमों) की त़रफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवाजहे में (यानी चेहरे के सामने) खड़ा हो और मुतवस्सित़ (यानी दरमियानी) आवाज़ में (इस त़रह़) सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِىْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर "**दुरूदे ग़ौसिय्या**" तीन बार, **अल ह़म्द शरीफ़** एक बार, **आयतुल कुरसी** एक बार, **सूरतुल इख़्लास** सात बार, फिर "**दुरूदे ग़ौसिय्या**" सात बार और वक़्त फ़ुरसत दे तो **सूरए यासीन** और **सूरए मुल्क** भी पढ़ कर **अल्लाह** पाक से दुआ़ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अ़मल के क़ाबिल है और इसे मेरी त़रफ़ से इस बन्दए मक़्बूल को नज़्र पहुंचा। फिर अपना जो मत़लब जाइज़ (और) शरई हो उस के लिये दुआ़ करे और साह़िबे मज़ार की रूह़ को **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर इसी त़रह़ सलाम कर के वापस आए।[(2)]

---

1 ...فتاوی ھندیة، کتاب الکراھیة، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور...الخ، ۵/۳۵۰

2 .....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 9/522

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन देखा जाता है कि मज़ाराते औलिया पर नियाज़ भी तक़्सीम की जाती है, येह भी साहि़बे मज़ार को ईसाले सवाब करने का एक त़रीक़ा है। यक़ीनन **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये नियाज़ वग़ैरा तक़्सीम करने की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्चे,

लंगर वग़ैरा बांटना बाइ़से अज्र है

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 24, सफ़ह़ा 521 पर लिखते हैं : खाना खिलाना लंगर, बांटना भी मन्दूब (यानी अच्छा अ़मल) व बाइ़से अज्र है, ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِنَّ اللهَ يُبَاهِىْ مَلٰٓئِكَتَه بِالَّذِيْنَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ مِنْ عَبِيْدِهٖ यानी **अल्लाह** पाक अपने उन बन्दों के साथ जो लोगों को खाना खिलाते हैं, फ़िरिश्तों पर मुबाहात (यानी फ़ख़्र) फ़रमाता है।[1]

नियाज़ तक़्सीम करने की एह़तियातें

लेकिन लंगर तक़्सीम करते हुए इस बात का ख़याल ज़रूर रखिये कि किसी भी त़रह़ लंगर की बे हुरमती व बे अदबी न हो। न पाउं में आए, न मज़ार शरीफ़ का फ़र्श आलूदा हो, धक्कम पील से बचने के लिये इस्लामी भाइयों को बिठा कर या क़ित़ार बना कर लंगर तक़्सीम किया जाए, आने वाले ज़ाइरीन के हुक़ूक़ का ख़याल रखा जाए कि लंगर तक़्सीम करने की वज्ह से उन्हें ह़ाज़िरी देने में किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का सामना न करना पड़े और ख़ास त़ौर पर मज़ार शरीफ़ की ताज़ीम का मुकम्मल एहतिमाम किया जाए। ऐसा न हो कि एक त़रफ़ तो लंगर तक़्सीम कर के अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ बनें और दूसरी त़रफ़ मज़ार शरीफ़ की बे अदबी के मुर्तकिब हो जाएं। खाने की नियाज़ के साथ

1... الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، الترغیب فی اطعام الطعام...الخ، ۱/۴۲۷، حدیث:۱۴۱۲

www.dawateislami.net

साथ मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुबो रसाइल तक़्सीम कर के भी बे शुमार सवाबे जारिया साहि़बे मज़ार की ख़िदमत में पेश किया जा सकता है ।(1)

खाना गिर जाए तो ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! न सिर्फ़ मज़ार शरीफ़ में लंगर तक़्सीम करते हुए बल्कि हर जगह खाना खाते और खिलाते हुए एह़तियात़ करनी चाहिये कि कहीं खाने के दाने वग़ैरा ज़ाएअ़ न हो जाएं । अगर कहीं कोई लुक़्मा गिर जाए और तन्फ़ीरे अ़वाम (लोगों की नफ़रत) का अन्देशा भी न हो और लुक़्मा ऐसा हो जिस का साफ़ करना मुमकिन हो तो लोगों की परवा किये बिग़ैर बिला झिजक उठा कर (साफ़ कर के) खा लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें नसीब होंगी ।

रोटी वग़ैरा का एह़तिराम करो

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मकाने आ़लीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा देखा तो उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और इरशाद फ़रमाया : आ़इशा ! अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो कि येह चीज़ (यानी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई ।(2)

खाना ज़ाएअ़ मत कीजिये !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल हर एक बे बरकती और तंगदस्ती का रोना रो रहा है । क्या बईद कि रोटी का एह़तिराम न करने की येह सज़ा हो ।

1.....मज़ाराते औलिया की हि़कायात, स. 17

2...ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب النھی عن القاء الطعام، ۴/۴۹، حدیث: ۳۳۵۳

आज शायद ही कोई मुसलमान ऐसा हो जो रोटी ज़ाएअ़ न करता हो। हर त़रफ़ खाने की बे हुरमती के दिलसोज़ नज़्ज़ारे हैं, शादी की तक़रीबात हों या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नियाज़ के तबर्रुकात। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! दस्तरख़्वानों और दरियों पर बे दर्दी के साथ खाना गिराया जाता है, खाने के दौरान हड्डियों के साथ बोटी और मसाला बराबर साफ़ नहीं किया जाता, गर्म मसाले के साथ भी खाने के कसीर अज्ज़ा ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं, थालों में बचा हुवा थोड़ा सा खाना और प्यालों, पतीलों में बचा हुवा शोरबा दोबारा इस्तिमाल करने का अक्सर लोगों का ज़ेहन नहीं, इस त़रह़ का बहुत सारा बचा हुवा खाना उ़मूमन कचरा कूंडी की नज़्र कर दिया जाता है। अब तक जितना भी इसराफ़ किया है, बराए मेहरबानी ! उस से तौबा कर लीजिये। आयिन्दा खाने के एक भी दाने और शोरबे के एक भी क़त़रे का इसराफ़ न हो इस का अ़हद कर लीजिये। وَاللّٰهِ الْعَظِيْم ! क़ियामत में ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब होना है, यक़ीनन कोई भी क़ियामत के ह़िसाब की ताब नहीं रखता लिहाज़ा सच्ची तौबा कर लीजिये। दुरूदे पाक पढ़ कर अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** पाक ! आज तक मैं ने जितना भी इसराफ़ किया, उस से और तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा करता हूं और तेरी अ़त़ाकर्दा तौफ़ीक़ से आयिन्दा गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा, या रब्बे मुस्त़फ़ा ! मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे।[(1)]

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने हुज़ूर दाता अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरतो किरदार के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुना। आप पांचवीं सदी

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत स. 254

www.dawateislami.net

हिजरी के वोह अ़ज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग हैं जिन को इस दुन्या से पर्दा किये कमो बेश 973 साल का अ़र्सा बीत चुका है मगर आप की इल्मी व रूह़ानी चमक दमक में आज भी कोई कमी वाके़अ़ नहीं हुई । लाखों मुसलमानों में आप का फ़ैज़ान जारियो सारी है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अस्ल वत़न अफ़्ग़ानिस्तान का शह्‌र ग़ज़्नी है, लेकिन लोगों को नेकी की दावत देने के लिये आप ने अपना वत़न छोड़ कर एक अन्जान शह्‌र में इक़ामत इख़्तियार फ़रमाई । इस से हमें भी येह दर्स मिलता है कि नेकी की दावत देने के लिये हर माह कम अज़् कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना चाहिये और इस राह में आने वाली मुश्किलात को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करते हुए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कोशां रहना चाहिये । हर शोबे से मुन्सलिक अफ़राद पर अह़सन अन्दाज़ में इनफ़िरादी कोशिश करनी चाहिये ।

मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी जहां मुख़्तलिफ़ शोबाजात में ख़िदमते दीन का काम सर अन्जाम दे रही है वहीं खिलाड़ियों की इस्लाह़ व तरबियत के लिये भी एक शोबा बनाम “**मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान**” क़ाइम किया है, जिस का बुन्यादी मक़्सद खेलों से मुन्सलिक अफ़राद में दावते इस्लामी के पैग़ाम को आ़म करना और उन्हें दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करते हुए इस मदनी मक़्सद “**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ” के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेहन देना है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई खिलाड़ियों और इन के घरवालों को इस मदनी मक़्सद का ज़ेहन देने की कोशिश जारी है ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — *ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो*[1]

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम
"हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये । ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को राहे सुन्नत पर चलाने और आ़शिक़ाने रसूल में कुरआनो सुन्नत का पैग़ाम पहुंचाने में बहुत मुआ़विन हैं । इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **"हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करना"** भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी के तह़्त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का आग़ाज़ बाद नमाज़े मग़रिब सूरए मुल्क की तिलावत से होता है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** है : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! कुरआने करीम की एक आयत सुनने का अज्र सबीर पहाड़ के बराबर सदक़ा करने से ज़ियादा है ।(1)

ग़ौर कीजिये ! जब एक आयत सुनने का इतना फ़ाएदा है तो मुकम्मल सूरत का सुनना किस क़दर अज्रो सवाब का बाइस होगा । इजतिमाअ़ में तिलावत के बाद नात शरीफ़ पढ़ी जाती है । नात पढ़ने और सुनने के भी क्या कहने ? सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नात पढ़ना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सुन्नत और नात सुनना ख़ुद प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है । इस के बाद सुन्नतों भरे बयान की तरकीब होती है जिस में इ़ल्मे दीन के बेश क़ीमत मोती चुनने को मिलते हैं । इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत के बारे में फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि मुसलमान इ़ल्म सीखे फिर अपने मुसलमान भाई को सिखाए ।(2)

---

1 ...مسند فردوس، ۴/ ۳۶۷، حدیث: ۷۰۶۱

2 ...ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس الخیر، ۱/ ۱۵۸، حدیث: ۲۴۳

फिर ज़िक्रो दुआ और सलातो सलाम होता है। इस के बाद नमाज़े इशा और नमाज़ के बाद ह़ल्क़े लगते हैं, जिस में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर सुन्नतें और आदाब बताए जाते हैं, कोई एक दुआ याद करवाई जाती है, फ़िक्रे मदीना का मदनी ह़ल्क़ा होता है। फिर वक़्फ़ए आराम (ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल रात एतिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करने) के बाद नमाज़े तहज्जुद की बरकात लूटते हैं, अज़ाने फ़ज्र के बाद सदाए मदीना, नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त, नमाज़ के बाद मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत और फिर मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुए इशराक़ो चाश्त की सआ़दत पाने के बाद सलातो सलाम पर इजतिमाअ़ का इख़्तिताम हो जाता है। इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर कसीर आ़शिक़ाने रसूल सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने कि हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत हमारे लिये किस क़दर बाइ़से अज्रो सवाब है, लिहाज़ा आप से मदनी इल्तिजा है कि सुस्ती उड़ाइये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को अपना मामूल बनाइये और ढेरों सवाब के ह़क़दार बन जाइये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की बरकत का अन्दाज़ा इस मदनी बहार से लगाइये।

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ की तह़रीर भेजी कि मैं ला उबाली (बे फ़िक्र) और शोख़ त़बीअ़त का मालिक था। टिफ़न बजा कर बच्चों वाले गीत गाने और क़व्वालों की नक़्लें उतारने के मुआ़मले में ख़ानदान भर में मश्हूर था। शादी व दीगर तक़रीबात में मिज़ाह़िया चुटकुले और फ़िल्मी ग़ज़लें सुनाना, गाने गाना, बे

www.dawateislami.net

ढंगे अन्दाज़ में नाच दिखाना और त़रह़ त़रह़ के नख़रों से लोगों को हंसाना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। स्कूल का ज़माना था, एक बा इमामा इस्लामी भाई अक्सर बड़े भाईजान से मिलने आया करते थे। एक दिन भाईजान ने मेरा तआ़रुफ़ करवाया तो उन्हों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दावत पेश की। मैं उन की दावत पर जुमेरात को सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जा पहुंचा, मुझे बहुत अच्छा लगा। यूं मैं ने पाबन्दी से जाना शुरूअ़ कर दिया और दीगर क्लास फ़ेलोज़ को भी दावत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी। आहिस्ता आहिस्ता इमामा शरीफ़ भी सज गया, जिस पर घर के बाज़ अफ़राद ने सख़्ती के साथ मुख़ालफ़त की ह़त्ताकि बसा अवक़ात مَعَاذَاللّٰہ इमामा शरीफ़ खींच कर उतार दिया जाता। दर्स देने से रोका जाता, ज़ुल्फ़ें रखीं तो घरवालों ने ज़बरदस्ती कटवा दीं, दाढ़ी अभी निकली नहीं थी, मगर सजाने की निय्यत कर ली थी। मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने से ढारस बंधी और ह़ौसला मिलता चला गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी मदनी माह़ोल बन गया, वोह घरवाले जो सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं देते थे, उन्हों ने मुझे यकमुश्त 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त दे दी। घर में इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़ शुरूअ़ हो गया और वालिद साह़िब ने भी दाढ़ी सजा ली।[1]

गर्चे फ़नकार हो, क़ाफ़िले में चलो गो गुलूकार हो, क़ाफ़िले में चलो
ख़ुल्द दरकार हो, क़ाफ़िले में चलो फ़ज़्ले ग़फ़्फ़ार हो, क़ाफ़िले में चलो

1.....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 407, मुलख़्ख़सन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब

...सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस त़रह़ बैठना सुन्नत है(2) (लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है)। ...चार ज़ानू (यानी पालती मार कर) बैठना भी ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।(3) ...जहां कुछ धूप और कुछ छाऊं हो वहां न बैठें कि अल्लाह पाक के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाऊं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए।(4) ...क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें।(5) ...सय्यिदी आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (यानी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे।(6) ...जब कभी इजतिमाअ़ या मजलिस में आएं

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷
2.....मिरआतुल मनाजीह़, 6/378
3...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الرجل یجلس متربعا، ۴/ ۳۴۵، حدیث: ۴۸۵۰
4...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، ۴/ ۳۳۸، حدیث: ۴۸۲۱
5...ابوداود، کتاب الجنائز، باب الجلوس عند القبر، ۳/ ۲۸۶، حدیث: ۳۲۱۲
6.....फ़तावा रज़विय्या, 24/424

तो लोगों को फलांग कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं।[1] ...जब बैठें तो जूते उतार लें आप के क़दम आराम पाएंगे।[2] ...मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। दुआ़ येह है : سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآاِلٰهَ اِلَّآاَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ यानी तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।[3]

...जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो ताज़ीमन खड़े हो जाना सवाब (का काम) है। मन्क़ूल है कि "बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम यानी ताज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सहा़बा है।"[4]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल *देने लेने चलें क़ाफ़िले में चलो*[5]

...…...

1...ابوداود، کتاب الادب، باب فی التحلق، ۴/ ۳۳۹، حدیث: ۴۸۲۵، بتغیر قلیل

2...مسند بزار، مسند انس بن مالک، ۱۴/ ۹۰، حدیث: ۷۵۶۸

3...ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/ ۳۴۷، حدیث: ۴۸۵۷

4.....मिरआतुल मनाजीह़, 6/370

5.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

शहद की मख्खी के काटे का इलाज

शहद की मख्खी और दीगर कीड़े मकोड़ों के काटे के पांच (5) इलाज :

﴾1﴿...शहद की मख्खी जब काट ले तो फ़ौरन अपना या किसी मुसलमान का थूक लगा लें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द में कमी आ जाएगी बल्कि हर क़िस्म के कीड़े मकोड़े ह़त्ताकि सांप और बिच्छू के काटे पर भी इन्सानी थूक लगाना मुफ़ीद है।

﴾2﴿....सांप, बिच्छू, शहद की मख्खी या कोई सा भी ज़हरीला जानवर काट ले तो पानी में नमक मिला कर डंक की जगह पर लगाइये बल्कि मुमकिन हो तो वोह जगह उस नमक वाले पानी में डबो दीजिये और मुअ़व्वज़तैन यानी **सूरतुल फ़लक़** और **सूरतुन्नास** पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़हर का असर ज़ाइल हो जाएगा।

﴾3﴿....अगर आप ऐसी जगह रहते हैं जहां शहद की मख्खियां या बिच्छू होते हैं तो प्याज़ का रस 3 तोला (तक़रीबन 35 ग्राम), अन बुझा चूना 4 ग्राम, नौशादर एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम) बाहम मिला कर निथार (छान) कर अपने पास मह़फ़ूज़ कर लीजिये और ब वक़्ते ज़रूरत बिच्छू और शहद की मख्खी के काटने के मक़ाम पर लगाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴾4﴿....अगर शहद की मख्खी काट ले तो इस पर प्याज़ का टुकड़ा बान्ध लीजिये। गर्म पानी या आग से जल जाने की सूरत में भी येही त़रीक़ा इख़्तियार कीजिये।

﴾5﴿....अगर बिच्छू या शहद की मख्खी वग़ैरा काट ले तो इस पर प्याज़ काट कर या मसल कर लगाइये और नमक लगा कर प्याज़ खिलाइये।

याद रहे ! प्याज़ या लहसन खाने या लगाने की सूरत में जब तक बद बू ख़त्म न हो मस्जिद में जाना मन्अ़ है लिहाज़ा ऐसे इलाज बिग़ैर शदीद ह़ाजत के जमाअ़त क़ाइम होने का वक़्त क़रीब हो तो न किये जाएं और जब ऐसा इलाज करें तो बद बू ख़त्म होने तक मस्जिद न जाएं। मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये**" का मुत़ालआ़ कीजिये। (तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा : क़िस्त़ 18", स. 15 ता 16)

AA'LA HAZRAT KA ISHQE RASOOL
(HINDI BAYAAN)

आ'ला ह़ज़रत का इश्क़े रसूल

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश्बूदार है : जब जुमेरात का दिन आता है, **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है, जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह जुमेरात और शबे जुम्आ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं।[1]

बार बार और बे शुमार दुरूद ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आला ह़ज़रत का इश्के रसूल

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब दूसरी बार ह़ज के लिये ह़ाज़िर हुए तो मदीनए मुनव्वरा में हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की आरज़ू लिये रौज़ए अत़्हर के सामने देर तक सलातो सलाम पढ़ते रहे, मगर पहली रात क़िस्मत में येह सआ़दत न थी। इस मौक़अ़ पर वोह मारूफ़ नातिया ग़ज़ल लिखी, जिस के मत़्लअ़ (यानी पहले शेर) में दामने रह़मत से वाबस्तगी की उम्मीद दिखाई है :

---

1 ...مسند فردوس، ۱/ ۱۱۱، حدیث: ۲۸۵

www.dawateislami.net

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं[1]

शेर की वज़ाहत : ऐ बहार झूम जा कि तुझ पर बहारों की बहार आने वाली है। वोह देख ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सूए लालाज़ार यानी जानिबे गुलज़ार तशरीफ़ ला रहे हैं।

मक़्तअ़ यानी आख़िरी शेर में बारगाहे रिसालत में अपनी आ़जिज़ी और बे मायगी (यानी मिस्कीनी) का नक़्शा कुछ यूं खींचा है कि

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं[2]

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मिस्रए़ सानी में बतौ़रे आ़जिज़ी अपने लिये "कुत्ते" का लफ़्ज़ इस्तिमाल फ़रमाया है, मगर अदबन यहां "शैदा" लिख दिया है (जिस का मत़लब है आ़शिक़)।

शेर की वज़ाह़त : इस मक़्तअ़ में आ़शिक़े माहे रिसालत, सरकारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमाले इन्किसारी का इज़्हार करते हुए अपने आप से फ़रमाते हैं : ऐ अह़मद रज़ा ! तू क्या और तेरी ह़क़ीक़त क्या ! तुझ जैसे तो हज़ारों सगाने मदीना (यानी मदीने के कुत्ते) गलियों में दीवाना वार फिर रहे हैं।

येह ग़ज़ल अ़र्ज़ कर के दीदार के इन्तिज़ार में मुअद्दब (यानी बा अदब) बैठे हुए थे कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और चश्माने सर (यानी सर की आंखों) से बेदारी में ज़ियारते मह़बूबे बारी से मुशर्रफ़ हुए।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 99

2.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 100

3.....ह़याते आला ह़ज़रत, 1/92

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इश्क़े रसूल को अपनी ज़िन्दगी का सरमाया और ज़िक्रे रसूल को गोया अपना मक़्सद बना रखा था, सारी उ़म्र अपने मह़बूब आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत में नातें लिख लिख कर लोगों को इश्क़े रसूल में गर्माते रहे और उन के दिल में इश्क़े ह़बीब के दिये जलाते रहे। नीज़ अपनी ज़बान व क़लम के ज़रीए ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो नामूस की ह़िफ़ाज़त करते रहे, चूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **आ़शिक़े सादिक़** थे। लिहाज़ा दियारे ह़बीब की ह़ाज़िरी का शौक़ सीने में मौजें मारता रहा और जब आप को अपने करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिली तो प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत में दिल की गहराइयों से निकले हुए और इश्क़े रसूल में डूबे हुए अश्आ़र उस पाक बारगाह में पेश कर दिये। रिक़्क़तो सोज़ से भरपूर अश्आ़र को दरजए क़ुबूलिय्यत ह़ासिल हुवा, ग़ैब दान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत को जोश आया और आप ने अपने दीदार का शरबत पिला कर गोया आला ह़ज़रत के **आ़शिक़े सादिक़** होने पर अपनी मोहर लगा दी।

जो है अल्लाह का वली बेशक आ़शिक़े सादिक़े नबी बेशक
ग़ौसे आज़म का जो है मतवाला वाह क्या बात आला ह़ज़रत की[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इश्क़ और मह़ब्बत किसे कहते हैं ?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मह़ब्बत की तारीफ़ करते हुए फ़रमाते हैं : त़बीअ़त का किसी लज़ीज़

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576

शै की त़रफ़ माइल हो जाना "**मह़ब्बत**" कहलाता है। और जब येह मैलान क़वी और पुख़्ता (यानी बहुत शदीद) हो जाए तो इसे "**इश्क़**" कहते हैं।(1)

यानी किसी पसन्दीदा चीज़ से तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाना **मह़ब्बत** कहलाता है और जब वोही तअ़ल्लुक़ शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो उसे **इश्क़** कहते हैं।

अल्लाह व रसूल से इश्क़ो मह़ब्बत का मत़लब

अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत व इश्क़ का मत़लब येह है कि उन की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी वाले काम किये जाएं।

मह़ब्बत की अ़लामत

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत की अ़लामत क़ुरआन से मह़ब्बत करना है और मह़ब्बते क़ुरआन की अ़लामत ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करना है और मह़ब्बते रसूल की अ़लामत उन की सुन्नत से मह़ब्बत करना है और इन सब से मह़ब्बत की अ़लामत आख़िरत से मह़ब्बत करना है और आख़िरत से मह़ब्बत की अ़लामत अपने आप से मह़ब्बत करना है और ख़ुद से मह़ब्बत की अ़लामत दुन्या से बुग़्ज़ रखना है और दुन्या से बुग़्ज़ की अ़लामत उस से ब क़दरे ज़रूरत के इलावा कुछ न लेना है।(2)

इश्के़ रसूल के फ़वाइद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि सच्चा आ़शिके़ रसूल वोही है जो दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ा कर **अल्लाह** पाक और उस के रसूल

❶...احیاء العلوم، کتاب المحبۃ والشوق...الخ، بیان حقیقۃ المحبۃ...الخ، ۵/ ۱

❷...تفسیر قرطبی، پ۳، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۳۱، ۴/ ۴۷

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त में ज़िन्दगी गुज़ारता है और ज़रूरत से ज़ियादा दुन्या के पीछे नहीं जाता। जो लोग इश्क़े मुस्त़फ़ा को दुन्या की मरग़ूब चीज़ों पर तरजीह़ देते हैं उन्हें येह अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मात ह़ासिल होते हैं :

...**अल्लाह** पाक ऐसे लोगों के दिलों में ईमान रासिख़ फ़रमा देता है। ...इन का ख़ातिमा अच्छा होता है। ...**अल्लाह** पाक ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए़ ऐसे लोगों की मदद फ़रमाता है। ...इन्हें हमेशा रहने वाली जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं। ...ऐसे लोग **अल्लाह** पाक के पसन्दीदा बन्दे कहलाते हैं। ...मुंह मांगी मुरादें पाते हैं, बल्कि उम्मीद व ख़याल से भी बढ़ कर नेमतें पाते हैं। ...सब से बड़ी ख़ुश ख़बरी येह है कि **अल्लाह** पाक इन से राज़ी हो जाता है।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आला ह़ज़रत का तआ़रुफ़

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत, बरेली शरीफ़ के मह़ल्ले जसोली में 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ईसवी हफ़्ते के दिन ज़ोहर के वक़्त हुई।(2)

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस आयए करीमा से अपना सिने विलादत निकाला है :

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُؕ

(پ۲۸، المجادلة:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से इन की मदद की।

1...پ۲۸، المجادلة: ۲۲

2.....ह़याते आला ह़ज़रत, 1/58

www.dawateislami.net

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ानदानी लिह़ाज़ से पठान, मस्लक के एतिबार से ह़नफ़ी और त़रीक़त में क़ादिरी थे। आप के वालिदे माजिद, उस्ताज़ुल उ़लमा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और दादाजान मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं।[1] आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पैदाइशी नाम "**मुह़म्मद**" है, वालिदए माजिदा मह़ब्बत में "**अम्मन मियां**" फ़रमाया करती थीं, वालिदे माजिद और दूसरे रिश्तेदार "**अह़मद मियां**" के नाम से पुकारा करते थे, दादाजान ने आप का नाम "**अह़मद रज़ा**" रखा, आप का तारीख़ी नाम "**अल मुख़्तार**" है और आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद अपने नाम से पहले "**अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा**" लिखा करते थे।[2] जिस से आप के इश्के़ रसूल का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, चुनान्चे, अपने नातिया दीवान "**ह़दाइके़ बख़्शिश**" में एक जगह फ़रमाते हैं :

ख़ौफ़ न रख रज़ा ज़रा, तू तो है "अ़ब्दे मुस्त़फ़ा"

तेरे लिये अमान है, तेरे लिये अमान है[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अल्क़ाबात

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अल्क़ाबात में से मश्हूर तरीन लक़ब "**आला ह़ज़रत**" है येह लक़ब आप की ज़ात के साथ इस तरह़ ख़ास है कि जब भी आला ह़ज़रत कहा, सुना जाता है ज़ेहन फ़ौरन आप की त़रफ़ ही जाता है। उ़लमाए अहले सुन्नत आप को इस के इ़लावा और भी बहुत से अल्क़ाबात से याद करते हैं जैसा कि

1.....फ़ाज़िले बरेल्वी उ़लमाए ह़िजाज़ की नज़र में, स. 67 मुलख़्ख़सन
2.....फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 77 मुलख़्ख़सन
3.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 179

www.dawateislami.net

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने रिसाले **"तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा"** में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इन अल्क़ाबात व अल्फ़ाज़ के साथ फ़रमाया है : आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये नेमत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत।

उस की हस्ती में था अ़मल जौहर सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन साह़िबे तक़्वा वाह क्या बात आला ह़ज़रत की[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत, आप के फ़तावा, मल्फ़ूज़ात और आप की नातिया शाइ़री को पढ़ या सुन कर हर ज़ी शुऊ़र येह बात ब ख़ूबी समझ सकता है कि इश्क़े रसूल आप की नस नस में समाया हुवा था। आप ने उ़म्र भर, मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तारीफ़ो तौसीफ़ बयान की, आप की ज़ाते सितूदा सिफ़ात (यानी क़ाबिले तारीफ़ ख़ूबियों की मालिक हस्ती) पर एतिराज़ात करने वालों को मुंह तोड़ जवाबात दिये और कुरआने पाक के तर्जमे में भी शाने रिसालत का ख़ास ख़याल रखा। यूं समझिये कि इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ लोगों के दिलों में रौशन करना आप का बुन्यादी मक़्सद था। आप के नातिया दीवान **"ह़दाइक़े बख़्शिश"** शरीफ़ का हर हर शेर आप के इश्क़े रसूल की अ़क्कासी करता नज़र आता है। आप के इश्क़े रसूल का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप ने न सिर्फ़ अपने दोनों बेटों के नाम बल्कि अपने भतीजों तक के नाम, नामे अक़्दस पर रखे।[2]

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576

2.....मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, ह़िस्सा अव्वल, स. 73 मुलख़्ख़सन

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ाते मुबारका सुन्नते मुस्तफ़ा की हक़ीक़ी माना में आईना दार थी, आप का उठना बैठना, खाना पीना, चलना फिरना और बातचीत करना सब सुन्नत के मुताबिक़ होता था। सुन्नतों से महब्बत का येह आलम था कि एक बार आप कहीं मदऊ (दावत पर बुलाए गए) थे, खाना लगा दिया गया, सब को सरकारे आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के खाना शुरूअ फ़रमाने का इन्तिज़ार था, आप ने ककड़ियों के थाल में से एक क़ाश उठाई और तनावुल फ़रमाई फिर दूसरी, फिर तीसरी, अब देखा देखी लोगों ने भी ककड़ी के थाल की तरफ़ हाथ बढ़ा दिये, मगर आप ने सब को रोक दिया और फ़रमाया, सारी ककड़ियां मैं खाऊंगा। चुनान्चे, आप ने सब ख़त्म कर दीं, हाज़िरीन मुतअज्जिब थे कि आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه तो बहुत कम गिज़ा इस्तिमाल फ़रमाने वाले हैं, आज इतनी सारी ककड़ियां कैसे तनावुल फ़रमा गए ! लोगों के इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : मैं ने जब पहली क़ाश खाई तो वोह कड़वी थी इस के बाद दूसरी और तीसरी भी, लिहाज़ा मैं ने दूसरों को रोक दिया कि हो सकता है कोई साहिब ककड़ी मुंह में डाल कर कड़वी पा कर थू थू करना शुरूअ कर दें, चूंकि ककड़ी खाना मेरे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है, इस लिये मुझे गवारा न हुवा कि इस को खा कर कोई थू थू करे।[1]

मुझ को मीठे मुस्तफ़ा की सुन्नतों से प्यार है   اِنْ شَآءَ اللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के इश्क़ ने कड़वी ककड़ी खाना गवारा कर लिया मगर येह गवारा न किया कि कोई शख़्स मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा चीज़ ककड़ी खा कर मुंह बिगाड़े या किसी तरह की ना पसन्दीदगी का इज़्हार करे, यक़ीनन येह आप की हुज़ूर

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 457

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की सुन्नत से सच्ची मह़ब्बत का मुंह बोलता सुबूत था क्यूंकि जो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से मह़ब्बत करता है दर ह़क़ीक़त वोह आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से मह़ब्बत करता है जैसा कि

सुन्नत से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِیْ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَ مَنْ اَحَبَّنِیْ کَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ यानी जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इत्तिबाए़ सुन्नत की बरकत से अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब नसीब होता, दोनों जहां में सरफ़राज़ी व सुर्ख़रूई मिलती, इश्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होता और दरजात बुलन्द होते हैं ।

ह़दीस शरीफ़ का अदबो एह़तिराम

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत की वज्ह से ह़दीसे पाक का बे इन्तिहा अदब फ़रमाते थे । हमेशा दर्से ह़दीस अदब के साथ दो ज़ानूं बैठ कर दिया करते । अह़ादीसे करीमा बिग़ैर वुज़ू न छूते और न पढ़ाया करते । कुतुबे अह़ादीस पर कोई दूसरी किताब न रखते । ह़दीस की शर्ह़ व वज़ाह़त के दौरान अगर कोई शख़्स बात काटने की कोशिश करता तो सख़्त नाराज़ होते यहां तक कि चेहरए मुबारक ग़ुस्से की वज्ह से सुर्ख़ हो जाता । ह़दीसे पाक पढ़ाते वक़्त पाउं ज़ानू पर रख कर बैठने को ना पसन्द फ़रमाते ।(2)

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2.....फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 276 मुलख़्ख़सन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम भी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नक़्शे क़दम पर चलते हुए कु़रआनो ह़दीस के अदबो एह़तिराम का ख़ास ख़याल रखा करें नीज़ कु़रआनो ह़दीस और सुन्नतों भरे बयानात सुनते हुए भरपूर तवज्जोह और तमाम तर आदाब का ख़याल रखें और बे अदबी और ग़फ़्लत व ला परवाई से बचा करें। याद रखिये कि अदब इन्सान को कामयाबी की बुलन्दियों तक पहुंचा देता है और बे अदबी नाकामियों और मह़रूमियों की दल दल में धंसा देता है। अफ़्सोस ! आज कल तो हर त़रफ़ बे अदबी का दौर दौरा है बिल ख़ुसूस मुबारक अस्मा और मुक़द्दस औराक़ का अदबो एह़तिराम तो अब तक़रीबन ख़त्म होता जा रहा है। बसा अवक़ात **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्माए मुबारका और आयाते कु़रआनिया वाले औराक़ सरे राह बल्कि مَعَاذَ اللہ गन्दी नालियों तक में पड़े दिखाई देते हैं, यूंही बाज़ लोग हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान में जान बूझ कर या बे तवज्जोही के सबब ऐसे ऐसे अल्फ़ाज़ बोल जाते या लिख डालते हैं कि जो आप के शायाने शान नहीं होते। **अल्लाह** पाक हमें बा अदब बनाए और बे अदबों की सोह़बत और उन की तह़रीरें पढ़ने से मह़फ़ूज़ रखे। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो[1]

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ास करम था कि आप की तह़रीर का अन्दाज़ इस क़दर दिलकश है कि ख़ुद अदब को भी इस पर नाज़ रहेगा, यूं तो आप तमाम मुबारक हस्तियों का दिलो जान से अदब बजा लाते मगर प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआ़मले में तो बहुत ज़ियादा अदब का लिह़ाज़ रखा करते थे, अगर किसी की तह़रीर या गुफ़्तगू से مَعَاذَ اللہ शाने रिसालत में बे अदबी का

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

पहलू निकलता या किसी लफ़्ज़ से शाने अक़्दस में कमी की बू भी महसूस होती तो फ़ौरन तम्बीह फ़रमाते नीज़ अपनी तह़रीरों और नातिया शाइ़री में भी इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करने से बचते । आइये ! इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनते हैं । चुनान्चे,

अस्माए मुक़द्दसा का अदब

एक रोज़ सरकारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के भतीजे मौलाना ह़सनैन रज़ा ख़ान साह़िब, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को फ़तवा त़लब करने वालों की त़रफ़ से पूछे गए कुछ सुवालात सुना रहे थे और जवाबात लिख रहे थे । एक कार्ड पर लफ़्ज़ "**अल्लाह**" लिखा गया । इस पर आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : याद रखो कि मैं कभी तीन चीज़ें कार्ड पर नहीं लिखता : (1)...इस्मे जलालत यानी **अल्लाह** (2)...**मुह़म्मद** और **अह़मद** और (3)...न कोई आयते करीमा, मसलन अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखना है तो यूं लिखता हूं : हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَام या इस्मे जलालत यानी **अल्लाह** लिखना हो तो उस की जगह मौला तआ़ला लिखता हूं ।[1]

ख़िलाफ़े अदब अल्फ़ाज़ न लिखे

एक बार ह़ज़रते मौलाना सय्यिद शाह इस्माईल ह़सन मियां رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप से एक दुरूदे पाक लिखवाया, जिस में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़त के त़ौर पर लफ़्ज़ **हुसैन** और **ज़ाहिद** भी था । आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दुरूदे पाक तो लिख दिया मगर येह दो लफ़्ज़ तह़रीर न फ़रमाए और फ़रमाया कि लफ़्ज़ **हुसैन** में छोटा होने के माना पाए जाते हैं और **ज़ाहिद** उसे कहते हैं जिस के पास कुछ न हो । (ह़ालांकि हुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام तो बि इज़्निल्लाह हर चीज़ के मालिको

1.....मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, हिस्सा 1, स. 173, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मुख़्तार हैं लिहाज़ा) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में इन अल्फ़ाज़ का लिखना मुझे अच्छा मालूम नहीं होता ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ाते बा बरकात में अदबो ताज़ीम का कैसा जज़्बा था, आप फ़नाफ़िल्लाह और फ़नाफ़िर्रसूल के आला मन्सब पर फ़ाइज़ थे, **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत आप के दिल पर नक़्श हो चुकी थी, जैसा कि आप ने एक मौक़अ़ पर खुद फ़रमाया : अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो एक पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه और दूसरे पर مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه लिखा हुवा पाएगा ।[2]

ख़ुदा एक पर हो तो इक पर मुहम्मद अगर क़ल्ब अपना दो पारा करूं मैं[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नामूसे रिसालत पर अपनी नामूस क़ुरबान

आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी ज़ात के लिये तो सब कुछ बरदाश्त कर सकते थे, लेकिन बे चैन दिलों के चैन, रहमते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में अदना सी बे अदबी व गुस्ताख़ी भी बरदाश्त नहीं करते थे, येही वज्ह है कि पेशावर गुस्ताख़ों की गुस्ताख़ाना इबारतों को देखते ही आप की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग जाती, दुश्मनाने मुस्तफ़ा की साज़िशों को बे निक़ाब करने में किसी की मलामत को ख़ातिर में न लाते, अपने महबूबे मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अज़मत बयान करने में मश्गूल रहते । नीज़ सारी

1.....इमाम अहमद रज़ा और इश्क़े मुस्तफ़ा, स. 293 मुलख़्ख़सन
2.....सवानेहे इमाम अहमद रज़ा, स. 96
3.....सामाने बख़्शिश, स. 103

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी गुस्ताख़ों की त़रफ़ से प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत पर किये जाने वाले ह़म्लों का सख़्ती से दिफ़ाअ़ करते रहे ताकि वोह गुस्से में जल भुन कर आप को बुरा भला कहना और लिखना शुरूअ़ कर दें। जैसा कि आप की तह़रीर का ख़ुलासा है :

اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْعَزِیْز अपनी ज़ात पर किये जाने वाले ह़म्लों और तन्क़ीद भरे जुम्लों की त़रफ़ कोई तवज्जोह न दूंगा, सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ से मुझे येह ख़िदमत सिपुर्द है कि इ़ज़्ज़ते सरकार की ह़िमायत (यानी दिफ़ाअ़) करूं न कि अपनी, मैं तो ख़ुश हूं कि जितनी देर मुझे गालियां देते, बुरा कहते और मुझ पर बोहतान लगाते हैं, उतनी देर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की (शान में) बदगोई और ऐ़बजूई से ग़ाफ़िल रहते हैं, मेरी आंखों की ठन्डक इस में है कि मेरी और मेरे बाप दादा की इ़ज़्ज़तो आबरू इ़ज़्ज़ते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ढाल बनी रहे।[(1)]

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : जिस को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में अदना सी भी तौहीन करता पाओ अगर्चे वोह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यूं न हो, फ़ौरन उस से जुदा हो जाओ, जिस को बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ी करता देखो अगर्चे वोह कैसा ही अ़ज़ीम बुज़ुर्ग क्यूं न हो अपने अन्दर से उसे दूध से मख्खी की त़रह़ निकाल कर फेंक दो।[(2)]

वोही धूम उन की है مَاشَاءَاللّٰہ मिट गए आप मिटाने वाले

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 15/88, मुलख़्ख़सन

2 .....वसाया शरीफ़, स. 10

ख़ल्क़ तो क्या कि हैं ख़ालिक़ को अज़ीज़ कुछ अजब भाते हैं भाने वाले
क्यूं रज़ा आज गली सूनी है उठ मेरे धूम मचाने वाले[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरतो किरदार का बारीक बीनी के साथ मुत़ालआ़ करने वाले इस ह़क़ीक़त से ब ख़ूबी आगाह हैं कि आप एक ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे, आप की शख़्सिय्यत बे शुमार ख़ूबियों की जामेअ़ थी और एक वलिय्ये कामिल होने के लिह़ाज़ से आप इन्तिहाई नर्म त़बीअ़त और मुन्कसिरुल मिज़ाज थे, अलबत्ता **अल्लाह** (पाक) व रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी या शरई अह़काम की हटधर्मी से ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वालों के ह़क़ में बहुत सख़्त थे, मगर इस के बा वुजूद आप की सख़्ती कभी भी बे मह़ल और ना मुनासिब न होती बल्कि बड़ी मोह़तात़ और इन्तिहाई सन्जीदगी के दाइरे में रहती। आप ने क़ाबिले एतिराज़ तह़रीरों पर सख़्ती के साथ गिरिफ़्त फ़रमाई और ऐसी बातें लिखने वालों के साथ ज़र्रा बराबर भी नर्मी न बरती, लेकिन किसी भी मक़ाम पर **तहज़ीबो शाइस्तगी** का दामन न छोड़ा।

येही वज्ह है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से बुग़्ज़ो अ़दावत रखने के सबब कुफ़्रो गुमराही की तंगो तारीक वादियों में भटकने वाले बहुत से अफ़राद आप की तह़रीरों की बरकत से अपने बुरे अ़क़ाइद से ताइब हो कर सच्चे पक्के आ़शिक़े रसूल बन गए। आप ने सारी उ़म्र वोही रास्ता अपनाए रखा जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इख़्तियार फ़रमाया था कि येह ह़ज़राते क़ुदसिय्या भी मोमिनों के मुआ़मले में इन्तिहाई शफ़ीक़ व मेहरबान जब कि दुश्मनाने दीन के ह़क़ में सख़्त थे।

1.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 161, 162

www.dawateislami.net

मुहम्मद की महब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तह़रीरों का बग़ौर मुत़ालआ़ करने पर येह ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो जाती है कि बुरे अ़क़ीदे रखने वालों का सख़्ती के साथ रद करने में हरगिज़ आप का अपना कोई ज़ाती मफ़ाद न था बल्कि फ़क़त़ **अल्लाह** पाक व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ने आप को येह अन्दाज़ इख़्तियार करने पर उभारा, वरना ह़क़ीक़त तो येह है कि आप ने अपनी ज़ात की ख़ात़िर कभी भी किसी से बदला न लिया और येही एक मोमिन के ईमाने कामिल की अ़लामत है।

ईमाने कामिल की अ़लामत

ह़दीसे पाक में है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ وَاَعْطٰی لِلّٰهِ وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَکْمَلَ الْاِیْمَانَ यानी जिस ने **अल्लाह** तआ़ला की ख़ात़िर महब्बत की और **अल्लाह** तआ़ला की ख़ात़िर ही बुग़्ज़ रखा और **अल्लाह** पाक की ख़ात़िर ही किसी को कुछ दिया और **अल्लाह** पाक की ख़ात़िर ही देने से रुका तो यक़ीनन उस ने ईमान मुकम्मल कर लिया।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की सख़्तियां और नर्मियां सब रिज़ाए इलाही के लिये थीं, **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों के इलावा दूसरे लोगों के ह़क़ में आप न सिर्फ़ ख़ुद नर्म मिज़ाज थे बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन दूसरों को भी नर्मी इख़्तियार करने की ताकीद फ़रमाया करते। चुनान्चे, आप अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को नसीह़त के मदनी फूल अ़त़ा करते हुए फ़रमाते हैं : नर्मी के जो फ़वाइद हैं, वोह सख़्ती से

---

1 ... ابوداود، کتاب السنة، باب الدلیل علی زیادة الایمان، ۴/۲۹۰، حدیث: ۴۶۸۱

हरगिज़ ह़ासिल नहीं हो सकते, लिहाज़ा जो लोग अ़क़ाइद के मुआ़मले में तज़ब्ज़ुब और शुकूक व शुबहात का शिकार हों उन से नर्मी की जाए ताकि वोह राहे रास्त पर आ जाएं।(1)

डाल दी क़ल्ब में अ़ज़मते मुस्त़फ़ा
ह़िक्मते आला ह़ज़रत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सादाते किराम से अ़क़ीदत की वज्ह

प्यारे इस्लामी भाइयो ! चूंकि एक सच्चे आ़शिक़ के नज़दीक मह़बूब से निस्बत रखने वाली हर चीज़ क़ाबिले अ़क़ीदतो मह़ब्बत और लाइक़े एह़तिरामो इ़ज़्ज़त होती है, लिहाज़ा सय्यिदी आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब हर चीज़ से मह़ब्बत करने के साथ साथ सय्यिद ज़ादों से भी ख़ास अ़क़ीदत रखते थे जैसा कि

मलिकुल उ़लमा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सादाते किराम, जुज़्ए रसूल (यानी नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुनव्वर का टुकड़ा) होने की वज्ह से सब से ज़ियादा ताज़ीमो तौक़ीर के ह़क़दार हैं और इस पर पूरा अ़मल करने वाला मैं ने आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पाया। इस लिये कि किसी सय्यिद साह़िब को वोह उस की ज़ाती जान पहचान या क़ाबिलिय्यत के एतिबार से नहीं देखते थे बल्कि इस ह़ैसिय्यत से मुलाह़ज़ा फ़रमाया करते थे कि वोह सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का "जुज़्" हैं, फिर इस अ़क़ीदतो नज़रिये के बाद जो कुछ

---

(1).....इमाम अह़मद रज़ा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, स. 278 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

इन (सादाते किराम) की ताज़ीमो तौक़ीर की जाए, सब दुरुस्त व बजा है।

आला ह़ज़रत (رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه) अपने क़सीदए नूर में अ़र्ज़ करते हैं :[1]

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का   तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! सादाते किराम की मह़ब्बतो उल्फ़त से भरपूर आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه के दो ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनते हैं ताकि हमारे दिलों में भी सादाते किराम की मह़ब्बतो अ़ज़मत का जज़्बा पैदा हो। चुनान्चे,

नाम लेने वाले की इस्लाह़ फ़रमाई

मलिकुल उ़लमा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मौलाना नूर मुह़म्मद رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ज़रते मौलाना सय्यिद क़नाअ़त अ़ली رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه येह दोनों ह़ज़रात मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه की सोह़बते बा बरकत में रह कर इल्मे दीन ह़ासिल करते थे। एक मरतबा मौलाना नूर मुह़म्मद رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सय्यिद साह़िब का नाम ले कर इस त़रह़ पुकारा : क़नाअ़त अ़ली, क़नाअ़त अ़ली ! जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े सादिक़, आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه के कानों में येह आवाज़ पड़ी तो गवारा न किया कि ख़ानदाने रसूल के शहज़ादे को इस त़रह़ नाम ले कर पुकारा जाए। फ़ौरन मौलाना नूर मुह़म्मद साह़िब رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه को बुलवाया और इनफ़िरादी कोशिश करते हुए फ़रमाया : क्या सय्यिद ज़ादों को इस त़रह़ पुकारते हैं ? कभी मुझे भी इस त़रह़ पुकारते हुए सुना ? (यानी मैं तो उस्ताद हूं फिर भी कभी ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार नहीं किया) येह सुन कर मौलाना नूर मुह़म्मद साह़िब बहुत

---

1 .....ह़याते आला ह़ज़रत, स. 1/179

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246

www.dawateislami.net

शर्मिन्दा हुए और नदामत से निगाहें झुका लीं । आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जाइये ! आयिन्दा ख़याल रखियेगा ।(1)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिद ज़ादे की अनोखी ताज़ीम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"बरेली से मदीना"** सफ़ह़ा 15 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ के किसी मह़ल्ले में आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मदऊ़ (यानी दावत पर बुलाए गए) थे । इरादत मन्दों ने अपने यहां लाने के लिये पालकी का एहतिमाम किया । चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सुवार हो गए और चार मज़दूर पालकी को अपने कन्धों पर उठा कर चल दिये । अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि यकायक, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पालकी में से आवाज़ दी : "पालकी रोक दीजिये ।" पालकी रुक गई । आप फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए और भर्राई हुई आवाज़ में मज़दूरों से पूछा : सच सच बताइये ! आप में सय्यिद ज़ादा कौन है ? क्यूंकि मेरा ज़ौक़े ईमान सरवरे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू मह़सूस कर रहा है, एक मज़दूर ने आगे बढ़ कर कहा : हुज़ूर ! मैं सय्यिद हूं । अभी उस की बात मुकम्मल भी न होने पाई थी कि आ़लमे इस्लाम के पेश्वा और अपने वक़्त के अ़ज़ीम मुजद्दिद ने अपना इमामा शरीफ़ उस सय्यिद ज़ादे के क़दमों में रख दिया । इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आंखों से टप टप आंसू गिर रहे हैं और हाथ जोड़ कर इल्तिजा कर रहे हैं : मुअ़ज़्ज़ज़ शहज़ादे ! मेरी गुस्ताख़ी मुआ़फ़ कर दीजिये, बे ख़याली में मुझ से भूल हो गई, हाए ग़ज़ब हो गया

1.....ह़याते आला ह़ज़रत, 1/183 मुलख़्ख़सन

2.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246

! जिन की नाले पाक मेरे सर का ताजे इ़ज़्ज़त है, उन के कांधे पर मैं ने सुवारी की, अगर ब रोज़े क़ियामत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछ लिया कि अह़मद रज़ा ! क्या मेरे फ़रज़न्द का दोशे नाज़नीं (यानी नाज़ुक कन्धा) इस लिये था कि वोह तेरी सुवारी का बोझ उठाए ? तो मैं क्या जवाब दूंगा ! उस वक़्त मैदाने मह़शर में मेरे नामूसे इ़श्क़ की कितनी ज़बरदस्त रुस्वाई होगी ! कई बार ज़बान से मुआफ़ कर देने का इक़रार करवा लेने के बाद इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आख़िरी इल्तिजाए शौक़ पेश की : मोह़तरम शहज़ादे ! इस ला शुऊ़री में होने वाली ख़त़ा का कफ़्फ़ारा जभी अदा होगा कि अब आप पालकी में सुवार होंगे और मैं पालकी को कांधा दूंगा। इस इल्तिजा पर लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे और बाज़ की तो चीख़ें भी बुलन्द हो गईं। हज़ार इन्कार के बाद आख़िरे कार **मज़दूर शहज़ादे** को पालकी में सुवार होना ही पड़ा। येह मन्ज़र किस क़दर दिलसोज़ है, अहले सुन्नत का जलीलुल क़द्र इमाम मज़दूरों में शामिल हो कर अपनी ख़ुदादाद इ़ल्मिय्यत और आ़लमगीर शोहरत का सारा एज़ाज़ ख़ुश्नूदिये मह़बूब की ख़ात़िर एक गुमनाम **मज़दूर शहज़ादे** के क़दमों पर निसार कर रहा है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ देखा आप ने कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सच्चे इ़श्क़े रसूल के सदक़े एक मख़्सूस ख़ुश्बू के ज़रीए़ मालूम हो गया कि पालकी उठाने वाले मज़दूरों में कोई सय्यिद ज़ादे भी हैं और फिर वहां मौजूद बहुत से लोगों ने अपनी आंखों से इ़श्क़ का येह निराला अन्दाज़ देखा कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिन का मक़ाम इतना बुलन्द है कि अ़रबो अ़जम के नामी गिरामी उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام उन से शरफ़े बैअ़त ह़ासिल करें, आप की सोह़बत को अपने लिये बाइ़से फ़ख़्र समझें, आप से ह़दीस रिवायत करने की इजाज़त त़लब करें, आप के

1 .....अन्वारे रज़ा, स. 415

www.dawateislami.net

मुजद्दिदे वक़्त, वलिय्ये कामिल और आ़शिके़ रसूल होने की गवाही दें, जिन्हें 50 से ज़ाइद उ़लूमो फु़नून में कामिल महारत हा़सिल है, जिन्हों ने उम्मत को लुग़वी, मानवी, अदबी और इ़ल्मी कमालात पर मुश्तमिल ज़ाते खु़दा جَلَّ جَلَالُہٗ, अ़ज़्मते मुस्त़फ़ा और मुक़द्दस हस्तियों के अदबो एह़तिराम का पासबान तर्जमए कु़रआन **"कन्ज़ुल ईमान"** दिया, छे हज़ार आठ सौ सेंतालीस (6847) सुवालात व जवाबात और 206 रसाइल से मुज़य्यन 30 जिल्दों पर मुही़त़ इक्कीस हज़ार छे सो छप्पन (21,656) सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल **फ़तावा रज़विय्या** जिन के इ़ल्मी मक़ामो मर्तबे का सुबूत है। जिन की वुस्अ़ते इ़ल्मी और फ़साह़तो बलाग़त के हर त़रफ़ चर्चे हो रहे हैं, जिन्हों ने ह़रमैने शरीफ़ैन में दो दिन के मुख़्तसर अ़र्से और वोह भी बीमारी की ह़ालत में **"अद्दौलतुल मक्किय्यह"** जैसा तह़क़ीक़ी रिसाला अ़रबी में लिख कर, मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये इ़ल्मे ग़ैब के सुबूत पर दलाइल के अम्बार लगाए और दुश्मनाने रसूल के दांत खट्टे किये नीज़ उ़लमाए ह़रमैन से दादे तह़सीन वुसूल की, आज वोही इमामे इश्क़ो मह़ब्बत आ़जिज़ियो इन्किसारी की तस्वीर बने, सरे आ़म एक सय्यिद ज़ादे के हु़ज़ूर गिड़ गिड़ा कर मुआ़फ़ी मांग रहे हैं और खु़द पालकी में बैठने के बजाए सय्यिद ज़ादे को पालकी में बिठा कर पालकी का बोझ अपने कन्धे पर उठा रहे हैं। सादाते किराम से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़ब्बतो अ़क़ीदत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप के मुतअ़ल्लिक़ीन में से अगर कोई सादाते किराम के मुआ़मले में बे एह़तियात़ी और बे तहज़ीबी कर बैठता तो नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाते और आयिन्दा उन के अदबो एह़तिराम की तल्क़ीन फ़रमाते।

ग़ौर कीजिये कि जिसे सादाते किराम की अ़क़ीदतो मह़ब्बत और उन के एह़तिराम का इस क़दर लिह़ाज़ हो उसे सय्यिदों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किस क़दर वालिहाना इ़श्क़ होगा !

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को किसी से इश्क़ हो जाता है तो आ़शिक़ अपने क़ल्बी जज़्बात का इज़्हार और महबूब की तारीफ़ो तौसीफ़ बयान करने के लिये बसा अवक़ात अश्आ़र का सहारा लेता है क्यूंकि अश्आ़र के ज़रीए अपने दिली जज़्बात बहुत अच्छे अन्दाज़ में बयान किये जा सकते हैं। लिहाज़ा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी अपने इश्क़ के इज़्हार के लिये नातिया शाइरी भी फ़रमाई। चुनान्चे, इश्क़ो मस्ती में डूब कर लिखे गए कलामों पर मुश्तमिल नातिया मजमूआ बनाम "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" आप की शाइरी का एक अ़ज़ीम कारनामा है। आप की नोके क़लम से तह़रीर किया गया एक एक शेर शरीअ़त के ऐन मुताबिक़ है। यूं तो आप के इस मजमूए के तक़रीबन हर हर कलाम को ज़बरदस्त शोहरत ह़ासिल रही, मगर बिल ख़ुसूस सलामे रज़ा (यानी मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम, शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम) को **अल्लाह** पाक ने जो उ़रूजो मर्तबा बख़्शा है वोह अपनी मिसाल आप है। येही वज्ह है कि "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" और "**सलामे रज़ा**" की ख़ूबियों पर मुख़्तलिफ़ एतिबार से कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ किये जाने का सिलसिला आज तक जारी है। बच्चे बूढ़े जवान और मर्दो औ़रत सभी महाफ़िल वग़ैरा में इस सलाम को इश्क़े रसूल में बे साख़्ता झूम झूम कर पढ़ते हैं और उन पर एक अ़जीब रिक़्क़त त़ारी हो जाती है।

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस सलाम में आक़ाओ मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीगर फ़ज़ाइलो कमालात के साथ साथ जिस्मे अक़्दस के नूरानी आज़ाए मुबारका की शानो शौकत भी बहुत उ़म्दा अन्दाज़ में बयान फ़रमाई है। जैसे धूप और चांदनी में आप के जिस्मे अक़्दस का साया नहीं था, आप के ताजे नबुव्वत की येह शान थी कि बड़े बड़े सरदार भी बारगाहे रिसालत में सर झुकाते, आप के गोशे मुबारक ऐसे कि मीलों दूर की आवाज़ भी सुन लिया करते, चश्माने मुबारक ह़या से झुकी रहतीं, मुबारक ज़बान ऐसी कि जो कह दिया हो कर रहा।

www.dawateislami.net

आप की हुकूमत जहानों में नाफ़िज़ है, आप की बारगाह में कोई ग़मज़दा या परेशान हाल हाज़िर होता तो चेहरए अन्वर की मुस्कुराहट देख कर सब ग़म भूल जाता, आप के मुबारक गले से दूध और शहद जैसी मीठी ख़ूब सूरत आवाज़ निकलती। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सादगी व क़नाअ़त का येह आ़लम था कि मालिके काएनात होने के बा वुजूद इन्तिहाई सादा ग़िज़ा तनावुल फ़रमाते। आइये ! इस ज़िम्न में सलामे रज़ा के चन्द अश्आ़र सुनिये और इश्क़ो महब्बत में झूमिये :

क़द्दे बे साया के सायए मर्हमत — *ज़िल्ले ममदूदे राफ़त पे लाखों सलाम*
जिस के आगे सरे सरवरां ख़म रहें — *उस सरे ताजे रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम*
हक़ مَطْلَعِ الْفَجْر में لَيْلَةُ الْقَدْر — *मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम*
दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान — *काने लाले करामत पे लाखों सलाम*
जिन के सजदे को मेह्राबे काबा झुकी — *उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम*
नीची आंखों की शर्मो हया पर दुरूद — *ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम*
वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें — *उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम*
जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें — *उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम*
जिस में नहरें हैं शीरो शकर की रवां — *उस गले की नज़ारत पे लाखों सलाम*
हजरे अस्वदे काबए जानो दिल — *यानी मोहरे नबुव्वत पे लाखों सलाम*
कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा — *उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम*(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

यहां येह बात भी ज़ेहन नशीन रहे कि नात शरीफ़ लिखना हर किसी के बस की बात नहीं, न ही हर किसी को इस की इजाज़त है, नातिया शाइरी के लिये

(1).....हदाइक़े बख़्शिश, स. 299 ता 304

फ़न्ने शाइ़री के उसूलों के साथ साथ इ़ल्मे दीन की दौलत और उ़लमाए ह़क़ की सोह़बत वग़ैरा कई चीज़ें ज़रूरी हैं। बहुत से ऐसे शाइ़र जिन का दुन्यवी शाइ़री में कोई सानी नहीं, मगर जब उन्हों ने नातिया शाइ़री के मैदान में क़िस्मत आज़माई तो इ़ल्मे दीन और उ़लमाए दीन की सोह़बत से मह़रूम होने की वज्ह से ऐसी ऐसी ठोकरें खाईं कि اَلْاَمَان وَالْحَفِيْظ

कुरबान जाइये ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कमाले एह़तियात़ पर कि नात लिखने के कामिल अह्ल होने और फ़न्ने शाइ़री के उसूलों में महारत ह़ासिल होने के बा वुजूद नात शरीफ़ लिखने को एक मुश्किल काम कहा करते थे। चुनान्चे, खुद ही फ़रमाते हैं : ह़क़ीक़तन नात शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है, जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में तल्वार की धार पर चलना है।(1)

शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 232 पर नातिया शाइ़री करने के बारे में लिखते हैं : येह सुन्नते सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان है यानी बाज़ सह़ाबा मसलन ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरहुमा से नातिया अश्आ़र लिखना साबित है। ताहम येह ज़ेहन में रहे कि नात शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल फ़न है, इस के लिये माहिरे फ़न, आ़लिमे दीन होना चाहिये, वरना आ़लिम न होने की सूरत में रदीफ़, क़ाफ़िया और बह़्र (यानी शेर के वज़्न) वग़ैरा को निभाने के लिये ख़िलाफ़े शान अल्फ़ाज़ तरतीब पा जाने का ख़दशा रहता है। अ़वामुन्नास (आ़म लोगों) को शाइ़री का शौक़ चर्राना मुनासिब नहीं कि नस्र के मुक़ाबले में नज़्म में कुफ़्रिय्यात के सुदूर (यानी वुक़ूअ़) का ज़ियादा अन्देशा रहता है। अगर शरई अग़लात़ से कलाम मह़फ़ूज़ रह भी गया तो फ़ुज़ूलियात से बचने का ज़ेहन बहुत कम लोगों का होता है। जी हां ! आज कल जिस त़रह़ आ़म

1.....मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 227

गुफ़्तगू में फ़ुज़ूल अल्फ़ाज़ की भरमार पाई जाती है, इसी तरह बयान और नातिया कलाम में भी होता है। लिहाज़ा अदब का तक़ाज़ा तो येही है कि फ़न्ने नात से ना वाक़िफ़ अफ़राद खुद से नातें लिखने का शौक़ हरगिज़ न पालें कि इसी में दोनों जहान की भलाई है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब तक ज़िन्दा रहे इश्के़ रसूल के तुफ़ैल बारगाहे मुस्तफ़ा से हासिल होने वाले अन्वारो तजल्लियात से खुद भी फ़ैज़याब होते रहे और मख़्लूक़े खुदा को भी फ़ैज़याब करते रहे नीज़ रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायतों का सिलसिला सिर्फ़ आप की हयात तक ही महदूद न रहा बल्कि बादे विसाल भी आप पर लुत्फ़ो रिज़्वान की बारिशें होती रहीं। चुनान्चे,

दरबारे रिसालत में इन्तिज़ार

25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को बैतुल मुक़द्दस में एक शामी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़्वाब में खुद को दरबारे रिसालत में पाया। तमाम सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इज़्ज़ाम, दरबार में हाज़िर थे लेकिन मजलिस में ख़ामोशी तारी थी और ऐसा मालूम होता था कि किसी आने वाले का इन्तिज़ार है। शामी बुज़ुर्ग ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : हुज़ूर ? मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों ! किस का इन्तिज़ार है ? सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **"हमें अहमद रज़ा का इन्तिज़ार है।"** शामी बुज़ुर्ग ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! **अहमद रज़ा** कौन हैं ? इरशाद हुवा : **हिन्दुस्तान** में "**बरेली**" के बाशिन्दे हैं। बेदारी के बाद वोह शामी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौलाना अहमद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तलाश में हिन्दुस्तान की तरफ़ चल पड़े और जब वोह बरेली शरीफ़ आए तो

उन्हें मालूम हुवा कि उस आ़शिक़े रसूल का उसी रोज़ (यानी 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1340 हिजरी को) विसाल हो चुका था जिस रोज़ उन्हों ने ख़्वाब में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह कहते सुना था कि **"हमें अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है ।"**

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत" का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत दिल में पैदा करने, आप के इश्क़े रसूल में से हिस्सा पाने और इरशादात से रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये **दावते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 568 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत"** का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है । येह किताब शहज़ादए आला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तालीफ़ की हुई है जिस में आप ने आला ह़ज़रत के इल्मो ह़िक्मत और इश्क़े रसूल से भरपूर इरशादात को जम्अ़ फ़रमाया है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब में शरीअ़त के अह़काम, त़रीक़त के आदाब, ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइलो मनाक़िब, सलात़ीने इस्लाम के तज़किरे, उ़लूमो फ़ुनून से लगाव रखने वालों के ज़ेहन में पैदा होने वाली उलझनों के जवाबात, ह़रामो ह़लाल के ज़रूरी मसाइल, बुज़ुर्गों की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायात और इस के इ़लावा बहुत सी मुफ़ीद मालूमात का ख़ज़ाना मौजूद है । लिहाज़ा आज ही इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर खुद

(1).....मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 35

www.dawateislami.net

भी इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इसे पढ़ा भी जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़दाइके़ बख़्शिश का तआ़रुफ़

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बे मिसाल नातिया दीवान "**ह़दाइके़ बख़्शिश**" है। वलिय्ये कामिल और इमामे इश्क़ो मह़ब्बत के नोके क़लम से निकला हुवा हर एक शेर क़ुरआनो ह़दीस का सच्चा तर्जुमान और नामूसे मुस्त़फ़ा, सह़ाबाओ अहले बैत और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की अ़ज़मतों का सच्चा मुह़ाफ़िज़ और इन के फ़ुयूज़ो बरकात का सर चश्मा है। चूंकि आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उर्दू के इ़लावा दीगर कई ज़बानों पर भी उ़बूर था इस लिये आप ने उर्दू के इ़लावा अ़रबी और फ़ारसी वग़ैरा ज़बानों में भी नातें तह़रीर फ़रमाई हैं। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने इस नातिया दीवान में फ़साह़तो बलाग़त के वोह दरिया बहाए कि ज़माने के नामी गिरामी शाइ़रो अदीब **ह़दाइके़ बख़्शिश** का मुत़ालआ़ करते हैं तो उन की अ़क़्लें दंग रह जाती हैं और वोह दादो तह़सीन दिये बिग़ैर नहीं रह पाते।

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को ह़दाइके़ बख़्शिश से इस क़दर लगाव है कि आप अपने बयानात व मदनी मुज़ाकरों में वक़्तन फ़ वक़्तन ह़दाइके़ बख़्शिश के अश्आ़र पढ़ते हैं और अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को भी ह़दाइके़ बख़्शिश पढ़ने और अपने पास रखने की तरग़ीब देते रहते हैं। अल ग़रज़ ह़दाइके़ बख़्शिश आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वोह बुलन्द पाया कारनामा है कि जिस की बदौलत आ़शिक़ाने रसूल के सीनों में इश्के़ मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां है।

दावते इस्लामी की इल्मी व तह़क़ीक़ी मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए "ह़दाइके़ बख़्शिश" को शाएअ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है, आप इसे **मक्तबतुल मदीना** से ख़रीद कर पढ़िये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप के इश्क़े रसूल में इज़ाफ़ा होगा।

मक्तबतुल मदीना का क़ियाम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इश्क़े रसूल की शम्अ़ अपने दिल में जलाने और नेकी की दावत की धूमें मचाने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी कबो बेश 103 से ज़ाइद शोबाजात में नेकी की दावत आ़म करने में मसरूफ़ है, इन्ही में से एक **मक्तबतुल मदीना** भी है। दौरे ह़ाज़िर में पैग़ामात की तरसील और कुतुबो रसाइल की इशाअ़त के लिये जदीद ज़राएअ़ और वसाइल का इस्तिमाल बड़ी तेज़ी के साथ आ़म होता जा रहा है। होना तो येह चाहिये था कि इन जदीद ज़राएअ़ को नेकी की दावत की धूमें मचाने या दीगर जाइज़ मक़ासिद के लिये ही इस्तिमाल किया जाता मगर अफ़्सोस कि बात़िल क़ुव्वतों ने इन ज़राइए़ इब्लाग़ को अपने मफ़ादात की तक्मील का हथियार बना लिया जिस की मदद से वोह शबो रोज़ अपने गुमराह कुन अ़क़ाइद, बात़िल नज़रिय्यात और ख़ुराफ़ात व फ़ुज़ूलियात की तरवीजो इशाअ़त कर के भोले भाले मुसलमानों को राहे ह़क़ से हटाने और सिराते़ मुस्तक़ीम से दूर करने में मसरूफ़ हैं।

लिहाज़ा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन ह़ालात में भी बद अ़क़ीदगी के इस सैलाब के आगे बन्द बांधने की अनथक कोशिशें फ़रमाईं बिल आख़िर आप की मुख़्लिसाना कोशिशें रंग लाईं और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिने 1406 हिजरी ब मुत़ाबिक़ सिने 1986 ईसवी में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** का शानदार आग़ाज़ हो गया। दावते इस्लामी के इस शोबे से, अव्वलन

www.dawateislami.net

सिर्फ़ बयानात की ऑडियो केसिटें जारी की गईं और फिर **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़्रे इनायत से ऐसी तरक़्क़ी नसीब हुई कि ऑडियो केसिटों से अपने काम का आग़ाज़ करने वाले इदारे **मक्तबतुल मदीना** के तह़्त वी सी डीज़ (VCDs) मक्तब क़ाइम हैं, जो इस शोबे से मुतअ़ल्लिक़ हर क़िस्म की जदीद सहूलियात व ज़रूरियात से आरास्ता हैं। इस मुख़्तसर अ़र्से में **मक्तबतुल मदीना** से जहां सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरों की लाखों लाख केसिटें और वी सी डीज़ (VCDs) दुन्या भर में पहुंचीं और पहुंच रही हैं, वहीं आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की किताबें भी शाएअ़ हो कर कसीर तादाद में अ़वाम के हाथों में पहुंच कर सुन्नतों को ज़िन्दा करने का सबब बन रही हैं। **अल्लाह** पाक दावते इस्लामी के तमाम शोबाजात ब शुमूल **मक्तबतुल मदीना** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो! आज के इस बयान का ख़ुलासा कुछ यूं है:

...आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का सीना इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गन्जीना था, आप के मल्फ़ूज़ात, फ़तावाजात और नातिया अश्आ़र से इश्क़े मुस्त़फ़ा की किरनें फूटती हैं।

...आप पर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बहुत ज़ियादा फ़ज़्लो

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

करम था हत्ताकि दूसरी बार सफ़रे मदीना के मौक़अ़ पर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ालते बेदारी में अपने दीदार का जाम भी पिलाया।

...आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़क़ीदतों का मर्कज़ मदीनतुर्रसूल था और आप फ़नाफ़िर्रसूल के आला मर्तबे पर फ़ाइज़ थे। ख़ुद ही फ़रमा दिया कि अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो एक पर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ और दूसरे पर مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ लिखा हुवा पाएगा।

...आप हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे अक़्दस और आप से तअ़ल्लुक़ व निस्बत रखने वाली हर शै का बेह़द अदब बजा लाते नीज़ सादाते किराम के साथ भी ऐसा अदबो ताज़ीम वाला सुलूक फ़रमाते कि देखने वाले ह़ैरत में पड़ जाते।

...आप ने क़लमी, ज़बानी और अ़मली हर त़रीक़े से लोगों की शरई रहनुमाई फ़रमाई, ख़ुद भी अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चले और लोगों को भी इन के रास्ते पर चलने की ताकीद फ़रमाते रहे।

...आप नामूसे रिसालत के सच्चे पासबान थे, आ़म मुसलमानों के लिये इन्तिहाई रह़्म दिल जब कि बद मज़हबों और गुस्ताख़ाने रसूल व दुश्मनाने सह़ाबाओ औलिया के लिये शमशीरे बे नियाम की मानिन्द थे, सारी ज़िन्दगी बद दीनियों का क़ल्अ़ क़म्अ़ करने में मसरूफ़ रहे।

...तर्जमए कुरआन '**कन्ज़ुल ईमान** और नातिया दीवान '**ह़दाइक़े बख़्शिश** आप के वोह शानदार कारनामे हैं कि इन्हें पढ़ते या सुनते वक़्त सीने में मौजूद दिल इश्क़े रसूल में झूमने लगता है, अल ग़रज़ आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इश्क़े रसूल हमारे लिये बेहतरीन नमूना है।

दुआ़ है : **अल्लाह** पाक हमें भी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सदक़े प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "चौक दर्स"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला हज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ुयूज़ो बरकात से हिस्सा पाने के लिये आप भी मस्लके आला हज़रत की तर्जुमानी करने वाली, तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दावते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिये, नीज़ ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "**चौक दर्स**" भी है। याद रहे कि दर्सो बयान के ज़रीए लोगों को नेकी की दावत देने और बुराई से मन्अ करने की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्चे,

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की फ़ज़ीलत

मरवी है कि **अल्लाह** पाक ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तरफ़ वही फ़रमाई कि जिस ने भलाई का हुक्म दिया, बुराई से मन्अ किया और लोगों को मेरी इताअत की तरफ़ बुलाया तो वोह क़ियामत के दिन मेरे अर्श के साए में होगा।(1)

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना दीन का क़ुत्बे आज़म है (यानी जिस रुक्न से दीन की तमाम चीज़ें वाबस्ता हैं) इसी अहम काम के लिये **अल्लाह** तआला ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मबऊस फ़रमाया।(2)

मदनी बहार

दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले आख़िरी अशरे के इजतिमाई एतिकाफ़ में शरीक एक इस्लामी भाई का कहना है कि एक रात मैं

1...حلیۃ الاولیاء، کعب الاحبار، ۲/ ۳۶، رقم: ۷۷۱۲

2...احیاء العلوم، کتاب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ۲/ ۳۷۷

www.dawateislami.net

सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने ख़्वाब में इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दीदार किया। मैं ने देखा कि आप नमाज़ पढ़ा रहे हैं और आप के पीछे वजीहा (ख़ूब सूरत) चेहरों वाले कुछ लोग नमाज़ अदा कर रहे हैं जिन के सरों पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे और बदन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद लिबास थे, फिर मेरी आंख खुल गई। जब मालूमात कीं तो पता चला कि सब्ज़ सब्ज़ इमामा दावते इस्लामी वाले सजाते हैं और इन के अमीर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی हैं। फिर मुझे अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला **"तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा"** पढ़ने का मौक़अ़ मिला, दिल तो पहले ही मुत़मइन था, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आला ह़ज़रत से मह़ब्बत देख कर मैं और भी मुतास्सिर हुवा और अमीरे अहले सुन्नत के हाथों बैअ़त हो कर अ़त़्त़ारी बन गया। अब اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दावते इस्लामी के इजतिमाई एतिकाफ़ में शरीक होने की सआ़दत पा रहा हूं और सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाने और सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ सजाने की भी निय्यत करता हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।(1)

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذبالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा हों :

﴾1﴿...दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की सत्तर (70) रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है।[1] ﴾2﴿...मिस्वाक का इस्तिमाल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और (येह) रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है।[2]

...हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मिस्वाक में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और शैतान को ग़ज़बनाक करती है।[3] ...हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, मिस्वाक का इस्तिमाल, सुलहा यानी नेक लोगों की सोहबत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना।[4] ...मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो, मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया यानी छोटी उंगली के बराबर हो। ...मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्तिमाल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बान्ध कर समुन्दर में डुबो दीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1...مسند احمد، مسند السيدة عائشة، ۱۰/ ۱۴۱، حديث: ۲۶۴۰۰

2...مسند احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمر بن خطاب، ۲/ ۴۳۸، حديث: ۵۸۶۹

3...دار قطنی، کتاب الطهارة، باب السواک، ۱/ ۸۴، حديث: ۱۵۷

4...احياء العلوم، کتاب آداب الاکل، فصل يجمع آدابا ومناهي...الخ، ۲/ ۲۷

www.dawateislami.net

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ दो कुतुब (1)... **312 सफ़हात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअत**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़हात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जूते पर खड़े हो कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

जूता पहन कर अगर नमाज़े जनाज़ा पढ़ीं तो जूते और ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और जूता उतार कर उस पर खड़े हो कर पढ़ीं तो जूते के तले और ज़मीन का पाक होना ज़रूरी नहीं। मेरे आक़ा आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर वोह जगह पेशाब वग़ैरा से नापाक थी या जिन के जूतों के तले नापाक थे और इस हालत में जूता पहने हुए नमाज़ पढ़ी उन की नमाज़ न हुई, एहतियात येही है कि जूता उतार कर उस पर पाउं रख कर नमाज़ पढ़ी जाए कि ज़मीन या तला अगर नापाक हो तो नमाज़ में ख़लल न आए।"

(फ़तावा रज़विय्या 9/188) (नमाज़ के अहकाम, नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा, स. 385)

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

www.dawateislami.net

छोटे ना समझ बच्चों को मस्जिद में लाना

सुवाल : छोटे छोटे बच्चे जो मस्जिद में दनदनाते और शोर मचाते फिर रहे होते हैं, उन का जुर्म किस पर है ?

जवाब : छोटे बच्चों और पागलों को मस्जिद में लाने की ह़दीसे पाक में मुमानअ़त आई है। चुनान्चे, दो आ़लम के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : मस्जिदों को बच्चों, पागलों, ख़रीदो फ़रोख़्त, झगड़े, आवाज़ बुलन्द करने, ह़ुदूद क़ाइम करने और तल्वार खींचने से बचाओ। इन के दरवाज़ों पर त़हारत ख़ाने बनाओ और जुम्अ़ा के दिन मसाजिद को धूनी दिया करो। (ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب مایکرہ فی المساجد، ۱/ ۴۱۵، حدیث: ۷۵۰)

उ़मूमन मुशाहदा येही है कि जब छोटे बच्चे मस्जिद में जम्अ़ होते हैं तो आपस में शरारतें शुरूअ़ कर देते हैं, नमाज़ियों के आगे से गुज़रते और ख़ूब ऊधम मचाते हैं नीज़ दौराने नमाज़ बसा अवक़ात रोना शुरूअ़ कर देते हैं जिस से नमाज़ में ज़बरदस्त ख़लल आता है और मस्जिद का तक़द्दुस पामाल होता है और कभी कभार तो मस्जिद में पेशाब पाख़ाने तक कर देते हैं तो इन सारी बातों का वबाल बच्चों को मस्जिद में लाने वाले पर आता है जब कि वोह लाने वाला बालिग़ हो लिहाज़ा छोटे बच्चों को हरगिज़ मस्जिद में न लाया जाए।

याद रखिये ! ऐसा **बच्चा** जिस से नजासत (यानी पेशाब वग़ैरा कर देने) का ख़त़रा हो और **पागल** को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है और अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो **मकरूह** है। (درمختار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ...الخ، ۲/ ۵۱۸)

इसी त़रह़ बच्चे या पागल या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उन सब को दम करवाने के लिये भी मस्जिद में ले जाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। अगर कोई पहले येह भूल कर चुका है तो उसे चाहिये कि फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा उन्हें न लाने का अ़हद कर ले। फ़िनाए मस्जिद मसलन इमाम साह़िब के ह़ुजरे में उन्हें दम करवाने के लिये ले जाने में ह़रज नहीं जब कि मस्जिद के अन्दर से गुज़रना न पड़े।

(मस्जिद के आदाब "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा क़िस्त़ : 12" स. 11 ता 12)

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

08-December-2016

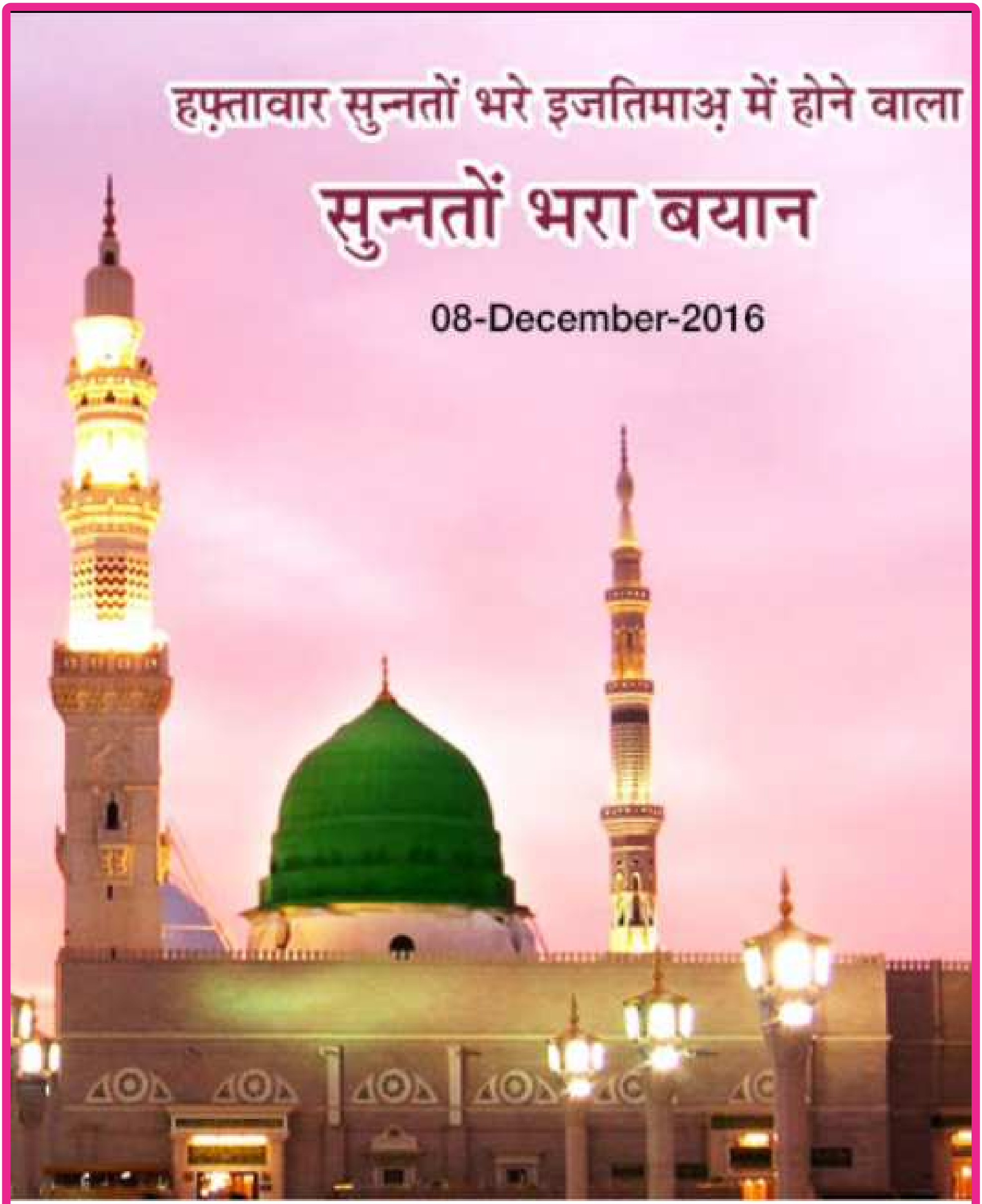

صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा के वाक़िआत

(Hindi)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब** हो जाती है :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ(1)

पूछेगा मौला है लाया क्या क्या मैं येह कहूंगा नामे मुह़म्मद

रखवो लह़द में जिस दम अ़ज़ीज़ो मुझ को सुनाना नामे मुह़म्मद(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नामे मुस्तफ़ा की ताज़ीम बख़्शिश का सबब बन गई

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि बनी इस्राईल में एक ऐसा शख़्स था जिस ने अपनी ज़िन्दगी के 200 साल **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी में गुज़ारे, इसी ना फ़रमानी के आ़लम में उसे मौत आ गई, बनी इस्राईल ने उस के मुर्दा जिस्म को टांग से पकड़ा और घसीट कर गन्दगी के ढेर पर फेंक दिया। **अल्लाह** पाक ने अपने नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह़ी फ़रमाई कि उसे वहां से उठाओ और उस की

---

1 ...معجم کبیر، ۵/ ۲۵، حدیث: ۴۴۸۰

2 .....क़बालए बख़्शिश, स. 73, 74

तजहीज़ो तक्फ़ीन कर के उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने लोगों से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने उस के बद किरदार होने की गवाही दी। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! बनी इस्राईल तो इस के बद किरदार होने की गवाही दे रहे हैं कि इस ने अपनी ज़िन्दगी के 200 साल तेरी ना फ़रमानी में गुज़ारे हैं ?" **अल्लाह** पाक ने आप की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि येह था तो बद किरदार ही। मगर इस की आ़दत थी कि जब कभी तौरात शरीफ़ खोलता और मेरे ह़बीब मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इस्मे गिरामी पर नज़र पड़ती तो उसे चूम कर अपनी आंखों से लगा लेता और उन पर दुरूद पढ़ा करता था, पस मैं ने इस के इस अ़मल की क़द्र की और इस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा कर इस का निकाह़ 70 हूरों के साथ कर दिया।[1]

गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं   करम से बख़्श दे मुझ को, न दे सज़ा या रब[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत ने तो अहले ईमान के दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र कर दिया कि वोह शख़्स जो त़वील अ़र्से तक गुनाहों में मुब्तला रहा और इस दौरान नेकियों के क़रीब भी न गया, लेकिन सिर्फ़ नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम के सबब उसे येह इन्आ़म मिला कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ब हुक्मे ख़ुदावन्दी उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम फ़रमाया, उस के साबिक़ा तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए और वोह रह़मते ख़ुदावन्दी का मुस्तह़िक़ ठहरा। ग़ौर कीजिये कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का उम्मती नामे मुस्त़फ़ा की ताज़ीम के सबब बख़्शिश व मग़फ़िरत का ह़क़दार हो सकता है तो फिर उम्मते

1 ...حلية الاولياء، وهب بن منبه، ۴/۴۵، حديث: ۴۶۹۵

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 78

मुहम्मदिय्या का वोह फ़र्द जो अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के न सिर्फ़ नाम की ताज़ीम करे बल्कि आप की ज़ात और आप से निस्बत रखने वाली हर शै की ताज़ीमो तौक़ीर को लाज़िम व ज़रूरी जाने तो फिर उस पर रह़मते ख़ुदावन्दी की कैसी छमाछम बारिशें होंगी !

क़ुरआने करीम में ताज़ीमे मुस्तफ़ा का हुक्म

इस रिवायत से येह भी मालूम हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक को ताज़ीमन चूमना न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने का ज़रीआ़ भी है। याद रखिये ! ईमान लाने के बाद ताज़ीमे मुस्तफ़ा ही मत़लूबो मक़्सूद है और इसी पर ईमान का मदार है। दावए ईमान के लिये ताज़ीमो तौक़ीरे मुस्तफ़ा की अहम्मिय्यत व ज़रूरत पर कई आयाते मुबारका दलालत करती हैं। चुनान्चे, **अल्लाह** पाक **पारह 26, सूरतुल फ़त्ह़, आयत नम्बर 8 और 9** में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿۹﴾ (پ۲۶، الفتح: ۸، ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की पाकी बोलो।

ईमान, ताज़ीम और इबादत

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस आयते करीमा के ज़िम्न में जो इरशाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है : मुसलमानो ! देखो **अल्लाह** पाक ने दीने इस्लाम भेजने, क़ुरआने मजीद उतारने का मक़्सद तीन बातें इरशाद फ़रमाई हैं : पहली येह कि **अल्लाह** व रसूल पर

ईमान लाना, दूसरी येह कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम करना, तीसरी येह कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की इ़बादत करना। इन तीनों बातों की बेहतरीन तरतीब तो देखिये, सब से पहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया और सब से आख़िर में अपनी इ़बादत का और दरमियान में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम का हुक्म इरशाद फ़रमाया क्यूंकि ईमान के बिग़ैर हुज़ूर की ताज़ीम फ़ाएदा न देगी। बहुत से ग़ैर मुस्लिम ऐसे हैं कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तकरीम और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग़ैर मुस्लिमों की त़रफ़ से किये जाने वाले एतिराज़ात के जवाबात में किताबें लिखते और लेक्चर देते हैं, मगर चूंकि ईमान न लाए तो उन का एतिराज़ात के जवाब देना फ़ाएदे मन्द नहीं होगा क्यूंकि येह ज़ाहिरी ताज़ीम है। अगर दिल में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची अ़ज़्मत होती तो ज़रूर ईमान लाते क्यूंकि जब तक नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची ताज़ीम न हो तो अगर्चे सारी ज़िन्दगी इ़बादते इलाही में गुज़रे सब बेकार है और बारगाहे इलाही में अस्लन क़ाबिले क़बूल नहीं। **अल्लाह** पाक ऐसों के बारे में फ़रमाता है :

وَقَدِمْنَاۤ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾

(پ۱۹، الفرقان:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं।

और येह भी इरशाद फ़रमाता है :

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿۳﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿۴﴾

(پ۳۰، الغاشية:۳، ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : काम करें मशक़्क़त झेलें जाएं भड़कती आग में।

www.dawateislami.net

यानी अ़मल करें, मशक़्क़तें उठाएं और बदला क्या होगा ? येही कि भड़कती आग में जाएंगे ।(1)

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया(2)

तर्के ताज़ीम की तबाहकारियां

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयाते मुबारका और आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इरशादाते आ़लिया से वाज़ेह़ हुवा कि ताज़ीमे मुस्त़फ़ा ही अस्ले ईमान है पस अगर कोई शख़्स इस से पहलू तही (कनारा कशी) करते हुए दीगर नेक आमाल की सई (कोशिश) करता है तो उस का कोई अ़मल क़ाबिले क़बूल न होगा । ताज़ीमे मुस्त़फ़ा में ज़रा सी ख़ामी तमाम नेक आमाल की बरबादी का बाइ़स बन सकती है । जैसा कि **पारह 26, सूरतुल हुजुरात, आयत नम्बर 2** में इरशादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ (پ۲۶، الحجرات: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो ।

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : मालूम हुवा कि हुज़ूर की अदना बे अदबी कुफ़्र है क्यूंकि कुफ़्र ही से नेकियां बरबाद होती हैं, जब इन की

1.....फ़तावा रज़विय्या 30 / 307, मुलख़्ख़सन

2.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 56

बारगाह में ऊंची आवाज़ से बोलने पर नेकियां बरबाद हैं तो दूसरी बे अदबी का ज़िक्र ही क्या है। आयत का मत़लब येह है कि न इन के हुज़ूर चिल्ला कर बोलो, न इन्हें आ़म अल्क़ाब से पुकारो जिन से एक दूसरे को पुकारते हैं, चचा, अब्बा, भाई, बशर न कहो। रसूलुल्लाह ! शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन ! कहो।(1)

बारगाहे नाज़ में आहिस्ता बोल हो न सब कुछ राएगां आहिस्ता चल(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का पाक कलाम सय्यिदुल इन्स वल जान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान को वाज़ेह़ त़ौर पर बयान कर रहा है और हमें उन के दर की ह़ाज़िरी के आदाब सिखा रहा है कि दरबारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सिर्फ़ आवाज़ का बुलन्द हो जाना ही इतना बड़ा जुर्म है कि इस की वज्ह से तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं। मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : दुन्यावी बादशाहों के दरबारी आदाब इन्सानी साख़्त (इन्सानों के बनाए हुए) हैं मगर हुज़ूर के दरवाज़े शरीफ़ के आदाब रब (عَزَّوَجَلَّ) ने बनाए, रब ने सिखाए। नीज़ येह आदाब सिर्फ़ इन्सानों पर ही जारी नहीं बल्कि जिन्नो इन्स व फ़िरिश्ते सब पर जारी हैं। फ़िरिश्ते भी इजाज़त ले कर दौलत ख़ाने में ह़ाज़िरी देते थे, फिर येह आदाब हमेशा के लिये हैं।(3)

तेरे रुत्बे में जिस ने चूनो चरा की न समझा वोह बदबख़्त रुत्बा ख़ुदा का(4)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....नूरुल इरफ़ान, पारह 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 2

2.....राहे मुस्त़फ़ा, स. 63

3.....नूरुल इरफ़ान, पारह 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 5

4.....ज़ौक़े नात, स. 38

ताज़ीम पर इन्आमो इकराम का वादा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वाजिबुल एह्तिराम और लाइके़ ताज़ीम हैं, कु़रआने करीम में **अल्लाह** पाक ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अम्बियाए किराम की ताज़ीम का हुक्म इरशाद फ़रमाया और इस हुक्म की बजा आवरी करने वालों को इन्आ़मो इकराम से नवाज़ने का वादा भी फ़रमाया है। चुनान्चे,

पारह 6, सूरतुल माइदह, आयत नम्बर 12 में इरशाद होता है :

وَاٰمَنۡتُمۡ بِرُسُلِىۡ وَعَزَّرۡتُمُوۡهُمۡ وَاَقۡرَضۡتُمُ اللّٰهَ قَرۡضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَلَاُدۡخِلَنَّكُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ‌ۚ (پ۶، المائدۃ:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ताज़ीम करो और **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां।

बिल खु़सूस हु़ज़ूर ख़ातमुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के बाद आप की ताज़ीम करने वालों को फ़लाह़ो कामरानी की बिशारत अ़ता फ़रमाई है। चुनान्चे,

पारह 9, सूरतुल आराफ़, आयत नम्बर 157 में इरशाद होता है :

فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِهٖ وَعَزَّرُوۡهُ وَنَصَرُوۡهُ وَاتَّبَعُوا النُّوۡرَ الَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ مَعَهٗۤ‌ۙ اُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾ (پ۹، الاعراف:۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ताज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए।

नाम ले कर पुकारने की मुमानअ़त

याद रखिये ! येह इन्आ़मात उसी वक़्त ह़ासिल होंगे जब हम हर मुआ़मले में तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तौक़ीर को अपने ईमान का ह़िस्सा समझेंगे और इन की अदना से अदना तौहीन से भी बचेंगे। **अल्लाह** पाक ने आदाबे नबवी सिखाते हुए जहां बारगाहे रिसालत में आवाज़ बुलन्द करने से मन्अ़ फ़रमाया वहीं आप को आ़मिय्याना अन्दाज़ में पुकारने की भी मुमानअ़त फ़रमाई है। चुनान्चे,

पारह 18, सूरतुन्नूर, आयत नम्बर 63 में इरशाद होता है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ (پ۱۸، النور:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : (इस आयत के) एक माना मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि (जब कोई) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा करे (पुकारे) तो अदबो तकरीम और तौक़ीरो ताज़ीम के साथ आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाज़ेआ़ना व मुन्कसिराना (आ़जिज़ी वाले) लहजे में **"या नबिय्यल्लाह ! या रसूलल्लाह ! या ह़बीबल्लाह !"** कह कर (पुकारे)।[1]

इमामुल मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : लोग हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **या मुह़म्मद ! या अबल क़ासिम !** कह कर पुकारा करते थे फिर **अल्लाह** पाक ने

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, अन्नूर, तह़तुल आयत : 63

अपने मह़बूब नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम के लिये इस त़रह़ पुकारने से मन्अ़ फ़रमा दिया तो लोग **"या नबिय्यल्लाह ! या रसूलल्लाह"** कहने लगे।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम का मुआ़मला किस क़दर अहम है कि **अल्लाह** पाक को येह बात भी ना पसन्द है कि कोई उस के ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम ले कर मुख़ात़ब करे। उ़लमा तसरीह़ (साफ़ लफ़्ज़ों में) फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करनी ह़राम है।(2) याद रहे ! हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम सिर्फ़ ह़याते ज़ाहिरी तक मह़दूद नहीं थी बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले हर मुसलमान पर आप की ताज़ीमो तौक़ीर करना फ़र्ज़ है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात और विसाले ज़ाहिरी के बाद ग़रज़ हर ह़ालत में आप की ताज़ीमो तौक़ीर उम्मत पे लाज़िम और ज़रूरी है क्यूंकि दिलों में आप की ताज़ीम जितनी बढ़ेगी उतना ही नूरे ईमान में इज़ाफ़ा होगा।(3)

ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला जान की इकसीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की(4)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ो मह़ब्बत और हर मुआ़मले में आप का बेह़द अदब ईमान में इज़ाफ़े का सबब और ईमान की जड़ है। इस को यूं समझिये कि अगर किसी दरख़्त की जड़ ही कट जाए तो वोह दरख़्त सूख जाता है और उस पर लगे हुए फल, फूल

---

1 ...دلائل النبوۃ لابی نعیم ، الفصل الاول فی ذکر ما انزل اللہ...الخ، ص۱۹

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 30 / 157

3 ...روح البیان ، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ:۵۳،۷/۲۱۶

4 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153

सब बेकार व ज़ाएअ़ हो जाते हैं, इसी त़रह़ ताज़ीमे मुस्त़फ़ा ईमान के दरख़्त के लिये जड़ की हैसिय्यत रखती है। इस के बिग़ैर ईमान का शजर भी हरा भरा नहीं रह सकता और नेक आमाल की सूरत में उस पर लगे हुए फल, फूल बरबाद हो जाते हैं। लिहाज़ा अपनी नेकियों को बाक़ी रखने और शजरे ईमान को बढ़ाने के लिये अदबे रसूल को लाज़िम समझिये। ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने ताज़ीमे मुस्त़फ़ा की ऐसी मिसालें क़ाइम कीं जिन की मिसालें मिलना मुमकिन नहीं। आइये ! शम्ए रिसालत के इन परवानों के इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की चन्द रिवायात सुनते हैं :

ताज़ीमे मुस्त़फ़ा के बे मिसाल वाक़िआ़त

﴾1﴿...ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان कमाले अदबो एह़तिराम की वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दरवाज़ा नाख़ुनों से खट खटाते थे।[1]

﴾2﴿...सुल्ह़े हुदैबिय्या के साल क़ुरैश ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه को (जो अभी ईमान न लाए थे), शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेजा, उन्हों ने देखा कि आप जब वुज़ू फ़रमाते तो सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان वुज़ू का पानी ह़ासिल करने के लिये इस क़दर तेज़ी से बढ़ते कि यूं मालूम होता, जैसे एक दूसरे से लड़ पड़ेंगे। जब लुआ़बे मुबारक डालते या नाक साफ़ करते तो सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان उसे हाथों में ले कर (बत़ौरे तबर्रुक) अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई हुक्म देते तो फ़ौरन तामील करते और जब गुफ़्तगू फ़रमाते तो सब ख़ामोश रहते और अज़ राहे ताज़ीम आप की त़रफ़ आंख उठा कर न देखते। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा

1...المدخل للبيهقي، باب توقير العالم والعلم، ۲/۱۷۱، حديث: ۶۵۹

बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले मक्का के पास वापस गए तो उन से कहा : ऐ गुरौहे कुरैश ! मैं कैसरो किसरा और नज्जाशी के दरबारों में भी गया हूं, लेकिन खुदा की क़सम ! मैं ने किसी बादशाह की उस की क़ौम में ऐसी शानो शौकत और क़द्रो मन्ज़िलत नहीं देखी, जैसी शान (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उन के सहाबा में देखी है।[1]

﴾3﴿...एक बार हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : اَنْتَ اَکْبَرُ اَمْ رَسُوْلُ اللّٰہ ؟ यानी उम्र में आप बड़े हैं या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ? तो उन्हों ने ताज़ीमो तौक़ीर से लबरेज़ जवाब दिया : **هُوَ اَکْبَرُ مِنِّیْ وَاَنَا کُنْتُ قَبْلَہٗ** यानी बड़े तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही हैं, पैदा मैं पहले हुवा हूं।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सरवरे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसी वालिहाना महब्बत करते और ताज़ीम बजा लाते थे कि उम्र में बड़े होने के बा वुजूद भी बड़ा होने की निस्बत रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ ही करते। हमें चाहिये कि हम भी इश्क़े मुस्तफ़ा की शम्अ न सिर्फ़ अपने दिल में रौशन करें बल्कि अपनी औलाद को भी अस्लाफ़ के इश्क़े रसूल के प्यारे प्यारे वाक़िआत सुना कर बचपन ही से उन के दिलों में महब्बते रसूल को रासिख़ करें। इस के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मतबूआ 274 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "**सहाबए किराम का इश्क़े रसूल**" का मुतालआ बेहद मुफ़ीद रहेगा। इस के इलावा दावते

❶...الشفا، الباب الثالث فی تعظیم امرہ...الخ، فصل فی عادۃ الصحابۃ...الخ، ۲/ ۳۸

❷...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، باب فی الرجل یسال...الخ، ۶/ ۲۰۵، حدیث:۱

इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर हर माह कम अज़ कम तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आमात पर अ़मल, मदनी मुज़ाकरों और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इश्क़े रसूल की दौलत नसीब होगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीलाद मनाना भी ताज़ीमे मुस्तफ़ा है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि एक मुसलमान के लिये ताज़ीमे मुस्तफ़ा किस क़दर अहम्मिय्यत की ह़ामिल है कि इस के बिग़ैर दावए ईमान ही बेकार है। याद रखिये ! जिस त़रह़ खुद ताजदारे अम्बिया, सरवरे हर दो सरा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस की ताज़ीम ज़रूरी है, इसी त़रह़ आप से निस्बत रखने वाले अस्ह़ाब व अज़्वाज, आल व औलाद और तबर्रुकात के साथ साथ आप के ज़िक्रे अक़्दस की भी ताज़ीम ज़रूरी है। यूं तो तमाम ही दीनी मह़ाफ़िल में ज़िक्रे मुस्तफ़ा किया जाता है, लेकिन इजतिमाए़ मीलाद में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर ख़ास तौ़र पर होता है, आप की शानो अ़ज़्मत को बयान किया जाता और सीरते मुबारका के प्यारे वाक़िआ़त सुनाए जाते हैं, लिहाज़ा जश्ने ईदे मीलादुन्नबी मनाना भी ताज़ीमे मुस्तफ़ा ही की एक सूरत है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मीलादे मुस्तफ़ा मनाने में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मर्तबे की ताज़ीम है।(2)

---

❶...روح البیان،پ۲۶، الفتح، تحت الآیۃ:۹، ۹/۵۲

❷...الحاوی للفتاوی، کتاب الصداق، حسن المقصد فی عمل المولد، ۱/۲۲۲

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ सालेही رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मीलाद मनाने में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और ताज़ीम है नीज़ इस से दिल में आप की अ़ज़्मतो बड़ाई पैदा होती है ।(1)

पूरी काएनात में ख़ुशी की लहर

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रबीउ़ल अव्वल का मुबारक महीना आते ही आ़शिक़ाने रसूल के दिलों में ख़ुशियों की लहर दौड़ जाती है और वोह जश्ने ईदे मीलादुन्नबी की तय्यारियों में मसरूफ़ हो जाते हैं और क्यूं न हों कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर तो पूरी काएनात मसरूर हो गई, अ़र्श ख़ुशी से झूम उठा, कुरसी भी ख़ुशी से इतराने लगी और जिन्नों को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया तो वोह एक दूसरे से कहने लगे : बेशक हमें अपने रास्ते में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा है और फ़िरिश्ते इन्तिहाई ख़ुशी व रोब से तस्बीह़ ख़्वानी करने लगे, हवाएं झूम झूम कर चलने लगीं और बादलों को ज़ाहिर कर दिया, बाग़ात में टहनियां झुकने लगीं और काएनात के गोशे गोशे से "**अहलंव व सहलन मरह़बा**" की सदाएं आने लगीं ।(2)

अल ग़रज़ ! रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी सरासर रह़मतों और बरकतों का मम्बअ़ है । चुनान्चे, अस्ह़ाबे फ़ील की हलाकत का वाक़िआ़(3), फ़ारस के मजूसियों की एक हज़ार साल से जलाई हुई आग का एक लम्ह़े में बुझ जाना, किसरा के मह़ल का ज़लज़ला और उस के 14 कंगूरों का मुन्हदिम (ज़मीन बोस) हो जाना, "हमदान" और "क़ुम" के दरमियान छे मील लम्बे छे मील चौड़े "बुह़ैरए सावह" का यकायक बिल्कुल ख़ुश्क हो जाना(4),

1... سبل الهدى والرشاد، جماع ابواب مولده الشريف، الباب الثالث عشر فى اقوال العلماء... الخ، ۱/ ۳۶۵

2... الروض الفائق، المجلس الثالث والاربعون فى مولد رسول الله، ص ۲۴۳

3... شرح زرقانى، عام الفيل وقصة ابرهة، ۱/ ۱۵۶

4... شرح زرقانى، ولادته صلى الله عليه وسلم وعجائب ماراٰت، ۱/ ۲۲۷، ۲۲۸

www.dawateislami.net

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा के बदने मुबारक से ऐसा नूर निकलना जिस से "**बसरा**" के महल रौशन हो गए।[1] येह तमाम वाक़िआत इसी सिलसिले की कड़ियां हैं जो हुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले ही "**मुबश्शिरात**" (खुश ख़बरी देने वाले) बन कर आलमे काएनात को येह खुश ख़बरी देने लगे कि

मुबारक हो वोह शह पर्दे से बाहर आने वाला है

गदाई को ज़माना जिस के दर पर आने वाला है[2]

मीलाद मनाने की बरकतें

प्यारे इस्लामी भाइयो! याद रखिये! जश्ने ईदे मीलादुन्नबी मनाना एक मुबारक काम है, इस के मनाने वालों को **अल्लाह** पाक की तरफ़ से बे शुमार दीनी व दुन्यावी फ़ाएदे नसीब होते हैं। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम क़स्तलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "विलादते बा सआदत के अय्याम में महफ़िले मीलाद करने के ख़वास (खुसूसिय्यत) से येह अम्र मुजर्रब (यानी तजरिबा शुदा बात) है कि इस साल अम्नो अमान रहता है। **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रहमत नाज़िल फ़रमाए! जिस ने माहे विलादत की रातों को ईद बना लिया।"[3] जश्ने मीलाद मनाने वाले को दुन्यावी बरकतों के साथ साथ जन्नत की बिशारत भी है। शैख़े मुहक़्क़िक़ हज़रते शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की रात खुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि **अल्लाह** पाक उन्हें अपने फ़ज़्लो करम से **जन्नातुन्नईम** में दाख़िल फ़रमाएगा। मुसलमान हमेशा से महफ़िले मीलाद मुन्अक़िद करते आए हैं और

---

1 ...شرح زرقانی، ولادتہ صلی اللہ علیہ وسلم وعجائب ما ارات، ۱/۲۲۱

2 .....ज़ौक़े नात, स. 150

3 ...مواھب اللدنیۃ، ذکر رضاعہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۷۸

विलादत की खुशी में दावतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब सदक़ाओ ख़ैरात देते आए हैं । ख़ूब खुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते हैं नीज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत के ज़िक्र का एहतिमाम करते, अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम अफ्आले ह़सना (अच्छे कामों) की बरकत से उन लोगों पर अल्लाह पाक की रह़मतों का नुज़ूल होता है ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा किया कि रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाने वालों से अल्लाह पाक किस क़दर खुश होता है और उन्हें कैसे कैसे अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मो इकराम से नवाज़ता है । लिहाज़ा जश्ने विलादत की खुशी में मस्जिदों, घरों, दुकानों और सुवारियों पर नीज़ अपने मह़ल्ले में भी सब्ज़ सब्ज़ परचम लहराइये, ख़ूब चरागां कीजिये या कम अज़ कम 12 बल्ब तो ज़रूर रौशन कीजिये । रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं रात हुसूले सवाब की निय्यत से इजतिमाए ज़िक्रो नात में शिर्कत कीजिये और सुब्हे सादिक़ के वक़्त सब्ज़ सब्ज़ परचम उठाए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए अश्कबार आंखों के साथ सुब्हे बहारां का इस्तिक़्बाल कीजिये ।

क़ुरआनो सुन्नत से मीलाद मनाने का सुबूत

12 रबीउ़ल अव्वल के दिन हो सके तो रोज़ा भी रख लीजिये कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया करते थे, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में पीर के रोज़े के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 ...ماثبت من السنة، ذکر شھر ربیع الاول، ص ۱۰۲

इरशाद फ़रमाया : "इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई।"(1)

याद रहे ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत पर खुशी मनाने का हुक्म कुरआने करीम से साबित है। चुनान्चे,

पारह 11, सूरए यूनुस, आयत नम्बर 58 में इरशाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि खुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

आयते मुबारका की तफ़्सीर

मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते मुबारका के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ मह़बूब ! लोगों को येह खुश ख़बरी दे कर उन्हें येह हुक्म भी दो कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के फ़ज़्ल और उस की रह़मत मिलने पर ख़ूब खुशियां मनाओ। उ़मूमी खुशी तो हर वक़्त मनाओ, खुसूसी खुशी उन तारीख़ों में जिन में येह नेमत आई यानी रमज़ान, खुसूसन शबे क़द्र और रबीउ़ल अव्वल खुसूसन बारहवीं तारीख़ में कि रमज़ान में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़ज़्ल कुरआन आया और रबीउ़ल अव्वल में रह़मतुल्लिल आ़लमीन यानी मुह़म्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पैदा हुए। येह फ़ज़्लो रह़मत या उन की खुशी मनाना तुम्हारे दुन्यवी जम्अ़ किये हुए मालो मताअ़, रूपिया, मकान, जाएदाद, जानवर, खेतीबाड़ी बल्कि औलाद वग़ैरा सब से बेहतर है कि इस खुशी का नफ़्अ़ शख़्सी नहीं बल्कि क़ौमी है। वक़्ती नहीं बल्कि दाइमी है।

(1)... مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ ایام...الخ، ص۴۵۵، حدیث: ۲۷۵۰

www.dawateislami.net

सिर्फ़ दुन्या में नहीं बल्कि दीनो दुन्या दोनों में है। जिस्मानी नहीं बल्कि दिली और रूह़ानी है। बरबाद नहीं बल्कि इस पर सवाब है।(1)

घर सजाते रहें और मनाते रहें ईदे मीलाद हम, ताजदारे ह़रम
ईदे मीलाद में, गाड़ेंगे याद में सब्ज़ प्यारा अ़लम, ताजदारे ह़रम(2)

अफ़्ज़ल तरीन मुस्तह़ब अ़मल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अहले सुन्नत के मज़्हब में मजलिसे मीलादे पाक अफ़्ज़ल तरीन मन्दूबात (यानी मुस्तह़ब्बात) और आला तरीन नेक कामों में से है।(3)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मीलाद शरीफ़ यानी हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते अक़्दस का बयान जाइज़ है। इसी के ज़िम्न में इस मजलिसे पाक में हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल व मोजिज़ात व सियर (ख़स्लतें) व ह़ालात व ह़यात व रज़ाअ़त व बिअ़सत के वाक़िआ़त भी बयान होते हैं, इन चीज़ों का ज़िक्र अह़ादीस में भी है और क़ुरआने मजीद में भी। अगर मुसलमान अपनी मह़फ़िल में बयान करें बल्कि ख़ास इन बातों के बयान करने के लिये मह़फ़िल मुन्अ़क़िद करें तो इस के नाजाइज़ होने की कोई वज्ह नहीं। इस मजलिस के लिये लोगों को बुलाना और शरीक करना ख़ैर की त़रफ़ बुलाना है, जिस त़रह़ वाज़ और जल्सों के एलान किये जाते हैं, इश्तिहारात छपवा कर तक़्सीम किये जाते हैं, अख़्बारात में इस के मुतअ़ल्लिक़ मज़ामीन शाएअ़ किये जाते हैं और

1.....तफ़्सीरे नईमी, 11 / 369
2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 251
3.....अल ह़क़्क़ुल मुबीन, स. 100, मुलख़्ख़सन

इन की वज्ह से वोह वाज़ और जल्से नाजाइज़ नहीं हो जाते, इसी त़रह़ ज़िक्रे पाक के लिये बुलावा देने से इस मजलिस को नाजाइज़ व बिदअ़त नहीं कहा जा सकता।[1]

रबीए़ पाक तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न क़ुरबां हों

कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया[2]

ईदे मीलादुन्नबी और दावते इस्लामी

प्यारे इस्लामी भाइयो! मुसलमानों के लिये सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा, शहनशाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत से बढ़ कर और कौन सा दिन "**यौमे इन्आ़म**" हो सकता है? क्यूंकि काएनात की तमाम रौनक़ें और तमाम नेमतें इन्ही के तुफ़ैल तो मिली हैं और येह दिन तो ईदों से भी बढ़ कर है कि दोनों ईदें भी इसी के सदक़े में नसीब हुई हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम भी मुख़्तलिफ़ ममालिक में हर साल ईदे मीलादुन्नबी शानदार त़रीक़े से मनाई जाती है। रबीउ़ल अव्वल की 12 वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान इजतिमाए मीलाद का इनइक़ाद होता है और ईद के रोज़ यानी 12 रबीउ़ल अव्वल के दिन "**मरह़बा या मुस्त़फ़ा**" की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं, जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है　　*बिल यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी*[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो! हर अहम काम के कुछ ज़रूरी आदाब होते हैं, जश्ने मीलादुन्नबी मनाने के आदाब में से येह है कि तमाम ग़ैर शरई कामों से

---

1 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 644

2 .....क़बालए बख़्शिश, स. 37

3 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 380

www.dawateislami.net

इजतिनाब किया जाए, मसलन गली या सड़क वग़ैरा पर इस त़रह़ सजावट करना कि जिस से गाड़ी वालों और पैदल चलने वालों को तक्लीफ़ का सामना करना पड़े, नाजाइज़ है। चराग़ां देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों के दरमियान बे पर्दा निकलना नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (यानी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़सोस नाक है। नीज़ बिजली की चोरी भी नाजाइज़ है, लिहाज़ा इस सिलसिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ से चराग़ां की तरकीब बनाइये। जुलूसे मीलाद में ह़त्तल इमकान बा वुज़ू रहिये, नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी का ख़याल रखिये।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने जश्ने मीलाद मनाने के बारे में अपने एक मक्तूब में कुछ अहम मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं। आइये ! हम भी इस **मक्तूबे अ़त़्त़ार** को तवज्जोह के साथ सुनते हैं :

मक्तूबे अ़त़्त़ार

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाइयों / इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में जश्ने विलादत की ख़ुशी में लहराते हुए सब्ज़ सब्ज़ परचमों, जगमगाते बल्बों और नन्हे नन्हे क़ुम्क़ुमों को चूमता हुवा, झूमता हुवा शहद से भी मीठा मक्की मदनी सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ   اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَال۔

तुम भी कर के उन का चर्चा अपने दिल चमकाओ

ऊंचे में ऊंचा नबी का झन्डा घर घर में लहराओ

www.dawateislami.net

चांद रात को इन अल्फ़ाज़ में तीन बार मसाजिद में एलान करवाइये : "तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुबारक हो कि रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का चांद नज़र आ गया है।"

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया(1)

मर्द का दाढ़ी मुन्डवाना या एक मुठ्ठी से घटाना दोनों ह़राम है। इस्लामी बहन का बे पर्दगी करना ह़राम है। बराहे करम ! रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की बरकत से इस्लामी भाई हमेशा के लिये एक मुठ्ठी दाढ़ी और इस्लामी बहनें मुस्तक़िल शरई पर्दा और ज़हे क़िस्मत ! मदनी बुरक़अ़ पहनने की निय्यत करें। (मर्द का दाढ़ी मुन्डाना या एक मुठ्ठी से घटाना और औ़रत का बे पर्दगी करना ह़राम और फ़ौरन तौबा कर के इन गुनाहों से बाज़ आना वाजिब है।)

झुक गया काबा सभी बुत मुंह के बल औंधे गिरे
दबदबा आमद का था, अहलंव व सहलन मरह़बा(2)

सुन्नतों और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने का अ़ज़ीम मदनी नुस्ख़ा येह है कि तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" करते हुए मदनी इन्आ़मात के रिसाले पुर कर के हर माह (की पहली तारीख़ को) जम्अ़ करवाने की निय्यत करें, हाथ उठा कर कहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

बदलियां रह़मत की छाईं बूंदियां रह़मत की आईं
अब मुरादें दिल की पाईं आमदे शाहे अ़रब है(3)

तमाम आ़शिक़ाने रसूल ब शुमूल निगरान व ज़िम्मेदारान, रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में ख़ुसूसिय्यत के साथ कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र

1.....शाहनामा इस्लाम, स. 111
2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 147
3.....क़बालए बख़्शिश, स. 184

www.dawateislami.net

की सआ़दत ह़ासिल करें और इस्लामी बहनें 30 दिन तक रोज़ाना घर के अन्दर (सिर्फ़ घर की इस्लामी बहनों और मह़रमों में) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत जारी करें और फिर आयिन्दा भी रोज़ाना जारी रखने की निय्यत फ़रमाएं।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो[1]

अपनी मस्जिद, घर, दुकान, कारख़ाने वग़ैरा पर 12 अ़दद वरना कम अज़ कम एक अ़दद सब्ज़ सब्ज़ परचम रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की चांद रात से ले कर सारा महीना लहराइये। बसों, वेगनों, ट्रकों, ट्रॉलों, टेक्सियों, रिक्षों वग़ैरा पर ज़रूरतन अपने पल्ले से परचम ख़रीद कर बांध दीजिये। अपनी साईकल, स्कूटर और कार पर भी लगाइये। हर त़रफ़ सब्ज़ सब्ज़ परचमों की बहारें मुस्कुराती नज़र आएंगी। उ़मूमन ट्रकों के पीछे जानदारों की बड़ी बड़ी तस्वीरें और बेहूदा अश्आ़र लिखे होते हैं। मेरी आरज़ू है कि ट्रकों, बसों, वेगनों, रिक्षों, टेक्सियों, सूज़ूकियों और कारों वग़ैरा के पीछे नुमायां अल्फ़ाज़ में तह़रीर हो : **"मुझे दावते इस्लामी से प्यार है।"** मालिकाने बस और ट्रान्सपोर्ट वालों से मिल कर मदनी तरकीबें कीजिये और सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ के दिल की दुआ़एं लीजिये।

ज़रूरी एह़तियात़ : अगर झन्डे पर नक़्शे नाले पाक या कोई लिखाई हो तो इस बात का ख़याल रखिये कि न वोह लीरे लीरे हो, न ही ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। नीज़ जूं ही रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का महीना तशरीफ़ ले जाए फ़ौरन उतार लीजिये। अगर एह़तियात़ नहीं कर पाते और बे अदबी हो जाती है तो बिग़ैर नक़्श व तह़रीर के सादा सब्ज़ परचम लहराइये। (सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ भी ह़त्तल इमकान अपने मकाने बे निशान बनाम **"बैतुल फ़ना"** पर सादा झन्डा लगवाता है)

नबी का झन्डा ले कर निकलो दुन्या पर छा जाओ नबी का झन्डा अमन का झन्डा घर घर में लहराओ

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 669

अपने घर पर 12 झालरों (यानी लड़ियों) या कम अज़् कम 12 बल्बों से नीज़ अपनी मस्जिद व महल्ले में भी 12 दिन तक ख़ूब चरागां कीजिये। (मगर इन कामों के लिये बिजली चोरी करना ह़राम है। लिहाज़ा इस सिलसिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबिता कर के जाइज़ ज़राएअ़ की तरकीब बनाइये) सारे अ़लाक़े को सब्ज़ सब्ज़ परचमों और रंग बिरंगे बल्बों से सजा कर दुल्हन बना दीजिये। मस्जिद और घर की छत पर चौक वगै़रा पर राहगीरों और सुवारियों को तक्लीफ़ से बचाते हुए हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ किये बिगै़र फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ 12 मीटर या ह़स्बे ज़रूरत साइज़ के बड़े बड़े परचम लहराइये। बीच सड़क पर परचम मत गाड़िये कि इस से ट्रेफ़िक का निज़ाम मुतास्सिर (*disturb*) होता है। नीज़ गली वगै़रा कहीं भी इस त़रह़ की सजावट न कीजिये, जिस से मुसलमानों का रास्ता तंग हो और उन की ह़क़ तलफ़ी और दिल आज़ारी हो।

मशरिक़ो मग़रिब में इक इक बामे काबा पर भी एक
नस्ब परचम हो गया, अहलंव व सहलन मरह़बा(1)

हर इस्लामी भाई ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़ियादा, वरना कम अज़् कम 12 रुपै के मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट, जुलूसे मीलाद में बांटे और इस्लामी बहनें भी तक़्सीम करवाएं। इसी त़रह़ सारा साल अपनी दुकान वगै़रा पर तक़्सीमे रसाइल का एहतिमाम फ़रमा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये। शादी ग़मी की तक़ारीब में और मर्ह़ूमों के ईसाले सवाब की ख़ात़िर भी "**तक़्सीमे रसाइल**" कीजिये ! और दीगर मुसलमानों को इस की तरग़ीब दीजिये।

सगे मदीना का तह़रीर कर्दा पेम्फ़लेट "**जश्ने विलादत के 12 मदनी फूल**" मुमकिन हो तो 112 वरना कम अज़् कम 12 अ़दद नीज़ हो सके तो रिसाला "**सुब्ह़े बहारां**" 12 अ़दद मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के तक़्सीम कीजिये। ख़ुसूसन उन तन्ज़ीमों के सरबराहों तक पहुंचाइये जो जश्ने विलादत की

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 146

www.dawateislami.net

धूमें मचाते हैं। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के दौरान 1200 रुपै अगर येह न हो सके तो 112 रुपै और अगर येह भी न बन पड़े तो 12 रुपै (बालिग़ान) किसी सुन्नी आ़लिम को पेश कीजिये। अगर अपनी मस्जिद के इमाम, मुअज़्ज़िन या ख़ुद्दाम में बांट दें तब भी ठीक है बल्कि येह ख़िदमत हर माह जारी रखने की निय्यत करें तो मदीना मदीना। जुम्आ़ के रोज़ दें तो बेहतर कि जुम्आ़ को हर नेकी का सत्तर (70) गुना सवाब मिलता है। सुन्नतों भरे बयान की केसिट सुन कर कई लोगों की इस्लाह़ होने की ख़बरें हैं, आप ह़ज़रात में भी कुछ न कुछ ऐसे ख़ुश नसीब होंगे जो बयान की केसिट सुन कर मदनी माह़ोल से वाबस्ता हुए होंगे। लिहाज़ा ऐसी केसिटें और VCD's लोगों तक पहुंचाना, दीन की अ़ज़ीम ख़िदमत और बे इन्तिहा सवाब का बाइस है, तो जिस से बन पड़े हफ़्ते में वरना महीने में कम अज़ कम 12 ऑडियो या वीडियो केसिटें सुन्नतों भरे बयान की ज़रूर फ़रोख़्त करे। मुख़य्यर इस्लामी भाई अगर मुफ़्त तक़्सीम करें तो मदीना मदीना। जश्ने विलादत की ख़ुशी में बयान की केसिटें और VCD's ख़ूब तक़्सीम फ़रमाइये और तब्लीग़े दीन में ह़िस्सा लीजिये। शादी बियाह के मवाक़ेअ़ पर "**शादी कार्ड**" के साथ रिसाला और हो सके तो बयान की केसिट या VCD भी मुन्सलिक फ़रमाइये। ईद कार्डज़ का रवाज ख़त्म कर के इस की जगह भी येही राइज कीजिये ताकि जो रक़म ख़र्च हो उस से दीन का भी फ़ाएदा हो। मुझे लोग क़ीमती ईद कार्डज़ भिजवाते हैं, इस से दिल ख़ुश होने के बजाए जलता है। काश ! ईद कार्ड पर ख़र्च होने वाली रक़म दीन के काम में सर्फ़ की जाती ! नीज़ उस पर लगी हुई अफ़्शां (यानी चमकदार पावडर) से सख़्त परेशानी होती है।

उन के दर पे पलने वाला अपना आप जवाब   कोई ग़रीब नवाज़ तो कोई दाता लगता है

बड़े शह्र में हर अ़लाक़ाई मुशावरत का निगरान (क़स्बे वाले क़स्बे में) 12 दिन तक रोज़ाना मुख़्तलिफ़ मसाजिद में अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त मुन्अ़क़िद करे (ज़िम्मेदार इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाआ़त फ़रमाएं) रबीउ़ल

अव्वल शरीफ़ के दौरान होने वाले तमाम इजतिमाआ़त में जिन से हो सके वोह सारा महीना सब्ज़ परचम साथ लाया करें।

लब पे नाते रसूले अकरम हाथों में परचम   दीवाना सरकार का कितना प्यारा लगता है

ग्यारह की शाम को वरना 12 वीं शब को ग़ुस्ल कीजिये। हो सके तो इस ईदों की ईद की ताज़ीम की निय्यत से सफ़ेद लिबास, इमामा, सर बन्द, टोपी, सर पर ओढ़ने की सफ़ेद चादर, पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई चादर, मिस्वाक, जेब का रूमाल, चप्पल, तस्बीह़, इत्र की शीशी, हाथ की घड़ी, क़लम, क़ाफ़िला पेड वग़ैरा अपने इस्तिमाल की हर चीज़ मुमकिना सूरत में नई लीजिये। (इस्लामी बहनें भी अपनी ज़रूरत की जो जो अश्या मुमकिन हों वोह नई लें)

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा   आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने सुना कि

...रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम, ईमान का हिस्सा है। बनी इस्राईल के 200 सालह गुनहगार व बद किरदार शख़्स की बख़्शिश का ज़रीआ़ ताज़ीमे मुस्त़फ़ा ही बनी।

...सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में ताज़ीमे मुस्त़फ़ा का बहुत ज़ियादा जज़्बा था।

...ताज़ीमे मुस्त़फ़ा ह़याते मुबारक में ही नहीं बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

...मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्क़ो मह़ब्बत और हर मुआ़मले में आप का बे ह़द अदब नूरे ईमान में इज़ाफ़े का सबब और ईमान की जड़ है।

1 .....ज़ौक़े नात, स. 67

www.dawateislami.net

...किसी बादशाह की उस की क़ौम में ऐसी शानो शौकत और क़द्रो मन्ज़िलत नहीं देखी गई जैसी हुज़ूर ताजदारे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उन के सहाबा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में देखी गई।

...आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाले आलो अस्हाब, अज़्वाज, औलाद, तबर्रुकात और आप के ज़िक्रे अक्दस की भी ताज़ीम ज़रूरी है।

... ताज़ीमे मुस्त़फ़ा का तक़ाज़ा है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्सूब हर मुबारक चीज़ की ताज़ीम की जाए।

...आ़शिक़ाने रसूल जश्ने ईदे मीलादुन्नबी भी बड़ी धूम धाम से मनाते हैं क्यूंकि येह दिन हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत की वज्ह से अ़ज़मत वाला है।

...हमें भी चाहिये कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जश्न मना कर रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल करें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बे शुमार रह़मतें और ढेरों बरकतें हासिल होंगी।

मजलिसे तराजिम

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दावते इस्लामी** सारी दुन्या में इश्के़ रसूल की शम्एं रौशन करने और नेकी की दावत आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ शोबाजात के ज़रीए़ दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही शोबों में से एक शोबा "**मजलिसे तराजिम**" भी है जो शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा करने की ख़िदमत सर अन्जाम दे रही है ताकि उर्दू पढ़ने वालों के साथ साथ दुन्या की दीगर ज़बानें बोलने वाले करोड़ों लोग

www.dawateislami.net

भी फ़ैज़याब हो सकें और उन का भी येह मदनी ज़ेहन बन जाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । इन्तिहाई क़लील अ़र्से में अब तक इस मजलिस के तह़्त दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बहुत सी तसानीफ़ और मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का तर्जमा हो चुका है। हमें भी चाहिये कि मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का ख़ुद भी मुत़ालआ़ करें और अपने दोस्त व अह़बाब को भी पढ़ने की तरग़ीब दिलाएं, तक़्सीम का सिलसिला भी जारी रखें और हो सके तो नेकी की दावत आ़म करने की निय्यत से तह़ाइफ़ में कुतुबो रसाइल देते रहें।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो ![1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा"

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दावते इस्लामी** का मुश्कबार मदनी माह़ोल अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इस की बरकत से लाखों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। आप भी दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये। इन मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "**मदनी मुज़ाकरे**" में अव्वल ता आख़िर शिर्कत भी है। मदनी मुज़ाकरे की तो क्या ही बात है कि इस में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से किये गए मुख़्तलिफ़ सुवालात के दिलचस्प जवाबात सुन

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

कर इल्मे दीन ह़ासिल होता है और इल्मे दीन की फ़ज़ीलत में आता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने **अल्लाह** पाक की किताब से एक आयत सीखी हो तुम्हारे लिये 100 रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से बेहतर और तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने इ़ल्म का एक बाब सीखा हो जिस पर अ़मल किया गया हो या न किया गया हो, येह तुम्हारे लिये हज़ार रक्अ़त नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये, हाथों हाथ निय्यत करते हैं कि हम भी हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को यक़ीनी बनाएंगे और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत की दावत देते रहेंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ख़ूब बरकतें ह़ासिल होंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई इस्लामी भाई मदनी मुज़ाकरे की बरकत से अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कर चुके हैं। आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि बहुत से नौजवानों की त़रह़ मैं भी मुतअ़द्दद अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला था। फ़िल्में ड्रामे देखना, खेलकूद में वक़्त बरबाद करना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। घर में मदनी चैनल चलने की बरकत से मदनी मुज़ाकरा देखने की सआ़दत नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पिछले गुनाहों से ताइब हो कर फ़राइज़ो वाजिबात का आ़मिल बनने के लिये कोशां हूं, चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली है और मदनी हुल्या भी

[1]... ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل من تعلم القرآن وعلمہ، ۱/ ۱۴۲، حدیث: ۲۱۹

www.dawateislami.net

अपना लिया है, अल्लाह पाक का मज़ीद करम येह हुवा कि वालिदैन ने ब खुशी मुझे "**वक़्फ़े मदीना**" कर दिया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

सलाम के चन्द मदनी फूल

...मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना एक का दूसरे पर ह़क़ है। ...दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को हर बार सलाम करना कारे सवाब है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जब कोई शख़्स अपने भाई से मिले तो उसे सलाम करे फिर उन दोनों के दरमियान दरख़्त या दीवार ह़ाइल हो जाए और फिर मुलाक़ात हो तो फिर इसी त़रह़ उसे सलाम करे।(2) ...सलाम में पहल करना सुन्नत है। ...सलाम में पहल करने वाला रह़मते इलाही का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है।(3) ...सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी है।(4) ...सलाम (में

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...ابو داود، کتاب السلام، باب فی الرجل یفارق الرجل...الخ، ۴/ ۴۵۰، حدیث: ۵۲۰۰

3...ابو داود، کتاب السلام، باب فی فضل من بدأ بالسلام، ۴/ ۴۴۹، حدیث: ۵۱۹۷

4...شعب الایمان، باب فی مقاربة و موادة اهل الدین، ۶/ ۴۳۳، حدیث: ۸۷۸۶

www.dawateislami.net

पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं ।[1] ...اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं । साथ में وَ رَحْمَةُ اللهِ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी । और وَ بَرَكَاتُهٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी ।[2] ...इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं । ...सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले ।[3]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

...

1 ...کیمیائے سعادت، رکنِ دوم، اصل پنجم، باب سیم، ۱/۳۹۴
2 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 458 मुलख़्ख़सन, मुल्तक़तन
3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 464, 460, मुलख़्ख़सन, मुल्तक़तन
4 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

www.dawateislami.net

शौक़िया कुत्ता पालने का नुक़्सान

सुवाल : क्या शौक़िया कुत्ता पाल सकते हैं ?

जवाब : शौक़िया तौ़र पर कुत्ता नहीं पाल सकते। ह़दीसे पाक में है : जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो उस में (रह़मत के) फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।

(بخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، ۳/۱۹، حدیث: ۴۰۰۲)

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : बाज़ बच्चे कुत्तों के बच्चों को शौक़िया पालते और घरों में लाते हैं मां बाप को लाज़िम है कि बच्चों को इस से रोकें और अगर वोह न मानें तो सख़्ती करें। ह़दीस में जिन कुत्तों के घर में रहने से रह़मत के फ़िरिश्तों के न आने का ज़िक्र है उन कुत्तों से मुराद वोही कुत्ते हैं जिन को पालना जाइज़ नहीं है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 441)

मालूम हुवा कि शौक़िया तौ़र पर कुत्ता नहीं रख सकते, अगर किसी ने रखा तो उस के अ़मल में से रोज़ाना एक क़ीरात़ सवाब कम होगा, अलबत्ता खेती और बकरियों की ह़िफ़ाज़त और शिकार करने के लिये रख सकते हैं जैसा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात है : अगर कुत्ते एक मख़्लूक़ न होते तो मैं उन्हें क़त्ल करने का हुक्म देता पस हर सियाह कुत्ते को मार दो और जो लोग घरों में कुत्ता रखते हैं उन के अ़मल से रोज़ाना एक क़ीरात़ कम होता है मगर शिकार का कुत्ता, खेती की ह़िफ़ाज़त और बकरियों की ह़िफ़ाज़त के लिये कुत्ता (रख सकते हैं कि इन के रखने से सवाब में कमी नहीं आती)। (ترمذی، کتاب الاحکام والفوائد، باب ماجاء من امسک...الخ، ۳/۱۵۹، حدیث: ۱۴۹۵)

फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूरो मारूफ़ किताब फ़त्हुल क़दीर में है : जानवर, खेती, मकान की ह़िफ़ाज़त और शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है मगर इन सूरतों में भी कुत्तों को मकान के अन्दर न रखा जाए, हां ! अगर चोर या दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो मकान के अन्दर भी रख सकते हैं।

(فتح القدیر، کتاب البیوع، مسائل منثورہ، ۶/ ۲۴۶)

www.dawateislami.net

ITA-ATE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)

इता़अ़ते मुस्त़फ़ा

صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ فِيْ يَوْمٍ اَلْفَ مَرَّةٍ لَمْ يَمُتْ حَتّٰى يَرٰى مَقْعَدَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ "यानी जो मुझ पर दिन भर में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले।"(1)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने की अंगूठी न उठाई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो निकाल कर फेंक दी और इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई येह चाहता है कि आग का अंगारा अपने हाथ में रखे ?" जब आप तशरीफ़ ले गए तो लोगों ने उस से कहा : अंगूठी उठा लो और (बेच कर) इस से फ़ाएदा उठाओ। उस ने

1...الترغيب في فضائل الاعمال، باب مختصر من الصلاة...الخ، ص ١٤، حديث: ١٩

2.....हदाइके़ बख़्शिश, स. 186

कहा : अल्लाह पाक की क़सम ! जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे हाथ से उतार कर फेंका है मैं उसे कभी नहीं उठाऊंगा।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कैसे मुत़ीओ फ़रमां बरदार थे कि अगर वोह सह़ाबी चाहते तो अंगूठी उठा कर अपने इस्तिमाल में ला सकते थे, मगर कामिल मह़ब्बत व इत़ाअ़त ने इस बात की इजाज़त न दी कि मह़बूब ने जिस चीज़ को ना पसन्द करते हुए फेंक दिया उसे दोबारा हाथ लगाएं। यक़ीनन हर मुसलमान को चाहिये कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरत पर अ़मल करते हुए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में ज़िन्दगी गुज़ारे, जिन चीज़ों से आप ने मन्अ़ फ़रमाया उन से बचें और जिन्हें बजा लाने का हुक्म दिया पाबन्दी के साथ उन पर अ़मल पैरा हों क्यूंकि हर मुसलमान पर अल्लाह पाक और प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी लाज़िम है। चुनान्चे,

अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त वाजिब है

पारह 9, सूरतुल अन्फ़ाल, आयत नम्बर 1 में इरशाद होता है :

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۹، الانفال:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।

मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में फ़र्क़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में फ़र्क़ येह है कि रब तआ़ला की इत़ाअ़त सिर्फ़ उस के दिये गए हुक्म में होगी, उस के कामों में इत़ाअ़त नहीं हो सकती, लेकिन हुज़ूर

1 ...مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب في طرح خاتم الذهب، ص۸۹۱، حديث: ۵۴۷۲

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इत़ाअ़त तीन चीज़ों में की जाएगी (1)...आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किये गए कामों में, (2)...बयान कर्दा फ़रामीन में और (3)...आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने जो काम हुवा और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मन्अ़ न फ़रमाया उस में भी इत़ाअ़त होगी। यानी मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो फ़रमा दिया, उस को मानो, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जो कुछ खुद कर के दिखाया उसे भी मानो और जो किसी को करते हुए देख कर मन्अ़ न फ़रमाया उसे मानो।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक ने इन्सानों को ज़िन्दगी गुज़ारने और दुन्याओ आख़िरत में कामयाबी के लिये अपनी और अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का हुक्म दिया है और साथ ही येह इख़्तियार भी दिया है कि अह़कामे इलाही पर अ़मल करते हुए उस के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बन्दे बन कर चाहें तो जन्नत की अबदी नेमतों से लुत़्फ़ उठाएं या उस की ना फ़रमानी के मुर्तकिब हो कर जहन्नम के ह़क़दार ठहरें। लिहाज़ा दुन्याओ आख़िरत में सुर्ख़रू होने के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना पर अ़मल करने में ही आ़फ़िय्यत है क्यूंकि आप की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिये बेहतरीन नमूना है। चुनान्चे,

ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन नमूना

पारह 21, सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 21 में इरशाद होता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱، الاحزاب:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

1.....माख़ूज़ अज़ शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 66

www.dawateislami.net

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : मालूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़िन्दगी शरीफ़ सारे इन्सानों के लिये नमूना है, जिस में ज़िन्दगी का कोई शोबा बाक़ी नहीं रहता और येह भी मत़्लब हो सकता है कि रब (तआ़ला) ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़िन्दगी शरीफ़ को अपनी क़ुदरत का नमूना बनाया। कारीगर नमूना पर अपना सारा ज़ोरे सनअ़त सर्फ़ कर देता है। मालूम हुवा कि कामयाब ज़िन्दगी वोही है जो उन के नक़्शे क़दम पर हो, अगर हमारा जीना, मरना, सोना, जागना हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नक़्शे क़दम पर हो जाए तो येह सारे काम इबादत बन जाएं।[1]

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चर्चा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा ! दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम ! बहरे ख़ाके मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका हमारे लिये मश्अ़ले राह है, लिहाज़ा मुसलमान और सच्चे ग़ुलाम होने के नाते हम पर लाज़िम है कि तमाम मुआ़मलात में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो पैरवी करें और आप की सुन्नतों पर मज़बूती से अ़मल पैरा होते हुए ज़िन्दगी बसर करें कि येही हमारी नजात का ज़रीआ़ है। इस ज़िम्न में दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

---

1 .....नूरुल इरफ़ान, पारह 21, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 21

www.dawateislami.net

इताअ़ते मुस्त़फ़ा में ही नजात है

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَطَاعَنِیْ دَخَلَ الْجَنَّۃَ وَمَنْ عَصَانِیْ فَقَدْاَبٰی यानी जिस ने मेरा हुक्म माना वोह जन्नत में दाख़िल हो गया और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की वोह इन्कार करने वाला हो गया।[1]

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता, जब तक उस की ख़्वाहिश मेरे लाए हुए के ताबेअ़ न हो जाए।[2]

लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल, अफ़्आ़ल, अख़्लाक़ो आ़दात का बग़ौर मुत़ालआ़ कर के अपनी ज़िन्दगी सुन्नतों पर अ़मल करते हुए इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा में बसर करें।

सीरत भी अच्छी बनाओ और सूरत भी

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इत़ाअ़ते ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की अहम्मिय्यत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इन्सान को क़ुदरत ने दो क़िस्म के आज़ा दिये हैं : एक **ज़ाहिरी**, दूसरे **छुपे हुए**। ज़ाहिरी उ़ज़्व तो सूरत चेहरा, आंख, नाक, कान वग़ैरा हैं और छुपे हुए उ़ज़्व दिल, दिमाग़, जिगर वग़ैरा हैं। मुसलमान कामिल ईमान वाला जब हो सकता है कि सूरत में भी मुसलमान हो और दिल से भी यानी इस्लाम का उस पर ऐसा रंग चढ़े कि सूरत और सीरत दोनों को रंग दे, दिल में **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का जज़्बा मौजें मार रहा हो, उस में ईमान की शम्अ़ जल रही हो और सूरत ऐसी हो जो

1...بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، باب الاقتداء بسنن رسول اللّٰہ، ۴/۴۹۹، حدیث: ۷۲۸۰

2...نوادر الاصول، الاصل الثمانون والمائتان، ۲/۱۲۲۱، حدیث: ۱۵۱۸

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द थी यानी मुसलमान की सी हो। अगर दिल में ईमान है मगर सूरत ग़ैर मुस्लिम की सी तो समझ लो कि इस्लाम में पूरे दाख़िल न हुए, सीरत भी अच्छी बनाओ और सूरत भी।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इताअ़ते मुस्त़फ़ा करते हुए अपने ज़ाहिरो बात़िन को इस्लाम के मुत़ाबिक़ करने में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर हर सुन्नत पर अ़मल की कोशिश किया करते थे। चुनान्चे,

बात करते वक़्त मुस्कुराया करते

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जब भी बात करते तो मुस्कुराते। मैं ने अ़र्ज़ की : आप इस आ़दत को तर्क फ़रमा दीजिये, वरना लोग आप को अह़मक़ समझने लगेंगे। उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ने जब भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बात करते देखा या सुना तो आप को मुस्कुराते ही देखा (लिहाज़ा इसी सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मैं ऐसा करता हूं)।[2]

पतली पतली गुले क़ुदस की पत्तियां — उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें — उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम[3]

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द अपनी पसन्द

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक दरज़ी ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत की, मैं भी आप के साथ

---

1 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 82

2 ...مسند احمد، مسند الانصار، ۸/۱۷۱، حدیث: ۲۱۷۹۱

3 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 302, 303

शरीक था मेज़बान ने खाने में रोटी के साथ कद्दू मिला गोश्त का सालन पेश किया । मैं ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कद्दू शरीफ़ तलाश कर के तनावुल फ़रमाते देखा, उस दिन के बाद से मैं कद्दू शरीफ़ को पसन्द करता हूं ।[(1)]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में पैरविये मुस्त़फ़ा का कैसा जज़्बा था कि जिस काम का हुक्म नहीं भी दिया उसे भी शौक़ से अपनाते थे तो फिर जिस काम का हुक्म फ़रमाया करते थे उस में इत़ाअ़त का क्या आ़लम होगा । इस ज़िम्न में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के **इत़ाअ़ते रसूल** से मुतअ़ल्लिक़ प्यारे प्यारे चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं । चुनान्चे,

इत़ाअ़ते रसूल पर मुश्तमिल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त

सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और फ़रमाने रसूल

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक साइल आया, आप ने उसे रोटी का एक टुकड़ा अ़त़ा फ़रमा दिया, फिर एक खुश लिबास शख़्स आया तो आप ने उसे बिठा कर खाना खिलाया । लोगों ने इस फ़र्क़ की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है "اَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَھُمْ" यानी हर शख़्स से उस के दरजे के मुत़ाबिक़ बरताव करो ।[(2)]

---

❶...بخاری، کتاب البیوع، باب ذکر الخیاط، ۲/۱۷، حدیث: ۲۰۹۲

❷...ابو داود، کتاب الادب، باب فی تنزیل الناس منازلھم، ۴/۳۴۳، حدیث: ۴۸۴۲

मेहमान नवाज़ी की अक़्साम और इन के तक़ाज़े

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के अ़मल से मालूम हुवा कि लोगों के मक़ामो मर्तबे का लिह़ाज़ करते हुए उन की मेहमान नवाज़ी, ख़ात़िर तवाज़ोअ़ और ताज़ीमो तौक़ीर करनी चाहिये। हर मेहमान के साथ उस की हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ सुलूक करना चाहिये, मेहमानों में कुछ तो वोह होते हैं जो घन्टे दो घन्टे के लिये आते हैं और चाए, पानी पीने के बाद चले भी जाते हैं और बाज़ के लिये खाने पीने का ख़ास एहतिमाम ज़रूरी होता है, बाज़ वोह होते हैं जिन्हें हम शादी बियाह, अ़क़ीक़े वग़ैरा किसी तक़रीब में दावत दे कर बुलाते हैं, इस में अमीरो ग़रीब का इम्तियाज़ किये बिग़ैर खिलाने पिलाने और बिठाने में सब के लिये यक्सां एहतिमाम करना चाहिये, ऐसा न हो कि अमीरो कबीर लोग तो शाहाना अन्दाज़ में बैठे ख़ूब अन्वाओ़ अक़्साम के उ़म्दा खानों से लुत़्फ़ उठाएं, मगर मुफ़्लिसो मुतवस्सित़ लोगों (Middle class) को आ़म खाने खिलाए जाएं, ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये कि इस से मुसलमानों की दिल शिकनी होती है। बाज़ मेहमान बहन, भाई या क़रीबी रिश्तेदार होते हैं, जो कुछ दिनों के लिये रहने आते हैं, उन की मेहमान नवाज़ी भी करनी चाहिये कि

ह़दीसे पाक में है : जो **अल्लाह** पाक और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है, वोह मेहमान का इकराम करे, एक दिन रात उस का **जाइज़ा** है (यानी एक दिन उस की पूरी ख़ात़िरदारी करे, ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उस के लिये पुर तकल्लुफ़ खाना तय्यार करवाए) और **ज़ियाफ़त** तीन दिन है (यानी एक दिन बाद जो घर में मौजूद हो पेश करे) और तीन दिन के बाद **सदक़ा** है।(1)

(1)...بخاری، کتاب الادب، باب اکرام الضیف...الخ، ۴/۱۳۶، حدیث:۶۱۳۵

www.dawateislami.net

हमें चाहिये कि मेहमानों के मरातिब के मुत़ाबिक़ उन की तकरीम में किसी क़िस्म की कोताही न करें और हर मुसलमान के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं क्यूंकि हुस्ने सूलूक की बरकत से जहां आपस की मह़ब्बतों के चराग़ रौशन होते हैं, वहीं सुन्नत पर अ़मल के साथ साथ दोनों जहां की भलाइयां भी नसीब होती हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान को हर हर हुक्मे रसूल की तामील करनी चाहिये और अपने हर अ़मल में आप की इत्तिबाअ़ को पेशे नज़र रखना चाहिये। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان चूंकि मह़ब्बते मुस्त़फ़ा के आला मर्तबे पर फ़ाइज़ थे इसी लिये उन का हर अ़मल सुन्नते मुस्त़फ़ा के मुत़ाबिक़ हुवा करता और येही वज्ह है कि वोह ज़बाने अक़्दस से निकले हुए फ़रमान पर लाज़िमी अ़मल करते। चुनान्चे,

सह़ाबियात और इताअ़ते रसूल

मन्क़ूल है कि एक मरतबा शहनशाहे मदीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि रास्ते में मर्द व औ़रतें मिल जुल कर चल रहे हैं। आप ने औ़रतों से मुख़ात़िब हो कर इरशाद फ़रमाया : पीछे रहो और रास्ते के दरमियान में नहीं बल्कि एक त़रफ़ हो कर चला करो। इस के बाद से औ़रतें इस क़दर सड़क के कनारे हो कर चलतीं कि उन के कपड़े दीवारों से रगड़ खा रहे होते थे।[(1)]

मौजूदा ज़माने की औ़रतों की ह़ालते ज़ार

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में हमारे लिये बेहतरीन दर्स है कि उन सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ एक बार

(1) ...ابوداود، کتاب الادب، باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطریق، ۴/ ۴۷۰، حدیث: ۵۲۷۲

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया कि "पीछे रहो ! रास्ते के दरमियान से न गुज़रा करो" तो उन्हों ने इस हुक्म की ऐसी तामील की, कि दीवारों से लग कर चलने से उन के कपड़े अटक जाया करते थे । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ी ज़माना मुसलमानों में पाई जाने वाली बे ह़याई पर अफ़्सोस का इज़्हार करते हुए फ़रमाते हैं : आज कल अक्सर मुसलमान औ़रतों ने मर्दों के शाना ब शाना चलने की नापाक धुन में ह़या की चादर उतार फेंकी है और अब दीदा ज़ेब साढ़ियों, नीम ड़रयां ग़रारों, मर्दाना वज़्अ़ के लिबासों, मर्द जैसे बालों के साथ शादी होलों, होटलों, तफ़रीह़ गाहों और सिनेमा घरों में अपनी आख़िरत बरबाद करने में मश्ग़ूल हैं । आज का नादान मुसलमान ख़ुद T.V, VCR और INTERNET पर फ़िल्में ड्रामें चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाच रंग की मह़फ़िलें जमा कर, ग़ैर मुस्लिमों की नक़्क़ाली में مَعَاذَ الله दाढ़ी मुन्डा कर, बे शर्माना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, मेक अप करवा कर मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाह में ले जा कर ख़ुद अपने हाथों अपने लिये जहन्नम में जाने के आमाल कर रहा है ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झंकार न सुनी जाए, इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें ।

ह़दीस शरीफ़ में है : "**अल्लाह** पाक उस क़ौम की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता, जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों ।"(1) इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ (यानी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शरई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना)

(1)...تفسیراتِ احمدیہ، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ:۳۱، ص۵۶۵

www.dawateislami.net

और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो! यक़ीनन बे पर्दगी तबाहियो बरबादी का सबबे अ़ज़ीम है। मगर अफ़्सोस! हमें इस की कोई परवा नहीं। ख़ुदारा! अपनी आख़िरत की फ़िक्र कीजिये! और अपनी औ़रतों और मह़ारिम को पर्दे की तरग़ीब दीजिये! जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "**दय्यूस**"(2) हैं और दय्यूस के लिये जन्नत में दाख़िले से मह़रूमी की वई़द है। चुनान्चे,

जन्नत में दाख़िले से मह़रूम

रह़मते आ़लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1)...दय्यूस, (2)...मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत और (3)...शराब नोशी का आ़दी।"(3)

लिहाज़ा इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा करते हुए ख़ुद भी बद निगाही से बचिये और अपने घरवालों को भी पर्दे की तल्क़ीन कीजिये! घर में शरई पर्दा राइज करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि अपने घरवालों को दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता कीजिये! उन्हें अपने अ़लाक़े में होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में भेजा करें।

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, अन्नूर, तह़तुल आयत : 31

2....."दय्यूस" वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या मह़रिमा के साथ किसी अजनबी को देखे और उसे अपने ह़ाल पे छोड़ दे (उस पर ग़ैरत न खाए)। (درمختار، کتاب الحدود، باب التعزیر، ۶/ ۱۱۳)

3...مسند بزار، مسند ابن عباس، ۱۲/ ۲۶۹، ۲۷۰، حدیث: ۲۰۵۰، ۲۰۵۱

www.dawateislami.net

मद्रसतुल मदीना लिल बनात में क़ारिया इस्लामी बहनें मदनी मुन्नियों को फ़ी सबीलिल्लाह कु़रआने पाक हि़फ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम देती हैं। **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात** में बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों को इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाई त़ौर पर फ़ी सबीलिल्लाह कु़रआन पढ़ातीं, नमाज़, दुआ़एं और उन के मख़्सूस मसाइल वग़ैरा सिखाती हैं। **मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन** में इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों को ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट दुरुस्त अदाएगी के साथ कु़रआने करीम पढ़ाती और सुन्नत के मुत़ाबिक़ उन की मदनी तरबियत करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कमो बेश 72 ममालिक में त़लबाओ त़ालिबात इन्टरनेट के ज़रीए़ कु़रआने करीम की तालीम ह़ासिल कर रहे हैं।

दावते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ानो बालिग़ात में 12 हज़ार से ज़ाइद त़लबाओ त़ालिबात दुरुस्त मख़ारिज के साथ कु़रआने मजीद की तालीम ह़ासिल करने में मसरूफ़े अ़मल हैं।

येही है आरज़ू तालीमे कु़रआं आ़म हो जाए तिलावत करना सुब्ह़ो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी भाई ख़ुद भी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और हफ़्तावार इजतिमाई त़ौर पर देखे जाने वाले मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाया करें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से इताअ़ते मुस्त़फ़ा करने, गुनाहों से बचने और शरीअ़त के अह़कामात पर अ़मल करने का ज़ेहन बनेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना रबीआ़ और इताअ़ते रसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ ह़ासिल था, एक दिन

www.dawateislami.net

आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ रबीअ़ा ! तुम शादी क्यूं नहीं कर लेते ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं शादी नहीं करना चाहता क्यूंकि एक तो मेरे पास इतना मालो अस्बाब नहीं कि औ़रत की ज़रूरियात पूरी कर सकूं और दूसरा येह कि मुझे येह बात पसन्द नहीं कि कोई चीज़ मुझे आप से दूर कर दे। मेरे इस जवाब पर आप ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। कुछ अ़र्से बाद फिर इरशाद फ़रमाया : रबीअ़ा ! तुम शादी क्यूं नहीं कर लेते ? मैं ने फिर वोही जवाब दिया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ न फ़रमाया। फिर मैं ने दिल में सोचा कि **अल्लाह** पाक की क़सम ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से ज़ियादा जानते हैं कि दुन्याओ आख़िरत में मेरे लिये बेहतरी किस में है। **अल्लाह** पाक की क़सम ! अब की बार अगर आप ने शादी के ह़वाले से कुछ फ़रमाया तो मैं कह दूंगा कि ठीक है आप जो चाहें हुक्म फ़रमाएं। जब तीसरी बार आप ने इरशाद फ़रमाया : रबीअ़ा ! तुम शादी क्यूं नहीं कर लेते ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! आप जो चाहें हुक्म फ़रमाएं। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार के एक क़बीले का नाम ले कर इरशाद फ़रमाया : उन के पास चले जाओ और उन से कहो कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे नाम येह पैग़ाम दे कर भेजा है कि तुम अपने क़बीले की फ़ुलां औ़रत से मेरा निकाह़ कर दो। चुनान्चे, मैं उन के पास गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम सुनाया तो उन्हों ने बड़े पुर तपाक त़रीक़े से मेरा इस्तिक़्बाल किया और कहने लगे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद को ख़ाली न लौटाया जाए। लिहाज़ा उन्हों ने शफ़्क़तो मेहरबानी से पेश आते हुए उस औ़रत से मेरा निकाह़ कर दिया।(1)

---

(1)...مسند احمد، مسند المدنیین، ۵ / ۵۲۹، حدیث: ۱۶۵۷۷

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में इत़ाअ़ते रसूल का कैसा जज़्बा हुवा करता था कि शादी जैसे अहम मुआ़मले में भी ह़ीला बहाना किये बिग़ैर पैग़ामे मुस्त़फ़ा सुनते ही अपनी लड़की का निकाह़ कर दिया। लिहाज़ा अगर हम चाहते हैं कि हमारी दुन्याओ आख़िरत बेहतर हो तो हमें चाहिये कि तमाम तर मुआ़मलात में इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा को पेशे नज़र रखें, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का दर्स देते हुए सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ज़मानए जाहिलिय्यत की वोह तमाम फ़ुज़ूल रस्में ख़त्म फ़रमा दीं जिन पर अ़र्सए दराज़ से अ़मल जारी था। काश ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सदक़े हमें भी इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा का जज़्बा नसीब हो जाए और ज़बानी जम्अ़ ख़र्च से निकल कर काश ! हम अ़मली त़ौर पर सच्चे पक्के आ़शिक़े रसूल बन जाएं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी तालीमात और दौरे जाहिलिय्यत की ग़लत़ रस्में

मन्क़ूल है कि दौरे जाहिलिय्यत में किसी के मर जाने पर कई दिनों तक नौह़ा करना, सोग मनाना आ़म मामूल था। यहां तक कि इस्लाम से पहले अ़रब में बेवा औ़रत शौहर के इन्तिक़ाल के बाद एक साल तक टूटे फूटे मकान, बुरे लिबास में मल्बूस तमाम घरवालों से अ़लाह़दा रहती[1] यूं एक साल तक सोग किया करती थी। लेकिन इस्लाम के बाद ताजदारे अम्बिया, सरवरे हर दोसरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शौहर के इ़लावा दीगर रिश्तेदारों के (इन्तिक़ाल पर) सोग के लिये तीन दिन जब कि शौहर के इन्तिक़ाल पर बीवी (ग़ैर ह़ामिला बेवा) के लिये चार माह दस दिन सोग की इ़द्दत मुक़र्रर फ़रमाई।[2] दीगर रिश्तेदारों के मरने पर तीन दिन से ज़ियादा

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 151

2 ...ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ۵/ ۲۲۳

सोग की रस्म ज़मानए जाहिलिय्यत में अगर्चे त़वील अ़र्से से राइज थी लेकिन जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमा दिया तो इस हुक्म पर सह़ाबियात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ का अ़मल मिसाली था। चुनान्चे,

सह़ाबियात और हुक्मे रसूल पर अ़मल

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के भाई का इन्तिक़ाल हुवा तो चौथे रोज़ ही उन्हों ने ख़ुश्बू मंगवा कर लगाई और फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मुझे इस की बिल्कुल ह़ाजत न थी फ़क़त़ हुक्मे रसूल पर अ़मल मक़्सूद था वोह येह कि मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिम्बर शरीफ़ पर इरशाद फ़रमाते सुना : शौहर के इलावा किसी अ़ज़ीज़ रिश्तेदार के मरने पर मुसलमान औ़रत को तीन दिन से ज़ियादा सोग जाइज़ नहीं।[1]

इसी त़रह़ जब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वालिद का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हों ने भी तीन दिन के बाद अपने रुख़्सारों पर ख़ुश्बू मली और फ़रमाया : मुझे इस की ज़रूरत न थी सिर्फ़ हुक्मे रसूल की तामील मक़्सूद थी।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोग की शरई ह़ैसिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां येह मालूम हुवा कि सह़ाबियात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ इत़ाअ़ते रसूल के जज़्बे से सरशार और दिलो जां से **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त गुज़ार थीं, वहीं येह भी मालूम हुवा कि इस्लाम में क़रीबी रिश्तेदार के मरने पर सोग की मुद्दत

---

1 ...ابو داود، کتاب الطلاق، باب احداد المتوفى عنها زوجها، ۲/ ۴۲۲، حديث: ۲۲۹۹

2 ...ابو داود، کتاب الطلاق، باب احداد المتوفى عنها زوجها، ۲/ ۴۲۲، حديث: ۲۲۹۹

www.dawateislami.net

तीन दिन और शौहर के इन्तिक़ाल पर औ़रत के लिये चार माह दस दिन है। उ़मूमन देखा जाता है कि आज अगर किसी घर में मय्यित हो जाए तो अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब बहुत से ग़ैर शरई कामों का इरतिकाब किया जाता है, जैसे नौह़ा यानी मय्यित की ख़ूबियां ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर बयान कर के आवाज़ से रोया जाता है जिसे बैन करना भी कहते, येह बिल इज्माअ़ ह़राम है। यूहीं वावेला, वामुसीबता (यानी हाए मुसीबत) कह कर चिल्लाना, गिरेबान फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम और ह़राम हैं।[1] होना तो येह चाहिये कि ऐसे मौक़ए़ पर सब्र से काम लेते हुए रिज़ाए इलाही पर रिज़ामन्दी का इज़्हार किया जाए। मगर अफ़्सोस ! घरवाले और आस पड़ोस के लोग बिल ख़ुसूस ख़वातीन ज़ोर ज़ोर से रोती चिल्लाती हैं। अगर कोई सब्रो ज़ब्त़ से काम लेते हुए उन का साथ न दे तो उस पर त़ानो तश्नीअ़ के तीर बरसाते हुए इस त़रह़ की गुफ़्तगू की जाती है कि इसे देखो ! कैसी सख़्त दिल है "**जवान**" मय्यित पर भी आंखों में एक आंसू नहीं आया। यूं एक मुसलमान के बारे में बद गुमानी और उस की दिल आज़ारी का गुनाह भी सर लेती हैं।

याद रखिये ! ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत वफ़ात पर ग़मगीन हो जाना, चेहरे से ग़म का ज़ाहिर होना, इसी त़रह़ बिला आवाज़ रोना वग़ैरा मन्अ़ नहीं है। हां ! ऐसे में शरीअ़ते मुत़ह्हरा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी मन्अ़ है। **अल्लाह** पाक हमें शरीअ़त की पासदारी करते हुए अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

[1]... الجوھرۃ النیرۃ، کتاب الصلوۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۹

فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۷

www.dawateislami.net

किन कामों में इताअ़त लाज़िम है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा कहलाता है। इत़ाअ़त में हर वोह काम शामिल है जिन से बचने का और जिन्हें करने का हुक्म है। जिस त़रह़ नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, रोज़ा रखना और दीगर नेक काम ज़रूरी हैं, इसी त़रह़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, मूसीक़ी वग़ैरा गुनाहों से इजतिनाब भी लाज़िम है। मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज मुसलमानों ने दीन से दूरी के बाइस अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी को छोड़ दिया, शायद इसी वज्ह से मुआ़शरे में गुनाह आ़म होते जा रहे हैं। जिस त़रफ़ नज़र उठाइये बे अ़मली, बे राहरवी और सुन्नतों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के दिलसोज़ नज़्ज़ारे हैं। नमाज़ें छोड़ना, गालियां देना, तोहमतें लगाना, बद गुमानियां करना, ग़ीबतें करना, लोगों के ऐ़ब जानने की जुस्तजू में रहना, मालूम होने पर ऐ़बों को उछालना, बात बात पे झूट बोलना, झूटे वादे करना, किसी का माल ना ह़क़ खाना, फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजों के नशे में मख़्मूर रहना, सरे आ़म सूद व रिश्वत का लेन देन करना, मां बाप की ना फ़रमानी करना, ग़ुरूर व तकब्बुर, ह़सद व रियाकारी और बुग़्ज़ो कीना जैसे बे शुमार गुनाह आ़म हैं। याद रखिये ! एक दिन मौत हमारा रिश्तए ह़यात मुन्क़त़ेअ़ कर के हमें आरास्ताओ पैरास्ता कमरों के नर्म और आराम देह गदेलों से उठा कर क़ब्र की मिट्टी पर सुला देगी, फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा। लिहाज़ा इन साअ़तों को ग़नीमत जानते हुए गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिये ! और नेकियों में वक़्त गुज़ारिये।

आइये ! इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा का जज़्बा पैदा करने की सच्ची निय्यत से चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं :

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा काम, नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना और वालिदैन के साथ भलाई करना है।[1]

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के नज़्दीक फ़राइज़ के बाद सब से पसन्दीदा काम किसी मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।[2]

﴾3﴿...इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से पसन्दीदा घर वोह है, जिस में यतीम को इ़ज़्ज़त दी जाती हो।[3]

﴾4﴿...इरशाद फ़रमाया : कोई अपने मुसलमान भाई को इस से अफ़्ज़ल फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंचे तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे।[4]

﴾5﴿...इरशाद फ़रमाया : अच्छी बात के इ़लावा अपनी ज़बान को रोके रखो, इस त़रह़ तुम शैत़ान पर ग़ालिब आ जाओगे।[5]

﴾6﴿...इरशाद फ़रमाया : कामिल तरीन ईमान वाला वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों और अहले ख़ाना के साथ नर्मी बरतने वाला हो।[6]

﴾7﴿...इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के किसी ऐ़ब पर

---

❶...بخاری، کتاب التوحید، باب وسمی النبی الصلاۃ عملا...الخ، ۴/۵۸۹، حدیث: ۷۵۳۴

❷...معجم کبیر، ۱۱/ ۵۹، حدیث: ۱۱۰۷۹

❸...معجم کبیر، ۱۲/ ۲۹۶، حدیث: ۱۳۴۳۴

❹...جامع بیان العلم وفضلہ، باب دعاء رسول اللہ لمستمع العلم وحافظہ ومبلغہ، ص ۶۲، حدیث: ۱۸۵

❺...مسند ابی یعلی، مسند ابی سعید الخدری، ۱/ ۴۳۲، حدیث: ۹۹۶

❻...ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی استکمال الایمان...الخ، ۴/ ۲۷۸، حدیث: ۲۶۲۱

मुत्तलअ़ हुवा फिर उस की पर्दापोशी की तो अल्लाह पाक उस की पर्दापोशी फ़रमा कर उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

《8》...इरशाद फ़रमाया : जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों पर ज़ाहिर न किया तो अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे[2] ।[3]

वईदों पर मुश्तमिल सात फ़रामीने मुस्तफ़ा

《1》...इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक दो क़िस्म के लोगों की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा :

(1)...क़त़ए़ रेह़मी करने वाला और (2)...बुरा पड़ोसी ।[4]

《2》...इरशाद फ़रमाया : ज़ुल्म से बचो कि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अन्धेरियां होगा ।[5]

《3》...इरशाद फ़रमाया : फ़ोह़श गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है ।[6]

《4》...इरशाद फ़रमाया : बुग़्ज़ से बचो कि येह दीन को मून्ड देता (यानी तबाहो बरबाद कर देता) है ।[7]

《5》...इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान अ़हद शिकनी और वादा ख़िलाफ़ी करे उस पर अल्लाह पाक, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की लानत है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल ।[8]

1...معجم کبیر، ۱۷/ ۲۸۸،حدیث:۷۹۵

2.....नेक आमाल के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 743 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आमाल"** का मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद है।

3...معجم اوسط، ۱/ ۲۱۴،حدیث:۷۳۷

4...مسند فردوس، ۱/ ۲۳۷،حدیث: ۱۷۸۰

5...مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، ص۱۰۶۹،حدیث:۶۵۷۶

6...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الحیاء، ۳/ ۴۰۶،حدیث:۲۰۱۶

7...ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۵۶، ۴/ ۲۲۸،حدیث:۲۵۱۶

8...بخاری، کتاب الجزیة والموادعة، باب اثم من عاھد ثم غدر، ۲/ ۳۷۰،حدیث:۳۱۷۹

www.dawateislami.net

﴾6﴿...इरशाद फ़रमाया : जो किसी मोमिन को ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाए या उस के साथ मक्र और धोकेबाज़ी करे वोह मलऊ़न है।[1]

﴾7﴿...इरशाद फ़रमाया : जो अपने किसी मुसलमान भाई को उस के किसी ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाए जिस से वोह तौबा कर चुका हो तो आ़र दिलाने वाला उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि वोह ख़ुद उस गुनाह को न कर ले[2]।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी बयान कर्दा फ़रामीने मुस्त़फ़ा पर अ़मल करने में कामयाब हो जाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में भी नेकियों की मदनी बहार आ जाएगी और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा मिल जाएगा। आइये ! हम भी पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पढ़ने, वालिदैन और तमाम मुसलमानों से हुस्ने सुलूक करने, मुसलमानों की दिल आज़ारी से बचने, उन का दिल ख़ुश करने, यतीमों पर शफ़्क़त और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त, अहलो अ़याल की मदनी तरबियत करने, मुसलमानों को अच्छी बातें बताने, उन की पर्दा पोशी करने, मुसीबत पर सब्र करने, ज़ुल्मो ज़ियादती, फ़ोह़्श गोई, बुग़्ज़ो कीना, वादा ख़िलाफ़ी, धोका देही वग़ैरा गुनाहों से बचने की ख़ुद भी निय्यत करते हैं और दूसरों को भी बचाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नेकियों में रग़बत और इस्तिक़ामत पाने के लिये हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्याओ आख़िरत की बे शुमार बरकतें नसीब होंगी।

1...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الخیانة والغش، ۳/ ۳۷۸، حدیث: ۱۹۴۸

2.....बुरे आमाल की वईदों के बारे में तफ़्सीली मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब "**जहन्नम में ले जाने वाले आमाल** (जिल्द अव्वल, दुवुम)" और "**76 कबीरा गुनाह**" का मुत़ालआ़ कीजिये !

3...ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۵۳، ۴/ ۲۲۶، حدیث: ۲۵۱۳

मजलिस मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिशात के ऐ़न मुत़ाबिक़ इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों और जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबाओ त़ालिबात को बा अ़मल बनाने और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़त "मजलिस मदनी इन्आ़मात" का क़ियाम अ़मल में आया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "काश ! दीगर फ़राइज़ो सुनन की बजा आवरी के साथ साथ तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इन मदनी इन्आ़मात को भी अपनी ज़िन्दगी का दस्तूरुल अ़मल बना लें और तमाम ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी भी अपने अपने ह़ल्के़ में (मदनी इन्आ़मात के रिसाले) को आ़म कर दें और हर मुसलमान अपनी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी के लिये इन मदनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना कर अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनने का अ़ज़ीम तरीन इन्आ़म पा ले।"

आइये ! निय्यत करते हैं कि हम भी नेकी के कामों में बढ़ कर चढ़ कर हिस्सा लेंगे और मदनी इन्आ़मात पर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करेंगे बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिला कर ढेरों सवाब कमाएंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने इताअ़ते मुस्त़फ़ा के मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुनने की सआ़दत ह़ासिल की :

www.dawateislami.net

...यक़ीनन एक मुसलमान के लिये दीनो दुन्या की भलाइयां ह़ासिल करने का बेहतरीन नुस्ख़ा **इताअ़ते मुस्तफ़ा** ही है।

...अपने तमाम तर मुआ़मलात को **इताअ़ते मुस्तफ़ा** के सांचे में ढालने वाला ही दुन्याओ आख़िरत में कामयाब है।

...सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का मुक़द्दस किरदार भी हमारे लिये मश्अ़ले राह है कि उन ह़ज़रात ने भी अपनी सारी ज़िन्दगी इताअ़ते मुस्तफ़ा में बसर की।

दुआ़ है **अल्लाह** पाक हमें अपना और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुत़ीओ फ़रमां बरदार बनाए और हर बुरे काम से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम
“हफ्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़”

प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियां करने और नेकी की दावत को आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्मे दीन से माला माल ऐसे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बड़ी बरकतें हैं। इ़ल्मे दीन की मह़फ़िल में शिर्कत का सवाब मिलता और ढेरों इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की सआ़दत ह़ासिल होती है। अह़ादीसे मुबारका में इ़ल्मे दीन सीखने के बड़े फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं। एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं

मरवी है कि जो शख़्स इ़ल्म की त़लब में किसी रास्ते पर चलता है अल्लाह पाक उसे जन्नत के रास्ते पर ले जाता है और त़ालिबे इ़ल्म की ख़ुशनूदी के लिये फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं।[1]

आइये ! हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : नमाज़ों से जी चुराना, दाढ़ी मुन्डाना, वालिदैन को सताना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह, मेरी ज़िन्दगी का ह़िस्सा बन चुके थे, गाने बाजे सुनने का तो मुझे जुनून (यानी पागल पन) की ह़द तक शौक़ था, त़रह़ त़रह़ के गाने मेरे मोबाइल फ़ोन और कम्प्यूटर में हर वक़्त मौजूद रहते। इन्टरनेट के ग़लत़ इस्तिमाल के गुनाह में भी मुलव्वस था। जीन्ज़ (JEANS) के सिवा किसी और कपड़े की पतलून न पहनता ह़त्ताकि एक मरतबा ईद के मौक़अ़ पर वालिद साह़िब ने सूट सिलवा लिया, लेकिन मैं ने उसे पहनने से इन्कार कर दिया और नफ़्स की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ पेन्ट–शर्ट ख़रीद कर ईद के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर वोही पहनी। फ़ेशन का दिल दादह होने की वज्ह से मैं ने इमामा और कुर्ते पाजामे के बारे में तो कभी सोचा भी न था। मेरे सुधरने के अस्बाब कुछ यूं हुए कि हमारी मस्जिद में जो नए इमाम साह़िब तशरीफ़ लाए, वोह ख़ुश क़िस्मती से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दावते इस्लामी**" के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे। एक दिन उन्हों ने मुझ पर "इनफ़िरादी कोशिश"

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/ ۳۱۲، حدیث: ۲۶۹۱

www.dawateislami.net

करते हुए हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाई। उन की "इनफ़िरादी कोशिश" के सबब मैं ने दो एक बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कर ही ली। एक दिन उन्हों ने मेरे वालिद साहिब को "दावते इस्लामी" के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान की केसिट **"मुर्दे की बे बसी"** तोह़फ़तन दी। **अल्लाह** पाक की रह़मत से एक रात मुझे येह केसिट सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस बयान की बरकत से मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी, ख़ास कर इस जुम्ले : "इन्सान को मरने के बाद अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, गाड़ी हुई तो वोह भी गेरेज में खड़ी रह जाएगी।" ने मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, अपना मोबाइल और कम्प्यूटर भी गानों की नुह़ूसतों से पाक कर दिया और "दावते इस्लामी" के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। इस "मदनी माह़ोल" ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया, मैं ने अपने चेहरे पर प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ मदनी लिबास ज़ेबे तन कर लिया।

***अल्लाह* करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो**[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

...."तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "**इस्मिद**" है कि येह निगाह को रौशन करता और पलकें उगाता है।"[2] ...पथ्थर का सुरमा इस्तिमाल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (यानी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं।[3] ...सुरमा सोते वक़्त इस्तिमाल करना सुन्नत है।[4] ...सुरमा इस्तिमाल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1)...कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां[5], (2)...कभी दाईं (यानी सीधी) आंख में तीन और बाईं (यानी उल्टी) में दो[6], (3)...तो कभी दोनों आंखों में दो-दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी-बारी दोनों आंखों में लगाइये।[7] इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा। ...याद रखिये ! तकरीम के

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷

3...فتاوی ھندیة، کتاب الکراھیة، الباب العشرون فی الزینة...الخ، ۵/ ۳۵۹

4.....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180

5...ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، ۳/ ۲۹۳، حدیث: ۱۷۶۳

6...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الادب، باب فی الکحل...الخ، ۶/ ۱۲۷، حدیث: ۳

7...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الادب، باب فی الکحل...الخ، ۶/ ۱۲۷، حدیث: ۲

जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर उल्टी आंख में।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

रहूं हर दम मुसाफ़िर काश "मदनी क़ाफ़िलों" का मैं
करम हो जाए मौला गर ! इनायत येह बड़ी होगी[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

...…...…...

शौहर को नेक नमाज़ी बनाने का नुस्ख़ा

अगर किसी औ़रत का ख़ावन्द बुरी आ़दतों का शिकार हो और घर में हर वक़्त झगड़ा रहता हो तो हर बार "بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के साथ ग्यारह सौ ग्यारह (1111) मरतबा सूरतुल फ़ातिह़ा पढ़ कर पानी पर दम करे फिर अपने ख़ावन्द को पिलाए। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ शौहर नेक नमाज़ी बन जाएगा। (येह अ़मल इस त़रह़ करना है कि शौहर वग़ैरा को पता न चले वरना ग़लत़ फ़हमी के सबब फ़साद हो सकता है चाहें तो कूलर वग़ैरा में दम कर लीजिये और शौहर समेत सभी इस से पानी पियें)। (ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी, स. 32)

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 393

www.dawateislami.net

IKHTIYARATE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)

इख़्तियाराते मुस्तफ़ा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर जुम्आ़ के दिन और रात में 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, अल्लाह पाक उस की 100 ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और अल्लाह पाक एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा, जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा, जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिलाशुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बाद वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है।[1]

उन पर दुरूद जिन को कसे बे कसां कहें उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ीम रात !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र कि जिस ने हमें एक मरतबा फिर अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइलो बरकात वाली मुक़द्दस रात नसीब फ़रमाई, येह वोह अ़ज़ीम रात है कि जिस में मह़बूबे रब, सुल्त़ाने अ़रब, रसूले अकरम, शाफ़ेए़ उमम, सरापा जूदो करम, दाफ़ेए़ रन्जो अलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में जल्वा गरी हुई।

1 ...شعب الایمان، باب فی الصلوات، فضل الصلاۃ علی النبی...الخ، ۳/ ۱۱۱، حدیث: ۳۰۳۵
روح البیان، پ۲۴، حم السجدۃ، تحت الآیۃ: ۱۲، ۸/ ۲۴۱

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 209

www.dawateislami.net

शबे क़द्र से अफ़्ज़ल रात

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बेशक सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शबे विलादत, "**शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल**" है क्यूंकि शबे विलादत सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वागर होने की रात है जब कि लैलतुल क़द्र सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ताकर्दा शब है और जो रात ज़ुहूरे ज़ाते सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से मुशर्रफ़ हो, वोह उस रात से ज़ियादा शरफ़ व इ़ज़्ज़त वाली है जो मलाएका के नुज़ूल की बिना पर मुशर्रफ़ है।(1)

जब काएनात में कुफ़्रो शिर्क और वह़शतो बरबरिय्यत का घुप अन्धेरा छाया हुवा था। 12 रबीउ़ल अव्वल को मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के मकाने रह़मत निशान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आ़लम को जगमग जगमग कर दिया। सिसकती हुई इन्सानिय्यत की आंख जिन की त़रफ़ लगी हुई थी, वोह ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम आ़लमीन के लिये रह़मत बन कर जल्वा गर हुए।

12 रबीउ़ल अव्वल को **अल्लाह** पाक के नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुन्या में जल्वागरी होते ही कुफ़्रो ज़ुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान "किस्रा" के मह़ल पर ज़ल्ज़ला आया, चौदह कंगुरे गिर गए। ईरान का जो आतश कदा एक हज़ार साल से शोलाज़न था वोह बुझ गया, दरियाए सावह ख़ुश्क हो गया, काबे को वज्द आ गया।

---

1 ...ماثبت من السنة، ذکر شھر ربیع الاول، ص ۱۰۰

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज की इस अ़ज़ीम नूरानी रात में बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के गुलशन के महकते फूल, रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़्मत का मुबारक ज़िक्र कर के रह़मतें और बरकतें समेटने की कोशिश करते हैं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बारगाहे इलाही में वोह मक़ामो मर्तबा ह़ासिल है जो न किसी को मिला है और न मिलेगा। सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया न किसी को मिले न किसी को मिला

कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम[1]

मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ता किये गए फ़ज़ाइलो कमालात में से एक फ़ज़्ल इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा भी है। आइये ! सुनते हैं कि अल्लाह पाक ने अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क्या क्या इख़्तियारात अ़ता फ़रमाए हैं और ह़ुकूमते मुस्त़फ़ा कैसी शान वाली है। चुनान्चे,

इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा

बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : जब क़ियामत का दिन होगा तो लोग इकठ्ठे हो कर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे कि आप अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारी शफ़ाअ़त कीजिये। वोह फ़रमाएंगे : मैं इस के लिये नहीं, तुम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का दामन पकड़ो क्यूंकि वोह अल्लाह पाक के ख़लील हैं। लोग उन के पास जाएंगे तो वोह भी येही फ़रमाएंगे कि मैं इस के लिये

1.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 80

नहीं, तुम हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास जाओ क्यूंकि वोह कलीमुल्लाह हैं। लोग उन की ख़िदमत में हाज़िर होंगे तो वोह भी येही फ़रमाएंगे : मैं इस के लिये नहीं, तुम हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में जाओ कि वोह रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं। लोग उन की ख़िदमत में हाज़िर होंगे तो वोह भी येही फ़रमाएंगे कि मैं इस के लिये नहीं तुम हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में चले जाओ। लोग मेरे पास आएंगे तो मैं फ़रमाऊंगा कि मैं ही तो शफ़ाअ़त करने के लिये हूं। फिर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त त़लब करूंगा तो मुझे इजाज़त मिलेगी और **अल्लाह** पाक मुझे ऐसी ह़म्द इल्क़ा फ़रमाएगा जो अभी मेरे ज़ेहन में नहीं, मैं उस की ह़म्द करते हुए सजदे में गिर जाऊंगा तो कहा जाएगा : يَامُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ **"यानी ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अपना सर उठाइये, कहिये आप की सुनी जाएगी, मांगिये अ़ता किया जाएगा, शफ़ाअ़त कीजिय क़बूल की जाएगी।"** मैं अ़र्ज़ करूंगा : يَارَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ **"या रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत।"** तो फ़रमाया जाएगा : **"जाइये ! और अपनी उम्मत में से हर उस शख़्स को (जहन्नम से) निकाल लीजिये जिस के दिल में जव बराबर भी ईमान हो।"** मैं जाऊंगा और उन्हें निकाल लाऊंगा। फिर वापस आऊंगा और ह़म्द करते हुए रब तआ़ला के हुज़ूर सजदे में गिर जाऊंगा तो कहा जाएगा : يَامُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ **"यानी ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अपना सर उठाइये, कहिये आप की सुनी जाएगी, मांगिये अ़ता किया जाएगा, शफ़ाअ़त कीजिये क़बूल की जाएगी।"** मैं अ़र्ज़ करूंगा : يَارَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ **"ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत।"** कहा जाएगा : **"जाइये ! और अपनी उम्मत के हर उस शख़्स को निकाल लाइये जिस के दिल में राई के दाने बराबर भी ईमान हो।"** चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मैं जाऊंगा और ऐसों को निकाल लाऊंगा। फिर वापस आऊंगा और ह़म्दे इलाही बजा लाते हुए उस के हुज़ूर सजदे में गिर जाऊंगा तो फ़रमाया जाएगा : يَامُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ **"यानी ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अपना सर उठाइये, कहिये आप की सुनी जाएगी, मांगिये अ़त़ा किया जाएगा, शफ़ाअ़त कीजिये क़बूल की जाएगी।"** मैं अ़र्ज़ करूंगा : يَارَبِّ اُمَّتِىْ اُمَّتِىْ **"ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत।"** कहा जाएगा : **"जाइये ! और जिस के दिल में राई के दाने से भी कम ईमान हो, उसे भी निकाल लाइये।"** चुनान्चे, मैं जाऊंगा और ऐसा ही करूंगा।[1]

दिखाई जाएगी मह़्शर में शाने मह़्बूबी *कि आप ही की ख़ुशी आप का कहा होगा*[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शर्हे ह़दीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि हम बज़ाते खुद रब तआ़ला की ह़म्द नहीं कर सकते, जब तक कि हम को हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) न सिखाएं, हमारी ह़म्द हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सिखाने से है और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ह़म्द रब तआ़ला के सिखाने से और रब (عَزَّوَجَلَّ) की जैसी ह़म्द, हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने की है और करेंगे, मख़्लूक़ में किसी ने ऐसी ह़म्द न की। इसी लिये आप का नाम **"अह़मद"** है (यानी बहुत ज़ियादा ह़म्दो तारीफ़ करने वाला। मज़ीद फ़रमाते हैं:) उस सजदे में हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रब (عَزَّوَجَلَّ) की बे मिसाल ह़म्द करेंगे और मक़ामे मह़्मूद पर रब तआ़ला, हुज़ूरे

1 ...بخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب عزوجل یوم القیمة...الخ، ۴/۵۷۲، حدیث:۷۵۱۰

2 .....ज़ौक़े नात, स. 35

अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ऐसी ह़म्द करेगा जो कोई न कर सका होगा, इस लिये हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का नाम "**मुह़म्मद**" है (यानी जिस की बहुत ज़ियादा ह़म्दो तारीफ़ की गई) । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुनहगारों को निकालने (यानी अपनी उम्मत की आसानी) के लिये दोज़ख़ में तशरीफ़ ले जाएंगे, जिस से पता लगा कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हम गुनहगारों की ख़ातिर अदना (यानी मामूली) जगह पर तशरीफ़ ले जाएंगे। अगर आज मीलाद शरीफ़ या मजलिसे ज़िक्र में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ लाएं, तो उन के करम से बईद (यानी ना मुमकिन) नहीं, इस से उन की शान नहीं घटती, हमारी और हमारे घरों की शान बढ़ जाती है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैदाने मह़शर और शाने मुस्तफ़ा

سُبْحَانَ الله عَزَّوَجَلَّ ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हमारे आक़ाओ मौला, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कैसी शानो शौकत का मालिक बनाया और आप को किस क़दर इख़्तियारात से नवाज़ा है कि मह़शर के दिन जब कि सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, तांबे की तपती ज़मीन पर नंगे पाउं खड़ा कर दिया जाएगा, इन्सान अपने बहन भाइयों, मां बाप और बीवी बच्चों से भागता फिर रहा होगा, उस दिन हर किसी को अपनी ही पड़ी होगी नीज़ गुनहगार अपने पसीने में डुबकियां खा रहे होंगे, ऐसे कड़े दिन में **रह़ीमो करीम आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुनहगार उम्मत को अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचाने की ख़ातिर बे चैन होंगे और **अल्लाह** पाक की बारगाहे आ़ली में शफ़ाअ़ते उम्मत की इजाज़त त़लब फ़रमाएंगे, **अल्लाह** पाक अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शफ़ाअ़त का इख़्तियार

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 417 ता 419, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

अ़ता फ़रमाएगा और आप बि इज़्ने इलाही अपने उम्मतियों की शफ़ाअ़त कर के उन्हें जहन्नम से छुटकारा दिलवा कर दाख़िले जन्नत फ़रमाएंगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो! इस में कोई शक नहीं कि सारी काएनात का ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** पाक है और सब उसी के मोह़ताज, कोई भी चीज़ उस के क़ब्ज़े व इख़्तियार से बाहर नहीं, मगर उस ने अपने फ़ज़्लो करम से मख़्लूक़ में से अपने ख़ास बन्दों मसलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को भी मुख़्तलिफ़ इख़्तियारातो कमालात से नवाज़ा है। इसे यूं समझिये कि जो जिस मर्तबे का मालिक था, उसे उसी के मुताबिक़ इख़्तियारात अ़ता किये गए। बिलाशुबा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वोह क़ाबिले एह़तिराम और मुक़द्दस हस्तियां हैं कि जिन का मक़ाम मख़्लूक़ में सब से बुलन्दो बाला है, लिहाज़ा उन्हें अ़ताकर्दा मोजिज़ात, कमालात और इख़्तियारात भी दीगर मख़्लूक़ से अफ़्ज़लो आला हैं, फिर उन में भी ताजदारे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो मक़ामो मर्तबा ह़ासिल है, वोह किसी से ढका छुपा नहीं, लिहाज़ा दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुक़ाबले में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात ज़ाइद और अफ़्ज़लो आला हैं।

सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल — और रसूलों से आला हमारा नबी
मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार — ताजदारों का आक़ा हमारा नबी
सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे — है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी
सारे ऊंचों में ऊंचा समझिये जिसे — है उस ऊंचे से ऊंचा हमारा नबी
सब चमक वाले उज्लों में चमका किये — अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 138 ता 140

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक ने अपने पाकीज़ा कलाम कुरआने करीम में भी जा बजा **इख़्तियाराते मुस्तफ़ा** को बयान फ़रमाया है।

आइये ! चन्द आयाते मुबारका सुनते हैं। चुनान्चे,

आयाते मुबारका और इख़्तियाराते मुस्तफ़ा

पारह 5, सूरतुन्निसा, आयत नम्बर 65 में इरशाद होता है :

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَ يُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۶۵﴾

(پ۵، النسآء: ۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें।

पारह 10, सूरतुत्तौबह, आयत नम्बर 29 में इरशादे खुदावन्दी है :

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ لَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ (پ۱۰، التوبة: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लड़ो उन से जो ईमान नहीं लाते **अल्लाह** पर और क़ियामत पर और हराम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को हराम किया **अल्लाह** और उस के रसूल ने।

पारह 28, सूरतुल हश्र, आयत नम्बर 7 में इरशाद होता है :

وَ مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ (پ۲۸، الحشر: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ फ़रमाएं बाज़ रहो।

www.dawateislami.net

पारह 22, सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 36 में इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ

(پ۲۲، الاحزاب:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औ़रत को पहुंचता है कि जब **अल्लाह** व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस से मालूम हुवा कि आदमी को रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी हर मुआ़मले में वाजिब है और नबी عَلَیْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में कोई अपनी ज़ात का भी ख़ुद मुख़्तार नहीं।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ख़ालिक़े काएनात جَلَّ جَلَالُه ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कैसे कैसे इख़्तियारात से नवाज़ा है कि मुसलमानों के आपस के मुआ़मलात में भी आप को ह़ाकिमो मुख़्तार बना कर मुसलमानों पर आप की इत़ाअ़त को लाज़िम क़रार दिया। यूं ही आप को इस बात का भी इख़्तियार दिया कि जिसे चाहें, जो चाहें हुक्म फ़रमा दें और जब जिस चीज़ से चाहें, मन्अ़ फ़रमा दें। चुनान्चे,

मह़बूब किया ! मालिको मुख़्तार बनाया !

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** पाक के नाइबे मुत़्लक़ हैं, तमाम जहान हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़तुल आयत : 36

तह़ते तसर्रुफ़ (यानी इख़्तियार में) कर दिया गया, जो चाहें करें, जिसे जो चाहें दें, जिस से जो चाहें वापस लें, तमाम जहान में उन के हुक्म का फेरने वाला कोई नहीं, तमाम जहान उन का मह़कूम (यानी हुक्म का पाबन्द) है और वोह अपने रब के सिवा किसी के मह़कूम नहीं, तमाम आदमियों के मालिक हैं, जो उन्हें अपना मालिक न जाने ह़लावते सुन्नत (यानी सुन्नत की मिठास) से मह़रूम रहे। तमाम ज़मीन उन की मिल्क है, तमाम जन्नत उन की जागीर है, مَلَكُوْتُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْض (यानी आस्मानो ज़मीन की सल्त़नतें) हुज़ूर के ज़ेरे फ़रमान, जन्नत व नार की कुन्जियां दस्ते अक्दस में दे दी गईं, रिज़्क़ व ख़ैर और हर क़िस्म की अ़त़ाएं, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही के दरबार से तक़्सीम होती हैं, दुन्याओ आख़िरत हुज़ूर की अ़त़ा का एक ह़िस्सा है। शरीअ़त के अह़काम हुज़ूर के क़ब्ज़े में कर दिये गए कि जिस पर जो चाहें ह़राम फ़रमा दें और जिस के लिये जो चाहें ह़लाल कर दें और जो फ़र्ज़ चाहें मुआ़फ़ फ़रमा दें।[1]

कौनैन बनाए गए सरकार की ख़ात़िर कौनैन की ख़ात़िर तुम्हें सरकार बनाया
कुन्जी तुम्हें दी अपने ख़ज़ानों की ख़ुदा ने मह़बूब किया मालिको मुख़्तार बनाया[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इख़्तियाराते मुस्तफ़ा पर मुश्तमिल चन्द वाक़िआ़त

आइये ! इस ज़िम्न में इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनते हैं :

﴾1﴿...फ़र्ज़िय्यते ह़ज और इख़्तियारे मुस्त़फ़ा

जब **अल्लाह** पाक ने ह़ज फ़र्ज़ फ़रमाया और रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़र्ज़िय्यते ह़ज का एलान करते हुए ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया :

1.....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1,1 / 79 ता 85

2.....ज़ौक़े नात स. 33

اَیُّهَا النَّاسُ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ الْحَجَّ فَحُجُّوا यानी ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ फ़रमा दिया है लिहाज़ा ह़ज किया करो । तो एक सह़ाबिये रसूल (ह़ज़रते सय्यिदुना अक़रअ़ बिन ह़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ है ? तीन मरतबा उन्हों ने येही सुवाल किया मगर रसूलों के सालार, नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर बार ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : لَوْ قُلْتُ نَعَمْ لَوَجَبَتْ यानी अगर मैं ने "**हां**" कह दिया होता तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता ।(1)

याद रहे कि ह़ज ज़िन्दगी में एक बार ही फ़र्ज़ है जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अक़रअ़ बिन ह़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब हर साल ह़ज फ़र्ज़ होने के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : بَلْ مَرَّةً وَّاحِدَةً فَمَنْ زَادَ فَتَطَوُّعٌ यानी ह़ज एक ही मरतबा (फ़र्ज़) है जो एक से ज़ाइद करेगा वोह नफ़्ल होगा ।(2)

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत, इख़्तियारात और फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि हर साल ह़ज फ़र्ज़ कर देने का इख़्तियार होने के बा वुजूद उम्मत को मशक़्क़त से बचाने के लिये "हां" फ़रमा कर हर साल ह़ज फ़र्ज़ न फ़रमाया, अलबत्ता अपने इख़्तियार का वाज़ेह़ तौर पर इज़्हार फ़रमा दिया कि अगर मैं "हां" कह देता तो हर साल ही ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता । याद रहे येह कोई पहला मौक़अ़ न था बल्कि बहुत से मवाक़ेअ़ पर ग़म ख़्वारे उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम गुनाहगारों की मशक़्क़त व दुश्वारी का लिह़ाज़ करते हुए शरई मसाइल में हमारी आसानियों का ख़ास ख़याल फ़रमाया । इस ज़िम्न में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

---

1 ...مسلم، کتاب الحج، باب فرض الحج مرة فی العمر، ص۵۳۶، حدیث:۳۲۵۷

2 ...مستدرک، کتاب التفسیر، فرضیة الحج فی العمر مرة واحدة، ۲/۱۰، حدیث:۳۲۱۰

www.dawateislami.net

ख़ुद मुख़्तारी और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के बारे में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं। चुनान्चे,

उम्मत पर शफ़्क़त व मेहरबानी

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : لَوْلَاۤ اَنْ اَشُقَّ عَلٰى اُمَّتِیْ لَفَرَضْتُ عَلَيْهِمُ السِّوَاكَ كَمَا فَرَضْتُ عَلَيْهِمُ الْوُضُوْءَ यानी अगर मुझे अपनी उम्मत की दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं उन पर मिस्वाक को उसी त़रह़ फ़र्ज़ कर देता जिस त़रह़ मैं ने उन पर वुज़ू फ़र्ज़ किया है।(1)

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : لَوْلَاۤ اَنْ اَشُقَّ عَلٰى اُمَّتِیْ لَاَمَرْتُهُمْ اَنْ يُّؤَخِّرُوا الْعِشَاءَ اِلٰى ثُلُثِ اللَّيْلِ اَوْ نِصْفِهٖ यानी अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त का ख़याल न होता तो मैं इ़शा की नमाज़ को तिहाई या आधी रात तक मुअख़्ख़र करने का हुक्म देता।(2)

﴾3﴿...इरशाद फ़रमाया : لَوْلَا ضَعْفُ الضَّعِيْفِ وَسُقْمُ السَّقِيْمِ لَاَخَّرْتُ هٰذِهِ الصَّلَاةَ اِلٰى شَطْرِ اللَّيْلِ यानी अगर बूढ़ों की कमज़ोरी और मरीज़ों की बीमारी का ख़याल न होता तो इस नमाज़ (यानी नमाज़े इ़शा) को आधी रात तक ज़रूर मुअख़्ख़र कर देता।(3)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबारका से मालूम हुवा कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर चाहते तो इ़शा की नमाज़ को मुअख़्ख़र फ़रमा देते कि तिहाई या निस्फ़ रात से पहले नमाज़े इ़शा पढ़ना जाइज़ ही न होता और इसी त़रह़ हर नमाज़ से पहले मिस्वाक को फ़र्ज़ फ़रमा देते कि बिग़ैर मिस्वाक नमाज़ ही न होती।(4) मगर उम्मत पर शफ़्क़त व मेहरबानी करते हुए आसानी की वज्ह से ऐसा न फ़रमाया।

1...مسند احمد، حدیث تمام بن العباس، ۱/ ۴۵۹، حدیث: ۱۸۳۵

2...ترمذی، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی تاخیر صلوۃ العشاء الآخرۃ، ۱/ ۲۱۴، حدیث: ۱۶۷

3...ابو داود، کتاب الصلوۃ، باب وقت العشاء الآخرۃ، ۱/ ۱۸۵، حدیث: ۴۲۲

4.....माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 280

इज़्ने ख़ुदा से हो तुम मुख़्तारे हर दो आ़लम

दोनों जहां तुम्हारी ख़ैरात खा रहे हैं (1)

याद रहे ! मिस्वाक शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है। चुनान्चे,

प्यारे आक़ा की मिस्वाक से मह़ब्बत

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ اِذَا دَخَلَ بَيْتَهٗ بَدَاَ بِالسِّوَاكِ यानी हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी दौलतख़ाने में तशरीफ़ लाते तो सब से पहले मिस्वाक ही किया करते थे।(2) और रात या दिन में जब भी आप आराम फ़रमाते तो बेदार हो कर वुज़ू से पहले मिस्वाक शरीफ़ किया करते थे।(3)

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि दीगर सुन्नतों के साथ साथ मिस्वाक शरीफ़ की सुन्नत पर भी अ़मल किया करें। इस से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नत का सवाब तो मिलेगा ही साथ ही साथ मुंह की पाकीज़गी और अल्लाह पाक की रिज़ा भी ह़ासिल होगी। जैसा कि

मुंह की पाकीज़गी और रिज़ाए रब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِّلرَّبِّ यानी मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और रब तआ़ला की रिज़ा का ज़रीआ़ है।(4)

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 297

2...مسلم، کتاب الطھارۃ، باب السواك، ص ۱۲۴، حدیث: ۵۹۱

3...ابو داود، کتاب الطھارۃ، باب السواك لمن قام من اللیل، ۱/ ۵۴، حدیث: ۵۷

4...بخاری، کتاب الصوم، باب السواک الرطب والیابس للصائم، ۱/ ۶۳۷

﴾2﴿...ह़रम शरीफ़ की घास और इख़्तियारे मुस्त़फ़ा

फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़रमे मक्का की घास वग़ैरा काटने की ह़ुरमत बयान करने के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गुज़ारिश पर अपने ख़ास इख़्तियारात का इस्तिमाल करते हुए सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ज़रूरतों की वज्ह से ह़रम शरीफ़ से **इज़ख़िर नामी घास** (अपने आप उगने वाली घास) काटने को ह़लाल व जाइज़ कर दिया । चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ مَکَّۃَ बेशक **अल्लाह** पाक ने मक्के शरीफ़ को ह़रम बनाया है । लिहाज़ा न यहां की घास उखेड़ी जाए और न ही यहां का दरख़्त काटा जाए (कि येह सब काम ह़रमे मक्का में ह़राम व ममनूअ़ हैं) । इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : اِلَّا الْاِذْخِرَ لِصَاغَتِنَا وَلِسُقُفِ بُیُوْتِنَا यानी हमारे सुनारों और हमारे घर की छतों के लिये इज़ख़िर घास को जाइज़ फ़रमा दीजिये । तो आप ने इरशाद फ़रमाया : اِلَّا الْاِذْخِرَ यानी इज़ख़िर घास की तुम्हें इजाज़त है ।(1)

अ़क़ीदए सह़ाबा

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि ह़रम शरीफ़ की घास वग़ैरा काटने की ह़ुर्मत के बारे में वाज़ेह़ फ़रमान सुन लेने के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबी इज़ख़िर घास को जाइज़ क़रार देने की फ़रमाइश कर रहे हैं । इस से मालूम होता है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ कोई आ़म इन्सान या अपने जैसा बशर न समझते थे बल्कि उन का अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़रामो ह़लाल के अह़कामात में तब्दीली का मुकम्मल इख़्तियार

❶...بخاری، کتاب البیوع، باب ماقیل فی الصواغ، ۲/۱۲، حدیث: ۲۰۹۰

www.dawateislami.net

दिया है और फिर खुद हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी येह न फ़रमाया कि मुझे इस का इख़्तियार नहीं बल्कि अपने इख़्तियारात को इस्तिमाल करते हुए इज़्ख़िर घास को ह़लालो जाइज़ क़रार दे कर गोया उन के इस अ़क़ीदे पर अपनी मोहरे तस्दीक़ सब्त़ फ़रमा दी।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा के अब तक बयान किये गए तमाम वाक़िआ़त, उन चीज़ों या अह़कामात के बारे में हैं जिन में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इख़्तियारात से बिला इम्तियाज़ अपनी उम्मत के तमाम अफ़राद के लिये आसानी अ़त़ा फ़रमाई। अब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की वोह शान भी मुलाह़ज़ा कीजिये कि एक चीज़ जो सारी उम्मत के लिये फ़र्ज़ो वाजिब है कि अगर कोई तर्क कर दे तो गुनाहगार हो मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इख़्तियारात से इम्तियाज़ी त़ौर पर एक या चन्द अफ़राद को उस फ़र्ज़ो वाजिब के तर्क की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी, यूं ही एक चीज़ जो सारी उम्मत के लिये तो ह़रामो ना जाइज़ है कि अगर कोई करे तो गुनाहगार हो मगर आप ने किसी एक या चन्द मख़्सूस अफ़राद के लिये उसे ह़लालो जाइज़ फ़रमा दिया। आइये ! चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनते हैं।

﴾3﴿...पन्ज वक़्ता नमाज़ और इख़्तियारे मुस्त़फ़ा

इस में कोई शक नहीं कि हर मुसलमान पर दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार कुफ़्र है और जान बूझ कर एक बार भी छोड़ने वाला गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब और जहन्नम की आग का ह़क़दार है जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दिन रात में पांच नमाज़ें (फ़र्ज़) हैं।"(1) मगर क़ुरबान जाइये ! सरकारे नामदार, नबिय्ये मुख़्तार

(1)...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الصلوات...الخ، ص۳۵، حدیث:۱۰۰

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात पर कि सारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ होने के बा वुजूद तीन फ़र्ज़ नमाज़ें छोड़ने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। चुनान्चे,

मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मैं इस शर्त़ पर इस्लाम क़बूल करता हूं कि दो नमाज़ें ही पढ़ा करूंगा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बूल फ़रमा लिया।(1) याद रहे कि तर्के नमाज़ की येह इजाज़त सिर्फ़ उन्ही साह़िब के लिये ख़ास थी किसी और को बिला उ़ज़्रे शरई एक नमाज़ भी तर्क करना जाइज़ नहीं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सारे मुसलमानों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं मगर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन साह़िब को अपने इख़्तियार से तीन नमाज़ें न पढ़ने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी।

रोज़े का कफ़्फ़ारा

यूंही रोज़े के कफ़्फ़ारे का भी एक वाक़िआ़ है, वोह भी समाअ़त फ़रमा लीजिये, येह बात ज़ेहन में रखिये कि रमज़ान का रोज़ा बिला इजाज़ते शरई तोड़ने वाले पर शराइत़ पाए जाने की सूरत में क़ज़ा के साथ साथ कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होता है और कफ़्फ़ारा येह है कि "मुमकिन हो तो एक रक़बा यानी बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके तो पै दर पै (यानी मुसल्सल) 60 रोज़े रखे, येह भी न कर सके तो 60 मसाकीन को पेट भर, दोनों वक़्त खाना खिलाए।"(2)

रोज़ा तोड़ने वाले हर मुसलमान के लिये येही हुक्मे शरई है मगर शारेए़ इस्लाम, शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को रोज़े का कफ़्फ़ारा मुआ़फ़ फ़रमाते हुए ख़ुद ही इस्तिमाल करने का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया। चुनान्चे,

---

1 ...مسند احمد، مسند البصريين، ۷/۲۸۳، حديث: ۲۰۳۰۹

2 ...ردالمحتار، كتاب الصوم، مطلب فى الكفارة، ۳/ ۴۴۷

www.dawateislami.net

﴾4﴿...सज़ा को इन्आ़म में बदल दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं हलाक हो गया। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस चीज़ ने तुम्हें हलाकत में डाल दिया ? अ़र्ज़ की : रोज़े की ह़ालत में अपनी बीवी से सोह़बत कर बैठा हूं। इरशाद फ़रमाया : क्या गुलाम आज़ाद कर सकते हो ? अ़र्ज़ की : नहीं । इरशाद फ़रमाया : क्या मुसलसल दो माह के रोज़े रख सकते हो ? अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : क्या 60 मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : बैठ जाओ । इसी दौरान बारगाहे रिसालत में (सदक़े की) खजूरों का टोकरा लाया गया। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : इन्हें ख़ैरात कर दो। अ़र्ज़ की : अपने से ज़ियादा किसी मोह़ताज पर ख़ैरात करूं ? ह़ालांकि पूरे मदीनए मुनव्वरा में कोई घर हम से ज़ियादा मोह़ताज नहीं। येह बात सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये, ह़त्ताकि दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए और इरशाद फ़रमाया : जाओ ! येह खजूरें अपने घरवालों को खिला दो (तुम्हारा कफ़्फ़ारा अदा हो गया) ।[1]

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में इस ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बाद मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मुसलमानो ! गुनाह का ऐसा कफ़्फ़ारा किसी ने भी न सुना होगा (कि रोज़ा तोड़ने पर) सवा दो मन ख़ुरमे, बारगाहे सरकार से अ़त़ा होते हैं कि खुद खा लो, कफ़्फ़ारा हो गया। वल्लाह ! येह मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

1...مسلم، کتاب الصیام، باب تغلیظ تحریم الجماع...الخ، ص ۴۳۳، حدیث: ۲۵۹۵

www.dawateislami.net

बारगाहे रह़मत है कि **सज़ा** को **इन्आ़म** से बदल दे। (मज़ीद फ़रमाते हैं कि) उन की एक निगाहे करम **कबाइर** (यानी कबीरा गुनाहों) को **ह़सनात** (यानी नेकियों में तब्दील) कर देती है जब तो अरह़मुर्राह़िमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने गुनाहगारों, ख़त़ावारों, तबाहकारों को उन का दरवाज़ा बताया कि : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ (پ۵، النسآء:۶۴) गुनाहगार तेरे दरबार में ह़ाज़िर हो कर मुआ़फ़ी चाहें और तू शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ख़ुदा को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿...गवाही और इख़्तियारे मुस्तफ़ा

अल्लाह पाक ने बाहमी लेन देन के मुआ़मलात में दो मर्दों को गवाह बनाने का हुक्म देते हुए **पारह 3, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 282** में इरशाद फ़रमाया :

وَ اسْتَشْهِدُوْا شَهِیْدَیْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْۚ (پ۳، البقرة:۲۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और दो गवाह कर लो अपने मर्दों में से।

इस से मालूम हुवा कि किसी भी मुआ़मले में तन्हा मर्द की गवाही शरअ़न क़बूल नहीं और येह तमाम मुसलमानों के लिये है मगर नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मरज़िये मुबारक से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस आ़म हुक्म से बरी और आज़ाद क़रार देते हुए किसी भी मुआ़मले में इन की तन्हा गवाही को दो मर्दों की गवाही के बराबर कर दिया और इरशाद फ़रमाया : مَنْ شَهِدَ لَهُ خُزَيْمَةُ اَوْ شَهِدَ عَلَيْهِ فَهُوَ حَسْبُهُ यानी ख़ुज़ैमा किसी के ह़क़ में या किसी के ख़िलाफ़ गवाही दें तो तने तन्हा इन की गवाही काफ़ी है।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 30 / 531

2...معجم کبیر، ۴/ ۸۷، حدیث: ۳۷۳۰

www.dawateislami.net

﴾6﴿...इद्दत का हुक्म और इख़्तियारे मुस्तफ़ा

अगर किसी औ़रत का शौहर मर जाए और वोह ह़ामिला न हो तो उस की इद्दत अल्लाह पाक ने कुरआने करीम में चार माह दस दिन बयान फ़रमाई है। चुनान्चे, **पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 234** में इरशाद होता है :

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ (پ۲، البقرة: ۲۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ह़ामिला की इद्दत तो वज़्ए़ ह़म्ल है (यानी बच्चा जनते ही इद्दत ख़त्म हो जाएगी) जैसा कि "सूरतुत्त़लाक़" में मज़्कूर है, यहां ग़ैरे ह़ामिला का बयान है, जिस का शौहर मर जाए, उस की इद्दत चार माह दस रोज़ है। इस मुद्दत में न वोह निकाह़ करे, न अपना मस्कन (यानी शौहर का घर) छोड़े, न बे उ़ज़्र तेल लगाए, न ख़ुश्बू लगाए, न सिंगार करे, न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेहंदी लगाए, न जदीद निकाह़ की बातचीत खुल कर करे।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयत और इस की तफ़्सीर की रौशनी में वाज़ेह़ तौर पर मालूम हुवा कि अगर ग़ैरे ह़ामिला औ़रत का शौहर फ़ौत हो जाए तो उस की इद्दत चार माह दस दिन है। आइये अब इस मुआ़मले में भी सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इख़्तियार मुलाह़ज़ा कीजिये कि ह़ज़रते सय्यिदतुना

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 234

www.dawateislami.net

अस्मा बिन्ते ड़ुमैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हक़ में चार माह दस दिन की मुद्दते इद्दत में कमी फ़रमा कर उन्हें सिर्फ़ तीन दिन तक सोग मनाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते ड़ुमैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं जब हज़रते सय्यिदुना जाफ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद हुए तो बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : 3 दिन सिंगार (यानी ज़ीनत) से अलग रहो फिर जो चाहो करो।(1)

सय्यिदी आला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बाद इरशाद फ़रमाते हैं : यहां हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इस हुक्मे आ़म से इस्तिस्ना (अ़लाह़दा) फ़रमा दिया कि औ़रत को शौहर पर चार महीने दस दिन सोग वाजिब है।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿...क़ुरबानी और इख़्तियारे मुस्त़फ़ा

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़े ई़द से पहले ही क़ुरबानी कर ली तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस के बदले दूसरी क़ुरबानी करो (कि वोह क़ुरबानी न हुई) तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब तो मेरे पास छे महीने का बकरी का बच्चा है जो एक साल की बकरी से बेहतर है। तो आप ने इरशाद फ़रमाया : اِجْعَلْهَا مَكَانَهَا وَلَنْ تَجْزِیَ عَنْ اَحَدٍ بَعْدَكَ यानी उस की जगह इसे ज़ब्ह़ कर दो मगर तुम्हारे बाद किसी और के लिये ऐसा करना हरगिज़ काफ़ी न होगा।(3)

---

1 ...سنن کبری للبیہقی، کتاب العدد، باب الاحداد، ۷/ ۷۲۰، حدیث: ۱۵۵۲۳

2 .....फ़तावा रज़विय्या 30 / 529

3 ...مسلم، کتاب الاضاحی، باب وقتها، ص۸۳۵، حدیث: ۵۰۷۷

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रहे कि शहर में कुरबानी करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह नमाज़े ईद अदा होने के बाद ही कुरबानी करे जैसा कि कुतुबे फ़िक़ह में मज़्कूर है कि ''शहर में कुरबानी की जाए तो शर्त येह है कि नमाज़ हो चुके लिहाज़ा नमाज़े ईद से पहले शहर में कुरबानी नहीं हो सकती।''(1)

कुरबानी के जानवरों की उम्र

यूं ही कुरबानी के जानवरों की उम्र भी मुतअय्यन है कि ऊंट पांच साल का, बकरी एक साल की इस से उम्र कम हो तो कुरबानी जाइज़ नहीं ज़ियादा हो तो जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है, हां दुम्बा या भेड़ का छे माह का बच्चा अगर इतना बड़ा हो कि दूर से देखने में साल भर का मालूम होता हो तो उस की कुरबानी जाइज़ है।''(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चूंकि नमाज़े ईद से पहले ही कुरबानी कर ली थी इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें दूसरे जानवर की कुरबानी का हुक्म इरशाद फ़रमाया, अब उन के पास सिर्फ़ छे महीने का बकरी का बच्चा ही रह गया था और उम्र के एतिबार से शरअ़न उस की कुरबानी जाइज़ न थी मगर जब उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अपनी उस परेशानी का तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ उन्ही को छे माह के बकरी के बच्चे की कुरबानी की इजाज़त देते हुए इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे बाद आयिन्दा किसी के लिये छे माह के बकरी के बच्चे की कुरबानी करना काफ़ी न होगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इख़्तियाराते मुस्तफ़ा के बारे में बयान किये गए इन तमाम वाक़िआत से बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि **अल्लाह** पाक

(1)...فتاوی ھندیة، کتاب الاضحیة، الباب الثالث فی وقت الاضحیة، ۵/ ۲۹۵

(2)...درمختار، کتاب الاضحیة، ۹/ ۵۳۳

www.dawateislami.net

ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कैसा अ़ज़ीमुश्शान मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है कि शरीअ़त के अह़काम को मुक़र्रर कर देने के बाद उन अह़कामात के मुकम्मल इख़्तियारात, नबियों के ताजवर, अफ़्ज़लुल बशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सोंप दिये, जैसा कि

अह़काम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द हैं

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सह़ीह़ और मुख़्तार मज़हब येही है कि अह़काम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द हैं, जिस पर जो चाहें हुक्म करें, एक काम एक पर ह़राम करते हैं और दूसरे पर मुबाह़ (यानी जाइज़)। ह़क़ तआ़ला ने शरीअ़त मुक़र्रर कर के सारी की सारी, अपने रसूल व मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दी (कि इस में जिस त़रह़ चाहें तब्दीली व इज़ाफ़ा फ़रमाएं)।[1]

लिहाज़ा हमें चाहिये कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीगर फ़ज़ाइलो कमालात पर कामिल यक़ीनो ईमान रखने के साथ साथ, आप के इख़्तियारात पर भी दिलो जान से ईमान लाएं नीज़ इस क़िस्म के ख़यालात को अपने ज़ेहनों में हरगिज़ जगह न दें कि जिस चीज़ को क़ुरआने करीम में ह़लाल बयान किया गया है सिर्फ़ वोही ह़लाल और जिसे क़ुरआने मुबीन में ह़राम बयान किया गया सिर्फ़ वोही ह़राम है बल्कि येह ईमान होना चाहिये कि बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका भी किसी चीज़ को ह़लालो ह़राम क़रार देने में क़ुरआने मजीद ही की त़रह़ दलील व हुज्जत हैं जैसा कि ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इख़्तियारात पर एतिराज़ात करने वाले बद नसीबों को

---

1 ...مدارج النبوة، قسم سوم، باب پنجم، ذکر سال پنجم...الخ، ۲/۱۸۳

तम्बीह करते हुए इरशाद फ़रमाया : "मुमकिन है कि कोई शख़्स अपने तख़्त पर टेक लगा कर बैठे और मेरी अहादीस में से कोई हदीस बयान करने के बाद (लोगों के अक़ाइद ख़राब करते हुए) कहे कि हमारे तुम्हारे दरमियान अल्लाह पाक की किताब कुरआने पाक मौजूद है, हमें इस में जो चीज़ हलाल मिलेगी सिर्फ़ उसी को हलाल और जो हराम मिलेगी सिर्फ़ उसी को हराम जानेंगे। (फिर इरशाद फ़रमाया :) اَلَاوَاِنَّ مَاحَرَّمَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مِثْلُ مَاحَرَّمَ اللّٰہُ यानी ख़बर दार ! जिस चीज़ को अल्लाह पाक का रसूल हराम कर दे वोह भी अल्लाह पाक की तरफ़ से हराम कर्दा की तरह हराम है।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

याद रहे ! अल्लाह तबारक व तआला ने दुन्या में कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर भेजे[2] और उन्हें तरह तरह के मोजिज़ात और बे मिसाल इख़्तियारात से मुशर्रफ़ फ़रमाया मसलन हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुर्दे ज़िन्दा करने, कोढ़ व बर्स की बीमारी दूर करने और मादर ज़ाद अन्धों को बीना करने के इख़्तियारात व मोजिज़ात अता फ़रमाए[3], हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हवाओं[4] और जिन्नों पर हुकूमत करने और तीन मील से च्यूंटी की आवाज़ सुनने वग़ैरा जैसे इख़्तियारात अता फ़रमाए[5] और जब अल्लाह पाक ने शाहे आदमो बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रसूल बना कर भेजा तो चूंकि आप अव्वलीनो आख़िरीन के सरदार बनाए गए हैं, लिहाज़ा

1...ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب تعظیم حدیث رسول اللّٰہ...الخ، ۱/ ۱۵، حدیث: ۱۲

2...مسند احمد، مسند انصار، ۸/ ۳۰۱، حدیث: ۲۲۳۵۱

3...پ۷، المائدۃ: ۱۱۰

4...پ۱۷، الانبیا: ۸۱

5...پ۱۹، النمل: ۱۶تا ۱۹

आप को पिछले अम्बियाओ रुसुल عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बढ़ कर फ़ज़ाइलो कमालात और इख़्तियारात का मालिक बनाया, हृत्ताकि आप को चांद सूरज पर भी इख़्तियार अ़ता फ़रमाया । चुनान्चे,

नूर का खिलौना

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه अपने रिसाले "**नूर का खिलौना**" सफ़्हा नम्बर 6 पर लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की निशानियों ने आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन में दाख़िल होने की दावत दी थी, मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (बचपन में) गहवारे (यानी झूले) में चांद से बातें करते और अपनी उंगली से उस की जानिब इशारा करते तो जिस त़रफ़ आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इशारा फ़रमाते, चांद उस जानिब झुक जाता । हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं चांद से बातें करता था और चांद मुझ से बातें करता था, वोह मुझे रोने से बहलाता था और जब चांद अ़र्शे इलाही के नीचे सजदा करता तो उस वक़्त मैं उस की तस्बीह़ करने की आवाज़ सुना करता था ।(1)

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में　　क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का(2)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

डूबा सूरज पलट आया

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا बयान करती हैं कि ख़ैबर के क़रीब मक़ामे सहबा पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ोहर की

---

1 ...دلائل النبوة للبيهقي، جماع ابواب ماظهر على رسول الله...الخ، باب ماجاء في حفظ الله...الخ، ٢/ ٤١

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 243, 249

नमाज़ पढ़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को किसी काम से भेज दिया, वोह वापस लौटे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा चुके थे (जब कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अभी नमाज़े अ़स्र अदा नहीं की थी), हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की गोद में सरे अन्वर रखा और आराम फ़रमाने लगे, वोह आराम से बैठे रहे ह़त्ताकि सूरज गु़रूब हो गया (नमाज़े अ़स्र क़ज़ा होने पर उन की आंखों से आंसू छलक पड़े) तो हु़ज़ूर नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** पाक ! यक़ीनन तेरा बन्दा अ़ली तेरे नबी की इत़ाअ़त में था, इस के लिये सूरज को लौटा दे। ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने देखा कि डूबा हुवा सूरज पलट आया और पहाड़ों की चोटियों और ज़मीन पर हर त़रफ़ धूप फैल गई, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वुज़ू किया नमाज़े अ़स्र अदा की फिर सूरज गु़रूब हो गया।(1)

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ में इसी जानिब इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहां तुम्हारे लिये
इशारे से चांद चीर दिया छुपे हुए ख़ुर को फेर लिया
गए हुए दिन को अ़स्र किया येह ताबो तवां तुम्हारे लिये(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...معجم کبیر، ۲۴/ ۱۴۴،حدیث: ۳۸۲

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 348, 351

www.dawateislami.net

किताब "सीरते मुस्त़फ़ा" का तआरुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो कमालात और इख़्तियारात के बारे में मज़ीद मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 875 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" (उर्दू, हिन्दी, गुजराती) का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब में एलाने नबुव्वत और हिजरत से पहले और बाद के वाक़िआ़त, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात ख़ानदानी ह़ालात और ग़ज़्वात के वाक़िआ़त के इ़लावा जमादात, नबातात, ह़ैवानात और जिन्नात वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मोजिज़ात निहायत उ़म्दा अन्दाज़ में बयान किये गए हैं। इस किताब को आज ही मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इसे पढ़ा भी जा सकता है, नीज़ डाउनलोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ऐसी ही प्यारी प्यारी बातें बताई जाती और ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, लिहाज़ा हम भी नेकियां करने, गुनाहों से बचने, इ़ल्मे दीन में इज़ाफ़ा करने और इ़श्क़े रसूल बढ़ाने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी कमो बेश 103 शोबाजात में नेकी की दावत आ़म करने में कोशां है, जिन में से एक शोबा **मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन** भी है। शव्वालुल मकर्रम सिने 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ सितम्बर सिने 2011 ई. में

मजलिसे मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन का क़ियाम अ़मल में लाया गया। इस शोबे के तह्त इन्टरनेट के ज़रीए कई मुल्क व बैरुने मुल्क के मुसलमानों को न सिर्फ़ दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने पाक की मुफ़्त तालीम दी जाती है बल्कि बुन्यादी इस्लामी तालीमात मसलन वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, अज़ान, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा के मसाइल भी सिखाए जाते हैं, जब कि बा क़ाइदा **ऑन लाइन दर्से निज़ामी** का सिलसिला भी शुरूअ़ हो चुका है। दावते इस्लामी की वेब साइट पर इस शोबे की तफ़्सीली मालूमात और दाख़िला फ़ॉर्म (Admission Form) भी मौजूद है, लिहाज़ा **मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन** में दाख़िले के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाई दावते इस्लामी की इस वेब साइट का ज़रूर विज़िट (Visit) फ़रमाएं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान में हम ने प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कमालातो इख़्तियारात के बारे में सुना कि

...रोज़े क़ियामत अल्लाह पाक अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शफ़ाअ़ते कुब्रा का इख़्तियार अ़त़ा फ़रमाएगा कि आप अपने हर उस उम्मती को जहन्नम से निकाल लाएंगे जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा। याद रहे ! दुन्या में भी लोगों के ज़ाती मुआ़मलात और ह़लालो ह़राम के शरई अह़कामात में आप को कामिल इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमा कर क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमा दिया गया कि "जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ रहो" मालूम हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक के **नाइबे मुत़लक़** हैं।

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

...तमाम जहान हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इख़्तियार में कर दिया गया, जो चाहें करें, जिसे जो चाहें हुक्म दें, येही वज्ह है कि ह़रमे मक्का में दरख़्त व घास वग़ैरा काटने के ह़राम होने के बा वुजूद लोगों की ज़रूरत की वज्ह से इज़्ख़िर घास काटना **ह़लाल** फ़रमा दिया।

...सब के लिये पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ होने के बा वुजूद एक शख़्स पर उस की अ़र्ज़ क़बूल करते हुए **तीन नमाज़ें** न पढ़ने की रुख़्सत दे दी।

...ह़ज का हुक्म बयान करने के बाद जब हर साल ह़ज के फ़र्ज़ होने के बारे में पूछा गया तो ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमा कर ज़िन्दगी भर में एक ही बार ह़ज को फ़र्ज़ रखा और फ़रमा दिया कि अगर मैं कह देता कि "**हां हर साल फ़र्ज़ है**" तो **हर साल** ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता।

...उम्मत की दुश्वारी का ख़याल फ़रमाते हुए मिस्वाक को सिर्फ़ सुन्नत ही रखा, वुज़ू में **वाजिब** क़रार न दिया।

...नमाज़े इशा के वक़्त में भी उम्मत की आसानी को पेशे नज़र रखते हुए, **आधी रात** या **तिहाई रात** में नमाज़े इशा पढ़ना वाजिब न फ़रमाया।

...ऐसी ग़ैरे ह़ामिला औ़रत जिस का शौहर फ़ौत हो जाए उसे ब हुक्मे क़ुरआनी चार माह दस दिन इ़द्दत में रहना वाजिब है मगर सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़क़ में इस त़वील इ़द्दत को **तीन दिन** से तब्दील फ़रमा दिया।

...एक साल से कम उ़म्र बकरी के बच्चे की क़ुरबानी जाइज़ नहीं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को छे माह बकरी के बच्चे की क़ुरबानी की इजाज़त देते हुए इरशाद फ़रमाया कि "तुम्हारे बाद किसी के लिये ऐसा करना **जाइज़** न होगा।"

www.dawateislami.net

तम्बीह

मा क़ब्ल में जितने भी वाक़िआ़त बयान हुए इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा से मुतअ़ल्लिक़ थे, इस त़रह़ के मुआ़मलात में इन्हें दलील बना कर किसी को भी अ़मल करने की इजाज़त नहीं, अब हर एक पर तमाम दीनी अह़काम पर मिन्नो अ़न वैसे ही अ़मल करना जैसे शरीअ़त ने फ़रमाया है ज़रूरी है।

बहर ह़ाल इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा से मुतअ़ल्लिक़ सीरत व अह़ादीस की किताबों में इस त़रह़ के बहुत से वाक़िआ़त मज़्कूर हैं जिन से प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़्मत और मह़ब्बतो अ़क़ीदत दिलों में मज़ीद पुख़्ता होने के साथ साथ येह बात भी वाज़ेह़ हो जाती है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी त़रह़ مَعَاذَ اللّٰہ कोई आ़म बशर नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक ने सारी काएनात में आप को सब से बुलन्द मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है।

दुआ़ है : **अल्लाह** पाक हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बनाए और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब

...**फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** "जूते ब कसरत इस्तिमाल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है" (यानी कम

(1)...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

थकता है) ।[1] ...जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए । ...पहले सीधा जूता पहनिये फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारिये फिर सीधा । ...मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्तिमाल करे । ...सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (यानी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (यानी त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की ।[2] ...जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं । ...(तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना, लिहाज़ा इस्तिमाली जूता उल्टा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

...

1...مسلم، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الانتعال... الخ، ص ۸۹۴، حدیث: ۵۴۹۴

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3 / 422

3.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

www.dawateislami.net

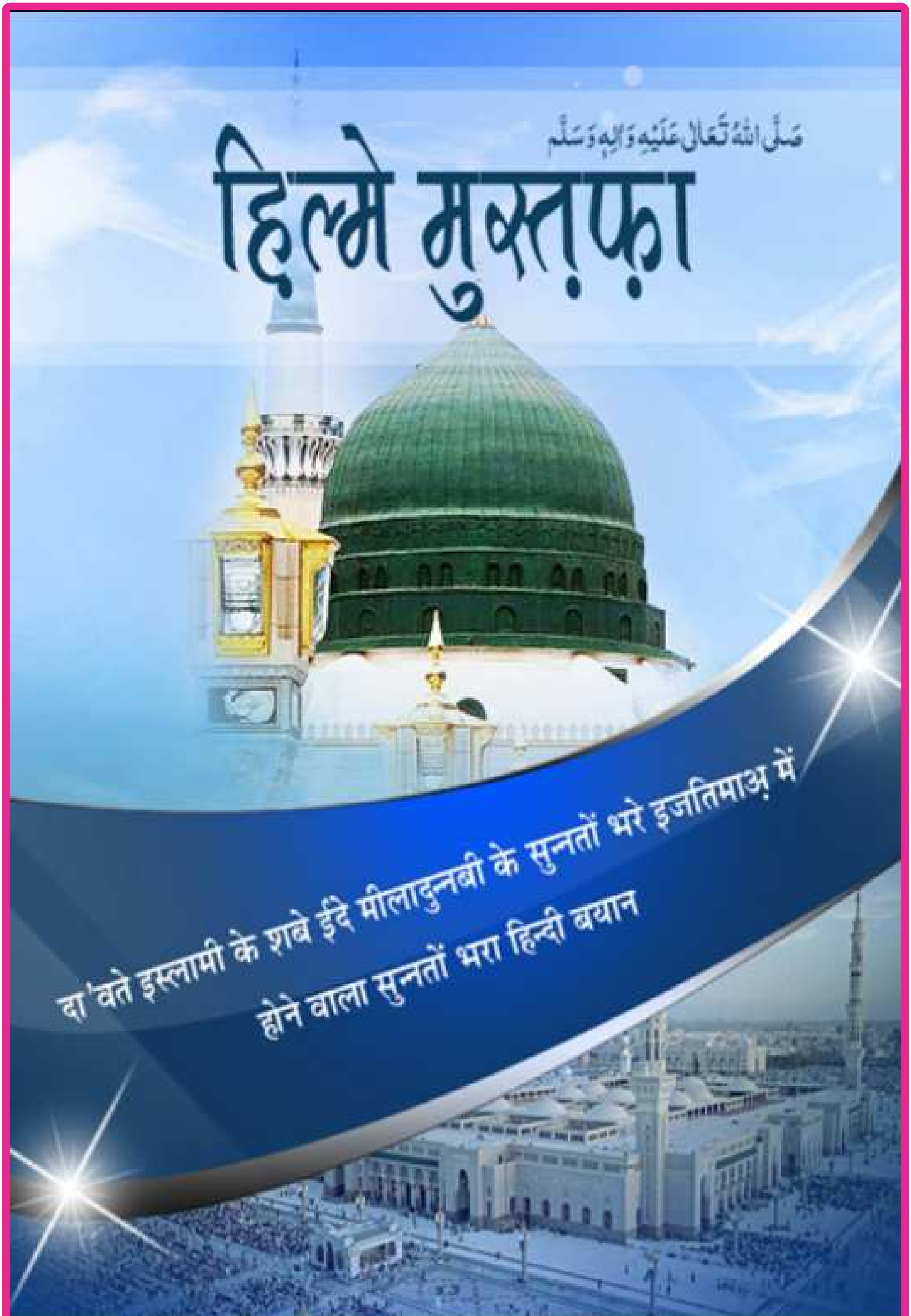
صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
हिल्मे मुस्तफ़ा
दा'वते इस्लामी के शबे ईदे मीलादुन्नबी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : "जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह तआला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।"(1)

बाग़े जन्नत में मुहम्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक दुन्याओ आख़िरत की भलाई और कामयाबी का ख़्वाहिश मन्द है। इस के लिये हमें हर मुआमले में अपने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़तो पैरवी करनी होगी क्यूंकि आप के अक़्वालो अफ़्आल, अख़्लाक़ो आदात और तमाम सिफ़ात हमारे लिये बाइसे नजात हैं। आज हम प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक पाकीज़ा सिफ़त "**हिल्म**" के बारे में सुनेंगे। येह भी सुनेंगे कि "**हिल्म किसे कहते हैं ? इस की तारीफ़ क्या है ?** और **इस की क्या अहम्मिय्यत है ?**" सब से पहले **हिल्मे मुस्तफ़ा** से मुतअ़ल्लिक़ एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत मुलाहज़ा फ़रमाइये !

(1)...معجم اوسط، ۵/ ۲۵۲، حدیث: ۵۲۳۵

www.dawateislami.net

एक आराबी का वाक़िआ़

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि एक बार हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी आराबी से एक वस्क़ (छे मन 30 सेर खजूरों) के बदले में एक ऊंट ख़रीदा। खजूर देने के लिये काशानए अक़्दस पर आ कर जब खजूरें तलाश कीं तो न मिलीं। आप वापस उस आराबी के पास गए और इरशाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह ! हम ने तुझ से एक वस्क़ खजूरों के बदले ऊंट ख़रीदा था, मगर तलाश के बा वुजूद हमें खजूरें नहीं मिल सकीं। येह सुनते ही वोह आराबी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा : **हाए धोका** ! सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने सुना तो येह कहते हुए उस की त़रफ़ दौड़े कि तू हलाको बरबाद हो ! क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم धोका करेंगे ? आप ने इरशाद फ़रमाया : इसे छोड़ दो ! क्यूंकि ह़क़दार को गुफ़्तगू का ह़क़ ह़ासिल होता है। आप ने दो या तीन मरतबा इस त़रह़ फ़रमाया, लेकिन समझाने के बा वुजूद जब वोह न माना तो आप ने एक सह़ाबी को हुक्म दिया कि ख़ौला बिन्ते ह़कीम के पास जाओ और उन से कहो : अगर आप के पास खजूरों का एक वस्क़ है तो हमें दे दें ! اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम वापस कर देंगे। सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन्हें पैग़ामे रसूल पहुंचाया तो उन्होंने कहा : मेरे पास खजूरें मौजूद हैं, आप लेने के लिये किसी को भेज दीजिये। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस आराबी को ले जाओ और जितनी खजूरें बनती हैं इसे दे दो ! आराबी खजूरें ले कर वापस आया तो आप सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के दरमियान जल्वागर थे। उस ने अ़र्ज़ की : جَزَاكَ اللّٰہُ خَیۡرًا यानी **अल्लाह** पाक आप को जज़ाए ख़ैर दे ! आप ने पूरा ह़क़ बड़े उ़म्दा त़रीक़े से अ़त़ा फ़रमा दिया। तो हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक के नज़्दीक लोगों में से सब से बेहतर वोह होंगे जो (दुन्या में) उ़म्दा त़रीके़ से पूरा पूरा ह़क़ देते होंगे।[1]

ख़ुल्के़ अ़ज़ीम से मुझे हि़स्सा अ़ता करो !

बे जा हंसी की ख़स्लते बद को निकाल दो[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुर्दबारी अपनाओ !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर अ़फ़्वो दरगुज़र फ़रमाने वाले और निहायत शफ़ीक़ो बुर्दबार थे। सब के सामने सौदे से इन्कार करने का इल्ज़ाम लगाने वाले को बदला लेने की ताक़तो क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ फ़रमा कर हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा फ़रमाया। इस रिवायत से हमें भी येह दर्स मिला कि दौराने तिजारत ख़रीदो फ़रोख़्त करते वक़्त **हि़ल्म**, **बरदाश्त**, **सच्चाई** और **दियानत दारी** से काम लेना चाहिये। सौदा बेचने वाले या ख़रीदने वाले से कोई भी अगर तक्लीफ़ देह बात करे तो आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा (जम्अ़) करते हुए सब्र के घूंट पी लेना चाहिये। जवाबी कारवाई करना, लड़ाई झगड़ा बढ़ने के साथ साथ आपस में नफ़रतों का सबब भी बन सकता है। बद कलामी, दिल आज़ारी और इल्ज़ाम तराशी वाले जुम्ले कहने की सूरत में कबीरा गुनाहों में जा पड़ने का भी अन्देशा है। लिहाज़ा हम में से हर एक को चाहिये कि ऐसे मवाक़ेअ़ पर गुस्से में आने, शोले उगलती निगाहों से दूसरों को डराने और बात का बतंगड़ बनाने के बजाए सब्र का मुज़ाहरा करते हुए ख़ुद भी गुनाहों से बचना होगा और दूसरों को भी बचाने की कोशिश करनी होगी, नीज़ हर एक से हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आना चाहिये कि इस की बड़ी बरकतें हैं। चुनान्चे,

1 ...مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۱۰/ ۱۳۴، حدیث: ۲۶۳۸۲

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 305

रसूलुल्लाह का मह़बूबो मुक़र्रब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालबा ख़ुशनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक तुम में से मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब और आख़िरत में मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाला होगा और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा ना पसन्द और आख़िरत में मुझ से ज़ियादा दूर वोह होगा जो तुम में बदतरीन अख़्लाक़ वाला होगा।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने की कैसी बरकतें हैं कि ऐसा शख़्स दुन्याओ आख़िरत में कामयाब होता है, जब कि बद तमीज़ी और बद अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा करने वाले को कोई पसन्द नहीं करता, दुन्या में भी लोग उसे बुरा समझते हैं और आख़िरत में भी ज़िल्लतो रुस्वाई उस का मुक़द्दर बन सकती है।

हुस्ने अख़्लाक़ की अ़लामात

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हुस्ने अख़्लाक़ की अ़लामात बयान करते हुए फ़रमाते हैं : हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर वोह है जो ज़ियादा ह़या वाला, किसी को अज़िय्यत न देने वाला, नेक आमाल बजा लाने वाला, सच बोलने वाला, कम गो (कम गुफ़्तगू करने वाला), ज़ियादा अ़मल का आ़दी, लग़ज़िशों से ह़त्तल इमकान बचने और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से परहेज़ करने वाला हो। नेक, पुर वक़ार, साबिर, रिज़ाए इलाही पर

1 ...مسند احمد، مسند الشامیین، ۶/ ۲۲۰، حدیث: ۱۷۷۴۷

www.dawateislami.net

राज़ी, शुक्र गुज़ार, बुर्दबार, नर्म तबीअ़त, पाक दामन और शफ़ीक़ हो। लानत करने वाला, गालियां देने वाला, ग़ीबत करने वाला, जल्द बाज़, कीना परवर, बख़ील और हासिद न हो बल्कि हश्शाश बश्शाश रहता हो, **अल्लाह** पाक की ख़ातिर महब्बत और बुग़्ज़ रखने वाला और उसी की ख़ातिर किसी से राज़ी और नाराज़ होने वाला हो।[1]

लिहाज़ा हमें ख़ुद भी बुरे अफ़्आ़ल और बुरे अख़्लाक़ से बचना चाहिये और अपने मुसलमान भाइयों की ख़ैर ख़्वाही करते हुए उन्हें भी अच्छे अख़्लाक़ और उ़म्दा सिफ़ात अपनाने की तरग़ीब देते रहना चाहिये। हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइलो बरकात के बारे में तफ़्सीली मालूमात हासिल करने के लिये **दावते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 99 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"हुस्ने अख़्लाक़"** का मुत़ालआ़ कीजिये। इस किताब के मुत़ालए़ की बरकत से हुस्ने अख़्लाक़ के रंग बरंगे, महकते महकते मदनी फूल चुनने की सआ़दत हासिल होगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

दावते इस्लामी की वेब साइट से भी इस किताब को पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउनलोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना की अ़ज़्मतो बुलन्दी को ख़ुद रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने बयान फ़रमाया है। चुनान्चे, **पारह 29, सूरतुल क़लम, आयत नम्बर 4** में इरशाद होता है :

[1]... احیاء العلوم، کتاب ریاضۃ النفس وتھذیب الاخلاق، بیان علامات حسن الخلق، ۸۶/۳

وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ۝ (پ۲۹، القلم:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।

ताजदारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاق यानी मुझे अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील के लिये मबऊ़स किया गया है।[1] तो जिन की बिअ़सत (भेजने) का मक़्सद अच्छे अख़्लाक़ सिखाना हो खुद उन के अख़्लाक़े अ़ज़ीमा का आ़लम क्या होगा।

हि़ल्म की तारीफ़ और इस की अहम्मिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा औसाफ़ में से एक प्यारी सिफ़त "**हि़ल्म**" भी है। हि़ल्म का माना है : अपनी त़बीअ़त से गुस्से को **ज़ब्त़** करना।[2] यानी गुस्सा आए तो उसे **पी जाना** हि़ल्म कहलाता है। याद रखिये ! गुस्सा इन्सानी फ़ित़रत में शामिल है, येह एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इस में हमारा कोई क़ुसूर नहीं। लेकिन गुस्से से बे क़ाबू हो जाना बुरा फ़ेल है। लिहाज़ा जब भी गुस्सा आए तो हि़ल्म का मुज़ाहरा करते हुए उसे दबाने की कोशिश करनी चाहिये। **गुस्सा पीने** और **बुर्दबारी** इख़्तियार करने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

बुर्दबारी की फ़ज़ीलत

﴾1﴿...हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में सब से ज़ियादा त़ाक़तवर वोह है जो गुस्से के वक़्त खुद पर क़ाबू पा ले

1...مسند بزار، مسند ابی ھریرۃ، ۱۵/ ۳۶۴، حدیث: ۸۹۴۹

2.....हाशिया सीरते रसूले अ़रबी, स. 293

और सब से ज़ियादा बुर्दबार वोह है जो ताक़तो कुदरत के बा वुजूद मुआफ़ कर दे ।(1)

﴾2﴿...हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक के हां इज़्ज़त व बुज़ुर्गी चाहो ।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : वोह कैसे ? इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करे उस से सिलए रेह़मी करो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम से जहालत से पेश आए उस के साथ बुर्दबारी इख़्तियार करो ।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि अह़ादीसे मुबारका में ह़िल्म व बुर्दबारी इख़्तियार करने की किस क़दर तरग़ीब दिलाई गई है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी इस अच्छी सिफ़त को अपनाने की कोशिश करें, इब्तिदा में अगर्चे मुश्किल ज़रूर होगी, लेकिन सच्ची लगन और कोशिश से तमाम काम आसान हो जाते हैं जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : इ़ल्म सीखने से आता है, तह़म्मुल मिज़ाजी ब तकल्लुफ़ बरदाश्त करने से पैदा होती है और जो **भलाई** ह़ासिल करने की कोशिश करता है उसे भलाई दी जाती है और जो **शर** से बचना चाहता है उसे बचाया जाता है ।(3)

ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "तह़म्मुल मिज़ाजी ब तकल्लुफ़ बरदाश्त करने से पैदा होती है" पर ग़ौर फ़रमाइये और निय्यत कीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम भी अपने अन्दर बरदाश्त की सिफ़त पैदा करने की कोशिश करेंगे ।

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़िल्म व बुर्दबारी और नर्म दिली में अपनी मिसाल आप हैं । **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ आप की नर्म दिली

1...مسند فردوس، ۱/ ۱۳۲، حدیث: ۸۴۹

2...الترغیب لابن شاھین، کتاب الحلم وفضلہ ومافیہ، ص ۲۴۹، حدیث: ۲۴۱

3...معجم اوسط، ۲/ ۳۰۱، حدیث: ۲۶۶۳

की तारीफ़ करते हुए **पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 159** में इरशाद फ़रमाता है :

فَبِمَا رَحۡمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنۡتَ لَهُمۡ ۚ وَلَوۡ كُنۡتَ فَظًّا غَلِيۡظَ الۡقَلۡبِ لَانۡفَضُّوۡا مِنۡ حَوۡلِكَ ۖ

(پ۴، اٰل عمران:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने साबिक़ा किताबों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह सिफ़ात लिखी देखी हैं कि आप न तो तंग मिज़ाज हैं, न सख़्त दिल, न बाज़ारों में शोर करने वाले और न ही बुराई का बदला बुराई से देने वाले बल्कि मुआ़फ़ करने और दरगुज़र फ़रमाने वाले हैं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिल्म व अ़फ़्व यानी अज़िय्यत पहुंचाने वालों को इन्तिक़ाम लेने की क़ुदरत होने के बावुजूद दरगुज़र करने और मुआ़फ़ कर देने वाली आ़दते मुबारका के वोह अ़ज़ीम शाहकार थे जिस की मिसाल पूरी दुन्या में नहीं मिलती। चुनान्चे,

हिल्मे मुस्तफ़ा

मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्लाम की दावत देने के लिये जब ताइफ़ का सफ़र फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी आप के हमराह थे। ताइफ़ में बड़े बड़े उमरा और मालदार लोग रहते थे। इन में "अ़म्र" का ख़ानदान तमाम क़बाइल का सरदार शुमार किया जाता था। येह

[1]...تفسیر ابن کثیر، پ۴، اٰل عمران، تحت الآیۃ:۱۵۹، ۲/ ۱۳۰

www.dawateislami.net

तीन भाई थे। अ़ब्दे यालील, मस्ऊ़द और ह़बीब। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीनों के पास तशरीफ़ ले गए और इस्लाम की दावत दी। इन्हों ने इस्लाम क़बूल न किया बल्कि इन्तिहाई बेहूदा और गुस्ताख़ाना जवाब दिया। इन बद नसीबों ने इसी पर बस न की बल्कि त़ाइफ़ के शरीरों को आप के साथ बुरा सुलूक करने पर उभारा। चुनान्चे, इन शरीरों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर चारों त़रफ़ से ह़म्ला कर दिया और आप पर पथ्थर बरसाए यहां तक कि आप का जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से लहू लुहान हो गया। नालैने मुबारक ख़ून से भर गए। ज़ख़्मों से बे ताब हो कर बैठ जाते तो येह ज़ालिम इन्तिहाई बे दर्दी के साथ बाज़ू पकड़ कर उठाते, जब आप चलने लगते तो फिर पथ्थरों की बारिश करते, साथ ही साथ त़ाना ज़नी करते, सब्बो शत्म करते, तालियां बजाते, हंसी उड़ाते। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दौड़ दौड़ कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आने वाले पथ्थरों को अपने बदन पर लेते थे यहां तक कि वोह भी ख़ून में नहा गए और ज़ख़्मों से निढाल हो गए। ह़त्ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अंगूर के एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए।[1]

हक़ की राह में पथ्थर खाए ख़ूं में नहाए त़ाइफ़ में
दीन का कितनी मेह़नत से काम आप ने ऐ सुल्त़ान किया[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जंगे उहुद से भी सख़्त दिन

त़वील अ़र्से बाद एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन आप पर गुज़रा है ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : हां, ऐ आ़इशा ! वोह दिन मेरे

1 ...مواھب اللدنیۃ، ھجرتہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱/ ۱۳۵

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 197

www.dawateislami.net

लिये जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त था जब मैं ने ताइफ़ जा कर एक सरदार "**इब्ने अ़ब्दे यालील**" को इस्लाम की दावत दी। उस ने दावते इस्लाम को ह़क़ारत के साथ ठुकरा दिया और अहले ताइफ़ ने मुझ पर पथराव किया। मैं इस रन्जो ग़म में सर झुकाए चलता रहा यहां तक कि मक़ामे "**क़र्नुस्सआ़लिब**" में पहुंच कर खुद को मह़फ़ूज़ मह़सूस किया। वहां पहुंच कर जब मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बदली मुझ पर साया किये हुए है, उस में से ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे आवाज़ दी और कहा : **अल्लाह** पाक ने आप की क़ौम का क़ौल और उन का जवाब सुन लिया और अब आप की ख़िदमत में पहाड़ों का फ़िरिश्ता ह़ाज़िर है ताकि वोह आप के हुक्म की तामील करे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : पहाड़ों का फ़िरिश्ता मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ करने लगा कि ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप हुक्म फ़रमाएं कि मैं "अख़् शबैन" (अबू क़ुबैस और क़ुऐक़िआ़न) पहाड़ों को इन पर उलट दूं तो मैं उलट देता हूं। मैं ने कहा : नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** पाक इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दों को पैदा फ़रमाएगा जो सिर्फ़ उसी की इ़बादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा कीजिये कि इतना बुरा सुलूक करने के बा वुजूद सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने न तो उन से बदला लिया और न ही उन के ख़िलाफ़ दुआ़ की। यूं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी ह़याते त़य्यिबा इसी त़रह़ **हिल्मो करम** के अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ़त से सजी हुई है। मगर फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर जिस कमाले हिल्मो शफ़्क़त का मुज़ाहरा फ़रमाया उस की मिसाल मिलना ना मुमकिन है। चुनान्चे,

(1)... بخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدکم امین...الخ، ۲/ ۳۸۶، حدیث: ۳۲۳۱

जाओ ! तुम सब आज़ाद हो

मन्कूल है कि जिस दिन मक्का फ़त्ह हुवा और कुफ़्रो शैत़ान अपने चेलों समेत ज़लीलो रुस्वा हुए, तब मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले मक्का से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ क़ुरैश ! तुम्हारा क्या ख़याल है मैं तुम से कैसा सुलूक करने वाला हूं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : نَظُنُّ خَيْرًا हम आप से ख़ैर ही की तवक़्क़ोअ़ रखते हैं, نَبِيٌّ كَرِيْمٌ وَّاَخٌ كَرِيْمٌ وَّابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ وَّقَدْ قُدِرْتَ क्यूंकि आप करीम नबी हैं, करीमुन्नफ़्स भाई हैं और हमारे करीम व मेहरबान भाई के फ़रज़न्द हैं और अल्लाह पाक ने आप को हम पर क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाई है। तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आज मैं तुम्हें वोही बात कहता हूं, जो मेरे भाई यूसुफ़ ने अपने भाइयों के बारे में कही थी (और वोह येह थी) :

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ (پ۱۳، یوسف: ۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज तुम पर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है।

(येह कहने के बाद इरशाद फ़रमाया :) जाओ ! तुम सब आज़ाद हो।[1]

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क्या शान है हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की, कि जिन लोगों ने आप पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, तब्लीग़े दीन के वक़्त त़रह़ त़रह़ से सताया ह़त्ताकि आबाई वत़न छोड़ने पर मजबूर किया, इसी पर बस न की बल्कि हिजरत के बाद भी चैन से न रहने दिया और फ़त्ह़े मक्का के दिन जब आप

---

1 ...مسند ربیع، باب فی الکعبة والمسجد...الخ، ص۱۹۱، حدیث: ۴۲۲

और आप के जांनिसार सह़ाबा उन पर ग़ालिब आ गए तो उन से बदला लेने के बजाए कमाले ह़िल्म व शफ़्क़त फ़रमाते हुए उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

जान के दुश्मन ख़ून के प्यासों को भी शहरे मक्का में
आ़म मुआ़फ़ी तुम ने अ़त़ा की कितना बड़ा एह़सान किया[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारा मुआ़मला तो येह है कि आपस के छोटे छोटे इख़्तिलाफ़ात को ज़िन्दगी भर का मस्अला बनाए रखते हैं और सुल्ह़ की कोई गुन्जाइश भी नहीं छोड़ते। जब कि हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मामूल था कि अपनी ज़ात के लिये कभी इन्तिक़ाम न लेते। आइये ! अपने किरदार को सुन्नते नबवी का आईनादार बनाने के लिये मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़िल्मो करम से मुतअ़ल्लिक़ चन्द रिवायात सुनते हैं। चुनान्चे,

ह़िल्मे मुस्त़फ़ा पर मुश्तमिल चन्द रिवायात

...मरवी है कि एक मरतबा सफ़र में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि ग़ौरस बिन ह़ारिस ने आप को शहीद करने के इरादे से आप की तल्वार नियाम से खींच ली, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुए तो ग़ौरस कहने लगा : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब आप को मुझ से कौन बचा सकता है ? आप ने इरशाद फ़रमाया : **"अल्लाह"**। इतना कहना था कि तल्वार उस के हाथ से गिर गई और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तल्वार हाथ मुबारक में ले कर इरशाद फ़रमाया : अब तुझे मुझ से कौन बचाएगा ? ग़ौरस गिड़ गिड़ा कर कहने लगा : आप ही मेरी जान बख़्शी कीजिये !

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 197

www.dawateislami.net

तो रह्मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे मुआ़फ़ फ़रमा कर छोड़ दिया। चुनान्चे, ग़ौरस अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो तमाम इन्सानों में सब से बेहतर हैं।(1)

सौ बार तेरा देख कर अ़फ़्व और तरह्हुम   हर बाग़ी व सरकश का सर आख़िर को झुका है(2)

...ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोटे और खुरदरे कनारों वाली नजरानी चादर ओढ़े कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, मैं भी आप के हमराह था, अचानक एक आराबी (दीहाती) ने चादर मुबारक को पकड़ कर झटके से खींचा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गर्दन पर ख़राश आ गई और कहने लगा : अल्लाह पाक का जो माल आप के पास है उस में से मुझे भी कुछ देने का हुक्म दीजिये। आप उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर मुस्कुरा दिये और उसे कुछ माल अ़त़ा फ़रमाने का हुक्म दिया।(3)

...लबीद बिन आसम ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जादू किया तो आप ने उस से बदला न लिया।

...इसी त़रह़ उस ग़ैर मुस्लिमा औ़रत को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया जिस ने आप को ज़हर दिया था।(4)

...ग़ज़्वए उहुद में मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दन्दान का कुछ कनारा शहीद और चेहरए अन्वर को ज़ख़्मी कर दिया गया मगर आप ने उन के लिये इस के सिवा कुछ न फ़रमाया कि اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ यानी ऐ

(1)... بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ ذات الرقاع، ۳/ ۶۰، حدیث: ۴۱۳۶
مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللّٰہ، ۵/ ۱۵۱، حدیث: ۱۴۹۳۴

(2)... مسدس حالی، ص ۱۲۸

(3)... بخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماکان النبی...الخ، ۲/ ۳۵۹، حدیث: ۳۱۴۹

(4)... مواھب اللدنیۃ، فیما اکرمہ اللّٰہ تعالی بہ...الخ، ۲/ ۹۱

अल्लाह पाक ! मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यूंकि येह लोग मुझे जानते नहीं ।(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह है हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का किरदार कि अपना हो या पराया हर एक से महब्बत व शफ़्क़त से पेश आते, अपनी ज़ात के लिये कभी गुस्सा न फ़रमाते मगर जब शरई हुदूद को तोड़ा जाता और अहकामे खुदावन्दी से मुंह मोड़ा जाता तो पेशानिये अक़्दस पर जलाल के आसार नुमायां हो जाते । चुनान्चे,

हुदूदुल्लाह की पामाली पर शदीद गुस्सा फ़रमाते

...उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कभी भी अपनी ज़ात पर किये गए ज़ुल्म का बदला लेते नहीं देखा मगर जब हुदूदुल्लाह में से किसी हद को तोड़ा जाता तो शदीद गुस्सा फ़रमाते ।(2)

...उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान करती हैं कि क़ुरैश के बनी मख़्ज़ूम के ख़ानदान की एक औरत ने चोरी की तो क़ुरैश सोचो बिचार करने लगे कि बारगाहे रिसालत में इस की सिफ़ारिश कौन करेगा ? बिल आख़िर हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इन्तिख़ाब हुवा कि येह बारगाहे रिसालत में बात कर सकते हैं। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस औरत की सिफ़ारिश की तो आप ने जलाल भरे अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाया : क्या तुम हुदूदुल्लाह में सिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हो कर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम से पहले के लोग इसी लिये हलाक हुए कि उन में साहिबे मन्सब चोरी करता तो उसे छोड़ दिया जाता और अगर कमज़ोर व

1... الشفا، الباب الثانی فی تکمیل محاسنہ، فصل واما الحلم، ۱/ ۱۰۵

2... مسلم، کتاب الفضائل، باب مباعدتہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم للآثام...الخ، ص۹۷۸، حدیث: ۲۰۵۰

नातुवां चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम की जाती, ब ख़ुदा ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी करती तो मैं उस का भी हाथ काट देता।(1)

जहां तक हो सके बुराई को रोको

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस क़दर मेहरबानो शफ़ीक़ हैं कि दुश्मनों के ज़ुल्मो सितम पर भी अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लेते मगर जब आप के सामने शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की जाती तो चेहरए अन्वर पुर जलाल हो जाता और क्यूं न हो कि ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "तुम में से कोई जब किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि बुराई को अपने हाथ से बदल दे और जिसे इस की इस्तिताअ़त (यानी क़ुव्वत) न हो तो उसे चाहिये कि अपनी ज़बान से बदल दे और जो येह भी न कर सके तो उसे चाहिये कि दिल में उस बुराई को बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है।"(2)

अपने ज़मीर से सुवाल करें कि हम ने इस पर अ़मल की कितनी कोशिश की ? किसी को गुनाह करता देख कर क्या हम ने ह़त्तल इमकान उसे रोकने की कोशिश की या कम अज़् कम दिल में बुरा जाना ? बच्चों की अम्मी खाना पकाने में ताख़ीर कर दे, खाने में नमक तेज़ हो जाए, बच्चे स्कूल की छुट्टी कर लें तो ज़रूर ना गवार गुज़रे लेकिन घरवालों की रोज़ाना पांचों नमाज़ें क़ज़ा हो रही हों तो माथे पर बल तक न आए, उन्हें समझाने की कोशिश तक न की जाए। ख़ुद सोचिये कोई म्यूज़िक बजा रहा है बेशक रोकने पर क़ुदरत नहीं मगर क्या येह दिल में खटक रहा है ? क्या इसे बुरा मह़सूस कर रहे हैं ? जी नहीं, इस लिये कि ख़ुद अपने मोबाइल में भी तो "مَعَاذَاللّٰہ म्यूज़ीकल ट्यून" मौजूद है। दो अफ़राद गली में गालम

1...مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق الشریف...الخ، ص۷۱۶، حدیث: ۴۴۱۰

2...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر...الخ، ص۴۸، حدیث: ۱۷۷

गलोच कर रहे हैं बुरा लगा ? नहीं, क्यूं ? इस लिये कि अपने मुंह से भी مَعَاذَاللّٰه गाली निकल ही जाती है। फुलां ने झूट बोला, ना गवार गुज़रा ? क्यूंकि इस में मेरा ज़ाती नुक़्सान है, रिज़ाए इलाही के लिये बुरा क्यूं लगेगा कि مَعَاذَاللّٰه खुद भी तो झूट बोलते रहते हैं। येह मिसालें सिर्फ़ चोट करने के लिये हैं वरना बहुत सों की हालत येह है कि अपने फ़ोन में म्यूज़ीकल ट्यून नहीं। गाली और झूट की आदत नहीं फिर भी **"दिल में बुरा जानने"** का ज़ेहन नहीं। अगर रिज़ाए इलाही के लिये ह़क़ीक़ी मानों में बुराई को दिल में बुरा जानने की सोच बन जाए, कुढ़ने की आदत हो जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुआशरे में इस्लाह़ का दौर दौरा हो जाएगा। जब हम बुराइयों को दिल से बुरा समझने में खुद पक्के हो जाएंगे तो दूसरों को समझाना भी शुरूअ़ कर देंगे और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ सुन्नतों की मदनी बहार आ जाएगी और **"नेकी की दावत"** की धूम मच जाएगी।

सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत हर किसी को दूं नेकी की दावत
नेक मैं भी बनूं इल्तिजा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दावत और मदनी चैनल

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी नेकी की दावत को आ़म करने, लोगों को ग़फ़्लत की नींद से बेदार करने, गुनाहों और गुमराहियों के सैलाब से बचाने, घर घर इ़श्के़ रसूल की शम्अ़ जलाने, मरह़बा या मुस्त़फ़ा की धूमें मचाने के लिये कमो बेश 103 शोबाजात में मदनी काम कर रही है, इन्ही में से एक इन्तिहाई अहम शोबा मदनी चैनल भी है ...मदनी चैनल तह़फ़्फ़ुज़े अ़क़ाइदे इस्लाम का अ़लम बरदार बन कर ख़ौफ़े

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 139

www.dawateislami.net

ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां रखने का पैग़ाम घर घर पहुंचाने में मसरूफ़े अ़मल है। ...मदनी चैलन बैनल अक़्वामी (International) सत़्ह़ पर इस्लाम के पैग़ाम को मुअस्सिर और दिल नशीन अन्दाज़ में दुन्या के गोशे गोशे तक कि जहां इस के बिग़ैर रसाई क़दरे मुश्किल थी पहुंचाने के लिये सरगर्मे अ़मल है। ...मदनी चैनल वोह वाहिद सौ फ़ीसदी इस्लामी चैनल है जिस पर औ़रतों को नहीं दिखाया जाता, इस लिहाज़ से इसे एक आईडियल इस्लामिक चैनल कहा जा सकता है। ...मदनी चैनल बे ह़याई और फ़ह़्ह़ाशी व उ़रयानी की फ़ज़ा में बिगड़ी हुई उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह़ के लिये रौशन आफ़्ताब का किरदार अदा कर रहा है। ...मदनी चैनल पर अ़क़ाइदो इ़बादात, अख़्लाक़ो मुआ़मलात और मुआ़शरत से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल को इन्तिहाई एह़तियात़ और ज़िम्मेदारी के साथ पेश करने की कोशिश की जाती है। आप से मदनी इल्तिजा है कि मदनी चैनल ख़ुद भी देखते रहिये, दूसरों को भी देखने की दावत देते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तिलावते क़ुरआन और नाते रसूल की मीठी मीठी आवाज़ें सुनने, फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल कसीर इ़ल्मे दीन का ला ज़वाल ख़ज़ाना पाने, कई जिस्मानी व रूह़ानी बीमारियों, परेशानियों का घर बैठे इ़लाज पाने, हज़ारों सुन्नतें सीखने और इन पर अ़मल करने का जज़्बा पाने के साथ साथ फ़िल्में, ड्रामे, गाने बाजे, बे पर्दगी वग़ैरा गुनाहों से बचने, नेकियां करने और इ़श्क़े रसूल में गुम रहने का ज़ेहन भी बनेगा।

मदनी चैनल के सबब नेकी की दावत आ़म हो
आ़म दुन्या भर में या रब दीन का पैग़ाम हो(1)

नर्मी अपनाएं, फ़ाएदा उठाएं !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम किसी मुसलमान को गुनाह में मुब्तला देखें तो उस के साथ ख़ैर ख़्वाही और उस की आख़िरत की भलाई की ख़ात़िर शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर उस की इस्लाह़ करें, अगर समझाने से

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 634

www.dawateislami.net

फ़ितने का अन्देशा हो तो दिल में बुरा ज़रूर जानना चाहिये । जब कि ज़ाती मुआ़मलात में ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों पर सब्रो तह़म्मुल और अ़फ़्वो दरगुज़र से ही काम लेना चाहिये, कोई कितना ही गुस्सा दिलाए लेकिन हमें अपनी ज़बान और हाथों को क़ाबू में रखते हुए रिज़ाए इलाही की ख़ातिर मुआ़फ़ कर देना चाहिये क्यूंकि जब ज़बान बे क़ाबू हो जाती है तो बाज़ अवक़ात बने बनाए काम भी बिगाड़ देती है, किसी ने सच कहा है कि

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मियो आसानी में   हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

याद रखिये ! अगर हम किसी की ग़लती पर रिज़ाए इलाही और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस से इन्तिक़ाम लेना छोड़ दें तो हमारा मुआ़शरा अम्नो सुकून का गहवारा बन सकता है और फ़ितने फ़साद के नापाक जरासीम ख़ुद ब ख़ुद दम तोड़ जाएंगे । बुर्दबारी व नर्म दिली अल्लाह पाक को पसन्द है, यक़ीनन जिसे येह अ़ज़ीम दौलत मिल गई वोह बड़ा बख़्तावर (ख़ुश नसीब) है, नर्मी इन्सान की ज़ीनत है, हर वक़्त बद मिज़ाजी से पेश आना तहज़ीब के भी ख़िलाफ़ है, बा अख़्लाक़ और नर्म ख़ू शख़्स सब को प्यारा लगता है जब कि तुन्द मिज़ाज और सख़्त दिल शख़्स से लोग दूर भागते हैं । नर्मी अपनाने के लिये इस की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्तफ़ा पेशे ख़िदमत हैं :

नर्मी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللهَ رَفِيْقٌ يُّحِبُّ الرِّفْقَ यानी बेशक अल्लाह पाक रफ़ीक़ है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है, وَيُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَالَا يُعْطِي عَلَى الْعُنْفِ وَمَالَا يُعْطِي عَلَى مَاسِوَاهُ और नर्मी पर वोह कुछ अ़ता फ़रमाता है जो न तो सख़्ती पर अ़ता फ़रमाता है और न ही नर्मी के इलावा किसी और चीज़ पर अ़ता फ़रमाता है ।(1)

1...مسلم، کتاب البر والصلة، باب فضل الرفق، ص ۱۰۷۲، حدیث: ۲۶۰۱

www.dawateislami.net

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الرِّفْقَ لَا یَکُوْنُ فِیْ شَیْءٍ اِلَّا زَانَہٗ यानी नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है وَلَا یُنْزَعُ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا شَانَہٗ और जिस चीज़ से निकाल ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है।(1)

﴾3﴿...इरशाद फ़रमाया : مَنْ یُّحْرَمُ الرِّفْقَ یُحْرَمُ الْخَیْرَ यानी जो नर्मी से मह़रूम रहा वोह हर भलाई से मह़रूम रहा।(2)

﴾4﴿...इरशाद फ़रमाया : مَنْ اُعْطِیَ حَظَّہٗ مِنَ الرِّفْقِ यानी जिसे नर्मी में से ह़िस्सा दिया गया فَقَدْ اُعْطِیَ حَظَّہٗ مِنْ خَیْرِ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ उसे दुन्याओ आख़िरत की अच्छाइयों में से ह़िस्सा दिया गया।(3)

बना दो सब्रो रिज़ा का पैकर   बनूं ख़ुश अख़्लाक़ ऐसा सरवर
रहे सदा नर्म ही त़बीअ़त   नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत(4)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बाज़ ऐसे भी नादान होते हैं जो गुस्से को बहादुरी, मर्दानगी, इ़ज़्ज़ते नफ़्स और बुलन्द हिम्मती क़रार देते हैं, ऐसी सोच रखने वालों को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िल्म और नर्मी वाली सुन्नत पर अ़मल करना चाहिये कि नर्मी के बे शुमार फ़वाइद हैं। चुनान्चे,

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का समझाने का प्यारा अन्दाज़

मरवी है कि एक नौजवान बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे बदकारी की इजाज़त दीजिये। येह सुनते ही तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा

1...مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الرفق، ص ۱۰۷۳، حدیث: ۲۷۰۲
2...مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الرفق، ص ۱۰۷۲، حدیث: ۲۵۹۸
3...مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/ ۵۰۴، حدیث: ۲۵۳۱۴
4.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 208

www.dawateislami.net

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इसे छोड़ दो । फिर उसे अपने पास बुला कर बिठाया और निहायत नर्मी और शफ़्क़त के साथ सुवाल किया : ऐ नौजवान ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई तेरी मां से ऐसा फे़ल करे ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं इसे कैसे रवा (जाइज़) रख सकता हूं ? इरशाद फ़रमाया : तो फिर दूसरे लोग तेरे बारे में इसे कैसे रवा रख सकते हैं ? फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : तेरी बेटी से अगर इस त़रह़ किया जाए तो तू इसे पसन्द करेगा ? अ़र्ज़ की : नहीं । इरशाद फ़रमाया : अगर तेरी बहन से कोई ऐसी ना शाइस्ता ह़रकत करे तो ? और अगर तेरी ख़ाला से करे तो ? इसी त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक एक रिश्ते के बारे में सुवाल फ़रमाया और वोह येही कहता रहा कि मुझे पसन्द नहीं । तब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** पाक ! इस के दिल को पाक कर दे, इस की शर्मगाह को बचा ले और इस का गुनाह बख़्श दे ।'' इस के बाद वोह नौजवान तमाम उ़म्र बदकारी से बेज़ार रहा ।[1]

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद
इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितनी मह़ब्बतो शफ़्क़त के साथ समझाया और बुराई से रोकने के लिये कैसे प्यारे अन्दाज़ में उस नौजवान की इस्लाह़ फ़रमाई, लिहाज़ा नेकी की दावत देने वाले को ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार करते हुए तह़म्मुल मिज़ाजी का मुज़ाहरा करना चाहिये क्यूंकि ''नर्मी'' से जो काम होता है वो ''गर्मी'' से नहीं

1...مسند احمد، مسند انصار، ۸/ ۲۸۵، حدیث: ۲۲۲۷۴

2.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 66

हुवा करता और मुबल्लिग़ को तो "मोम" से ज़ियादा नर्म और "बर्फ़" से ज़ियादा ठन्डा रहना चाहिये। डांट डपट और झाड़ झपट करने से किसी की इस्लाह़ मुश्किल से होती है। ऐ काश ! हमें भी येह तौफ़ीक़ नसीब हो जाए कि जब किसी को गुनाहों में मुब्तला पाएं, नमाज़ों में कोताही करता देखें, झूट, ग़ीबत व चुग़ली, मुसलमान की दिल आज़ारी वग़ैरा गुनाहों में मुलव्वस देखें तो पीठ पीछे उस पर बे जा तन्क़ीद करने और उस की बुराई कर के ख़ुद ग़ीबत की गहरी खाई में छलांग लगाने के बजाए उस को गुनाहों के दलदल से निकालने की कोशिश करें, निहायत नर्मी और प्यार से उसे समझाने और सवाबे आख़िरत के ख़ज़ाने समेटने वाले बनें। हम ख़ुलूसे निय्यत के साथ किसी को समझाएंगे तो إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का फ़ाएदा ज़रूर होगा।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने अन्दर हिल्म का माद्दा पैदा करने और गुस्से की आ़दते बद से छुटकारा पाने के लिये चन्द त़रीके़ और इलाज पेशे ख़िदमत हैं, इन पर अ़मल की निय्यत कीजिये إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बे शुमार बरकतें हासिल होंगी :

...सब से पहले बारगाहे इलाही में सच्चे दिल से गिड़ गिड़ा कर दुआ़ कीजिये ! क्यूंकि तौफ़ीके़ ख़ुदावन्दी के बिग़ैर इन्सान किसी भी गुनाह से बचने की त़ाक़त नहीं रखता।

...हिल्म की आ़दत अपनाने के लिये इस के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल रिवायात पढ़िये और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये।

...ख़ुद को **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब से डराइये कि जिस त़रह़ मुझे इस शख़्स पर क़ुदरत ह़ासिल है इस से बढ़ कर **अल्लाह** पाक मुझ पर क़ादिर है। अगर मैं ने इस पर अपना गुस्सा निकाल दिया तो क़ियामत के दिन ग़ज़बे इलाही से नहीं बच सकूंगा।

www.dawateislami.net

...इसी त़रह़ ग़ुस्से के सबब होने वाले त़िब्बी नुक़्सानात पर भी ग़ौर कीजिये, मसलन इस त़रह़ सिह़्ह़त पर बुरा असर पड़ता है।

...कसरत से तौबाओ इस्तिग़फ़ार कीजिये कि इस की बरकत से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस आ़दत से जान छूटेगी और इस से नफ़रत पैदा होगी।

हि़ल्म व बुर्दबारी के इन त़रीक़ों को इख़्तियार करने, ग़ुस्से पर क़ाबू पाने, शफ़्क़त व नर्मी अपनाने और ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बनने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की बे शुमार बरकतें ह़ासिल होंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब्रो तह़म्मुल और बुर्दबारी के मुतअ़ल्लिक़ प्यारे प्यारे वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल की। आप को कोई कितनी ही तक्लीफ़ पहुंचाता मगर आप अपनी ज़ात के लिये कभी ग़ुस्सा न फ़रमाते, यहां तक कि अपने जानी दुश्मनों को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते थे। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए, अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर चलते हुए ह़िल्म व बुर्दबारी का मुज़ाहरा करें और किसी पर ग़ुस्सा आ जाने की सूरत में ज़ब्त़ से काम लेते हुए उसे मुआ़फ़ कर दें। दुआ़ है **अल्लाह** पाक हमें मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दर्स"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें अपनाने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को नेकी की राह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम "**मदनी दर्स**" भी है, हम सब भी मदनी दर्स में शिर्कत को अपना मामूल बना लें और जहां मदनी दर्स नहीं होता वहां इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ मदनी दर्स की तरकीब बनाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बहुत से लोगों की इस्लाह़ के साथ साथ अपनी इस्लाह़ का भी सामान होगा और मदनी दर्स में इ़ल्मे दीन की बातें सीखने का सवाब भी मिलेगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : जो सुब्ह़ मस्जिद में नेकी सीखने या सिखाने के लिये गया उस के लिये मुकम्मल ह़ज करने वाले की त़रह़ अज्र है।[1] और जो इ़ल्म की तलाश में निकला वोह वापस लौटने तक **अल्लाह** पाक की राह में है।[2]

हमें भी चाहिये कि मदनी दर्स में शिर्कत किया करें और दूसरों को भी शिर्कत की दावत पेश करें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ढेरों बरकतें ह़ासिल होंगी। मदनी दर्स में शिर्कत की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

---

1 ...معجم کبیر، ۸/۹۴، حدیث: ۷۴۷۳

2 ...ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۴/۲۹۴، حدیث: ۲۶۵۶

मदनी दर्स की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई अपने सुधरने का वाक़िआ़ कुछ यूं बयान करते हैं कि मैं सिने 1995 ई. में F.S.C का त़ालिबे इ़ल्म था। मज़्हबी मालूमात न होने की वज्ह से मेरी दोस्ती एक बद मज़्हब से हो गई, मैं उस के साथ ही उठता बैठता और खाता पीता था। कहते हैं कि सोह़बत असर रखती है, लिहाज़ा मैं भी उस के फ़ासिद अ़क़ाइद का शिकार होने लगा। अल्लाह पाक अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दराज़िये उ़म्र बिल ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए कि जिन्हों ने दावते इस्लामी की बुन्याद रख कर उम्मते मुस्लिमा पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया और बे शुमार लोगों को बद मज़्हबों से मह़फ़ूज़ फ़रमाया, यक़ीनन अगर दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल न होता तो उस बद मज़्हब की दोस्ती आज मुझे गुमराही में मुब्तला कर देती। मुझ पर अल्लाह पाक का करम हो गया कि उस दोस्तनुमा **दुश्मन** से मेरी जान छूट गई, सबब कुछ यूं बना कि हमारी मस्जिद में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स शुरूअ़ हो गया, एक दिन मेरे वालिद साह़िब ने फ़रमाया : तुम भी दर्स में शिर्कत किया करो कि दर्स में बैठने की बरकत से न सिर्फ़ मालूमात का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल होता है बल्कि इ़ल्मे दीन की मजलिस में बैठने की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत पाने की भी सआ़दत मिलती है। लिहाज़ा मैं ने दर्स में बा क़ाइदगी से बैठना शुरूअ़ कर दिया और वाक़ेई दर्स में बैठने की बरकत से इ़ल्मे दीन के अनमोल मोतियों से दामन भरने का सुन्हरी मौक़अ़ मिला और साथ ही मेरे दिलो दिमाग़ को ऐसा सुकून नसीब हुवा कि मेरे पास बयान करने के लिये अल्फ़ाज़ नहीं हैं। दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की बरकत से मैं दावते इस्लामी के तह़त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हो गया। मेरे लिये येह एक नया माह़ोल था, हर त़रफ़ इ़ल्मो अ़मल के फूलों से महकी महकी फ़ज़ाओं ने मुझे बहुत मुतास्सिर किया। पुरसोज़ बयान और

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने तो मेरे दिल की दुन्या ही ज़ेरो ज़बर कर दी, मैं ने अपने तमाम गुनाहों से पक्की तौबा की और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی के ज़रीए़ ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुरीद भी बन गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"[1]

सफ़र की सुन्नतें और आदाब

...मुम्किन हो तो जुमेरात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमेरात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है।[2] चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना काब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये जुमेरात के दिन रवाना हुए और आप जुमेरात के दिन रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे।[3] ...अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए कि रात को सफ़र जल्द तै़ होता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...اشعة اللمعات، ۵/ ۱۶۱

3...بخاری، کتاب الجهاد، باب من اراد غزوة فوری...الخ، ۲/ ۲۹۶، حدیث: ۲۹۵۰

"रात को सफ़र किया करो क्यूंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।"[1] ...अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो अपने में से एक को अमीर बना लें।"[2] ...चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाएं और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें।[3] ...जब भी सफ़र पर रवाना हों तो चाहिये कि अपने अहलो माल को **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर के जाएं कि वोही सब से बेहतर हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला है। ...दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह करते रहें। ट्रेन या बस वग़ैरा में سُبْحٰنَ اللہ ,اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ,اَللّٰہُ اَکْبَر ,بِسْمِ اللہ सब तीन तीन बार और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ एक बार पढ़िये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

तेरे ह़बीब की सुन्नत की धूम मच जाए　　गली गली में फिरे मदनी क़ाफ़िला या रब[4]

...

1...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی الدلجة، ۳/۴۰، حدیث: ۲۵۷۱

2...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی القوم یسافرون...الخ، ۳/۵۱، حدیث: ۲۶۰۹

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 6,1 / 1052

4.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 83

www.dawateislami.net

JAMALE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)

صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

जमाले मुस्त़फ़ा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मवाहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा तो आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त करोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस क़ाबिल कैसे हुवा ? तो इरशाद फ़रमाया : "इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर इस का सवाब मुझे नज़्र कर देते हो।"[1]

शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा, तुम पे करोड़ों दुरूद दाफ़ेए़ जुम्ला बला, तुम पे करोड़ों दुरूद[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! माहे रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का महीना जारियो सारी है, येह वोह मुक़द्दस महीना है जिस में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई, इसी लिये इस महीने में ख़ुसूसिय्यत के साथ जहां आप की सीरते त़य्यिबा के मुख़्तलिफ़ गोशे और मीलादुन्नबी के वाक़िआ़त बयान कर के आ़शिक़ाने रसूल के दिलों में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ मज़ीद रौशन की जाती है वहीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुस्नो जमाल का तज़्किरा कर के उन के दिलों को

1 ...الطبقات للشعرانی، رقم ۳۱۸، ابو المواہب محمد الشاذلی، ۲/۱۰۱

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 264

मज़ीद गर्माया जाता है। आज के बयान का मौज़ूअ़ भी **"जमाले मुस्त़फ़ा"** है। आइये ! निहायत ही तवज्जोह और दिल जमई के साथ **हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा** से मुतअ़ल्लिक़ सुनते हैं। चुनान्चे,

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा

मरवी है कि मह़बूबे रब, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत के लिये अपने चन्द सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ रवाना हुए, तो "उम्मे माबद" के ख़ैमे के पास से गुज़रे, वोह आप को पहचानती तो न थी लेकिन थी बड़ी अ़क़्लमन्द, अपने ख़ैमे के पास बैठ जाती और मुसाफ़िरों को खाना वग़ैरा खिलाया करती। इस मुबारक कारवां ने उन से गोश्त और खजूरों के बारे में पूछा ताकि उन से ख़रीद लें लेकिन इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त उन के पास कुछ न था। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैमे के कोने में एक कमज़ोर बकरी देख कर पूछा : "ऐ उम्मे माबद ! येह कैसी बकरी है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : कमज़ोर व लाग़र होने की वज्ह से रेवड़ के साथ नहीं जा सकी। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या येह दूध देती है ?" अ़र्ज़ की : इस ने तो कभी दूध दिया ही नहीं (बल्कि इस ने तो कभी बच्चा भी नहीं जना)। इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम इजाज़त देती हो कि मैं इस का दूध दोह लूं ?" अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों, अगर आप इस में दूध देखते हैं तो दोह लें। चुनान्चे, आप ने बकरी मंगवाई और **अल्लाह** पाक का नाम ले कर उस के थनों और कमर पर अपना मुबारक हाथ फेरा और उस के लिये दुआ़ फ़रमाई तो बकरी ने अपनी टांगें कुशादा कर दीं और दूध देने लगी, आप ने बरतन मंगवा कर उस में दूध दोहा ह़त्ताकि वोह ऊपर तक भर गया, फिर उम्मे माबद को पिलाया यहां तक कि वोह सेर हो गई, फिर सह़ाबा को भी पेट भर कर पिलाया और ख़ुद आख़िर में पिया, फिर दूध निकाला ह़त्ताकि बरतन भर गया, दूध से भरा बरतन उम्मे माबद को दिया और वहां

www.dawateislami.net

से तशरीफ़ ले गए। थोड़ी ही देर के बाद उम्मे माबद के शौहर अबू माबद घर आए, उन्हों ने इतना कसीर दूध देखा तो तअ़ज्जुब से पूछा : ऐ उम्मे माबद ! इतना दूध कहां से आ गया ? ह़ालांकि घर में दूध वाला कोई जानवर भी नहीं ? उम्मे माबद ने कहा : **अल्लाह** पाक की क़सम ! अभी अभी इन इन सिफ़ात का ह़ामिल एक मुबारक शख़्स यहां से गुज़रा है। अबू माबद ने कहा : ज़रा मेरे सामने उन का हुल्या तो बयान करो।

उम्मे माबद ने कहा : "मैं ने एक ऐसी ज़ात देखी है जिन का हुस्न नुमायां था, चेहरा ख़ूब सूरत और तख़्लीक़ बहुत उ़म्दा हुई थी, बड़े ह़सीन, इन्तिहाई जमील थे, आंखें सियाह और बड़ी, पलकें लम्बी थीं, आवाज़ गूंजदार, गर्दन चमकदार जब कि दाढ़ी मुबारक घनी थी, दोनों अबरू बारीक और मिले हुए थे। उन के मुबारक क़द में भी बहुत मियाना रवी थी, न इतना त़वील क़द कि देख कर बुरा लगे और न इतना पस्त कि देख कर ह़क़ीर मालूम हो, दूर से देखो तो बहुत ज़ियादा बा रोब और ह़सीनो जमील नज़र आते और क़रीब से देखा जाए तो उस से कहीं ज़ियादा ख़ूबरू और ह़सीन दिखाई देते।" येह सरापा सुन कर अबू माबद ने कहा : ब ख़ुदा ! येह तो वोही ज़ाते गिरामी हैं, जिन का मुआ़मला हमें मक्कए मुकर्रमा से पहुंचा है, मेरी तो ख़्वाहिश है कि उन की रफ़ाक़त इख़्तियार करूं। अगर मेरे इख़्तियार में हुवा तो मैं अपनी इस ख़्वाहिश की तक्मील ज़रूर करूंगा (और फिर ऐसा ही हुवा कि **अल्लाह** पाक ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, बाइ़से ख़ैरो बरकत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा बरकत क़दम उन के घर में पड़ जाने की बरकत से अबू माबद और उम्मे माबद को न सिर्फ़ दौलते इस्लाम से सरफ़राज़ फ़रमाया बल्कि शरफ़े सह़ाबिय्यत भी अ़त़ा फ़रमा दिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)।[1]

ख़िल्क़ तुम्हारी जमील, ख़ुल्क़ तुम्हारा जलील ख़ल्क़ तुम्हारी गदा तुम पे करोड़ों दुरूद[2]

1 ...معجم کبیر، ۴/۴۸، حدیث: ۳۶۰۵

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 268

शेर की वज़ाहत : ऐ मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप का पैदा होना भी बे मिस्लो बे मिसाल और ला जवाब व बा कमाल है और आप की सीरते त़य्यिबा और अख़्लाक़े आ़लिया का भी कोई सानी नहीं। इसी लिये सारी मख़्लूक़ आप की गिरवीदा और गुलाम बन गई है और शाहाने वक़्त भी आप की गली के गदा होने पर फ़ख़्र करते हैं। ऐ मेरे ईमान की जान ! आप पर करोड़ों दुरूद।[1]

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा मरह़बा सद मरह़बा — औजो कमाले मुस्त़फ़ा मरह़बा सद मरह़बा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि बीबी आमिना के लाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक ने कैसा हुस्नो जमाल अ़त़ा फ़रमाया है कि ईमान वालों ने आप के रुख़े ज़ैबा को देखा तो आप के नाम पर अपनी जानें निछावर करने से पीछे नहीं हटे और जब किसी ग़ैर मुस्लिम ने देखा तो आप का ह़सीन सरापा उस की नज़र में ऐसा समाया कि वोह दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया। यक़ीनन अव्वलीनो आख़िरीन में न तो कोई ऐसा था न है न होगा।

لَمْ يَاتِ نَظِيْرُكَ فِيْ نَظَرٍ — مِثْلِ تو نہ شُد پیدا جانا

जगराज को ताज तोरे सर सो — है तुझ को शहे दो सरा जाना[2]

शेर की वज़ाहत : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप जैसा कभी न देखा गया, न आयिन्दा देखा जाएगा क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने आप जैसा कोई पैदा ही नहीं फ़रमाया, जहानों की बादशाही आप ही को सजती है, इस लिये हम ने आप को जहानों का बादशाह मान लिया है।[3]

---

1 .....शर्हे कलामे रज़ा, स. 972

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 43

3 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 119

www.dawateislami.net

हुस्ने यूसुफ़ की रानाइयां

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने तमाम ह़सीनो जमील अश्या को पैदा फ़रमा कर पूरी काएनात को हुस्नो जमाल बख़्शा और फिर पूरी काएनात के हुस्न से बढ़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को हुस्नो जमाल अ़त़ा फ़रमाया, उन के हुस्नो जमाल का येह आ़लम था कि जब मिस्र की औ़रतों ने आप को देखा तो आप के हुस्न में ऐसी खुद रफ़्ता और गुम हुईं कि बेख़ुदी के आ़लम में उन्हों ने अपने हाथ की उंगलियां तक काट डालीं। इस वाक़िए़ को कुरआने करीम ने इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान किया। चुनान्चे, **पारह 12, सूरए यूसुफ़, आयत नम्बर 31** में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

فَلَمَّا رَاَیْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ قَطَّعْنَ اَیْدِیَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًاؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِیْمٌ ﴿۳۱﴾

(پ۱۲، یوسف:۳۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जब औ़रतों ने यूसुफ़ को देखा उस की बड़ाई बोलने लगीं और अपने हाथ काट लिये और बोलीं **अल्लाह** को पाकी है येह तो जिन्से बशर से नहीं येह तो नहीं मगर कोई मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ता।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूंकि उन्हों ने इस जमाले आ़लम अफ़रोज़ के साथ नबुव्वतो रिसालत के अन्वार और आ़जिज़ियो इन्किसारी के आसार और शाहाना हैबत व इक़्तिदार और लज़ीज़ खानों और ख़ूब सूरत चेहरों की त़रफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी, तअ़ज्जुब में आ गईं और आप की अ़ज़मतो हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो

जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि उन औ़रतों को ख़ुद फ़रामोशी हो गई। और (उन के) दिल ह़ज़रते यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ काटने की तक्लीफ़ का अस्लन एह़सास न हुवा।[1]

हुस्ने यूसुफ़ और हुस्ने मुस्तफ़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के हुस्न का आ़लम था कि जिन्हें तमाम मख़्लूक़ से बढ़ कर हुस्नो जमाल अ़ता किया गया तो हुस्नो जमाल के शाहकार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल का क्या आ़लम होगा कि जिन का हुस्न ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के हुस्नो जमाल से भी बढ़ कर है। इसी लिये तो सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है :

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब[2]

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :

فَلَوْ سَمِعُوْا فِیْ مِصْرَ اَوْصَافَ خَدِّہٖ　　لَمَا بَذَلُوْا فِیْ سَوْمِ یُوْسُفَ مِنْ نَقْدٍ

तर्जमा : अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक रुख़्सार की ख़ूबियां अहले मिस्र सुन लेते तो जनाबे यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र (मालो दौलत) न बहाते।

لَوَاحِیْ زُلَیْخَا لَوْ رَاَیْنَ جَبِیْنَہٗ　　لَاٰثَرْنَ بِالْقَطْعِ الْقُلُوْبَ عَلَی الْاَیْدِیْ

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 12, यूसुफ़, तह़्तुल आयत : 31
2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 58

तर्जमा : अगर ज़ुलैख़ा को मलामत करने वाली औरतें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी की ज़ियारत कर लेतीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह देतीं।(1)

तेरा मस्नदे नाज़ है अ़र्शे बरीं तेरा मह़रमे राज़ है रूह़े अमीं

तू ही सरवरे हर दो जहां है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम(2)

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे अ़ज़मतो शान वाले नबी ! आप की अ़ज़मतों का कौन अन्दाज़ा लगा सकता है कि अ़र्शे मुअ़ल्ला तो आप के नाज़ो अदा से बैठने की जगह है और जिब्रीले अमीन आप के हमराज़ व वज़ीर हैं और आप दोनों जहानों के बादशाह हुए, मैं क्या क्या अ़र्ज़ करूं, मेरे आक़ा, ख़ुदा की क़सम ! आप जैसा कोई नहीं।(3)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने बे मिसाल को हम भला क्या समझ सकते हैं ? हज़राते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो दिन रात सफ़रो हज़र में जमाले नबुव्वत की तजल्लियों को अपनी आंखों से देखा करते थे उन्हों ने नूर के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जमाले बे मिसाल को जिन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया, मुलाहज़ा कीजिये। चुनान्चे,

सब से ज़ियादा ह़सीनो जमील

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हर ह़सीन चीज़ देखी है लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ह़सीनो जमील मैं ने कभी नहीं देखा।(4)

---

1 ...شرح المواهب، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه...الخ، ام المومنین عائشة، ۴/ ۳۹۰

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 81

3 .....शर्हे़ कलामे रज़ा, स. 226

4 ...سبل الهدی والرشاد، جماع ابواب صفة جسده...الخ، الباب الاول فی حسنه صلی اللّٰہ علیه وسلم، ۲/ ۷

www.dawateislami.net

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत और ख़ुश रंग थे। जिस ने भी आप की तारीफ़ो तौसीफ़ बयान की उस ने आप को चौदहवीं के चांद से तश्बीह दी, पसीनए मुबारका की बूंद आप के चेहरए अन्वर में चमकदार मोती की त़रह़ मालूम होती।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चांदनी रात में देखा, मैं कभी चांद की त़रफ़ देखता और कभी आप के चेहरए अन्वर को देखता तो मुझे आप का चेहरा चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत नज़र आता था।(2)

येह जो महरो मह पे है इत़्लाक़ आता नूर का
भीक तेरे नाम की है इस्तिआ़रा नूर का(3)

चांद से तश्बीह देने में ह़िक्मत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल से मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के दिल नशीन फ़रामीन सुन कर यक़ीनन आ़शिक़ाने रसूल के दिल ख़ुशी से झूम उठे होंगे। बयान कर्दा रिवायतों में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने चेहरए अन्वर को चांद से तश्बीह दी ह़ालांकि सूरज की रौशनी चांद से ज़ियादा होती है, इस की ह़िक्मत येह है कि चांद रूए ज़मीन को अपनी ताबानियों से भर देता है और देखने वालों को उस से उन्सिय्यत ह़ासिल होती है और बिग़ैर किसी

1 ...دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل الثلاثون فی ذکر مؤازاۃ...الخ، القول فیما اوتی یوسف علیہ السلام، ص ۳۶۰
2 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی الرخصۃ...الخ، ۴/ ۳۷۰، حدیث: ۲۸۲۰
3 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 248

तक्लीफ़ के उस पर नज़रें जमाना मुमकिन होता है जब कि सूरज में येह सब मुमकिन नहीं, क्यूंकि उसे देखने से आंखें चुन्धया जाती हैं।[1]

ख़ुरशीद था किस ज़ोर पर क्या बढ़ के चमका था क़मर

बे पर्दा जब वोह रुख़ हुवा येह भी नहीं वोह भी नहीं[2]

शेर की वज़ाह़त : सूरज अपनी पूरी आबो ताब के साथ तुलूअ़ हुवा और सारे जहां को रौशन कर दिया, चांद भी अपनी तमाम तर जल्वा सामानियों के साथ चमका और सारी दुन्या को नूर का टुकड़ा बना दिया, मगर जब रुख़े मुस्त़फ़ा से निक़ाब उठा तो दोनों ने शर्मिन्दा हो कर मुंह छुपा लिया और मह़बूबे ख़ुदा के हुस्नो जमाल के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म कर लिया।[3]

इक झलक देखने की ताब नहीं आ़लम को

याद रहे ! सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस हुस्नो जमाल को चांद से तश्बीह दी है येह आप का कामिल हुस्नो जमाल नहीं था, अगर आप का हुस्ने कामिल लोगों पर ज़ाहिर हो जाता तो आंखें उसे देखने की त़ाक़त न रखतीं। जैसा कि अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तमाम तर हुस्नो जमाल हम पर ज़ाहिर

1 ...شرح المواھب، المقصد الثالث فیما فضلہ اللّٰہ تعالٰی بہ، الفصل الاول فی کمال خلقتہ...الخ، ۵/۲۵۸

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 110

3 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 328

www.dawateislami.net

नहीं हुवा, अगर आप का कामिल हुस्न ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आंखें इस जल्वए ज़ैबा को देखने की ताब न लातीं।"(1)

इक झलक देखने की ताब नहीं आ़लम को वोह अगर जल्वा करें कौन तमाशाई हो(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल और औसाफ़ो कमाल को बयान करने का हम हरगिज़ ह़क़ अदा नहीं कर सकते लेकिन आप के ज़िक्रे मुबारक से बरकत ह़ासिल करने के लिये, आप के चन्द आज़ाए शरीफ़ा के तनासुब और हुस्नो जमाल के तज़्किरे कर के अपने लिये रह़मतों और बरकतों का सामान इकठ्ठा करते हैं। चुनान्चे,

चेहरए मुबारक

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक जमाले इलाही का आईना और अन्वारो तजल्लियात का मज़्हर था, पुर गोश्त और किसी क़दर गोल था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को देखते ही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पुकार उठे कि "येह दरोग़ गो (यानी झूटे) का चेहरा नहीं" और ईमान ले आए।(3)

है कलामे इलाही में शम्सुद्दुह़ा तेरे चेहरए नूर फ़ज़ा की क़सम
क़समे शबे तार में राज़ येह था कि ह़बीब की ज़ुल्फ़े दोता की क़सम(4)

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे नूर वाले आक़ा ! क़ुरआने मजीद में وَالشَّمْسِ وَالضُّحٰی फ़रमा कर **अल्लाह** पाक ने आप के चेहरए अन्वर की क़सम

1 ...شرح المواھب، المقصد الثالث فیما فضلہ اللّٰہ تعالی بہ، الفصل الاول فی کمال خلقتہ...الخ، ۵/ ۲۴۱

2 .....ज़ौक़े नात, स. 142

3 ...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب ماجاء فی قیام اللیل، ۲/ ۱۲۷، حدیث: ۱۳۳۴

4 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 80

www.dawateislami.net

याद फ़रमाई है और وَالَّیۡلِ اِذَا سَجٰی फ़रमा कर आप की कुन्डल वाली सियाह ज़ुल्फ़ों की क़सम याद फ़रमाई है, गोया दिन अगर मुनव्वरो रौशन है तो रुख़े मुस्त़फ़ा से और रात अगर अन्धेरी व सियाह है तो ज़ुल्फ़े दोता से।[1]

चश्माने मुबारक

प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखें बड़ी और क़ुदरते इलाही से सुर्मगीं (सुर्मे वाली) और पलकें दराज़ थीं। आंखों की सफ़ेदी में बारीक सुर्ख़ डोरे थे। गुज़श्ता कुतुब में येह भी आप की एक अ़लामते नबुव्वत थी।

सुर्मगीं आंखें ह़रीमे ह़क़ के वोह मुश्कीं ग़ज़ाल
है फ़ज़ाए ला मकां तक जिन का रमना नूर का[2]

शेर की वज़ाह़त : रात को भी दिन की त़रह़ देखने वाली और आगे पीछे यक्सां देखने वाली, कस्तूरी से भरपूर क़ुदरती सुर्मा लगी हुई, मेरे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़सीनो जमील आंखें जो नीचे झुकें तो (नज़र) तह़तुस्सरा (ज़मीन के सब से निचले त़बक़े) तक जाए और ऊपर उठें तो नज़र अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी पार हो जाए और उन बा बरकत और नूरानी आंखों का अपने ह़ल्क़ों में घूमना भी नूर ही नूर है क्यूंकि इन्ही के इशारों से हम गुनहगारों की नजात होगी।[3]

1.....माख़ूज़ अज़ शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 226
2.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 248
3.....माख़ूज़ अज़ शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 721

अब्रूए मुबारक

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भवें दराज़ और बारीक थीं और दरमियान में दोनों इस क़दर मुत्तसिल थीं कि दूर से मिली हुई मालूम होतीं।[1]

जिन के सजदे को मह़राबे काबा झुकी उन भवों की लत़ाफ़त पे लाखों सलाम[2]

शेर की वज़ाह़त : हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब इस जहां को अपनी बा बरकत तशरीफ़ आवरी से ज़ीनत बख़्शी और आप की विलादते बा सआ़दत हुई तो आप ख़ुद तो सजदे में गिर कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपनी उम्मत के लिये दुआ़ फ़रमा रहे थे और काबए मुअ़ज़्ज़मा आप की त़रफ़ झुक कर आप की नूरानी भवों की नज़ाकतो लत़ाफ़त को सलामी पेश कर रहा था।[3]

बीनिये मुबारक

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीनी यानी मुबारक नाक ख़ूब सूरत और दराज़ थी और दरमियान में उभराव नुमायां था और नाक की हड्डी पर एक नूर दरख़्शां (चमकता) था। जो शख़्स बग़ौर न देखता तो उसे मालूम होता कि बुलन्द है ह़ालांकि बुलन्द न थी। बुलन्द तो वोह नूर था जो उसे घेरे हुए था।[4]

बीनिये पुरनूर पर रख़्शां है बुक्का नूर का है लिवाउल ह़म्द पर उड़ता फरेरा नूर का[5]

शेर की वज़ाह़त : प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुरनूर बीनी (यानी मुबारक नाक) पे हर वक़्त इस त़रह़ नूर चमकता रहता है कि

---

1 ...معجم کبیر، ۲۲/ ۱۵۵، حدیث: ۴۱۴

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 300

3 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 1021

4 ...معجم کبیر، ۲۲/ ۱۵۵، حدیث: ۴۱۴

5 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 243

www.dawateislami.net

यूं लगता है जैसे लिवाउल हम्द (क़ियामत के दिन **अल्लाह** की हम्द का झन्डा जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में होगा उस) का फरेरा (झन्डा) लहरा रहा है।[1]

पेशानिये मुबारक

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक कुशादा थी और चराग़ की मानिन्द चमकती थी। हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

مَتٰی یَبْدُ فِی اللَّیْلِ الْبَہِیْمِ جَبِیْنُہٗ　　　بَلَجَ مِثْلُ مِصْبَاحِ الدُّجَی الْمُتَوَقِّدِ

तर्जमा : जब अन्धेरी रात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी ज़ाहिर होती तो तारीकी के रौशन चराग़ की मानिन्द चमकती थी।[2]

सय्यिदी आला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा　　　उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम[3]

शेर की वज़ाहत : जब ह़श्र बपा होगा और नफ़्सा नफ़्सी का आ़लम होगा, कोई किसी का पुरसाने ह़ाल न होगा तो शफ़ाअ़त का सेहरा प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर सजेगा तो फिर लजपाल आक़ा की सआ़दत वाली पेशानी पे क्यूं न लाखों बार दुरूदो सलामे मह़ब्बत पेश किया जाए, जिन की वज्ह से हमारी यहां भी बिगड़ी बन रही है और वहां भी बनेगी।[4]

---

1 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 710

2 ...سبل الهدى والرشاد، الباب الرابع في صفة جبينه...الخ، ۲/۲۱

3 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 300

4 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 1020

www.dawateislami.net

कान मुबारक

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक कान कामिलो ताम्म थे। कुव्वते बसारत की त़रह़ अल्लाह पाक ने आप को कुव्वते समाअ़त भी कमाल की अ़त़ा फ़रमाई थी। इसी लिये आप सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाते कि जो मैं देखता हूं, तुम नहीं देख सकते और जो मैं सुनता हूं तुम नहीं सुन सकते, मैं तो आस्मान की आवाज़ भी सुन लेता हूं।(1)

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान   काने लाले करामत पे लाखों सलाम(2)

शेर की वज़ाह़त : नूर के पैकर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक कान दर ह़क़ीक़त इ़ज़्ज़त के मोती, अ़ज़्मतो शान के हीरे और जवाहिरात की कान हैं, जिस त़रह़ क़रीब से सुनते हैं इसी त़रह़ दूर से भी सुनते हैं। आप अपनी वालिदए माजिदा के बत़्ने अक़्दस में रह कर लौह़े मह़फ़ूज़ पे चलने वाले क़लम की आवाज़ भी सुन लेते फिर ऐसे मुबारक कान पे भी क्यूं न लाखों सलाम कहे जाएं।(3)

दहने मुबारक

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक मुंह फ़राख़, रुख़्सार मुबारक हमवार, सामने के दांत मुबारक कुशादा और रौशनो ताबां थे, जब आप कलाम फ़रमाते तो उन से नूर निकलता दिखाई देता था। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा

1... ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن والبکاء، ۴/ ۴۶۴، حدیث: ۴۱۹۰

2.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 300

3.....माख़ूज़ अज़ शर्हे़ कलामे रज़ा, स. 1016

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराते तो दीवारें रौशन हो जातीं ।(1)

वोह दहन जिस की हर बात वह़िये ख़ुदा चश्मए इल्मो ह़िक्मत पे लाखों सलाम(2)

शेर की वज़ाह़त : जिस मुंह से निकलने वाली हर बात वह़ी का दरजा रखती है इल्मो ह़िक्मत के उस चश्मए फ़ैज़ पे लाखों सलाम हों ।(3)

मुबारक लुआ़बे दहन की बरकतें

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस लुआ़ब ज़ख़्मियों और बीमारों के लिये शिफ़ा था । चुनान्चे,

फ़त्ह़े ख़ैबर के दिन आप ने अपना लुआ़बे दहन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم की दुखती आंखों पर लगाया तो फ़ौरन आराम हो गया गोया आंखों में कभी तक्लीफ़ थी ही नहीं ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि बद्र के दिन मेरी आंख में तीर लगा और वोह फूट गई । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में अपना लुआ़ब मुबारक लगाया और दुआ़ फ़रमाई तो मुझे ज़रा भी तक्लीफ़ न हुई और आंख बिल्कुल दुरुस्त हो गई ।(5)

जिस के पानी से शादाब जानों जिनां उस दहन की त़रावत पे लाखों सलाम
जिस से खारी कूंवें शीरए जां बने उस ज़ुलाले ह़लावत पे लाखों सलाम(6)

1.....دلائل النبوۃ للبیہقی، باب جامع صفۃ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱/ ۲۷۵
2.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 302
3.....माख़ूज़ अज़ शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 1027
4.....مسلم، کتاب فضائل صحابۃ، باب من فضائل علی بن ابی طالب، ص ۱۰۰۷، حدیث: ۲۲۲۳
5.....مسند بزار، مسند رفاعۃ بن رافع، ۹/ ۱۸۱، حدیث: ۳۷۲۹
6.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 302

शेर की वज़ाहत : **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दहने अक़्दस, चश्मए इल्मो ह़िक्मत भी है और उस दहन की तरी जानो दिल के लिये राह़तो सुकून और तरो ताज़गी का बाइ़स भी है। मैं अपने प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक की तरी पे भी लाखों सलाम भेजता हूं। (इसी त़रह़) मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह लुआ़बे दहन जो खारी कूंवों को मीठा कर देता है और रूह़ो जान को एक नई ताज़गी अ़त़ा कर देता है, उस मिठास के चश्मे पे (भी) हमारी त़रफ़ से लाखों दुरूदो सलाम हों।(1)

ज़बान मुबारक

अल्लाह पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा फ़सा़ह़त वाले थे, आप का कलाम ऐसा वाज़ेह़ होता कि पास बैठने वाला याद कर लेता।(2)

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें   उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

उस की बातों की लज़्ज़त पे बेह़द दुरूद   उस के ख़ुत़बे की हैबत पे लाखों सलाम(3)

शेर की वज़ाहत : सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस तक़्दीरे इलाही की चाबी है। उस ज़बाने अक़्दस की पूरे जहां बल्कि दोनों जहानों पर जारियो सारी हुकूमत पे लाखों सलाम हों। हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुंह से निकलने वाली प्यारी प्यारी और मीठी मीठी बातों की लज़्ज़तो सुरूर पर

---

1 .....माख़ूज़ अज़ शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 1028

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی کلام النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۵/ ۳۶۲، حدیث: ۳۶۵۹

3 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 302

लाखों रह़मतें हों और आप के पुर कशिश ख़ुत़बे और बयान की शानो शौकत और रोबो दबदबे पे लाखों सलाम हों ।(1)

हाथ मुबारक

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हथेलियां और बाज़ू मुबारक पुर गोश्त थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने किसी रेशमी कपड़े को आप की हथेली मुबारक से ज़ियादा नर्म नहीं पाया और न कोई ख़ुश्बू आप की ख़ुश्बू से बढ़ कर पाई ।"(2) हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस से मुसाफ़ह़ा फ़रमाते वोह दिन भर अपने हाथ में ख़ुश्बू पाता और जिस बच्चे के सर पर आप दस्ते मुबारक रख देते वोह ख़ुश्बू में दूसरे बच्चों से मुम्ताज़ हो जाता ।(3)

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है(4)

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिन गोरे, नूरानी और बा बरकत हाथों को आस्मान की त़रफ़ बारिश के लिये दुआ़ करते हुए फैला कर आप ने मदीनए त़य्यिबा में पानी ही पानी कर दिया उन नूरानी हाथों का सदक़ा हमें भी अ़त़ा हो, यानी हमारी बख़्शिश के लिये भी एक बार (वोह मुबारक हाथ) उठा दीजिये ।(5)

1.....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 1028, 1029

2...بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۲/ ۴۸۹، حدیث: ۳۵۶۱

3.....सीरते रसूले अ़रबी, स. 263

4.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 176

5.....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 514

www.dawateislami.net

क़दमैने शरीफ़ैन

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाउं मुबारक पुरगोश्त और ख़ूब सूरत ऐसे कि किसी के न थे और नर्म व साफ़ ऐसे कि उन पर पानी ज़रा भी न ठहरता बल्कि फ़ौरन बह जाता।[1]

गोरे गोरे पाउं चमका दो ख़ुदा के वासिते

नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शबे तार है[2]

शेर की वज़ाहत : ऐ मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा के लिये अपने गोरे गोरे और नूरानी क़दमैन मेरी अन्धेरी क़ब्र में रख कर मेरी क़ब्र की सियाह रात को सुब्हे नूर बना दीजिये ! ताकि मेरी वह्शत दूर हो जाए और नकीरैन के सुवालात के ब आसानी जवाबात दे सकूं।[3]

मूए मुबारक

सरे अन्वर के बाल न तो बहुत घुंगरियाले थे और न ही बहुत सीधे बल्कि दोनों के दरमियान थे।[4] दाढ़ी मुबारक घनी थी।[5] उसे कंघी करते[6] और आईना देखते[7] और सोने से पहले आंखों में तीन तीन बार

1 ...معجم کبیر، ۲۲/ ۱۵۵، حدیث: ۴۱۴

2 .....हदाइक़े बख़्शिश, स. 177

3 .....माख़ूज़ अज़ शर्हे कलामे रज़ा, स. 514

4 ...بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۲/ ۴۸۷، حدیث: ۳۵۴۷

5 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات خاتم النبوة...الخ، ص ۹۸۲، حدیث: ۲۰۸۴

6 ...ترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی ترجل رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۵/ ۵۰۹، حدیث: ۳۳

7 ...الزواجر، الکبیرة الثانیة الشرک الاصغر وھو الریاء، ۱/ ۸۸

www.dawateislami.net

सुर्मा डालते ।[1] मूंछ मुबारक को कटवाया करते और फ़रमाते थे कि मुशरिकीन की मुख़ालफ़त करो यानी दाढ़ियां बढ़ाओ और मूंछों को पस्त रखो ।[2]

हम सियह कारों पे या रब तपिशे मह़शर में
साया अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गैसू[3]

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत की सख़्त गर्मी में मुझे अपने मह़बूब की वल्लैल ज़ुल्फ़ों का साया नसीब कर देना ताकि उस झुलसा देने वाली धूप की ह़रारत से मह़फ़ूज़ रह सकूं ।[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! ह़ुस्नो जमाल के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ुल्यए मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अश्आ़र सुनते हैं :

ह़ुल्यए नूरे ख़ुदा मैं क्या लिखूं ? रूहे ह़क़ का मैं सरापा क्या लिखूं ?
जल्वा गर होगा मकाने क़ब्र में पर जमाले रह़मतुल्लिल आ़लमीं
मुख़्तसर लिख दूं जमाले बे मिसाल इस लिये है आ गया मुझ को ख़याल
और उस की याद भी आसान हो ताकि यारों को मेरे पहचान हो
पर सपेदो सुर्ख़ था रंगे बदन था मियाना क़द व औसत़ पाक तन

1 ...ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، ۳/ ۲۹۳، حدیث: ۱۷۶۳
2 ...بخاری، کتاب اللباس، باب تقلیم الاظفار، ۴/ ۷۵، حدیث: ۵۸۹۲
3 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 119
4 .....शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 344

थे ह़सीनो गोल सांचे में ढले *चांद के टुकड़े थे आज़ा आप के*

चांद में है दाग़, वोह बे दाग़ थी *थी जबीं रौशन कुशादा आप की*

और दोनों को हुवा था इत्तिसाल *दोनों अबरू थीं मिसाले दो हिलाल*

या कि अदना कुर्ब था ''क़ौसैन'' का *इत्तिसाले दो महे ''ईदैन'' था*

देख कर कुरबान थीं सब हूरे ईं *थीं बड़ी आंखें ह़सीनो सुर्मगीं*

साथ ख़ूबी के दहन बीनी बुलन्द *कान दोनों ख़ूब सूरत अर्जमन्द*

सूरत अपनी उस में हर इक देखता *साफ़ आईना था चेहरा आप का*

ख़ूब थी गुंजाने मू रंग सियाह *ताबा सीना रीशे मह़बूबे इलाहा*

दोनों आ़लम में नहीं ऐसा कोई [1] *मैं कहूं पहचान उ़म्दा आप की*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह है हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल आप जैसा न कभी आया, न आएगा। आप सर ता पा नूर के मर्कज़ो मह़वर थे, आप के तमाम आज़ाए मुबारका ख़ूबी व कमाल के ऐसे जामेअ़ थे कि उस की नज़ीरो मिसाल नहीं मिलती। ग़ौर करें क्या ऐसे प्यारे से बढ़ कर भी कोई मह़ब्बत के लाइक़ हो सकता है ? हरगिज़ नहीं, बिल ख़ुसूस वोह लोग जो दुन्याए फ़ानी के आ़रिज़ी हुस्न को देख कर इ़श्क़े मजाज़ी की बीमारी का शिकार हो जाते हैं और फिर ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों में मुब्तला हो कर अपनी दुन्याओ आख़िरत बरबाद कर लेते हैं उन के लिये मक़ामे ग़ौर है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : इस (इ़श्क़े मजाज़ी) की सब से बड़ी वज्ह आज कल के अक्सर मुसलमानों में इस्लामी मालूमात की कमी और सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से दूरी है। इसी सबब से हर

1 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 563

www.dawateislami.net

त़रफ़ गुनाहों का सैलाब उमन्ड आया है ! T.V, V.C.R और इन्टरनेट वग़ैरा में इश्क़िया फ़िल्मों और फ़िस्क़िया ड्रामों को देख कर या इश्क़ बाज़ियों की मुबालग़ा आमेज़ ख़बरों नीज़ नाविलों, बाज़ारी माहनामों, डाइजेस्टों में फ़र्ज़ी इश्क़िया अफ़्सानों को पढ़ कर या कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों की मख़्लूत़ क्लासों में बैठ कर या ना मह़रम रिश्तेदारों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो कर आपसी बे तकल्लुफ़ी के दल दल के अन्दर उतर कर अक्सर किसी न किसी को किसी से इश्क़ हो जाता है। पहले यक त़रफ़ा होता है फिर जब फ़रीक़े अव्वल, फ़रीक़े सानी को मुत्तलअ़ करता है तो बाज़ अवक़ात दो त़रफ़ा हो जाता है और फिर उ़मूमन गुनाहो इस्यान का तूफ़ान खड़ा हो जाता है। फ़ोन पर जी भर कर बे शर्माना बात बल्कि बे ह़िजाबाना मुलाक़ात के सिलसिले होते हैं, मक्तूबातो सौग़ात के तबादले होते हैं, शादी के ख़ुफ़्या क़ौलो क़रार हो जाते हैं, अगर घरवाले दीवार बनें तो बसा अवक़ात दोनों फ़रार हो जाते हैं, बादहू (यानी इस के बाद) अख़्बार में उन के इश्तिहार छपते हैं, ख़ानदान की आबरू का सरे बाज़ार नीलाम होता है, कभी "कोर्ट मेरेज" की तरकीब बनती है तो مَعَاذَ اللہ कभी यूं ही बिग़ैर निकाह़ के ....नीज़ ऐसा भी होता रहता है कि भागते नहीं बनती तो ख़ुदकुशी की राह ली जाती है, जिस की ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती रहती हैं।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम में से कोई इन गुनाहों में मुब्तला है तो हाथों हाथ सच्चे दिल से तौबा कर लीजिये, इस इश्क़ सरापा फ़िस्क़ से नजात के लिये **अल्लाह** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के आ़ली दरबार में गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांगिये, हर मुमकिन सूरत में इस वबाल से पीछा छुड़ाइये। ख़ुद को दीनी कामों में एक दम मश्ग़ूल कर दीजिये। **अल्लाह** पाक व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

---

1 .....नेकी की दावत, स. 40

मह़ब्बत अपने दिल में बढ़ाइये और बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ासा (यानी फ़रियाद) पेश कीजिये।

नुक़ूशे उल्फ़ते दुन्या मेरे दिल से मिटा देना
मुझे अपना ही दीवाना बनाना या रसूलल्लाह
न दौलत दो न दो कोई ख़ज़ाना या रसूलल्लाह
सिखा दो इश्क़ में रोना रुलाना या रसूलल्लाह
सलीक़ा आप की यादों में रोने का तड़पने का
पए ग़ौसो रज़ा मुझ को सिखाना या रसूलल्लाह(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की रंगीनियों से दिल लगाने का कुछ फ़ाएदा नहीं होगा, अगर दिल लगाना ही है तो **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात से लगाइये, आप की सुन्नतों पर अ़मल की कोशिश कीजिये। सीरते मुस्त़फ़ा के बारे में मज़ीद जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 758 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सीरते रसूले अ़रबी**" और 872 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" का मुत़ालआ़ कीजिये, इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मालूमात में इज़ाफ़े के साथ साथ मह़ब्बते रसूल मज़ीद बढ़ेगी और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी बेदार होगा।

याद रखिये ! हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हसीनो जमील होने के साथ साथ नफ़ासतो नज़ाफ़त पसन्द भी थे, लिहाज़ा हमें भी सफ़ाई सुथराई का ख़याल रखते हुए जाइज़ ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करनी चाहिये कि सफ़ाई सुथराई **अल्लाह** पाक को बड़ी मह़बूब है। चुनान्चे, ह़दीसे मुबारक में है :

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 326, 327

اِنَّ اللّٰہَ جَمِیۡلٌ یُّحِبُّ الۡجَمَالَ यानी अल्लाह पाक जमील है और जमाल (ख़ूब सूरती) को पसन्द फ़रमाता है।(1) आइये ज़ीनत की जाइज़ और नाजाइज़ सूरतों से मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुनते हैं। चुनान्चे,

जाइज़ व नाजाइज़ ज़ीनत

...मर्दों को सोने की अंगूठी पहनना ह़राम है, सिर्फ़ चांदी की एक नग वाली एक अंगूठी जो साढ़े चार माशे से कम की हो पहनने की इजाज़त है।

...औ़रतें सोने चांदी की हर क़िस्म की अंगूठियां छल्ले और हर क़िस्म के ज़ेवरात पहन सकती हैं।

...नाबालिग़ लड़कों को भी ज़ेवरात पहनाना ह़राम है, पहनाने वाले गुनहगार होंगे।(2)

...अगर अल्लाह तआ़ला ने दौलत दी है तो अच्छा लिबास और क़ीमती कपड़ों का इस्तिमाल औ़रतों और मर्दों दोनों के लिये जाइज़ है बशर्त़ येह कि फ़ख़्र और घमन्ड (तकब्बुर) के लिये न हों बल्कि नेमते ख़ुदावन्दी के इज़्हार के लिये हो।(3)

...सुर्मा लगाना हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निहायत ही प्यारी प्यारी और मीठी मीठी सुन्नत है, आप सोने से पहले अपनी मुबारक आंखों में सुर्मा लगाया करते, लिहाज़ा हमें भी सोने से पहले इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से अपनी आंखों में सुर्मा लगाना चाहिये कि इस से हमें सुर्मा लगाने की सुन्नत का भी सवाब मिलेगा और साथ ही साथ इस के दुन्यवी फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे।

...प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सरे अन्वर और दाढ़ी मुबारक में तेल डालते, कंघा करते, बीच सर में मांग निकालते थे नीज़ सर और दाढ़ी के बालों की

1...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص۶۱، حدیث: ۲۶۵

2...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذھب والفضۃ، ۵/ ۳۳۵

3...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/ ۵۷۹

www.dawateislami.net

सफ़ाई सुथराई की तरग़ीब भी इरशाद फ़रमाया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के बाल हों तो वोह उन का इकराम करे (यानी उन्हें धोए, तेल लगाए, कंघा करे)।(1)

...लड़कियों के नाक कान वग़ैरा छेदना जाइज़ है।(2)

...बाज़ लोग लड़कों के भी कान छिदवाते और बाली वग़ैरा पहनाते हैं येह नाजाइज़ है यानी लड़के का कान छिदवाना भी नाजाइज़ और उसे ज़ेवर पहनाना भी नाजाइज़ ।(3)

...औरतों को हाथ पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है (अलबत्ता येह ख़याल रहे कि मेहंदी जिर्मदार यानी जिस की तह जमती हो ऐसी न हो)।

...छोटे बच्चों (ना बालिग़ लड़कों) के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना नाजाइज़ है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक मुख़न्नस (यानी हीजड़ा) ह़ाज़िर किया गया, जिस ने अपने हाथ और पाउं मेहंदी से रंगे हुए थे। इरशाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है (यानी इस ने क्यूं मेहंदी लगाई है) ? लोगों ने अ़र्ज़ की : येह औ़रतों की नक़्ल करता है। आप ने उसे शहर बदर करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, लिहाज़ा उसे मदीनए मुनव्वरा से "नक़ीअ़" की त़रफ़ शहर बदर कर दिया गया।(5)

1... ابو داود، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، ۴/ ۱۰۳، حدیث: ۴۱۶۳

2... درمختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ۹/ ۵۹۸

3... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/ ۶۹۳

4... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/ ۵۹۹

5... ابو داود، کتاب الادب، باب فی الحکم فی المخنثین، ۴/ ۳۶۸، حدیث: ۴۹۲۸

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है कि मुख़न्नस ने औ़रतों की नक़्ल की यानी हाथ पाउं में मेहंदी लगाई तो मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस क़दर नाराज़ हुए कि उसे शह्‌र बदर कर दिया, इस ह़दीसे पाक से उन लोगों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो शादी बियाह या ईदैन वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर अपने हाथों या उंगलियों पर मेहंदी लगा लिया करते हैं।

...नीज़ जिस त़रह़ मर्दों को औ़रतों की नक़्ल जाइज़ नहीं, इसी त़रह़ औ़रतें भी मर्दों की नक़्ल नहीं कर सकतीं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लानत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औ़रतों की सूरत बनाएं और मर्दानी औ़रतों पर जो मर्दों की सूरत बनाएं।[1]

...जानदार की तसावीर वाले लिबास हरगिज़ न पहना करें, जानवरों या इन्सानों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़ अपने कपड़ों पर लगाएं न ही घरों में आवेज़ां करें, अपने बच्चों को ऐसे "बाबा सूट" न पहनाएं जिन पर जानवरों और इन्सानों के फ़ोटो बने हुए होते हैं।

...ख़वातीन अपने शौहर के लिये जाइज़ अश्या के ज़रीए़ मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें, लेकिन मेक-अप कर के और बन संवर कर घर से बाहर न निकला करें कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "औ़रत पूरी की पूरी औ़रत (यानी छुपाने की चीज़) है, जब कोई औ़रत बाहर निकलती है तो शैत़ान उसे झांक झांक कर देखता है।"[2]

...नंगे सर फिरना सुन्नत नहीं है, लिहाज़ा इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अपने सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाए रखें कि येह हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निहायत ही मीठी सुन्नत है।

---

1 ...بخاری، کتاب اللباس، باب الموصولۃ، ۴/ ۸۵، حدیث: ۵۹۴۰

بخاری، کتاب اللباس، باب المتشبھون بالنساء...الخ، ۴/ ۷۳، حدیث: ۵۸۸۵

2 ...ترمذی، کتاب الرضاع، باب ۱۸، ۲/ ۳۹۲، حدیث: ۱۱۷۶

www.dawateislami.net

जाइज़ और नाजाइज़ ज़ेबो ज़ीनत से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1332 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, हिस्सा 16, का मुत़ालआ़ कीजिये।

प्यारे इस्लामी भाइयो! वोही ज़ीनत अपनाइये जिस की शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई है और जो फ़ैशन **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब बने, उस से ख़ुद भी बचिये और अपने अहलो अ़याल को भी बचाइये और तमाम तर मुआ़मलात में रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये किसी सुन्नी आ़लिमे दीन या **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** से राबित़ा कीजिये।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तआ़रुफ़

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत दावते इस्लामी के कमोबेश 107 शोबाजात (Departments) में से एक शोबा है जो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की शरई रहनुमाई में मस्रूफ़े अ़मल है। इस के इलावा "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" के तह़्त काम करने वाले शोबे "**दारुल इफ़्ता ऑन लाइन**" के इस्लामी भाई भी इन्तिहाई ज़िम्मेदारी के साथ **टेलीफ़ोन**, **वॉट्स एप** (WhatsApp) और **ई-मेल** (E-mail) के ज़रीए़ दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का ह़ल बताते हैं। मज़ीद येह कि दारुल इफ़्ता ऑन लाइन के इस्लामी भाइयों से इन्टरनेट के ज़रीए़ दुन्या भर से इस **मेल एड्रेस** (darulifta@dawateislami.net) पर सुवालात पूछे जा सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा के बारे में सुना। **अल्लाह** पाक ने आप जैसा ह़सीनो जमील कोई पैदा ही नहीं किया, यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया भी न बनाया, क्यूंकि ऐसे यक्ता के लिये ऐसी ही यक्ताई होनी चाहिये, इस से अन्दाज़ा लगाइये कि **अल्लाह** पाक अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर मह़ब्बत फ़रमाता है। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अपनी जान, औलाद और मां बाप से भी ज़ियादा उन से मह़ब्बत करें और आप की सुन्नतों पर अ़मल पैरा हों, इस के लिये दावते इस्लामी का महका महका मदनी माह़ोल हमारे सामने है। दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से नेक आमाल की कसरत, गुनाहों से नफ़रत और सुन्नतों पर इस्तिक़ामत नसीब होगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ।

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दौरा"

आप भी सुन्नतें अपनाने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को नेकी की राह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "**मदनी दौरा**" भी है। मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में जा कर लोगों को नमाज़ों और सुन्नतों की जानिब राग़िब करने के लिये नेकी की दावत देना यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत है। चुनान्चे,

मरवी है : अल्लाह पाक ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि "जिस ने **भलाई** का हुक्म दिया

www.dawateislami.net

और **बुराई** से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त की त़रफ़ बुलाया क़ियामत के दिन वोह मेरे अ़र्श के साए में होगा।(1)

गौर कीजिये कि नेकी की दावत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले को बरोज़े क़ियामत अ़र्श का साया नसीब होगा, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि ख़ूब ख़ूब मदनी दौरे कर के फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी के ह़क़दार बनें, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत करते रहें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बे शुमार बरकतें ह़ासिल होंगी। आइये, **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली !

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि बहुत से नौजवानों की त़रह़ मैं भी मुतअ़द्दद अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला था। फ़िल्में ड्रामे देखना, खेलकूद में वक़्त बरबाद करना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। घर में **मदनी चैनल** चलने की बरकत से **मदनी मुज़ाकरा** देखने की सआ़दत नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पिछले गुनाहों से ताइब हो कर फ़राइज़ो वाजिबात का आ़मिल बनने के लिये कोशां हूं, चेहरे पर एक मुठ्ठी **दाढ़ी शरीफ़** सजा ली है और **मदनी ह़ुल्या** भी अपना लिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद करम येह हुवा कि वालिदैन ने बख़ुशी मुझे "**वक़्फ़े मदीना**" कर दिया है।

मक़्बूल जहां भर में हो दावते इस्लामी   सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، کعب الاحبار، ۶/۳۶

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 180

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"[(1)]

घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

...जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़िये : "بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" यानी **अल्लाह** पाक के नाम से, मैं ने **अल्लाह** पाक पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त **अल्लाह** पाक ही की त़रफ़ से है।[(2)] اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और मददे इलाही शामिले ह़ाल रहेगी। ...अपने घर में आते जाते मह़ारिम व मह़रिमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये। ...**अल्लाह** पाक का नाम लिये बिग़ैर मसलन बिस्मिल्लाह कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है। ...अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن "यानी हम पर और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों पर सलाम" फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे।[(3)] या इस त़रह कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِیُّ "यानी या नबी आप पर सलाम हो" क्यूंकि ह़ुज़ूरे अक़्दस

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...ابوداود، کتاب الادب، باب مایقول اذا خرج من بیتہ، ۴/ ۴۲۰، حدیث: ۵۰۹۵

3...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/ ۶۸۲

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है।[1] ...जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं? ...अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये, हो सकता है किसी मजबूरी के तह़त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो। ...जवाब में नाम बताने के बाद दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े। ...किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न कीजिये इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है। ...वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ भी कीजिये और शुक्रिय्या भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़फ़तन पेश कीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

....

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3 / 96, شرح الشّفاء للقاری، ۲/۱۱۸

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

www.dawateislami.net

صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہ وسلم

सख़ावते मुस्तफ़ा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : اَلْبَخِيْلُ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ ثُمَّ لَمْ يُصَلِّ عَلَیَّ यानी बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा, फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।[(1)]

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे[(2)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़ावते मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह हौज़नी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मक़ामे ह़लब (शाम) में मोअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई, मैं ने उन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़र्च के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने बताया कि सय्यिदुल अस्ख़िया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जो कुछ होता उसे ख़र्च करने की ज़िम्मेदारी मेरी होती थी, बिअ़्सत से वफ़ात शरीफ़ तक येह काम मेरे ह़वाले रहा। जब कोई बे लिबास मुसलमान बारगाहे अक़्दस में

---

1 .....مسند احمد، حدیث الحسین بن علی، ۱/۴۲۹، حدیث: ۱۷۳۶

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 114

ह़ाज़िर होता तो आप मुझे हुक्म फ़रमाते और मैं किसी से क़र्ज़ लेता और चादर ख़रीद कर उसे ओढ़ाता और खाना भी खिलाता। एक दिन एक मुशरिक मेरे पास आ कर कहने लगा : ऐ बिलाल ! तुम मेरे सिवा किसी और से क़र्ज़ न लिया करो, मेरे पास कसीर माल है। मैं ने ऐसा ही किया, एक दिन मैं वुज़ू कर के अज़ान देने के लिये खड़ा हुवा तो क्या देखता हूं कि वोह मुशरिक कई ताजिरों के हमराह मेरे पास आया और मुझे बहुत बुरा भला कहते हुए कहने लगा : "तुम्हें मालूम है वादे में कितने दिन बाक़ी हैं ?" मैं ने कहा : वक़्ते वादा क़रीब आ गया है। उस ने कहा कि "सिर्फ़ चार दिन बाक़ी हैं, अगर इस मुद्दत में तुम ने क़र्ज़ अदा न किया तो मैं तुम्हें ग़ुलाम बना कर बकरियां चरवाऊंगा जैसे तुम पहले चराया करते थे।" येह सुन कर मुझे फ़िक्र दामनगीर हुई, इशा की नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए, मैं इजाज़त ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों। वोह मुशरिक जिस से मैं क़र्ज़ा लेता हूं उस ने मुझे ऐसा ऐसा कहा है, आप के पास भी अदाए क़र्ज़ के लिये कुछ मौजूद नहीं है और मेरे पास भी नहीं, वोह मुझे रुस्वा करेगा। आप इजाज़त दीजिये कि मैं उन लोगों के पास चला जाऊं जो मुसलमान हो चुके हैं यहां तक कि **अल्लाह** पाक इतना माल अ़त़ा फ़रमाए कि जिस से क़र्ज़ अदा हो जाए।" येह कह कर मैं वहां से निकल आया।

सुब्ह़ के वक़्त जाने के इरादे से जब मैं बाहर निकला तो एक शख़्स दौड़ता हुवा मेरे पास आया और कहने लगा : "ऐ बिलाल ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप को बुला रहे हैं।" मैं ह़ाज़िर हुवा तो क्या देखता हूं कि सामान से लदे चार ऊंट मौजूद हैं। मैं ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी तो आप ने इरशाद फ़रमाया : मुबारक हो ! **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे क़र्ज़ की अदाएगी का सामान कर दिया

है। फिर इरशाद फ़रमाया : तुम ने चार ऊंट देखे ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : येह ऊंट ह़ाकिमे फ़दक ने भेजे हैं, इन पर लदा ग़ल्ला और कपड़े सब तुम रख लो और इन के ज़रीए़ अपना क़र्ज़ा अदा कर दो। मैं ने हुक्म की तामील करते हुए ऐसा ही किया, फिर मैं मस्जिद में आया और बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : इस माल से तुझे क्या फ़ाएदा ह़ासिल हुवा ? मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक ने वोह तमाम क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया जो उस के रसूल पर था। इरशाद फ़रमाया : इस माल में से कुछ बाक़ी भी बचा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : मुझे इस से भी सुबुकदोश (बे तअ़ल्लुक़) करो ! जब तक येह किसी ठिकाने न लगेगा, मैं घर नहीं जाऊंगा।" जब नमाज़े इ़शा से फ़ारिग़ हुए तो मुझे बुला कर उस बक़िय्या माल का ह़ाल दरयाफ़्त किया, मैं ने अ़र्ज़ की : वोह मेरे पास ही है कोई साइल नहीं मिला। आप रात मस्जिद ही में रहे, दूसरे रोज़ नमाज़े इ़शा के बाद फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि बक़िय्या माल का क्या हुवा ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह पाक ने आप को सुबुकदोश कर दिया। येह सुन कर आप ने तक्बीर कही और शुक्र अदा किया क्यूंकि आप को डर था कि कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए और वोह माल मेरे पास हो। इस के बाद मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे चलने लगा ह़त्ताकि आप काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मालूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सख़ावत फ़रमाया करते थे कि कोई भी चीज़ अपने पास रखना गवारा न फ़रमाते, बल्कि जब तक लोगों में

1 ...ابوداود، کتاب الخراج والفیء الامارۃ، باب فی الامام یقبل الھدایا المشرکین، ۳/۲۳۰، حدیث: ۳۰۵۵

www.dawateislami.net

तक़्सीम न फ़रमा देते उस वक़्त तक मुत़्मइन न होते, ख़ुद किसी चीज़ की ह़ाजत होने के बा वुजूद भी ग़रीबों और मोह़्ताजों पर सदक़ा कर दिया करते और साइल को इस क़दर नवाज़ते कि उसे दोबारा मांगने की ह़ाजत ही पेश न आती। मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! हमारी ह़ालत येह है कि दुन्या की मह़ब्बत दिल से कम होने का नाम नहीं लेती और हर वक़्त दुन्या की नेमतें और आसाइशें बढ़ाने ही की धुन है।

बड़ी और पसन्दीदा नेमत

ह़ज़रते सय्यिदुना मज्मअ़ अन्सारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : अल्लाह पाक का मुझे दुन्या (की आसाइशों) से बचा लेने का एह़सान, दुन्यावी मालो दौलत वग़ैरा की सूरत में मिलने वाली नेमत से अफ़्ज़ल है क्यूंकि अल्लाह पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया लिहाज़ा उस ने जो नेमतें अपने नबी के लिये पसन्द फ़रमाई हैं वोह मुझे उन नेमतों से ज़ियादा प्यारी हैं जो उस ने अपने नबी के लिये ना पसन्द फ़रमाईं।(1) याद रखिये ! दुन्या के मालो दौलत की कसरत और इस की आसाइशें होना बेशक नेमत है मगर इन चीज़ों से बच कर रहना येह बड़ी नेमत है।

दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है, जो इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाता है और सह़ीह़ हुक़ूक़ में ख़र्च करता है तो अल्लाह पाक उसे सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में ह़राम त़रीक़े से माल कमाता है और

(1)...شعب الایمان،باب فی تعدید نعم...الخ، ۴/۱۱۷،حدیث: ۴۴۸۹

www.dawateislami.net

ग़ैरे ह़क़ में ख़र्च करता है तो अल्लाह पाक उसे दारुल हवान (यानी ज़िल्लत के घर) में दाख़िल फ़रमाएगा।(1)

शर्हे ह़दीस

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मालूम हुवा कि दुन्या फ़ी नफ़्सिही मज़्मूम नहीं है, चूंकि येह आख़िरत की खेती है लिहाज़ा जो शख़्स शरीअ़त की इजाज़त से इस की कोई चीज़ ह़ासिल करेगा तो येह चीज़ आख़िरत में उस की मदद करेगी।(2) पस हमें भी चाहिये कि ज़रूरत से ज़ियादा दुन्या के पीछे भागने और ह़राम ज़राएअ़ इख़्तियार कर के मालो दौलत जम्अ़ करने के बजाए रिज़्क़े ह़लाल कमाने का ज़ेहन बनाएं और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त सदक़ाओ ख़ैरात भी करते रहें, अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दीगर ग़रीबों की माली मदद भी करें। ह़क़ीक़त येह है कि जो किसी की मदद करता है अल्लाह पाक उस की मदद फ़रमाता है और राहे ख़ुदा में देने से माल बढ़ता है घटता नहीं। चुनान्चे,

सदक़े से माल कम नहीं होता

मरवी है कि अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सदक़ा माल में कमी नहीं करता और अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने की वज्ह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर आ़जिज़ियो इन्किसारी अपनाता है अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।(3)

---

1 ...شعب الایمان، باب فی قبض الید عن...الخ، ۴/۳۹۲، حدیث: ۵۵۲۷

2 ... فیض القدیر، ۳/۷۲۸، تحت الحدیث: ۴۲۷۳

3 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، ص۱۰۷۱، حدیث: ۲۵۹۲

www.dawateislami.net

आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने बे नियाज़ी

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने बे नियाज़ी थी कि दरे अक़्दस में माल रखना भी गवारा न फ़रमाते बल्कि फ़ौरन सदक़ा फ़रमा दिया करते थे । चुनान्चे, एक रोज़ नमाज़े अ़स्र का सलाम फेरते ही आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौलतख़ाने में तशरीफ़ ले गए, फिर जल्दी से बाहर आए, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मुतअ़ज्जिब देख कर इरशाद फ़रमाया : मुझे नमाज़ में ख़याल आया कि सदक़े का कुछ सोना घर में पड़ा है, मुझे पसन्द न आया कि रात हो जाए और वोह घर में पड़ा रहे, इस लिये जा कर उसे तक़्सीम करने का कह आया हूं ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था, आप ने उहुद पहाड़ को देख कर इरशाद फ़रमाया : "अगर येह पहाड़ मेरे लिये सोना बन जाए तो मैं पसन्द नहीं करूंगा कि इस में से एक दीनार भी मेरे पास तीन दिन से ज़ियादा रह जाए सिवाए उस दीनार के जिसे मैं अदाए क़र्ज़ के लिये रख छोड़ूं ।"(2)

सब से बढ़ कर सख़ी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا शहनशाहे नबुव्वत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने सख़ावत बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से बढ़ कर सख़ी हैं और सख़ावत का दरिया सब से ज़ियादा उस वक़्त जोश पर होता जब रमज़ानुल मुबारक में जिब्रीले

(1)... بخاری، کتاب العمل فی الصلاۃ، باب یفکر الرجل...الخ، ۱/۴۱۱، حدیث:۱۲۲۱

(2)... بخاری، کتاب فی الاستقراض...الخ، باب اداء الدیون، ۲/۱۰۵، حدیث:۲۳۸۸

www.dawateislami.net

अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام (रमज़ानुल मुबारक की) हर रात में ह़ाज़िर होते और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते। (रमज़ानुल मुबारक) में ख़ैर के मुआ़मले में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते।[1]

सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सख़ावते मुस्तफ़ा को अश्आ़र की सूरत में ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ में यूं बयान फ़रमाते हैं :

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़ह़ा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा
धारे चलते हैं अ़त़ा के वोह है क़त़रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा
अग़्निया पलते हैं दर से वोह है बाड़ा तेरा
अस्फ़िया चलते हैं सर से वोह है रस्ता तेरा[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी साइल को जवाब में "**ला**" (यानी **नहीं**) नहीं फ़रमाया।[3] एक मरतबा आप के दरबारे गौहरबार में 70 हज़ार दिरहम लाए गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें एक चटाई

---

1 ...بخاری، کتاب بدء الوحی، ۱/۹، حدیث:۶

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 15

3 ...بخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق...الخ، ۴/۱۰۹، حدیث: ۶۰۳۴

www.dawateislami.net

पर रखा और पास खड़े हो कर तक़्सीम फ़रमाने लगे। किसी साइल को ख़ाली न लौटाया हत्ताकि सब तक़्सीम फ़रमा दिये।(1)

ला व रब्बिल अ़र्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वोह करीम उन का ख़ुदा उन से फ़ुज़ूं
और ना कहना नहीं आ़दत रसूलुल्लाह की (2)

बाज़ अवक़ात ऐसा भी होता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से कोई चीज़ ख़रीदते और क़ीमत अदा करने के बाद वोह चीज़ उसी को या किसी दूसरे को अ़ता फ़रमा देते। चुनान्चे,

मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से एक ऊंट ख़रीदा और फिर वोही ऊंट उन्हें बतौरे अ़तिय्या इनायत फ़रमा दिया।(3) इसी त़रह हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से ऊंट का एक बच्चा ख़रीदा और फिर वोही हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को अ़ता फ़रमा दिया।(4)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा फ़रमाइये कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सख़ावत फ़रमाने वाले थे कि अपनी ज़रूरत के लिये ख़रीदी गई चीज़ भी किसी को बतौरे तोह़फ़ा अ़ता फ़रमा देते, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम भी इस प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने और मुसलमानों के दिल में

1 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب ماسئل رسول اللّٰہ...الخ، ص۹۷۳، حدیث:۲۰۱۸
2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 152, 153
3 ...بخاری، کتاب البیوع، باب شراء الدواب...الخ، ۲/ ۱۸، حدیث: ۲۰۹۷
4 ...بخاری، کتاب البیوع، باب اذا اشتری شیئا...الخ، ۲/ ۲۳، حدیث: ۲۱۱۵

www.dawateislami.net

खुशी दाख़िल करने की निय्यत से एक दूसरे को तोहफ़ा पेश करने की आदत बनाएं कि तोहफ़ा देने से महब्बत बढ़ती और अदावत ख़त्म होती है। चुनान्चे,

कीना ख़त्म और महब्बत पैदा हो

हज़रते सय्यिदुना अता खुरासानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक दूसरे से मुसाफ़हा करो कि इस से कीना जाता रहता है और हदिय्या (तोहफ़ा) दिया करो कि आपस में महब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी।[1]

शर्हे हदीस

मशहूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : येह दोनों अमल बहुत ही मुजर्रब हैं जिस से मुसाफ़हा करते रहो उस से दुश्मनी नहीं होती अगर इत्तिफ़ाक़न कभी हो भी जाए तो इस की बरकत से ठहरती नहीं, यूंही एक दूसरे को हदिय्या देने से अदावतें ख़त्म हो जाती हैं।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! तोहफ़े का लेन देन हो या फिर कोई और मुआमला हलाल ज़रीआ ही इख़्तियार किया जाए क्यूंकि हराम ज़रीए से हासिल होने वाले माल को खाना, पीना, पहनना या किसी और काम में इस्तिमाल करना हराम व गुनाह है, इस की सज़ा दुन्या में माल की क़िल्लतो ज़िल्लत और बे बरकती जब कि आख़िरत में जहन्नम की भड़कती आग का दर्दनाक अज़ाब है। चुनान्चे,

1 ...مشکاۃ المصابیح، کتاب الادب، باب ماجاء فی المصافحۃ، ۲/۱۷۱، حدیث: ۴۶۹۳

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 368

ह़राम की नुहूसत

अल्लाह पाक के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स ह़राम माल कमाता और फिर सदक़ा करता है तो उस से क़बूल नहीं किया जाएगा और इस से ख़र्च करेगा तो उस के लिये इस में बरकत न होगी और अपने पीछे छोड़ेगा तो येह उस के लिये दोज़ख़ का ज़ादे राह (सामान) होगा।(1)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जाइज़ त़रीक़े से माल कमाएं और अपनी ज़रूरत के इ़लावा जो बचता नज़र आए उसे फ़ुज़ूलियात में बरबाद करने के बजाए अपने मोह़ताज व ग़रीब मुसलमान भाइयों की माली मदद करें। मसाजिद, मदारिस और नेकी के कामों में तरक़्क़ी के लिये अपना माल ज़ियादा से ज़ियादा ख़र्च करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ढेरों बरकतें नसीब होंगी। चुनान्चे, **पारह 3, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 274** में इरशाद होता है :

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (अज्र) है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

इसी त़रह़ **पारह 3, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 261** में इरशाद होता है :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने ऊगाईं सात बालें

1 ...مسند احمد، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، ۲/۳۱، حدیث: ۳۶۷۲

www.dawateislami.net

سَنَابِلَ فِیۡ کُلِّ سُنۡۢبُلَۃٍ مِّائَۃُ حَبَّۃٍ ؕ وَ اللّٰہُ یُضٰعِفُ لِمَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰہُ وَاسِعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۶۱﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۶۱)

हर बाल में सौ दाने और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक की राह में माल ख़र्च करेंगे तो ज़मीनो आस्मान और सारे जहान का ख़ालिक़ो मालिक करीमो जव्वाद परवर दगार عَزَّوَجَلَّ करम फ़रमाएगा और हमारे माल को बढ़ाएगा । कितने ही खुश नसीब मुसलमान ऐसे हैं जो अपने माल के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करते हैं, ख़ुशदिली से बर वक़्त ज़कातो फ़ित्रा अदा करते हैं, अपने माल मां बाप, बहन भाई और औलाद पर ख़र्च करते हैं, अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा की मौत पर उन के ईसाले सवाब के लिये नेक कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा मिलाते हैं, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाते नीज़ नेक निय्यती से शिफ़ाख़ाने बनवाते हैं, हुक़ूक़े आ़म्मा का लिहाज़ रखते हुए इख़्लास के साथ क़ुरआन ख़्वानी व इजतिमाए़ ज़िक्रो नात और सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के इनए़क़ाद पर ख़र्च करते हैं, मसाजिद व मदारिस की तामीर में हिस्सा लेते हैं, दर्सो तदरीस, दर्से निज़ामी यानी आ़लिम कोर्स में मुआ़वनत करते, मसलन मुदर्रिसीन के मुशाहरे (Salary), त़लबा की किताबें, त़आ़मो क़ियाम के अख़राजात वग़ैरा, क़ुरआने करीम (हिफ़्ज़ो नाज़िरा) की तालीम में मदद करते हैं, मस्जिद के इन्तिज़ामी अख़राजात, मसलन बिजली और गेस के बिल वग़ैरा की अदाएगी करते या उस में हिस्सा लेते हैं, दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त, सुन्नतों के एह्या, नेकी की दावत को आ़म करने के लिये ख़र्च करते मसलन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले ग़रीब इस्लामी भाइयों को ज़ादे सफ़र दे कर, सुन्नतों भरा दर्स देने की आरज़ू रखने वाले ग़रीब इस्लामी भाइयों को **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** दिला कर, अपनी दुकान, मार्केट, मस्जिद, मह़ल्ले, दफ़्तर, कॉलेज वग़ैरा में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इस्लाही़ रसाइल या बयानात की

www.dawateislami.net

केसिटें (ऑडियो, वीडियो) तक़्सीम कर के अपनी रक़म राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं, अल्लाह तबारक व तआ़ला उन के माल को बढ़ाएगा और 700 गुना तक सवाब अ़ता फ़रमाएगा और इसी पर बस नहीं बल्कि इरशाद फ़रमाया :

وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ (پ۳، البقرة:۲۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! तरग़ीब के लिये प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जूदो अ़ता के मज़ीद वाक़िआ़त सुनते हैं ताकि हमें भी दीन की तरवीजो इशाअ़त, मसाजिदो मदारिस की ख़िदमत, मुसलमानों की माली मदद और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की रग़बत हो। चुनान्चे,

सख़ावते मुस्त़फ़ा के वाक़िआ़त

...ग़ज़्वए हुनैन में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस क़दर कसरत से सख़ावत फ़रमाई जिस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। आप ने आराब (दीहात में रहने वालों) में बहुत सों को 100-100 ऊंट अ़ता फ़रमाए।(1)

...ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने (इस्लाम लाने से पहले ग़ज़्वए हुनैन के मौक़अ़ पर) बकरियों का सुवाल किया, जिन से दो पहाड़ों का दरमियानी जंगल भरा हुवा था, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सब उन्हें दे दीं। उन्हों ने अपनी क़ौम में जा कर कहा : "ऐ मेरी क़ौम ! तुम इस्लाम ले आओ !

1...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الطائف، ۱۱۸/۳، حدیث:۴۳۳۶

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक की क़सम ! सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी सख़ावत फ़रमाते हैं कि फ़क़्र (मोहताजी) का ख़ौफ़ नहीं रहता।"(1)

...हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : ग़ज़्वए हुनैन के दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे माल अ़ता फ़रमाने लगे हालांकि आप मेरी नज़र में **मबग़ूज़** थे, पस आप मुझे अ़ता फ़रमाते रहे यहां तक कि मेरी नज़र में **महबूब तरीन** हो गए।(2)

...उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उस एक दिन की अ़ता, सख़ी बादशाहों की उ़म्र भर की सख़ावतो बख़्शिश से ज़ाइद थी, बकरियों से भरे जंगल के जंगल लोगों को अ़ता फ़रमा रहे हैं, मांगने वालों का हुजूम इस क़दर था कि आप पीछे हटते जाते। जब सब अमवाल तक़्सीम हो गए तो एक आराबी (यानी अ़रब के दीहात में रहने वाले) ने रिदाए मुबारक (यानी चादर मुबारक) बदने अक़्दस पर से खींच ली, जिस से मुबारक कांधे और कमर शरीफ़ पर निशान पड़ गया। फिर भी गुस्सा न किया बल्कि इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जल्दी न करो, **अल्लाह** पाक की क़सम ! तुम मुझे किसी वक़्त **बख़ील** न पाओगे।"(3)

...हज़रते सय्यिदुना सहल बिन साद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि एक औ़रत ने बारगाहे रिसालत में एक ख़ूब सूरत चादर हदिय्या की और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मैं ने अपने हाथ से बुनी है और आप के इस्तिमाल के लिये लाई हूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को चूंकि ज़रूरत थी, लिहाज़ा

1...مسلم، کتاب الفضائل، باب ماسئل رسول اللّٰہ...الخ، ص۹۷۳، حدیث:۲۰۲۱، ۲۰۲۲

2...ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی اعطاء...الخ، ۲/۱۴۷، حدیث:۶۶۶

3...بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب الشجاعۃ فی الحرب والجبن، ۲/۲۶۰، حدیث:۲۸۲۱

आप ने वोह चादर ले ली। वोह चादर बत़ौरे तहबन्द बांधे हुए आप हमारे पास तशरीफ़ लाए। एक सह़ाबी ने देख कर अ़र्ज़ की : कितनी अच्छी चादर है। मुझे इनायत फ़रमा दीजिये। आप तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए और चादर तब्दील फ़रमा कर वोह उस सह़ाबी की त़रफ़ भेज दी। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उन सह़ाबी से कहा तुम ने अच्छा नहीं किया, तुम्हें अच्छी त़रह़ मालूम है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी साइल का सुवाल रद नहीं फ़रमाते। उन्हों ने कहा : ब ख़ुदा ! इस चादर को इस्तिमाल करने की निय्यत से मैं ने सुवाल नहीं किया बल्कि मेरी निय्यत येह है कि येह चादर (बत़ौरे तबर्रुक) मेरा **कफ़न** बने। ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन साद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि वोह चादर उन का **कफ़न** ही बनी।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विसाले ज़ाहिरी के बाद सख़ावत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो जहानों के सरदार हैं, **अल्लाह** पाक ने आप को मालिको मुख़्तार बनाया, अपने ख़ज़ानों की चाबियां भी अ़त़ा फ़रमा दीं मगर फिर भी अपने पास कुछ बचा कर नहीं रखते सब तक़्सीम फ़रमा देते हैं न सिर्फ़ ह़याते मुबारका में बल्कि विसाले ज़ाहिरी के बाद भी उम्मत के परेशान ह़ालों पर अ़त़ाओं की बारिश फ़रमा रहे हैं। अगर किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा आए कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो दुन्या से पर्दा फ़रमा गए, अब क्यूंकर साइलों की दाद रसी फ़रमाते हैं ? तो याद रखिये कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अपने मज़ारात में ह़यात हैं। चुनान्चे,

(1)... بخاری، کتاب اللباس، باب البرود والحبرة والشملة، ۴/۵۴، حدیث: ۵۸۱۰

www.dawateislami.net

सय्यिदी आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम अम्बियाए किराम हयाते ह़क़ीक़ी, दुन्यावी, रूहानी और जिस्मानी से ज़िन्दा हैं, अपने मज़ाराते तय्यिबा में नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़ी दिये जाते हैं, जहां चाहें तशरीफ़ ले जाते हैं, ज़मीनो आस्मान की सल्तनत में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلْاَنْبِیَاءُ اَحْیَاءٌ فِیْ قُبُوْرِھِمْ یُصَلُّوْنَ यानी हज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने मज़ारात में ज़िन्दा हैं और नमाज़ अदा फ़रमाते हैं।[1] (एक हदीसे पाक में है) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ यानी बेशक **अल्लाह** पाक ने हज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अज्सामे मुबारका का ज़मीन पर खाना हराम फ़रमा दिया है **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिये जाते हैं।[2] इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये मज़ारात से बाहर जाने और आस्मानों और ज़मीन में तसर्रुफ़ की इजाज़त होती है।[3]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहादीसे तय्यिबा और उलमाए किराम की तसरीहात से मालूम हुवा कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने अपने मज़ारात में न सिर्फ़ हयात हैं बल्कि उन्हें रिज़्क़ भी दिया जाता है, जहां भर में तशरीफ़ ले जाते और ज़मीनो आस्मान की सल्तनत में तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं। जाने आलम

1 ...مسند بزار، مسند ابی حمزۃ انس بن مالک، ۱۳/ ۲۹۹، حدیث: ۶۸۸۸

2 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۲/ ۲۹۱، حدیث: ۱۶۳۷

3 ...الحاوی للفتاوٰی، المنجلی فی تطور الولی، ۱/ ۲۵۶۔ فتاوٰی رضویہ، ۱۴/ ۶۸۵

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी फ़रमाने के बाद उम्मतियों की ह़ाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के चन्द वाक़िआत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

विसाले ज़ाहिरी के बाद ह़ाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के वाक़िआत

...ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन नफ़ीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा में सख़्त भूक के आ़लम में रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं। यकायक आंख लग गई, अभी थोड़ी देर ही गुज़री थी कि किसी ने जगाया और साथ चलने को कहा, मैं चल दिया। वोह मुझे अपने घर ले गया और खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश करते हुए कहा : पेट भर कर खा लीजिये ! क्यूंकि मेरे जद्दे अमजद, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है। आयिन्दा भी जब कभी भूक मह़सूस हो बिला झिजक तशरीफ़ ले आइयेगा।(1)

...ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद सूफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं तीन माह तक जंगलों में फिरता रहा, परेशान ह़ाल मदीनए मुनव्वरा ह़ाज़िर हुवा। बारगाहे रिसालत व शैख़ैन में सलाम अ़र्ज़ कर के सो गया। ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप फ़रमा रहे थे : अह़मद ! तू आ गया ! देख तेरा क्या ह़ाल हो गया है ! मैं ने अ़र्ज़ की : اَنَا جَائِعٌ وَّاَنَا ضَیْفُكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ यानी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं और आप का मेहमान हूं। आप ने इरशाद फ़रमाया : हाथ खोल। मैं ने हाथ खोला

1...حجۃ اللّٰہ علی العٰلمین، ص ۵۷۳

www.dawateislami.net

तो आप ने चन्द दिरहम इनायत फ़रमाए, जब आंख खुली तो वोह दिरहम मेरे हाथ में मौजूद थे, मैं ने बाज़ार से जा कर रोटी और फ़ालूदा ख़रीद कर खाया।[1]

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न "ला" है न ह़ाजत "अगर" की है[2]

...अबुल फ़रज अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली बिन जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه "**उ़यूनुल ह़िकायात**" में तह़रीर करते हैं कि एक परहेज़गार शख़्स का बयान है : "मैं मुसल्सल तीन साल से ह़ज की दुआ़ कर रहा था, लेकिन मेरी ह़सरत पूरी न हुई, चौथे साल ह़ज का मौसिमे बहार था और दिल आरज़ूए ह़रम में बे क़रार था। एक रात जब मैं सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा। आप ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।" मेरी आंख खुली तो दिल ख़ुशी से झूम रहा था, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह मीठी मीठी आवाज़ कानों में रस घोल रही थी : "तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।" बारगाहे नबुव्वत से ह़ज की इजाज़त मिल चुकी थी, मैं बहुत शादां ओ फ़रह़ां था। अचानक याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह (यानी सफ़र का ख़र्च) तो है नहीं ! इस ख़याल के आते ही मैं ग़मगीन हो गया। दूसरी शब ख़्वाब में फिर ज़ियारत हुई, लेकिन मैं अपनी ग़ुरबत का ज़िक्र न कर सका। इसी त़रह़ तीसरी रात भी ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से हुक्म हुवा कि "तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।" मैं ने सोचा अगर चौथी बार ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो अपनी माली ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ कर दूंगा।

---

1 ...جذب القلوب، ص ٢٠٧ ـ وفاء الوفاء، ٢/١٣٨١

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225

www.dawateislami.net

आह ! पल्ले ज़र नहीं रख़्ते सफ़र सरवर नहीं   तुम बुला लो तुम बुलाने पर हो क़ादिर या नबी ![1]

चुनान्चे, चौथी रात फिर सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे ग़रीब ख़ाने में जल्वागरी फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : "तुम इस साल हज के लिये चले जाना।" मैं ने दस्त बस्ता अर्ज़ की : मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे पास अख़राजात नहीं हैं। इरशाद फ़रमाया : "तुम अपने मकान में फ़ुलां जगह खोदो ! वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह मौजूद होगी।" इतना फ़रमा कर आप तशरीफ़ ले गए। सुब्ह जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत ख़ुश था। नमाज़े फ़ज्र के बाद आप की बताई हुई जगह खोदी तो वाक़ेई वहां एक क़ीमती ज़िरह मौजूद थी, वोह बिल्कुल साफ़ सुथरी थी, गोया उसे किसी ने इस्तिमाल ही न किया हो ! मैं ने उसे चार हज़ार दीनार में बेचा और अल्लाह पाक का शुक्र अदा किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे हज का ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गया।[2]

जब बुलाया आक़ा ने   ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे दीने इस्लाम ने हमें मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही, हुस्ने सुलूक, ग़रीबों की मदद और यतीमों की कफ़ालत का दर्स दिया है, इसी वज्ह से हर साल साहिबे निसाब अफ़राद पर चन्द शराइत़ पाए जाने की सूरत में ज़कात को फ़र्ज़ फ़रमाया, नफ़्ली सदक़ात के फ़ज़ाइल बयान फ़रमा कर लोगों को सख़ावत का दर्स दिया और बुख़्ल की मज़म्मत बयान फ़रमाई है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि ज़कात जैसे अहम फ़रीज़े की अदाएगी में सुस्ती व तंग

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 376

2 ...عيون الحكايات، الحكاية الرابعة والسبعون بعد الثلاثمائة، ص ٣٢٦

दिली से काम लेने के बजाए ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही की ख़ातिर इस के तमाम शरई मसाइल को मद्दे नज़र रखते हुए अदाएगी करें और नफ़्ली सदक़ात का भी ज़ेहन बनाएं कि सदक़ा करना अल्लाह पाक को बहुत पसन्द है और आफ़तों और बलाओं को टालने के साथ साथ ग़रीबों मिस्कीनों की बहुत सी ज़रूरियात पूरी होने का सबब है। सख़ावत का जज़्बा पैदा करने के लिये सख़ावत के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा पेशे ख़िदमत हैं। चुनान्चे,

फ़ज़ाइले सख़ावत पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿...इरशाद फ़रमाया : सख़ावत जन्नत के दरख़्तों में से एक दरख़्त है, जिस की टहनियां ज़मीन की त़रफ़ झुकी हुई हैं, जो शख़्स उन में से किसी एक टहनी को पकड़ लेता है, वोह उसे जन्नत की त़रफ़ ले जाती है।(1)

﴾2﴿...इरशाद फ़रमाया : تَجَافَوْا عَنْ ذَنْبِ السَّخِيِّ فَاِنَّ اللهَ اٰخِذٌ بِيَدِهٖ كُلَّمَا عَثَرَ यानी सख़ी की ग़लती से दर गुज़र करो क्यूंकि जब भी वोह लग़्ज़िश करता है तो अल्लाह पाक उस का हाथ पकड़ लेता है।(2) (यानी उस का मददगार होता है कि उसे हलाकत में पड़ने से बचा लेता है।(3))

﴾3﴿...इरशाद फ़रमाया : اَلْجَنَّةُ دَارُالْاَسْخِيَاء यानी जन्नत सख़ियों का घर है।(4)

﴾4﴿...इरशाद फ़रमाया : सख़ी अल्लाह पाक से क़रीब, जन्नत से क़रीब, लोगों से क़रीब और आग (जहन्नम) से दूर है जब कि बख़ील अल्लाह पाक से दूर,

---

1...شعب الایمان، باب فی الجود و السخاء، ۷/ ۴۳۴، حدیث: ۱۰۸۷۵

2...شعب الایمان، باب فی الجود و السخاء، ۷/ ۴۳۳، حدیث: ۱۰۸۶۷

3...اتحاف السادۃ المتقین، ۹/ ۷۲۵

4...مسند فردوس، ۱/ ۳۳۳، حدیث: ۲۴۳۰

जन्नत से दूर, लोगों से दूर और आग के क़रीब है और जाहिल सख़ी **अल्लाह** पाक के नज़्दीक बख़ील आ़लिम से बेहतर है।(1)

《5》...इरशाद फ़रमाया : ऐ इन्सान ! अगर तुम बचा हुवा माल ख़र्च कर दो तो तुम्हारे लिये अच्छा है और अगर उसे रोक रखो तो तुम्हारे लिये बुरा है और ब क़दरे ज़रूरत अपने पास रख लो तो तुम पर मलामत नहीं और देने में अपने अ़याल (घरवालों) से इब्तिदा करो और **ऊपर वाला** हाथ **नीचे वाले** हाथ से बेहतर है।(2)

शर्हे ह़दीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आख़िरी ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : अपनी ज़रूरिय्यात से बचा हुवा माल ख़ैरात कर देना ख़ुद तेरे लिये ही मुफ़ीद है कि इस से तेरा कोई काम न रुकेगा और तुझे दुन्याओ आख़िरत में इ़वज़ (यानी बदला) मिल जाएगा और उसे रोके रखना, ख़ुद तेरे लिये ही बुरा है क्यूंकि वोह चीज़ सड़ गल या और त़रह़ से ज़ाएअ़ हो जाएगी और तू सवाब से मह़रूम हो जाएगा, इसी लिये हुक्म है कि नया कपड़ा पाओ तो पुराना बेकार कपड़ा ख़ैरात कर दो, नया जूता रब तआ़ला दे तो पुराना जूता जो तुम्हारी ज़रूरत से बचा है किसी फ़क़ीर को दे दो कि तुम्हारे घर का कूड़ा निकल जाएगा और उस का भला हो जाएगा। इस में दो हुक्म बयान हो गए, एक येह कि जो माल इस वक़्त तो ज़ाइद है कल ज़रूरत पेश आएगी उसे जम्अ़ रख लो आज नफ़्ली सदक़ा दे कर कल ख़ुद भीक न मांगो, दूसरे येह कि ख़ैरात पहले अपने अ़ज़ीज़ ग़रीबों को दो फिर अजनबियों को क्यूंकि अ़ज़ीज़ों को देने में सदक़ा भी है और सिलए रेह़मी भी।(3)

1...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السخاء، ۳/ ۳۸۷، حدیث: ۱۹۶۸

2...مسلم، کتاب الزکاة، باب بیان ان الید العلیا خیر...الخ، ص ۴۰۰، حدیث: ۲۳۸۸

3.....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 70

www.dawateislami.net

सख़ावत की नेमत कैसे ह़ासिल हो ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी सख़ावत की आ़दत अपनाना चाहते हैं तो आइये ! इस के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं।

...सख़ावत के फ़ज़ाइल और बुख़्ल की मज़म्मत से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका नीज़ सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बुख़्ल की आ़दत छूट जाएगी और सख़ावत का ज़ेहन बनेगा।

...दिल से मालो दौलत की मह़ब्बत को निकाल दीजिये क्यूंकि जब तक मालो दौलत की मह़ब्बत दिल में रहेगी तब तक राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का दिल नहीं चाहेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो दिरहम (यानी दौलत) की इ़ज़्ज़त करता है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे ज़िल्लत देता है।(1)

शैत़ान का ग़ुलाम

मन्क़ूल है कि जब दिरहमो दीनार बने तो सब से पहले शैत़ान ने उन्हें उठा कर अपनी पेशानी पर रखा और उन्हें चूम कर कहा : जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है।(2)

...दिल में मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा कीजिये ! मसलन अपने दोस्त अह़बाब, रिश्तेदारों या पड़ोसियों की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते रहिये, उन के दुख दर्द में शरीक हो कर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उन की ह़ाजतों को पूरा कीजिये कि

1...احیاء العلوم، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ۲۸۸/۳

2...احیاء العلوم، کتاب ذم البخل وذم حب المال، ۲۸۸/۳

www.dawateislami.net

कर भला तो हो भला

फ़रमाने मुस्तफ़ा है : “जो किसी मुसलमान की एक दुन्यवी परेशानी दूर करेगा अल्लाह पाक क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो तंगदस्त के लिये दुन्या में आसानी मुहय्या करेगा अल्लाह पाक दुन्याओ आख़िरत में उस के लिये आसानियां पैदा फ़रमाएगा और जो दुन्या में किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा अल्लाह पाक दुन्याओ आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और बन्दा जब तक अपने (मुसलमान) भाई की मदद करता रहता है तो अल्लाह पाक भी उस की मदद फ़रमाता रहता है।”(1)

...दिल में किसी मुसलमान के लिये बुग़्ज़ो कीना हो तो उसे भी निकाल दीजिये क्यूंकि जब दिल में किसी की नफ़रत होगी तो उस पर ख़र्च करने या किसी भी त़रह़ की हमदर्दी करने पर दिल राज़ी नहीं होगा, लिहाज़ा बुग़्ज़ो कीना दूर करने और आपस में मह़ब्बत पैदा करने के लिये सलाम व मुसाफ़ह़ा को आ़म कीजिये कि ह़दीसे पाक में है : “मुसाफ़ह़ा किया करो कीना दूर होगा, तोह़फ़ा दिया करो मह़ब्बत बढ़ेगी और बुग़्ज़ ख़त्म होगा।”(2)

...**प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर सदक़ाओ ख़ैरात का ज़ेहन पाना चाहते हैं तो दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बुख़्ल की बीमारी के साथ साथ दीगर बुराइयों से भी छुटकारा नसीब होगा और नेक बनने का जज़्बा पैदा होगा, माल की आफ़ात और अल्लाह पाक की राह में ख़र्च करने के ह़वाले से मज़ीद मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब “**ज़ियाए सदक़ात**” का मुत़ालआ़ भी बेह़द मुफ़ीद है।

1...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الستر ۃ علی المسلم، ۳/ ۳۷۳، حدیث: ۱۹۳۷

2...موطا امام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المھاجرۃ، ۲/ ۴۰۷، رقم ۱۷۳۱

दावते इस्लामी की वेब साइट से इस किताब को पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आज के बयान में हम ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका और विसाले ज़ाहिरी के बाद की सख़ावत के वाक़िआत सुनने की सआदत ह़ासिल की। इन वाक़िआत के ज़िम्न में सख़ावत और इस के इलावा दीगर मदनी फूल भी ह़ासिल किये। यक़ीनन सख़ी शख़्स **अल्लाह** पाक और उस की मख़्लूक़ के नज़्दीक मह़बूब हो जाता है जब कि बख़ील आदमी को कोई पसन्द नहीं करता। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी अपने प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इसी मीठी सुन्नत पर अ़मल करते हुए ख़ूब ख़ूब सदक़ाओ ख़ैरात की आ़दत बनाएं।

दुआ़ है : अल्लाह पाक हमें अपने सदक़ात व मदनी अ़तिय्यात दीगर नेक कामों में ख़र्च करने के साथ साथ दावते इस्लामी के जुम्ला मदनी कामों और हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मजलिसे अइम्मए मसाजिद

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी नेकी की दावत आ़म करने के लिये कमो बेश 103 शोबाजात में मदनी काम कर रही है, इन्ही में से एक शोबा "**मजलिसे अइम्मए मसाजिद**" भी है, याद रखिये ! मस्जिद को आबाद रखने में जो

किरदार इमाम, मोअज़्ज़िन और ख़ादिम का होता है, उस से इन्कार मुमकिन नहीं, मगर बे शुमार मसाजिद ऐसी हैं जिन के अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन और ख़ादिमीन के मुशाहरे (तनख़्वाहें) का ख़ातिर ख़्वाह इन्तिज़ाम नहीं हो पाता।

मजलिसे अइम्मा का अव्वलीन काम मसाजिदे अहले सुन्नत का तह़फ़्फ़ुज़ नीज़ मसाजिदे अहले सुन्नत में अह्ल अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन का तक़र्रुर, इन के मुशाहरे (तनख़्वाहें) की अदाएगी और मसालेह़े मसाजिद में दरपेश मसाइल को शरई व तन्ज़ीमी रहनुमाई के बाद बाहमी मुशावरत से ह़ल करना है, नीज़ मस्जिद कमेटी और अहले मह़ल्ला को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करते हुए इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेहन देना है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो !(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को नेकी की राह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम राहे ख़ुदा में आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के "मदनी क़ाफ़िले" में सफ़र करना भी है।

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस सिलसिले में दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले तीन दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये मुल्क ब मुल्क, शहर ब शहर और क़रया ब क़रया सफ़र कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की मदनी बहारें लुटा रहे और नेकी की दावत की धूमें मचा रहे हैं। यक़ीनन राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दावते इस्लामी के इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना बहुत बड़ी सआ़दत है। मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से पन्ज वक़्ता नमाज़ व नवाफ़िल की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें सीखने को मिलती और इल्मे दीन ह़ासिल करने का मौक़अ़ मुयस्सर आता है। इल्मे दीन के लिये सफ़र के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं। चुनान्चे,

इल्मे दीन ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "जो शख़्स इल्मे (दीन) ह़ासिल करने के लिये सफ़र करता है तो ख़ुदा तआ़ला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है और त़ालिबे इल्म की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये फ़िरिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं और आस्मानो ज़मीन की हर चीज़ यहां तक कि पानी के अन्दर मछलियां आ़लिम के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करती हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत सितारों पर और उ़लमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वारिस व जां नशीन हैं और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि इल्म का वारिस बनाते हैं तो जिस ने इसे ह़ासिल किया उस ने पूरा ह़िस्सा पाया।"(1)

---

(1)... ابوداود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، ۳/۴۴۴، حدیث:۳۶۴۱

www.dawateislami.net

लिहाज़ा हमें चाहिये कि इल्मे दीन के हुसूल के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मामूल बनाएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बे शुमार बरकतें ह़ासिल होंगी नीज़ दुन्यावी परेशानियां और मसाइल ह़ल होते चले जाएंगे। तरग़ीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

फ़िल्मों ड्रामों का शैदाई

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि नेकियों की शाहराह पर गामज़न होने से क़ब्ल मैं गुनाहों के बयाबान में भटक रहा था। नमाज़ें क़ज़ा कर देना, दाढ़ी शरीफ़ मुन्डवा देना मेरी आ़दत में शामिल था। फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना मेरा ओढ़ना बिछौना बन चुका था। मेरी ज़िन्दगी में नेकियों का चांद कुछ इस त़रह़ जगमगाया कि ख़ुश क़िस्मती से कभी कभार दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करता था। येह सिलसिला कई महीने तक जारी रहा, मगर मेरे अन्दर कोई ख़ास तब्दीली रूनुमा न हो सकी। एक बार हमारे अ़लाक़े के दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक बा रीश व बा इ़मामा इस्लामी भाई ने मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का ज़ेहन दिया। उन की मह़ब्बत भरी मीठी गुफ़्तार और हुस्ने किरदार में कुछ ऐसी तासीर थी कि मैं इन्कार न कर सका और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया, मदनी क़ाफ़िले में मुझे पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त सफ़े अव्वल में अदा करने के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा मिला नीज़ नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सारी बुन्यादी बातें सीखने का मौक़अ़ मुयस्सर आया। मदनी क़ाफ़िले में मुझे इस क़दर सुकून और इत़्मीनान नसीब हुवा कि मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी शरीफ़ सजाने की पक्की सच्ची

www.dawateislami.net

निय्यत कर ली और मदनी क़ाफ़िले से सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा कर ही घर पहुंचा। अब अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में गुज़ारने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मुरीद हो कर क़ादिरी अ़त्तारी बन गया और अ़लाक़े के दीगर इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर दावते इस्लामी के मदनी कामों में ह़स्बे इस्तित़ाअ़त कोशिशें करने लगा। अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से मेरे सात भाई अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मुरीद हो कर क़ादिरी अ़त्तारी सिलसिले में दाख़िल हो गए।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बातचीत करने की सुन्नतें और आदाब

...सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू इस त़रह़ दिल नशीन अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती

(1) ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنۃ...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे कि हर सुनने वाला उसे याद कर लेता था।[1] ...मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बातचीत कीजिये। छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दोनों के नज़्दीक आप मुअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे। ...चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं, मायूब है। ...दौराने गुफ़्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं क्यूंकि ताली, सीटी बजाना महज़ खेलकूद, तमाशा और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है।[2] ...बातचीत करते वक़्त दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं इस से दूसरों को घिन आती है। ...जब तक दूसरा बात कर रहा हो इत्मीनान से सुनें। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें। ...कोई हक्ला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल न उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है। ...बातचीत करते हुए क़हक़हा न लगाएं कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी क़हक़हा नहीं लगाया (क़हक़हा यानी इतनी आवाज़ से हंसना कि दूसरों तक आवाज़ पहुंचे।)[3] ...ज़ियादा बातें करने और बार बार क़हक़हा लगाने से वक़ार भी मजरूह़ होता है। ...सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम दुन्या से बे रग़बती रखने वाले और कम गो शख़्स देखो तो उस के पास ज़रूर बैठो कि उसे ह़िक्मत दी गई है।"[4]

1 ...مسند احمد، مسند عائشہ، ۱۰/۱۱۵، حدیث: ۲۶۲۶۹

2 .....तफ़्सीरे नईमी 9 / 549

3 .....माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 402

4 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الزھد فی الدنیا، ۴/۴۲۲، حدیث: ۴۱۰۱

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)... **312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो [1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

...

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे और शहज़ादियां

शहज़ादे : प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तीन शहज़ादे थे जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1)...ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम (2)...ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (3)...त़य्यिबो त़ाहिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان)

शहज़ादियां : मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चार शहज़ादियां थीं जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1)...ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2)...ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या (3)...ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम (4)...ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ)

(المواھب اللدنیۃ، الفصل الثانی فی ذکر اولاد الکرام، ۴/ ۳۱۳)

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए तौबा करना कैसा ?

सुवाल : गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए सिर्फ़ ज़बान से तौबा करते रहना कैसा है ?

जवाब : गुनाहों पर क़ाइम रहते हुए फ़क़त ज़बान से तौबा कर लेना काफ़ी नहीं मसलन कोई शख़्स बे नमाज़ी या दाढ़ी मुन्डा है और वोह अपने इन गुनाहों से तौबा करता है लेकिन इस के बा वुजूद नमाज़ नहीं पढ़ता, दाढ़ी नहीं रखता तो उस का येह तौबा करना नहीं कहलाएगा क्यूंकि जिस गुनाह से वोह तौबा कर रहा है उस गुनाह को उस ने छोड़ा ही नहीं। **दावते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त,** जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा 700 पर है : तौबा जब ही सह़ीह़ है कि क़ज़ा पढ़ ले। उस को तो अदा न करे, तौबा किये जाए, येह तौबा नहीं कि वोह नमाज़ जो उस के ज़िम्मे थी उस का न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आया, तौबा कहां हुई। ह़दीस में फ़रमाया : गुनाह पर क़ाइम रह कर इस्तिग़्फ़ार (तौबा) करने वाला उस के मिस्ल है जो अपने रब से ठठ्ठा (यानी मज़ाक़) करता है।

(شعب الایمان، باب فی معالجة...الخ، ۵/ ۴۳۶، حدیث:۷۱۷۸)

सुवाल : तौबा के इरादे से गुनाह करना कैसा है ?

जवाब : तौबा के इरादे से गुनाह करना कि बाद में तौबा कर लूंगा येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है। मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है।

(नूरुल इरफ़ान, पारह 12, यूसुफ़, तह़तुल आयत : 9)

ग़ैरे नबी का ख़्वाब हुज्जत (दलील) नहीं

सुवाल : क्या हर कोई ख़्वाब देख कर अपना बेटा ज़ब्ह़ कर सकता है ?

जवाब : याद रहे ! कोई शख़्स ख़्वाब या ग़ैबी आवाज़ की बुन्याद पर अपने या दूसरे के बच्चे या किसी इन्सान को ज़ब्ह़ नहीं कर सकता, करेगा तो सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाएगा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام जो ख़्वाब की बिना पर अपने **बेटे की कुरबानी** के लिये तय्यार हो गए येह ह़क़ है क्यूंकि आप **नबी** हैं और नबी का ख़्वाब वह़िये इलाही होता है। इन ह़ज़रात का इम्तिह़ान था, ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام **जन्नती दुम्बा** ले आए और **अल्लाह** पाक के हुक्म से ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने प्यारे बेटे के बजाए उस जन्नती दुम्बे को ज़ब्ह़ फ़रमा दिया।

(बेटा हो तो ऐसा, स. 18)

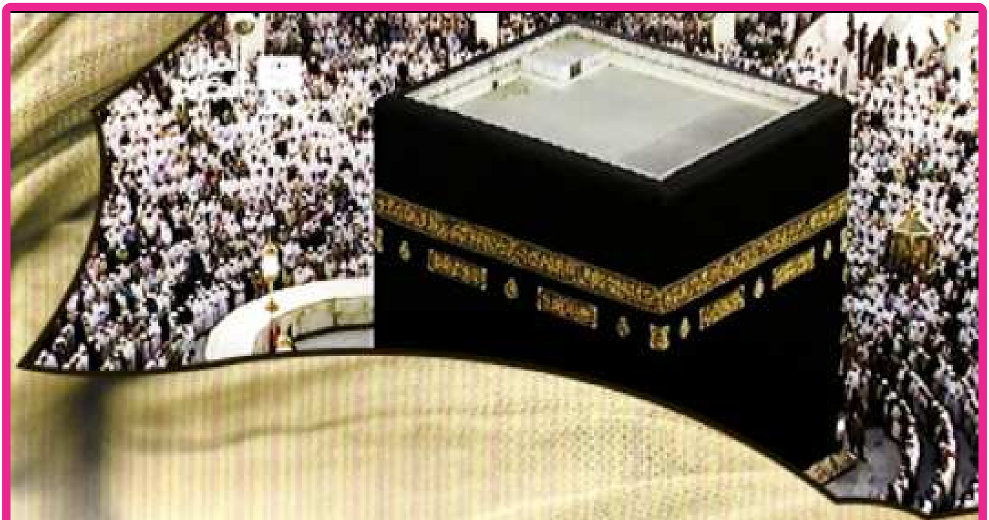

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत कैसे ह़ासिल हो ?

दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस के लिये 10 नेकियां लिख देता है, उस के 10 गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और उस के 10 दरजात बुलन्द फ़रमा देता है और येह 10 गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।(1)

जो दुरूदो सलाम पढ़ते हैं उन पे रब का सलाम होता है(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की 56 बयानात पर मुश्तमिल मुन्फ़रिद किताब "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 256 पर मौजूद ह़िकायत को तवज्जोह के साथ सुनें, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को मालूम होगा कि **अल्लाह** पाक के ह़क़ीक़ी और पसन्दीदा बन्दे कौन हैं ! चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद बिन ह़ातिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि मैं ने एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हां गुज़ारी, रात का कुछ हिस्सा गुज़रा था कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : जुनैद ! क्या तुम सो

1.....شعب الایمان، تعظیم النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم واجلالہ...الخ، ۲/۲۱۰، حدیث:۱۵۵۴

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 441

रहे हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। आप फ़रमाने लगे : मैं ने देखा कि गोया मैं अल्लाह पाक के हुज़ूर खड़ा हूं और मुझे इरशाद फ़रमाया गया : ऐ सरी ! मैं ने मख़्लूक़ पैदा की तो सब मेरी महब्बत का दावा करने लगे। फिर मैं ने **दुन्या** पैदा की तो नव्वे फ़ीसद भाग गए और दस फ़ीसद बाक़ी रह गए। फिर मैं ने **जन्नत** पैदा की तो बक़िय्या में से भी नव्वे फ़ीसद चले गए और सिर्फ़ दस फ़ीसद बच गए। फिर जब मैं ने उन पर ज़र्रा भर **आज़माइश** डाली तो बाक़ी रह जाने वाली तादाद का भी सिर्फ़ दस फ़ीसद बचा और बाक़ी नव्वे फ़ीसद भाग गए। मैं ने बाक़ी रहने वालों से पूछा "तुम ने **दुन्या** को चाहा न **जन्नत** त़लब की और न ही **आज़माइश** से भागे आख़िर और तुम क्या चाहते हो ? और तुम्हारा मक़्सूद क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : हमारा मक़्सूद तू ही तू है, अगर तू हम पर मसाइब नाज़िल फ़रमाएगा तब भी हम तेरी महब्बत को न छोड़ेंगे। मैं ने उन से कहा : "मैं तुम्हें ऐसी ऐसी मुसीबतों और आज़माइशों में मुब्तला करूंगा जिन को पहाड़ भी बरदाश्त नहीं कर सकते तो क्या तुम उन पर सब्र करोगे ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, मौला ! अगर तू आज़माइश में मुब्तला करने वाला है तो जैसे चाहे हमें आज़मा ले। फिर उस ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सरी ! येही मेरे ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब हैं।"(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक के नेक बन्दे हर ह़ाल में सब्रो शुक्र का मुज़ाहरा करते हुए उस की रिज़ा पर राज़ी रहते हैं और कभी ज़बां पर ह़र्फ़े शिकायत नहीं लाते येही लोग अल्लाह पाक के सच्चे मह़बूब हैं। हमें चाहिये कि हम भी अल्लाह पाक की महब्बत पाने के लिये उस की जानिब से आने वाली आज़माइशों पर सब्र की आ़दत बनाएं।

---

(1) ...شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ عزوجل، معانی المحبۃ، ۱/۳۸۴، الرقم: ۴۳۶

अल्लाह तआला से महब्बत

ईमान वालों को **अल्लाह** पाक से कैसी महब्बत होती है, मुलाहज़ा कीजिये। चुनान्चे, **पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 165** में इरशाद होता है :

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط

(پ۲،البقرۃ:۱۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की महब्बत नहीं।

इस आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीर **सिरात़ुल जिनान जिल्द 1, सफ़ह़ा 264** पर बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में मदनी फूल बयान हुए हैं, इन को सुनने से पहले मैं आप को **तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान** की चन्द एक ख़ूबियां अ़र्ज़ करता हूं ताकि हमारा शौक़ बढ़े और हम इस तफ़्सीर को फ़ज्र के मदनी ह़ल्क़े में सुनने या सुनाने या फिर इनफ़िरादी त़ौर पर पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल कर के दुन्याओ आख़िरत की बरकतें समेटें :

तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान की ख़ुसूसिय्यात

﴾1﴿ तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान में हर आयत के दो तर्जमे दिये गए हैं, एक आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के **कन्ज़ुल ईमान** से और दूसरा आसान तर्जमा **कन्ज़ुल इरफ़ान** के नाम से दिया गया है।

﴾2﴿ इस तफ़्सीर में क़ाबिले एतिमाद उ़लमाए किराम की क़दीमो जदीद कुरआनी तफ़ासीर और दीगर इस्लामी उ़लूम पर लिखी गई किताबें बिल ख़ुसूस आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुस्तनद तरीन किताबों से कलाम अख़्ज़ कर के आसान अन्दाज़ में पेश किया गया है।

﴾3﴿ तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान न ज़ियादा त़वील है न ही बहुत मुख़्तसर बल्कि मुतवस्सित़ तफ़्सीर है।

﴾4﴿ इस तफ़्सीर में ह़त्तल इमकान आसान अन्दाज़ इख़्तियार किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी इस से फ़ाएदा उठा सकें।

﴾5﴿ इस तफ़्सीर में आमाल की इस्लाह़ के लिये मुआ़शरती बुराइयों का तज़्किरा इन के अ़ज़ाबात, जन्नत के इन्आ़मात, जहन्नम के अ़ज़ाबात, बात़िनी अमराज़ और इन के इ़लाज का बयान है। नीज़ वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, पड़ोसियों वग़ैरा के साथ हुस्ने सुलूक व सिलए रेह़मी को भी बयान किया गया है।

﴾6﴿ तफ़्सीर सिरातुल जिनान में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत और मामूलाते अहले सुन्नत की दलाइल के साथ वज़ाह़त की गई है नीज़ मौक़अ़ की मुनासबत से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सीरत और वाक़िआ़त भी ज़िक्र किये गए हैं।

महब्बते इलाही से मामूर जो आयत हम ने सुनी, इस के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर सिरातुल जिनान में है : अल्लाह पाक के मक़्बूल बन्दे तमाम मख़्लूक़ात से बढ़ कर अल्लाह पाक से महब्बत करते हैं। महब्बते इलाही में जीना और महब्बते इलाही में मरना उन की ज़िन्दगी का मक़्सद होता है। अपनी हर ख़ुशी पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को तरजीह़ देना, नर्मो गुदाज़ बिस्तरों को छोड़ कर बारगाहे नियाज़ में सर ब सुजूद होना, यादे इलाही में रोना, रिज़ाए इलाही के हुसूल के लिये तड़पना, सर्दियों की त़वील रातों में क़ियाम और गर्मियों के लम्बे दिनों में रोज़े, अल्लाह तआ़ला के लिये महब्बत करना, उसी की ख़ात़िर दुश्मनी रखना, उसी की ख़ात़िर किसी को कुछ देना और उसी की ख़ात़िर किसी से रोक लेना, नेमत पर शुक्र, मुसीबत में सब्र, हर ह़ाल में ख़ुदा पर तवक्कुल, अपने हर मुआ़मले को अल्लाह पाक के सिपुर्द कर देना, अह़कामे इलाही पर अ़मल के लिये हमा वक़्त (हर वक़्त) वक़्त तय्यार रहना, दिल को ग़ैर की महब्बत से पाक रखना, अल्लाह पाक के महबूबों से महब्बत और अल्लाह पाक के दुश्मनों से नफ़रत करना, अल्लाह पाक के प्यारों का नियाज़ मन्द रहना, अल्लाह पाक के सब से प्यारे रसूल व महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिलो जान से महबूब रखना, अल्लाह पाक के कलाम की तिलावत, अल्लाह पाक के मुक़र्रब बन्दों को अपने दिलों के

www.dawateislami.net

क़रीब रखना, उन से महब्बत रखना, महब्बते इलाही में इज़ाफ़े के लिये उन की सोहबत इख़्तियार करना, अल्लाह पाक की ताज़ीम समझते हुए उन की ताज़ीम करना, येह तमाम उमूर और इन के इलावा सेंकड़ों काम ऐसे हैं जो महब्बते इलाही की दलील भी हैं और इस के तक़ाज़े भी हैं।(1)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करते हैं :

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! एक ह़दीसे पाक सुनते हैं जिसे सुन कर गुनाहगारों की ढारस बन्धेगी और नेकूकार डर जाएंगे और पता चलेगा कि अल्लाह पाक से महब्बत करने वालों की रात कैसे गुज़रती है ! चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा है कि अल्लाह पाक ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "ऐ दावूद ! गुनाहगारों को ख़ुश ख़बरी दे दो और सिद्दीक़ीन को डर सुनाओ।" तो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनाहगारों को क्या ख़ुश ख़बरी दूं और सिद्दीक़ीन को क्या डर सुनाऊं ?" अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ दावूद ! गुनाहगारों को येह ख़ुश ख़बरी सुना दो कि कोई गुनाह मेरी बख़्शिश से बड़ा नहीं और सिद्दीक़ीन को इस बात का डर सुनाओ कि वोह अपने नेक आमाल पर ख़ुश न हों कि मैं ने जिस से भी अपनी नेमतों का ह़िसाब लिया वोह तबाहो बरबाद हो जाएगा। ऐ दावूद ! अगर तू मुझ से महब्बत करना चाहता है तो दुन्या की महब्बत को अपने दिल से निकाल दे क्यूंकि मेरी और दुन्या की महब्बत एक दिल में जम्अ़

---

1 .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 165, 1/264

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 80

नहीं हो सकतीं । ऐ दावूद ! जो मुझ से महब्बत करता है वोह रात को मेरे हुज़ूर तहज्जुद अदा करता है जब कि लोग सो रहे होते हैं वोह तन्हाई में मुझे याद करता है जब कि ग़ाफ़िल लोग मेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत में पड़े होते हैं और वोह मेरी नेमत पर शुक्र अदा करता है जब कि भूलने वाले मुझ से ग़फ़्लत इख़्तियार करते हैं।"(1)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर — कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही !
इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी — करम हो करम या ख़ुदा या इलाही !
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे — मेरे ग़ौस का वासिता या इलाही !(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

महब्बते इलाही का मज़बूत तरीन ज़रीआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की ह़क़ीक़ी महब्बत उसी वक़्त ह़ासिल हो सकती है जब हमें उस के ह़ुसूल के त़रीक़े मालूम होंगे। अल्लाह पाक की महब्बत पाने का सब से अहम त़रीक़ा येह है कि उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सच्ची महब्बत और हर मुआ़मले में आप की इत़ाअ़त की जाए। क्यूंकि अल्लाह पाक ने अपनी महब्बत के ह़ुसूल के लिये, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी को शर्त़ क़रार दिया है। चुनान्चे,

पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 31 में इरशादे बारी तआ़ला है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और

1 ...حلیۃ الاولیاء، عبد العزیز بن ابی رواد، ۸/۲۱۱، رقم ۱۱۹۰۶۔ بحر الدموع، فصل التوبۃ وثمارھا، ص ۲۱

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾ तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

(پ۳،اٰلِ عمرٰن:۳۱)

इस आयते मुबारका से मालूम हुवा कि **अल्लाह** पाक की महब्बत का दावा उसी वक़्त सच्चा हो सकता है जब हम सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो पैरवी करते होंगे।

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस आयते त़य्यिबा का ख़ुलासा बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ऐ नबी ! आप उन लोगों से फ़रमा दीजिये जो आप के वसीले के बिग़ैर हमारी मह़ब्बत का दम भरते हैं या जो अपने को रब का प्यारा जान कर आप से बे नियाज़ होना चाहते हैं या जो आप की इत़ाअ़त के सिवा दूसरे अस्बाब से ख़ुदा तक पहुंचना चाहते हैं, उन सब को एलाने आ़म कर दीजिये कि अगर तुम ख़ुदा से मह़ब्बत करना चाहते हो तो न मुझ से मुक़ाबला करो, न मेरी बराबरी का दम भरो, न मुझ से आगे आगे चलो बल्कि ग़ुलाम बन कर मेरे पीछे पीछे चले आओ, अपने अक़्वाल, अफ़्आ़ल, आमाल ग़रज़ ज़िन्दगी के हर शोबे को मेरी मिसाल बना दो और मुझ में फ़ना हो जाओ फिर मुआ़मला बर अ़क्स होगा कि रब तुम्हें अपना मह़बूब बना लेगा और तुम जो चाहोगे वोह करेगा, इस के साथ ही तुम्हारे सारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा क्यूंकि **अल्लाह** (पाक) बड़ा ग़फ़्फ़ार और अरह़मुर्राह़िमीन है, तुम अपने को उस की मग़्फ़िरत और रह़मत का अहल बनाओ, फिर लुत़्फ़ देखो।(1)

लिहाज़ा हमें भी अपने शबो रोज़ **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़काम की बजा आवरी में गुज़ारने चाहियें क्यूंकि मह़ब्बत का तक़ाज़ा भी येही है कि जिस से मह़ब्बत की जाए उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी भी की जाए।

1.....माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे नईमी 3/359

मुतीअ़ अपना मुझ को बना या इलाही
सदा सुन्नतों पर चला या इलाही !
तू अंग्रेज़ी फ़ैशन से हर दम बचा कर
मुझे सुन्नतों पर चला या इलाही !
तुझे वासिता़ सय्यिदा आमिना का
बना आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही !(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नवाफ़िल की कसरत महब्बते इलाही का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! महब्बते इलाही पाने का एक ज़रीआ़ येह भी है कि हम नमाज़ की पाबन्दी करें, माहे रमज़ान के पूरे रोज़े रखें, ज़कात फ़र्ज़ हो तो वक़्त पर अदा करें नीज़ फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल का एहतिमाम करना भी बेहतरीन अ़मल है। नवाफ़िल पढ़ने वाला भी **अल्लाह** पाक का महबूब और पसन्दीदा बन्दा बन जाता है। जैसा कि

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने किसी वली को अज़िय्यत दी, मैं उस से एलाने जंग करता हूं और बन्दा मेरा कुर्ब सब से ज़ियादा फ़राइज़ के ज़रीए़ हासिल करता है और नवाफ़िल के ज़रीए़ मुसल्सल कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से महब्बत करने लगता हूं। जब मैं बन्दे को महबूब बना लेता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है, उस की आंख बन जाता हूं जिस से वोह देखता है, उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वोह पकड़ता है और उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है फिर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अ़ता करता हूं और मेरी पनाह चाहे तो मैं उसे ज़रूर पनाह देता हूं।"(2)

---

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 100-101

2 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲

www.dawateislami.net

मशहूर मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस इबारत का येह मतलब नहीं कि खुदा तआला वली में हुलूल कर जाता है जैसे कोएले में आग या फूल में रंग व बू कि खुदा तआला हुलूल से पाक है और येह अक़ीदा कुफ़्र है बल्कि इस के चन्द मतलब हैं : एक येह कि वलिय्युल्लाह के येह आज़ा गुनाह के लाइक़ नहीं रहते, हमेशा इन से नेक काम ही सरज़द होते हैं, उस पर इबादात आसान होती हैं, गोया सारी इबादतें उस से मैं करा रहा हूं या येह कि फिर वोह बन्दा इन आज़ा को दुन्या के लिये इस्तिमाल नहीं करता सिर्फ़ मेरे लिये इस्तिमाल करता है, हर चीज़ में मुझे देखता है, हर आवाज़ में मेरी आवाज़ सुनता है या येह कि वोह बन्दा फ़ना फ़िल्लाह हो जाता है जिस से खुदाई ताक़तें उस के आज़ा में काम करती हैं और वोह वैसे काम कर लेता है जो अक़्ल से वरा हैं, हज़रते याकूब عَلَیْهِ السَّلَام ने किन्आन में बैठे हुए मिस्र से चली हुई क़मीसे यूसुफ़ी की खुश्बू सूंघ ली, हज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने तीन मील के फ़ासिले से च्यूंटी की आवाज़ सुन ली, हज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया ने पलक झपकने से पहले यमन से तख़्ते बिल्क़ीस ला कर शाम में हाज़िर कर दिया । हज़रते उमर ने मदीनए मुनव्वरा से खुतबा पढ़ते हुए नहावन्द तक अपनी आवाज़ पहुंचा दी । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के वाक़िआत ब चश्म मुलाहज़ा फ़रमा लिये । येह सब इसी ताक़त के करिश्मे हैं ।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश हम फ़राइज़ की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ल इबादात के भी पाबन्द हो जाएं । काश ! फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़े मसलन पीर और जुमेरात का रोज़ा भी रखें । काश ! खुशदिली के साथ पूरी पूरी ज़कात भी दें और साथ ही साथ नफ़्ल सदक़ात भी मसलन मसाजिदो मदारिस की

(1).....मिरआतुल मनाजीह, 3 / 308

www.dawateislami.net

तामीरात में हिस्सा लें, ग़रीब बहन भाई और रिश्तेदारों की माली मदद करें, मुसलमानों को खिलाएं, पिलाएं। नेकी की दावत को आ़म करने के लिये ख़र्च करें वग़ैरा। काश ! हम फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ें मसलन तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त और अव्वाबीन वग़ैरा भी अदा करें।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के **72 मदनी इन्आ़मात** में जा बजा नवाफ़िल की तरग़ीब दी है, मसलन मदनी इन्आ़म नम्बर 16 में "सलातुत्तौबा" मदनी इन्आ़म नम्बर 18 में "फ़र्ज़ों के बाद वाले नवाफ़िल" मदनी इन्आ़म नम्बर 19 में "नमाज़े तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त व अव्वाबीन" और मदनी इन्आ़म नम्बर 20 में "तहिय्यतुल वुज़ू और तहिय्यतुल मस्जिद"।

अल्लाह पाक हमें मदनी इन्आ़मात का आ़मिल बनाए, मदनी इन्आ़मात का रिसाला बा क़ाइदगी से लेने, वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने और हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने की तौफ़ीक़ अ़ता करे और अपनी मह़ब्बत पाने वाले ख़ुश नसीबों में शामिल फ़रमाए।

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर *हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही !* (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसीबत पर सब्र मह़ब्बते इलाही का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक से मह़ब्बत का एक त़रीक़ा येह भी है कि उस की त़रफ़ से आने वाली मुश्किलात व मसाइब पर शिक्वाओ शिकायत करने के बजाए सिर्फ़ सब्र किया जाए क्यूंकि सब्र करने वालों को **अल्लाह** पाक पसन्द फ़रमाता है। चुनान्चे,

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 102

www.dawateislami.net

पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 146 में इरशाद होता है :

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ (پ۴، اٰل عمران:۱۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं ।

लिहाज़ा अगर हम भी सब्र को अपनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से रब तआ़ला की सच्ची मह़ब्बत हमारे दिल में जां गुज़ीं होगी ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक ज़ियादा अज्र सख़्त आज़्माइश पर ही है और अल्लाह पाक जब किसी क़ौम से मह़ब्बत करता है तो उन्हें आज़्माइश में मुब्तला कर देता है। तो जो उस की क़ज़ा (फ़ैसले) पर राज़ी हो उस के लिये उस की रिज़ा है और जो नाराज़ हो उस के लिये नाराज़ी है।[1]

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !
आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या की मह़ब्बत न होना मह़ब्बते इलाही का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मह़ब्बते इलाही के हुसूल का एक ज़रीआ़ येह भी है कि दुन्या की मह़ब्बत को अपने दिल से निकाल दिया जाए मगर अफ़्सोस दुन्या की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार और इस की रंगीनियों का शिकार हो कर हमारे दिलों से मह़ब्बते इलाही की चाश्नी कम होती जा रही है क्यूंकि अगर हम अल्लाह पाक की मह़ब्बत में सच्चे होते तो हमारी नमाज़ें क़ज़ा न होतीं, रमज़ान के रोज़े न छोड़ते और ज़कात की अदाएगी में सुस्ती न करते। मालूम हुवा कि येह दुन्या की मह़ब्बत की नुह़ूसत ही है कि जिस की बिना पर हम मह़ब्बते इलाही में कामिल न

1...ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب الصبر علی البلاء، ۴/۳۷۴، حدیث:۴۰۳۱

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 412

हो सके लिहाज़ा दुन्या की महब्बत से जल्द अज़ जल्द पीछा छुड़ाइये कि इस की महब्बत में ख़सारा ही ख़सारा है।

दुन्या त़ालिब भी है और मत़लूब भी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने दिल को दुन्या की महब्बत का जाम पिलाया वोह दुन्या की तीन बातों में ज़रूर मुब्तला होगा : (1)...ऐसी सख़्ती व तंगी जिस की मशक़्क़त ख़त्म न हो (2)...ऐसा लालच जो पूरा न हो और (3)...ऐसी उम्मीद जो अपनी तक्मील तक न पहुंचे। पस दुन्या त़ालिब भी है और मत़लूब भी। जो दुन्या त़लब करता है, आख़िरत उस की त़लब में रहती है ह़त्ताकि मौत आ कर उसे दबोच लेती है और जो आख़िरत त़लब करता है दुन्या उस की त़लब में लग जाती है यहां तक कि वोह उस में से अपना रिज़्क़ पूरा कर लेता है।[1]

बसरा के एक शैख़ हज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہَا के पास आ कर दुन्या की शिकायत करने लगे तो आप ने फ़रमाया : ग़ालिबन आप को दुन्या से बहुत ज़ियादा लगाव है क्यूंकि जो शख़्स जिस से बहुत ज़ियादा महब्बत करता है उस का ज़िक्र भी बहुत ज़ियादा करता है, अगर आप को दुन्या से लगाव न होता तो आप कभी उस का ज़िक्र न छेड़ते।[2]

इलाही ! वासित़ा देता हूं मैं मीठे मदीने का
बचा दुन्या की आफ़त से बचा उ़क़्बा की आफ़त से[3]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

❶...معجم کبیر، ۱۰/۱۶۲، حدیث:۱۰۳۲۸

❷...تذکرۃ الاولیاء، ص۷۲، ملخصا

❸.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 403

www.dawateislami.net

तिलावते क़ुरआन का शौक़ महब्बते इलाही का ज़रीआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम की तिलावत करना, इस में ग़ौरो फ़िक्र करना और इस के मआ़नियो मफ़ाहीम को समझ कर अ़मल करना भी कारे सवाब और महब्बते इलाही के हुसूल का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है।

महब्बते इलाही की अ़लामत

हज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक से महब्बत की अ़लामत येह है कि बन्दा क़ुरआने पाक से महब्बत करे, महब्बते इलाही और महब्बते क़ुरआन की निशानी हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत करना है और आप से महब्बत की अ़लामत आप की सुन्नत से लगाव रखना है।[1]

मुहिब के सच्चा होने की अ़लामत

लिहाज़ा हमें भी क़ुरआने पाक से सच्ची महब्बत होनी चाहिये क्यूंकि मुहिब (महब्बत करने वाले) की सच्चाई तीन चीज़ों से ज़ाहिर होती है : (1)...मुहिब महबूब की बातों को सब से अच्छा समझता है (2)...उस के लिये महबूब की मजलिस सब से बेहतर मजलिस होती है और (3)...उस के नज़दीक महबूब की रिज़ा सब से अ़ज़ीज़ होती है।[2]

फ़िल्मों से ड्रामों से अ़ता कर दे तू नफ़रत　　बस शौक़ मुझे नातो तिलावत का ख़ुदा दे[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1...مکاشفۃ القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعۃ اللّٰہ ومحبۃ رسولہ، ص ۳۷

2...مکاشفۃ القلوب، الباب العاشر فی العشق، ص ۳۳

3.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 117

www.dawateislami.net

तालीमे क़ुरआन और दावते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी तालीमे क़ुरआन को आ़म करने की कोशिश कर रही है, दर्जे ज़ैल शोबे क़ुरआन की तालीमात को आ़म कर रहे हैं :

(1)...मद्रसतुल मदीना लिल बनीन (2)...मद्रसतुल मदीना लिल बनात (3)...मद्रसतुल मदीना जुज़ वक़्ती (4)...मद्रसतुल मदीना रिहाइशी (5)...मद्रसतुल मदीना बालिग़ान (6)...मद्रसतुल मदीना बालिग़ात (7)...मद्रसतुल मदीना लिल बनीन ऑन लाइन (8)...मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन।

.....**मद्रसतुल मदीना लिल बनीन :** में मुल्क व बैरूने मुल्क मदनी मुन्नों को क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम दी जाती है।

.....**मद्रसतुल मदीना लिल बनात :** में क़ारिया इस्लामी बहनें मदनी मुन्नियों को फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम देती हैं।

.....**मद्रसतुल मदीना जुज़ वक़्ती :** में स्कूल पढ़ने वाले बच्चों को स्कूल की तालीम के बाद एक या दो घंटे के लिये क़ुरआने पाक की तालीम दी जाती है।

.....**मद्रसतुल मदीना रिहाइशी :** में तृलबा मदारिस में क़ियाम पज़ीर हो कर क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ो नाज़िरा की तालीम ह़ासिल करते हैं।

.....**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान :** में इस्लामी भाइयों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ाया जाता, नमाज़, सुन्नतें और दुआ़एं भी याद करवाई जाती हैं।

.....**मद्रसतुल मदीना बालिग़ात :** में इस्लामी बहनों को इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाई तौर पर फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआन पढ़ातीं और इस्लामी बहनों को नमाज़, दुआ़एं और उन के मख़्सूस मसाइल वग़ैरा सिखाती हैं।

.....**मद्रसतुल मदीना लिल बनीन ऑन लाइन :** में क़ारी साहिबान मदनी मुन्नों और बड़ों को भी ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट कुरआने पाक पढ़ाते, सुन्नतें सिखाते और दुआएं याद करवाते हैं।

.....**मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन :** में इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों को ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम पढ़ाती और उन की सुन्नत के मुताबिक़ तरबियत करती हैं। कमो बेश 83 ममालिक में तलबाओ तालिबात इन्टरनेट के ज़रीए कुरआने करीम की तालीम हासिल कर रहे हैं।

मदारिसुल मदीना की कारकर्दगी

मुल्क व बैरूने मुल्क हिफ़्ज़ो नाज़िरा के हज़ारों मदारिस बनाम "**मद्रसतुल मदीना**" (लिल बनीन व लिल बनात, जुज़ वक़्ती, रिहाइशी) क़ाइम हैं। दावते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना से अब तक मजमूई तौर पर 69100 (उन्हत्तर हज़ार एक सौ) मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां कुरआने करीम हिफ़्ज़ करने की सआदत पा चुके हैं जब कि नाज़िरा मुकम्मल करने वालों की तादाद कमो बेश 195242 (एक लाख पचानवे हज़ार दो सौ बयालीस) है। मुल्क व बैरूने मुल्क **मद्रसतुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात) ता दमे तहरीर कमो बेश 2585 (दो हज़ार पांच सो पचासी) और इन में 121971 (एक लाख इक्कीस हज़ार नव सौ इक्हत्तर) मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम दी जा रही है।

येही है आरज़ू तालीमे कुरआं आम हो जाए

तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप भी कुरआन की तालीम सीखने सिखाने के लिये मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने या पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाइये कि इस में शिर्कत की बड़ी बरकतें हैं। कुरआने करीम की तालीम के साथ साथ शरई मसाइल और बाज़ फ़र्ज़ उ़लूम सीखने का मौक़अ़ भी मिलता है। चुनान्चे,

अफ़ज़ल इबादत

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : अफ़्ज़ल इबादत दीन के मसाइल सीखना है और अफ़्ज़ल दीन शुब्हात से बचना है।(1)

एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स इल्म की त़लब में रहता है **अल्लाह** पाक उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप भी कुरआने करीम को दुरुस्त मख़ारिज से पढ़ने और ज़रूरी शरई मसाइल सीखने के लिये मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पाबन्दी से शिर्कत की आ़दत बनाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ढेरों बरकतें नसीब होंगी। मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत का ज़ौक़ो शौक़ पैदा करने के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

तिलावते कुरआन का शौक़ कैसे मिला ?

एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले मदनी इन्क़िलाब के बारे में कुछ यूं बयान करते हैं कि मैं गुनाहों के तपते सह़रा में भटक रहा था। फ़िल्में ड्रामें देखना, गाने बाजे सुनना और مَعَاذَ اللّٰه दाढ़ी मुन्डवाना मेरी आ़दाते बद में शामिल

1...معجم صغیر، ص۱۲۳، حدیث:۱۱۱۰

2...مسند شھاب، باب من طلب العلم...الخ، ۱/ ۲۴۴، حدیث:۳۹۱

था। कुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल से दूर, दुन्या की रंगीनियों में मसरूर अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती अवक़ात बे अ़मली और जहालत के घुप अंधेरे में बरबाद कर रहा था। मैं बड़ा खुश था कि ख़ूब मज़े की ज़िन्दगी बसर हो रही है। मगर आह ! मुझे नहीं मालूम था कि येह ऐ़श कोशियां मेरी आख़िरत बरबाद कर रही हैं। अचानक वालिद साहि़ब का साया सर से उठ जाने ने मुझे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर दिया। दिल कुछ नेकी की जानिब माइल हुवा, मैं ने बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना शुरूअ़ कर दी। एक दिन नमाज़ पढ़ने मस्जिद गया तो वहां मेरी मुलाक़ात सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक बारीश इस्लामी भाई से हो गई, उन का अन्दाज़े मुलाक़ात इस क़दर भला था कि मैं मुतास्सिर हुए बिग़ैर न रह सका। उन्हों ने सलाम व मुसाफ़ह़ा के बाद इनफ़िरादी कोशिश करते हुए बड़े अह़सन अन्दाज़ में तिलावते कुरआने पाक का ज़ौक़ो शौक़ दिलाया, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत की दावत दी। इस्लाहे़ उम्मत के जज़्बे से सरशार, आ़शिक़े रसूल इस्लामी भाई के मीठे अन्दाज़ को देख कर मैं इन्कार न कर सका और मस्जिद में इ़शा की नमाज़ के बाद क़ाइम किये जाने वाले मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत करने लगा। पहले दिन मुबल्लिग़े दावते इस्लामी ने कुरआने पाक सुना तो कई ग़लतियों की निशान देही की और प्यार भरे अन्दाज़ में फ़रमाने लगे : कुरआने पाक को दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ना ज़रूरी है क्यूंकि तलफ़्फ़ुज़ के दुरुस्त न होने की वज्ह से अगर किसी लफ़्ज़ का माना तब्दील हो जाए तो बसा अवक़ात नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। मुझे जल्द ही अपनी कोताहियों का एह़सास हो गया और मैं ने निय्यत कर ली कि मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पाबन्दी से शिर्कत कर के दुरुस्त मख़ारिज से कुरआने पाक पढ़ना सीखूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत की बरकत से कुरआने पाक सीखने के साथ साथ नमाज़, वुज़ू व ग़ुस्ल और दीगर कई ज़रूरी मसाइल

सीखने की सआदत हासिल हुई । रफ़्ता रफ़्ता हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआदत हासिल करने लगा । इसी दौरान शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की गुलामी का पट्टा भी गले में डाल लिया । अल्लाह पाक की बारगाह में सिदक़े दिल से अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और आयिन्दा क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल करते हुए ज़िन्दगी बसर करने का पुख़्ता इरादा कर लिया, नमाज़े पन्जगाना का पाबन्द हो गया, सर को सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज और चेहरे को दाढ़ी शरीफ़ के नूर से मुज़य्यन कर लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जल्द ही मैं ने तजवीद के साथ मुकम्मल क़ुरआने पाक पढ़ लिया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेमते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र महब्बते इलाही का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के फ़ज़्लो एह़सान और उस की छोटी बड़ी ज़ाहिरी बातिनी नेमतों को हर वक़्त पेशे नज़र रखना भी महब्बते इलाही के ह़ुसूल का मुअस्सिर ज़रीआ़ है । इस बात में कोई शक नहीं कि अल्लाह पाक ने अपने बन्दों पर बे शुमार एह़सानात फ़रमाए, ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया, अपनी राह बताने और ह़क़ की दावत देने के लिये ह़ज़राते रुसुलो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया, इस के इलावा अगर हम अपनी ज़ात में ग़ौर करें तो मालूम होगा कि अल्लाह पाक ने हमें बे शुमार नेमतें अ़ता कर रखी हैं मसलन हमें पैदा किया और ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिये सांस लेने और सांस ख़ारिज करने का निज़ाम अ़ता फ़रमाया, चलने को पाउं दिये तो छूने को हाथ, देखने के लिये आंखें अ़ता फ़रमाईं तो सुनने के लिये कान, सूंघने को नाक दी तो बोलने के लिये ज़बान और बे शुमार ऐसी नेमतें अ़ता फ़रमाईं

www.dawateislami.net

जिन में आज तक हम ने कभी ग़ौर ही नहीं किया हालांकि उस की एक नेमत भी हमारी कई सौ साल की इबादतो रियाज़त से बढ़ कर है। चुनान्चे,

400 सालह इबादत और एक नेमत

मन्क़ूल है कि अगली उम्मतों में से एक शख़्स जिस ने 400 बरस **अल्लाह** पाक की इबादत की होगी और उस के नामए आमाल में एक गुनाह भी न होगा। क़ियामत के रोज़ उस के बारे में हुक्मे ख़ुदावन्दी होगा : "इस की 400 साल की इबादत मीज़ान के एक पलड़े में और हमारी नेमतों में से सिर्फ़ आंख की नेमत दूसरे पलड़े में रखो।" जब वज़्न किया जाएगा तो 400 बरस के आमाल से एक येह नेमत कहीं ज़ियादा होगी।[1]

लिहाज़ा हमें उस की अ़त़ाकर्दा नेमतों को हर वक़्त पेशे नज़र रखते हुए उस का शुक्र अदा करते रहना चाहिये, इस से हुक्मे शुक्र पर अ़मल के साथ साथ महब्बते इलाही में भी इज़ाफ़ा होगा नीज़ नेमतों में ग़ौरो फ़िक्र से उन की क़द्रो क़ीमत का भी एह़सास होगा।

इस्लाह़ का अनोखा अन्दाज़

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपनी **तंगदस्ती** की शिकायत करने लगा तो आप ने उस से पूछा : "जिस आंख से तुम देख रहे हो क्या इस के बदले एक लाख दिरहम तुम्हें क़बूल हैं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" फ़रमाया : "क्या तेरे एक हाथ के इवज़ लाख दिरहम ?" उस ने कहा : "नहीं।" फिर फ़रमाया : "तो क्या पाउं के बदले में ?" जवाब दिया : "नहीं।" रावी बयान करते हैं कि आप ने उसे **अल्लाह** पाक की

1 .....माख़ूज़ अज़ मल्फ़ूज़ात, स. 282

दीगर नेमतें याद दिलाने के बाद फ़रमाया : "मैं तो तुम्हारे पास लाखों देख रहा हूं और तुम मोहताजी की **शिकायत** कर रहे हो ?"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

महब्बते इलाही का एक आसान ज़रीआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो खुश नसीब मुसलमान आपस में महब्बत रखते हैं और **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये जम्अ होते हैं मसलन दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में आते हैं, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ते पढ़ाते हैं, मदनी दर्स देते या सुनते हैं, मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनते हैं, बादे फ़ज्र मदनी हल्के में शिर्कत की सआदत पाते हैं अल ग़रज़ जो भी रिज़ाए इलाही के लिये जम्अ होते, **अल्लाह** पाक की खुशनूदी के लिये एक दूसरे से मिलते और एक दूसरे पर माल ख़र्च करते हैं, उन्हें महब्बते इलाही हासिल होती है । चुनान्चे,

हदीसे कुदसी में है कि **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : "जो लोग मेरी वज्ह से आपस में महब्बत रखते, मेरी वज्ह से एक दूसरे के पास बैठते, आपस में मिलते जुलते और माल ख़र्च करते हैं उन के लिये मेरी महब्बत वाजिब हो गई ।"(2)

अल्लाह पाक की बन्दे से महब्बत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह बन्दे अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करते हैं इसी तरह **अल्लाह** पाक भी अपने बन्दों से महब्बत फ़रमाता है नीज़ **अल्लाह** पाक की बन्दे से महब्बत कई एतिबार से हो सकती है मसलन **अल्लाह** पाक का बन्दे से राज़ी होना : उस से ख़ैर का इरादा फ़रमाना, बन्दे की

(1)...حلیۃ الاولیاء، یونس بن عبید، ۳/۲۵، رقم:۳۰۱۷

(2)...موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب ماجاء فی المتحابین فی اللہ، ۲/۴۳۹، حدیث:۱۸۲۸

www.dawateislami.net

तारीफ़ करना, उसे अपने सवाब से माला माल फ़रमाना, उस से अ़फ़्वो दर गुज़र करना, उसे अपनी इत़ाअ़त में मश्ग़ूल रखना और ना फ़रमानी से बचाना।[1]

दीन सीखने की तौफ़ीक़

अल्लाह पाक जब अपने बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे दीन की मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा देता है। चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है कि **अल्लाह** पाक दुन्या उसे भी देता है जो उसे **मह़बूब** हो और उसे भी जो **मह़बूब** नहीं लेकिन दीन सिर्फ़ उसी को देता है जो उस के नज़्दीक **प्यारा** होता है, लिहाज़ा जिसे **अल्लाह** पाक ने दीन दिया उसे **मह़बूब** बना लिया।[2]

मख़्लूक़ में ज़िक्रे ख़ैर

यूंही जब **अल्लाह** पाक बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उस के ज़िक्रे ख़ैर को अपनी मख़्लूक़ में आ़म फ़रमा देता है, हर त़रफ़ उस की नेकनामी और भलाई के चर्चे होने लगते हैं। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को बुला कर इरशाद फ़रमाता है : मैं फ़ुलां से मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करो। तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام उस से मह़ब्बत करते हैं और आस्मान में एलान करते हुए कहते हैं कि **अल्लाह** पाक फ़ुलां से मह़ब्बत करता है तुम भी उस से मह़ब्बत करो। तो आस्मान वाले उस से मह़ब्बत करते हैं फिर उस के लिये ज़मीन में क़बूलिय्यत रख दी जाती है और जब रब तआ़ला किसी बन्दे से नाराज़ होता है तो इरशाद फ़रमाता है : मैं फ़ुलां से नाराज़ हूं तुम भी उस से नाराज़ हो जाओ। फ़रमाया : ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام उस से नाराज़ हो जाते हैं, फिर आस्मान वालों में एलान करते हैं कि **अल्लाह** पाक फ़ुलां

1...تفسیر بیضاوی، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۶۴، ۱/ ۴۴۱۔ تفسیر خازن، پ۳، ال عمرٰن تحت الآیۃ: ۱، ۳۱/ ۲۴۳

2...شعب الایمان، باب فی قبض الید عن الاموال المحرمۃ، ۴/ ۳۹۵، حدیث: ۵۵۲۴

www.dawateislami.net

से नाराज़ है तुम भी उस से नाराज़ हो जाओ। तो वोह उस से नफ़रत करते हैं फिर ज़मीन में उस के लिये नफ़रत रख दी जाती है।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अल्लाह पाक का महबूब बनने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा इबादतो तिलावत और नेकियों की आदत बनाएं और अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन अल्लाह पाक की बारगाह में सच्ची तौबा कर लें कि अल्लाह पाक तौबा करने वालों को बहुत पसन्द फ़रमाता है। चुनान्चे, **पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 222** में इरशाद होता है :

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं
हक़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़ता या रब (2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं और जब अल्लाह पाक किसी बन्दे से महब्बत करता है तो उसे कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देता।(3)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि तौबा करने वालों को अल्लाह पाक पसन्द फ़रमाता है, लिहाज़ा हमें भी अपने सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा

---

1 ...مسلم، کتاب البر، باب اذا احب اللہ تعالٰی عبداً...الخ، ص۱۰۸۶، حدیث:۲۷۰۵

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 78

3 ...مسند فردوس، ۱/۳۰۸، حدیث:۲۲۵۱

www.dawateislami.net

करते रहना चाहिये बिल ख़ुसूस जब रात को सोने के लिये बिस्तर पर जाएं तो दिन भर के मुआ़मलात को याद करते हुए फ़िक्रे मदीना (यानी ग़ौरो फ़िक्र) कीजिये।

सलातुत्तौबा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा **72 मदनी इन्आ़मात** में से मदनी इन्आ़म नम्बर 16 में है कि "क्या आज आप ने कम अज़् कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) सलातुत्तौबा पढ़ कर दिन भर के साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ ख़ुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा वोह गुनाह न करने का अ़हद किया ?"

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि दिन भर में अगर कोई नेकी जाने अन्जाने में बन्दों के दिखावे के लिये की तो उस से तौबा करते हुए आयिन्दा इख़्लास के साथ नेकियां करने की निय्यत करें और गुनाहों को याद कर के सच्ची तौबा करने की आ़दत बनाएं ताकि हम भी **अल्लाह** पाक के मह़बूब बन्दों में शामिल हो जाएं।

मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही — अ़त़ा कर मुझे अपना ग़म या इलाही !
शराबे मह़ब्बत कुछ ऐसी पिला दे — कभी भी नशा हो न कम या इलाही !
इ़बादत में लगता नहीं दिल हमारा — हैं इ़स्यां में बदमस्त हम या इलाही ![1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मह़ब्बते इलाही के बारे में मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बनाम "**मुकाशफ़तुल कुलूब**" के बाब "**मह़ब्बते इलाही**" का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है नीज़ **अल्लाह** पाक से सच्ची मह़ब्बत करने वाले नेकूकारों की सोह़बत इख़्तियार करना, उन की नसीह़त

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 109

www.dawateislami.net

आमेज़ गुफ़्तगू को अपने लिये मश्अ़ले राह बनाना भी महब्बते इलाही की अ़लामत है। लिहाज़ा महब्बते इलाही बढ़ाने, रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा जगाने, ईमान की हिफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से डराने, गुनाहों की आ़दत मिटाने, ख़ुद को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये अच्छा मदनी माह़ोल और नेक लोगों की सोह़बत ह़द दरजा ज़रूरी है क्यूंकि आज मुआ़शरे के नागुफ़्ताबेह ह़ालात में गुनाहों का ज़ोरदार सैलाब जिसे देखो बहाए लिये जा रहा है। ऐसे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दावते इस्लामी** का मदनी माह़ोल किसी नेमते उ़ज़्मा से कम नहीं, लिहाज़ा आप भी इस प्यारे से मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। नीज़ आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ महब्बते इलाही और सुन्नते रसूल की दौलत का ख़ज़ाना ह़ासिल होगा। **अल्लाह** पाक हमें बयान कर्दा मदनी फूलों पर अ़मल करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आज के बयान में हम ने **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत पाने के ह़वाले से चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, कि किन किन ज़राएअ़ से **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत ह़ासिल हो सकती है। मसलन

﴾1﴿....प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त ﴾2﴿....नवाफ़िल की कसरत ﴾3﴿....मसाइबो आलाम पर सब्र ﴾4﴿....दिल से दुन्या की मह़ब्बत को निकाल देना ﴾5﴿....क़ुरआने करीम की तिलावत ﴾6﴿....**अल्लाह** तबारक व

www.dawateislami.net

तआला की नेमतों का शुक्र ﴾7﴿....नेमतों में ग़ौरो फ़िक्र और ﴾8﴿....बन्दों से ख़ैर ख़्वाही महब्बते इलाही के हुसूल के ज़राएअ़ हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे अल मदीना लाइब्रेरी का तआरुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दावते इस्लामी** सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कमो बेश 103 शोबाजात में मदनी काम कर रही है। आसान अन्दाज़ से इल्मे दीन की रौशनी फैलाने और लोगों को इस्लामी तालीमात से रूशनास करवाने के लिये इन शोबों में एक शोबा "**अल मदीना लाइब्रेरी**" भी क़ाइम किया गया है। जिस में मुतालए के लिये खुश गवार माहोल, ऑडियो, वीडियो बयानात व मदनी मुज़ाकरे सुनने और मदनी चैनल देखने के लिये कम्प्यूटर वग़ैरा की तरकीब बनाई जाती है।

अल मदीना लाइब्रेरी में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर मुश्तमिल शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, उलमाए अहले सुन्नत كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى और अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुबो रसाइल और CDs, VCDs वग़ैरा मजलिस की तरफ़ से तै शुदा निज़ाम के मुताबिक़ रखने की तरग़ीब दिलाई जाती है। हम भी इस सहूलत से फ़ाएदा उठाते हुए इल्मे दीन की बरकात से माला माल हो सकते हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो (1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की तरफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस

---

(1).....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाथ मिलाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **101 मदनी फूल** से हाथ मिलाने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनते हैं : पहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा हों : ﴾1﴿...."जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुए **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** पाक उन के दरमियान सौ (100) रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निनानवे (99) रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।"(2) ﴾2﴿....जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ह़ा करते हैं और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(3) ....दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से **मुसाफ़ह़ा** करना यानी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है। ....रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं। ....हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ भी पढ़ लीजिये : يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ....दो मुसलमान हाथ मिलाने के दौरान जो

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2...معجم اوسط، ۵/ ۳۷۹، حدیث: ۷۶۷۲

3...شعب الایمان، باب فی مقاربة وموادة اهل الدین، فصل فی المصافحة...الخ، ۶/ ۴۷۱، حدیث: ۸۹۴۴

www.dawateislami.net

दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी।[1] اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ....आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है। ....जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं। ....दोनों त़रफ़ से एक एक हाथ मिलाना सुन्नत नहीं मुसाफ़ह़ा दो हाथ से करना सुन्नत है। ....बाज़ लोग सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं। ....हाथ मिलाने के बाद ख़ुद अपना ही हाथ चूम लेना मकरूह है।[2] हाथ मिलाने के बाद अपनी हथेली चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें। ....मुसाफ़ह़ा करते (यानी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।[3]

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1)...**312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

....

1...مسند احمد، مسند انس بن مالک، ۴/ ۲۸۶، حدیث: ۱۲۴۵۴

2...تبیین الحقائق، کتاب الکراھیۃ، فصل فی الاستبراء وغیرہ، ۷/ ۵۶

3...درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/ ۶۲۹

4.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 669

www.dawateislami.net

ग़ीबत की तबाहकारियां एक नज़र में

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتھم العالیہ तह़रीर फ़रमाते हैं : कु़रआनो ह़दीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رحمھم اللہ المبین से मुन्तख़ब कर्दा ग़ीबत की 20 तबाहकारियों पर एक सरसरी नज़र डालिये, शायद ख़ाइफ़ीन के बदन में झुर झुरी की लहर दौड़ जाए ! जिगर थाम कर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : (1)....ग़ीबत ईमान को काट कर रख देती है (2)....ग़ीबत बुरे ख़ातिमे का सबब है (3)....ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती (4)....ग़ीबत से नमाज़ रोजे़ की नूरानिय्यत चली जाती है (5)....ग़ीबत से नेकियां बरबाद होती हैं (6)....ग़ीबत नेकियां जला देती है (7)....ग़ीबत करने वाला तौबा कर भी ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा, अल ग़रज़ ग़ीबत गुनाहे कबीरा, क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है (8)....ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है (9)....मुसलमान की ग़ीबत करने वाला सूद से भी बड़े गुनाह में गिरिफ़्तार है (10)....ग़ीबत को अगर समुन्दर में डाल दिया जाए तो सारा समुन्दर बदबूदार हो जाए (11)....ग़ीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा (12)....ग़ीबत मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ़ है (13)....ग़ीबत करने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार होगा (14)....ग़ीबत करने वाला तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था (15)....ग़ीबत करने वाले को उस के पहलूओं से गोश्त काट काट कर खिलाया जा रहा था (16)....ग़ीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेगा (17)....ग़ीबत करने वाला जहन्नम का बन्दर होगा (18)....ग़ीबत करने वाले को दोज़ख़ में ख़ुद अपना ही गोश्त खाना पड़ेगा (19)....ग़ीबत करने वाला जहन्नम के खौलते हुए पानी और आग के दरमियान मौत मांगता दौड़ रहा होगा और उस से जहन्नमी भी बेज़ार होंगे (20)....ग़ीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा।

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 26)

GAOSE PAK KI KARAMAAT (HINDI BAYAAN)

رضی اللہ تعالیٰ عنہ

ग़ौसे पाक की करामात

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस में कोई शुबा नहीं कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना तमाम आमाल से अफ़्ज़ल है, येह उन मलाएका का ज़िक्र है जो अत़राफ़े जन्नत में रहते हैं और जब वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो इस की बरकत से जन्नत कुशादा हो जाती है ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुरग़ी ज़िन्दा कर दी

एक बीबी सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में येह कह कर अपना बेटा छोड़ गई कि येह आप से मह़ब्बत करता है अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये इस की तरबियत फ़रमा दीजिये । आप ने उसे क़बूल फ़रमा कर मुजाहदे पर लगा दिया, एक रोज़ उस की मां आई, देखा लड़का भूक और शब बेदारी से बहुत कमज़ोर और ज़र्द (यानी पीला) हो गया है और जव की रोटी खा रहा है, वोह बीबी जब ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुई तो देखा कि आप के सामने एक बरतन में मुरग़ी

(1)... الابریز، الباب الحادی عشر فی الجنۃ، باب فی زیادۃ الجنۃ... الخ، ۲/۳۳۷

www.dawateislami.net

की हड्डियां रखी हैं जिसे आप ने तनावुल फ़रमाया था, अ़र्ज़ की : या ग़ौसे आज़म ! आप ख़ुद तो मुरग़ी खाएं और मेरा बच्चा जव की रोटी ! येह सुन कर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना दस्ते अक़्दस उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया : قُوْمِیْ بِاِذْنِ اللّٰهِ الَّذِیْ یُحْیِی الْعِظَامَ وَھِیَ رَمِیْمٌ यानी ज़िन्दा हो जा उस **अल्लाह** पाक के हुक्म से जो बोसीदा हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा। येह फ़रमाना था कि मुरग़ी फ़ौरन ज़िन्दा सहीह़ सालिम खड़ी हो कर आवाज़ निकालने लगी, ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जब तेरा बेटा इस दरजे तक पहुंच जाएगा तो जो चाहेगा खाएगा।[1]

वोह कह कर कुम बिइज़्निल्लाह जिला देते हैं मुर्दों को
बहुत मश्हूर है एह़याए मौता ग़ौसे आज़म का
जिलाया इस्तख़्वाने मुर्ग़ को दस्ते करम रख कर
बयां क्या हो सके एह़याए मौता ग़ौसे आज़म का[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ब हुक्मे इलाही मुर्दे ज़िन्दा करना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ में हमारे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मक़ाम किस क़दर बुलन्दो बाला है कि जब आप ने किसी मुर्दा मुरग़ी को **अल्लाह** पाक के हुक्म से ज़िन्दा होने का हुक्म फ़रमाया तो उस में जान आ गई और वोह पहले की त़रह़ ज़िन्दा हो गई। याद रखिये ! बिलाशुबा मौत व ह़यात **अल्लाह** पाक के इख़्तियार में है लेकिन **अल्लाह** पाक अगर अपनी ख़ुसूसी नवाज़िशात से अपने किसी मुक़र्रब नबी या बरगुज़ीदा वली को मुर्दे जिलाने (यानी ज़िन्दा करने) की त़ाक़त बख़्शे तो येह कोई नाक़ाबिले

1 ...بهجة الاسرار، ذكر فصول من كلامه...الخ، ص ١٢٨

2 .....क़बालए बख़्शिश, स. 53

तस्लीम बात नहीं नीज़ **अल्लाह** पाक की अ़ता से किसी और को हम मुर्दा ज़िन्दा करने वाला तस्लीम करें तो इस से हमारे ईमान पर कोई असर नहीं पड़ता, अगर शैत़ान की बातों में आ कर किसी ने अपने ज़ेहन में येह बिठा लिया है कि **अल्लाह** पाक ने किसी और को मुर्दा ज़िन्दा करने की त़ाक़त ही नहीं दी तो उस का येह नज़रिया हुक्मे क़ुरआनी के ख़िलाफ़ है। जैसा कि **पारह 3, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 49** में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام का येह क़ौल मौजूद है :

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِۚ

(پ۳، اٰل عمرٰن: ۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं **अल्लाह** के हुक्म से।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका से वाज़ेह़ त़ौर पर पता चलता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने मुर्दे ज़िन्दा करने की बात अपनी त़रफ़ मनसूब करते हुए इरशाद फ़रमाया कि **"मैं मुर्दे ज़िन्दा करता हूं"** मगर साथ ही साथ येह भी फ़रमा दिया कि **"अल्लाह के हुक्म से"** यानी मेरा मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला मोजिज़ा **अल्लाह** पाक के हुक्म और उस की अ़ता से है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! त़बक़ए औलिया में से मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसे समदानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, **अल्लाह** पाक के वोह मुक़र्रब तरीन वली हैं जो तमाम औलिया के सरदार हैं और उन की शख़्सिय्यत अ़वामो ख़वास सभी के लिये लाइक़े अ़क़ीदतो एह़तिराम है, आप न सिर्फ़ कसीरुल करामात बुज़ुर्ग हैं बल्कि **अल्लाह** पाक ने आप को दीगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से बढ़ कर करामातो इन्आ़मात से नवाज़ा है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मोतियों की लड़ी

ख़ातमुल मुहद्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मशाइख़े औलिया में से कोई भी करामात के लिहाज़ से आप का हम पल्ला नहीं, यहां तक कि बाज़ मशाइख़ ने फ़रमाया कि आप की करामात का ह़ाल तो मोतियों की लड़ी जैसा है कि जब टूटती है तो एक के बाद एक मोती गिरता चला जाता है नीज़ आप की करामात गिनती व शुमार से बाहर हैं।[(1)]

मूज़ी जानवरों से ह़िफ़ाज़त

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते बा बरकत तो करामातो कमालात का मम्बअ़ है ही, सिर्फ़ आप के मुबारक नाम की येह बरकत है कि जहां पुकारा जाए मूज़ी जानवरों से छुटकारा मिल जाता है। चुनान्चे,

मन्क़ूल है कि अगर शेर किसी शख़्स के सामने आ जाए और वोह हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम ले (तो) शेर उस पर ह़म्ला आवर नहीं होगा।[(2)]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करामत की तारीफ़ और इस का हुक्म

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 342 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**करामाते सह़ाबा**" के सफ़ह़ा 36 पर है कि मोमिने मुत्तक़ी से अगर कोई ऐसी नादिरुल वुजूद और तअ़ज्जुब ख़ेज़ चीज़ सादिर व ज़ाहिर हो जाए जो आ़म त़ौर पर आ़दतन नहीं हुवा करती तो उस को करामत कहते हैं। इसी क़िस्म की चीज़ें अगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से एलाने नबुव्वत

---

❶...اشعة اللمعات، كتاب الفتن، باب الكرامات، ۴/۶۱۰

❷...نزهة الخاطر، ص۲۵ بتغير قليل

करने से पहले ज़ाहिर हों तो इरहास और एलाने नबुव्वत के बाद हों तो मोजिज़ा कहलाती हैं और अगर आम मोमिनीन से इस क़िस्म की चीज़ों का ज़ुहूर हो तो उस को मऊनत कहते हैं और किसी काफ़िर से कभी उस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ इस क़िस्म की चीज़ ज़ाहिर हो जाए तो उस को इस्तिदराज कहा जाता है।[(1)]

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि करामते औलिया हक़ है, इस का मुन्किर गुमराह है।[(2)] करामत की बहुत सी क़िस्में हैं मसलन मुर्दों को ज़िन्दा करना, अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा देना, लम्बी मसाफ़तों को लम्हों में तै कर लेना, पानी पर चलना, हवाओं में उड़ना, दिल की बात जान लेना और दूर की चीज़ों को देख लेना वग़ैरा वग़ैरा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ानदानी पस मन्ज़र

आइये ! अब हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ादानी पस मन्ज़र का मुख़्तसर तज़किरा और आप की शानो अ़ज़मत के वाक़िआत और करामात सुनते हैं ताकि हमारे दिलों में औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی की मज़ीद अ़क़ीदत, महब्बत और अ़ज़मत पैदा हो।

ग़ौसे पाक का नाम व नसब

हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादते बा सआदत यकुम रमज़ान सिने 470 हिजरी में जुम्अ़तुल मुबारक को जीलान में हुई। आप का नामे नामी, इस्मे गिरामी अ़ब्दुल क़ादिर और कुन्यत अबू

1...النبراس، اقسام الخوارق سبعۃ، ص ۲۷۲

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, 1/269

मुहम्मद है नीज़ मोहिय्युद्दीन, महबूबे सुब्हानी, ग़ौसे आज़म और ग़ौसे सक़लैन वग़ैरा आप के अल्क़ाबात हैं। आप के वालिदे माजिद का नाम हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और वालिदए माजिदा का नाम उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْها है, आप वालिद की तरफ़ से हसनी और वालिदा की जानिब से हुसैनी सय्यिद हैं।(1)

तू हुसैनी हसनी क्यूं न मोहिय्युद्दीं हो
ऐ ख़िज़्र मजमए बहरैन है चश्मा तेरा (2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हैरत अंगेज़ वाक़िआत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत के वक़्त बहुत से हैरत अंगेज़ वाक़िआत ज़ुहूर पज़ीर हुए, सब से बड़ी बात तो येह है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पैदाइश के वक़्त आप की वालिदए माजिदा हज़रते उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْها की उ़म्र 60 साल थी, इस उ़म्र में आ़म तौर पर औ़रतों को औलाद से ना उम्मीदी हो जाती है, येह **अल्लाह** पाक का ख़ास फ़ज़्ल था कि इस उ़म्र में (भी) हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन के बत़्ने मुबारक से पैदा हुए।

उ़मूमन बच्चा जब मां के पेट में होता है तो वोह दुन्या और दुन्या में जो कुछ है उस से बे ख़बर होता है फिर जब दुन्या में आ जाता है तो भी उसे होश संभालने में एक त़वील अ़र्सा दरकार होता है मगर क़ुरबान जाइये सरदारे औलिया पर कि आप की ज़ाते बा बरकात से करामात का ज़ुहूर इस दुन्या में जल्वागरी से

1 ...بہجۃالاسرار، ذکرنسبہ وصفتہ، ص۱۷۱ ملخصا

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19

www.dawateislami.net

क़ब्ल और बादे विलादत (फ़ौरन) ही होने लगा था। चुनान्चे, अभी आप अपनी वालिदए माजिदा के पेट में थे, जब वालिदा साहिबा को छींक आती और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहतीं तो आप पेट ही में जवाबन يَرْحَمُكِ اللّٰهُ कहते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه यकुम रमज़ानुल मुबारक बरोज़ पीर सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में जल्वागर हुए, उस वक़्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह़रकत कर रहे थे और **अल्लाह अल्लाह** की आवाज़ आ रही थी।[1] जिस दिन आप की विलादत हुई, उस दिन आप के दियारे विलादत जीलान शरीफ़ में 1100 बच्चे पैदा हुए, वोह सब के सब लड़के थे और सब वलिय्युल्लाह बने।[2] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पैदा होते ही रोज़ा रख लिया और जब सूरज ग़ुरूब हुवा, उस वक़्त मां का दूध नोश फ़रमाया, सारा रमज़ान आप का येही मामूल रहा।[3] पांच बरस की उ़म्र में जब पहली बार बिस्मिल्लाह की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर सूरए फ़ातिह़ा और الٓمّٓ से ले कर 18 पारे पढ़ कर सुना दिये। उन बुज़ुर्ग ने कहा : बेटा और पढ़िये। फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है, क्यूंकि मेरी वालिदा को भी इतना ही याद था, जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था।[4]

तू है वोह ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वो ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा[5]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...الحقائق فی الحدائق، ۱/۱۳۹

2 ...تفریح الخاطر، ص۵۸

3 ...بهجة الاسرار، ص۱۷۲

4 ...الحقائق فی الحدائق، ۱/۱۴۰ بتغیر قلیل

5 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23

आप का हुल्या मुबारक

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि कुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नह़ीफ़ुल बदन, मियाने क़द, कुशादा सीने, चौड़ी दाढ़ी, दराज़ (यानी लम्बी) गर्दन, गन्दुमी रंगत, मिली हुई भंवों, सियाह आंखों, बुलन्द आवाज़ और बहुत ही इल्मो फ़ज़्ल वाले थे।[1]

क़दे बे साया ज़िल्ले किब्रिया है
तू उस बे साया ज़िल का ज़िल है या ग़ौस [2]

इल्मे दीन का शौक़

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इल्मे दीन ह़ासिल करने का अन्दाज़ बड़ा निराला था, आप के शौक़े इल्मे दीन का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप फ़रमाते हैं : मैं अपने त़ालिबे इल्मी के ज़माने में असातिज़ा से सबक़ ले कर जंगल की त़रफ़ निकल जाया करता था, फिर दिन हो या रात, आंधी हो या मूसला धार बारिश, गर्मी हो या सर्दी बयाबानों और वीरानों में अपना मुत़ालआ़ जारी रखता था, उस वक़्त मैं अपने सर पर एक छोटा सा इमामा बांधता और मामूली तरकारियां खा कर अपनी भूक मिटाता था, कभी कभी येह तरकारियां भी हाथ न आतीं क्यूंकि भूक के मारे दूसरे फ़ुक़रा भी उधर का रुख़ कर लिया करते थे, ऐसे मौक़अ़ पर मुझे शर्म आती थी कि मैं दरवेशों की ह़क़ तलफ़ी करूं, मजबूरन वहां से चला जाता और अपना मुत़ालआ़ जारी रखता, फिर नींद आती तो ख़ाली पेट ही कंकरियों से भरी ज़मीन पर सो जाता।[3] मैं ज़माने की जिन सख़्तियों से दो चार हुवा

---

1 ...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ۱۷۴

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 251

3 ...قلائد الجواهر، ص ۱۰

www.dawateislami.net

उन्हें बरदाश्त करते करते पहाड़ भी फट जाता, येह तो उस ज़ाते बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम है कि मैं आफ़िय्यत के साथ उन कांटेदार जंगलों से गुज़र गया।[1]

मुहम्मद का रसूलों में है जैसे मर्तबा आला
है अफ़्ज़ल औलिया में यूं ही रुत्बा ग़ौसे आज़म का
अ़ता की है बुलन्दी ह़क़ ने अहलुल्लाह के झन्डों को
मगर सब से किया ऊंचा फरेरा ग़ौसे आज़म का [2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हमारे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इल्मे दीन ह़ासिल करने का किस क़दर शौक़ था कि तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त कर के भी इल्मे दीन ह़ासिल फ़रमाते। यक़ीनन इल्मे दीन का ह़ुसूल बहुत बड़ी सआ़दत है। इल्म के ह़ुसूल की कोशिश करने वालों के लिये अह़ादीसे मुबारका में कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो दीन का इल्म सीखने के लिये सुब्ह़ या शाम को चला वोह जन्नती है।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इल्मे दीन की जुस्तजू में दूर दराज़ अ़लाक़ों का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया, आप की पूरी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक

1...قلائد الجواهر، ص١٠

2.....क़बालए बख़्शिश, स. 54

3...حلية الاولياء، مسعر بن كدام، ٧/٢٩٥، حديث: ١٠٥٨١

www.dawateislami.net

और उस के मदनी हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त, वालिदैन की फ़रमां बरदारी, सच्चाई और वफ़ा शिआ़री जैसी बहुत सी क़ाबिले तारीफ़ ख़ूबियों से मुज़य्यन रही, **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल के मुआ़मले में आप की इस्तिक़ामत पहाड़ से ज़ियादा मज़बूत थी, आप के इन्ही दिलकश कमालात से मुतास्सिर हो कर सेंकड़ों कुफ़्फ़ार आप के दस्ते हक़ परस्त पर कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुए और बहुत से बदकार अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगियों से ताइब हुए। चुनान्चे, आप ख़ुद अपने मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि मेरे हाथ पर 500 से ज़ाइद ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया और एक लाख से ज़ियादा डाकू, चोर, फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार, फ़सादी और बद मज़हब लोगों ने तौबा की।(1)

आइये ! राहे इल्म के दौरान महबूबे सुब्हानी, क़िन्दीले नूरानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की निगाहे विलायत से डाकूओं की तक़्दीर बदलने वाला एक अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ़ सुनते हैं। चुनान्चे,

60 डाकू ताइब हो गए

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं इल्मे दीन हासिल करने के लिये क़ाफ़िले के हमराह जीलान से बग़दाद रवाना हुवा, जब हम हमदान से आगे पहुंचे तो 60 डाकू क़ाफ़िले पर टूट पड़े और सारा क़ाफ़िला लूट लिया, लेकिन किसी ने मुझ से ज़ोर ज़बरदस्ती न की, एक डाकू मेरे पास आ कर पूछने लगा : ऐ लड़के ! तुम्हारे पास भी कुछ है ? मैं ने जवाब में कहा : हां। डाकू ने कहा : क्या है ? मैं ने कहा : 40 दीनार (सोने के सिक्के)। उस ने पूछा : कहां हैं ? मैं ने कहा : गुदड़ी के नीचे। डाकू इस हक़ीक़त को मज़ाक़ तसव्वुर करता हुवा

❶...بہجۃ الاسرار، ذکر وعظہ، ص ۱۸۴

www.dawateislami.net

चला गया, इस के बाद दूसरा डाकू आया, उस ने भी इसी त़रह़ के सुवालात किये और मैं ने येही जवाबात उस को भी दिये, वोह भी मज़ाक़ समझते हुए चलता बना, जब सब डाकू अपने सरदार के पास जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सरदार को मेरे बारे में बताया, पस मुझे वहां बुला लिया गया, वोह माल की तक़्सीम करने में मसरूफ़ थे। डाकूओं के सरदार ने मुझ से पूछा : तुम्हारे पास क्या है ? मैं ने कहा : 40 दीनार हैं। सरदार ने हुक्म दिया कि इस की तलाशी लो। तलाशी लेने पर जब सच्चाई का इज़्हार हुवा तो उस ने तअ़ज्जुब से सुवाल किया : **"तुम्हें सच बोलने पर किस चीज़ ने आमादा किया ?"** मैं ने कहा : वालिदए माजिदा की नसीह़त ने। सरदार बोला : वोह नसीह़त क्या है ? मैं ने कहा : मेरी वालिदए माजिदा ने मुझ से येह अ़हद लिया था कि मैं हमेशा सच बोलूंगा और अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूंगा। येह सुन कर डाकूओं का सरदार रोते हुए कहने लगा : तुम ने तो अपनी मां से किये हुए वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं की और एक हम हैं कि सारी उ़म्र अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये हुए वादे के ख़िलाफ़ गुज़ार दी। फिर उसी वक़्त वोह और उस के तमाम साथी मेरे हाथ पर ताइब हुए और क़ाफ़िले वालों का लूटा हुवा माल भी वापस कर दिया।[1]

निगाहे वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि हमारे हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ न तो कभी झूट बोलते और न ही वादा ख़िलाफ़ी करते। इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें कि जो ख़ुद को हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अ़क़ीदत मन्द कहने के बा वुजूद झूट बोलने और वादा ख़िलाफ़ी करने से बाज़

1 ...بہجۃالاسرار،ذکرطریقہ،ص۱۶۸

www.dawateislami.net

नहीं आते, फिर येही जरासीम उन की औलाद में भी मुन्तक़िल हो जाते हैं, बसा अवक़ात मज़हबी ज़ेहन रखने वालों को भी शैतान झूट और अ़हद शिकनी की आफ़त में मुब्तला कर देता है। याद रखिये ! अहादीसे मुबारका में झूट बोलने और वादा ख़िलाफ़ी करने की सख़्त वईदें आई हैं। आइये बतौरे इब्रत दो फ़रामीने मुस्तफ़ा सुनते हैं :

﴾1﴿....सच्चाई को लाज़िम कर लो कि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है। आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है यहां तक कि वोह अल्लाह पाक के नज़्दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो कि झूट गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम का रास्ता दिखाता है। आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है यहां तक कि वोह अल्लाह पाक के नज़्दीक बहुत झूटा लिख दिया जाता है।(1)

﴾2﴿....जो किसी मुसलमान से वादा ख़िलाफ़ी करे उस पर अल्लाह पाक, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है, उस का कोई नफ़्ल क़बूल होगा न ही फ़र्ज़।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़सा मुबारक रौशन हो गया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक ज़य्याल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मैं ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मद्रसे में खड़ा था, आप दस्ते मुबारक में एक अ़सा लिये हुए घर से बाहर तशरीफ़ लाए, मेरे दिल में ख़याल आया कि काश ! ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने इस अ़सा के ज़रीए़ मुझे कोई करामत दिखाएं। मेरे दिल में इस ख़याल का आना ही था कि आप ने मुस्कुराते हुए मेरी त़रफ़ देखा और अपने

1...مسلم، کتاب البر و الصلۃ، باب قبح الکذب و حسن الصدق و فضلہ، ص۱۰۷۸، حدیث:۲۲۳۹

2...بخاری، کتاب الجزیۃ والموادعۃ، باب اثم من عاھد ثم غدر، ۲/۳۷۰، حدیث:۳۱۷۹

अ़सा को ज़मीन में गाड़ दिया, अचानक उस अ़सा से ऐसा नूर निकल कर आस्मान तक जा पहुंचा जिस से फ़ज़ा रौशन हो गई और वोह नूर बहुत देर तक रौशन रहा फिर आप ने अ़सा को ज़मीन से निकाल लिया तो वोह जैसा था वैसा ही हो गया, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बस ऐ ज़य्याल ! तुम येही चाहते थे ना ?(1)

दस्ते मुबारक की करामत

एक मरतबा रात को ह़ज़रते शैख़ अह़मद रिफ़ाई और ह़ज़रते अ़दी बिन मुसाफ़िर رَحْمَۃُ اللّٰہ عَلَیْہِما सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त अन्धेरा बहुत ज़ियादा था, हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन के आगे आगे थे, आप जब किसी पथ्थर, लकड़ी, दीवार या क़ब्र के पास से गुज़रते तो अपने हाथ मुबारक से इशारा फ़रमाते तो वोह चांद की त़रह़ रौशन हो जाता, सारे रास्ते आप इसी त़रह़ करते रहे यहां तक कि येह ह़ज़रात आप के मुबारक हाथ की रौशनी के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे मुबारक तक पहुंच गए।(2)

मुस्त़फ़ा के तने बे साया का साया देखा जिस ने देखा मेरी जां जल्वए ज़ैबा तेरा(3)

अन्धों को बीना और मुर्दों को ज़िन्दा करना

ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन क़ुरशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं और शैख़ अबुल ह़सन अ़ली बिन हैती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मोह़िय्युद्दीन

1...بهجة الاسرار، ذكر فصول من كلامه...الخ، ص ١٥٠

2...قلائد الجواهر، ص ٧٧

3.....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19

अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में उन के मद्रसे में मौजूद थे कि आप की बारगाह में अबू ग़ालिब फ़ज़्लुल्लाह नामी एक मश्हूर ताजिर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ऐ मेरे सरदार ! आप के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है कि "जिस शख़्स को दावत में बुलाया जाए उसे दावत क़बूल करनी चाहिये। मैं इस लिये ह़ाज़िर हुवा हूं कि आप मेरे घर दावत पर तशरीफ़ लाएं। आप ने फ़रमाया : अगर मुझे इजाज़त मिली तो मैं आऊंगा। फिर आप ने कुछ देर मुराक़बा करने के बाद फ़रमाया : हां आऊंगा। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने ख़च्चर पर सुवार हुए, शैख़ अ़ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़च्चर की दाईं रिकाब पकड़ी और मैं ने बाईं रिकाब थामी और उस के घर की त़रफ़ चल दिये, जब हम वहां पहुंचे तो देखा कि बग़दाद के मशाइख़ व उ़लमा और मुअ़ज़्ज़िज़ीन पहले ही वहां मौजूद हैं, फिर दस्तर ख़्वान बिछाया गया और उस पर अन्वाओ़ अक़्साम के खाने चुन दिये गए, दो आदमी एक बड़ा सन्दूक़ भी उठा कर लाए जो बन्द था, उसे दस्तर ख़्वान के एक त़रफ़ रख दिया गया।

मेज़बान अबू ग़ालिब ने कहा : शुरूअ़ कीजिये। मगर उस वक़्त हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुराक़बे में थे, लिहाज़ा आप ने खाना शुरूअ़ न किया और न ही किसी को खाने की इजाज़त मिली लिहाज़ा किसी ने भी खाना शुरूअ़ न किया। आप की हैबत के सबब ह़ाज़िरीने मजलिस की ह़ालत ऐसी थी कि गोया उन के सरों पर परिन्दे बैठे हैं, फिर आप ने मेरी और शैख़ अ़ली बिन हैती की त़रफ़ इशारा किया कि वोह सन्दूक़ उठा कर लाओ और उसे खोलो। जब सन्दूक़ आप के सामने ला कर खोला गया तो उस में अबू ग़ालिब का लड़का था, जो पैदाइशी अन्धा होने के साथ साथ जोड़ों के दर्द, कोढ़ और फ़ालिज के मरज़ में भी मुब्तला था, आप ने उस से कहा : قُمْ بِاِذْنِ الله यानी अल्लाह पाक के हुक्म से खड़ा हो

www.dawateislami.net

जा। येह कहने की देर थी कि लड़का उठ कर दौड़ने लगा, उस की बीनाई लौट आई और वोह ऐसा तनदुरुस्त हो गया गोया किसी बीमारी में मुब्तला ही न था।

शैख़ अबुल हसन क़ुरशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं ने ह़ज़रते शैख़ अबू साद क़ैलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह करामत बयान की तो उन्हों ने फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मादर ज़ाद अन्धों और बर्स के मरीज़ों को अच्छा करते और अल्लाह पाक के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा करते हैं।(1)

ला इलाज मरीज़ों का इलाज

ह़ज़रते शैख़ ख़िज़्र मौसिली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते अक़्दस में तक़रीबन 13 साल रहा, इस दौरान मैं ने आप की बहुत सी करामात को देखा, उन में से एक येह है कि जिस मरीज़ को त़बीब ला इलाज क़रार दे देते थे वोह आप के पास आ कर शिफ़ायाब हो जाता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस के लिये दुआ़ए सिह़्ह़त फ़रमाते और उस के जिस्म पर अपना हाथ मुबारक फेरते तो अल्लाह पाक उसी वक़्त उस मरीज़ को सिह़्ह़त अ़त़ा फ़रमा देता।(2)

बादलों पर भी हुक्मरानी

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक दिन (अपने मद्रसे में) बयान फ़रमा रहे थे कि बारिश बरसना शुरूअ़ हो गई, बाज़ अहले मजलिस इधर उधर होने लगे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और (बादल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर) फ़रमाया : اَنَا اَجْمَعُ وَاَنْتَ تَفَرِّقُ यानी मैं लोगों को जम्अ़ कर रहा हूं और तू मुन्तशिर कर रहा

1 ...بهجة الاسرار، ذكر فصول من كلامه...الخ، ص ۱۲۴

2 ...بهجة الاسرار، ذكر فصول من كلامه...الخ، ص ۱۴۷

www.dawateislami.net

है ! येह फ़रमाना था कि अहले मजलिस पर बारिश बरसना बन्द हो गई, अलबत्ता मद्रसे के बाहर उसी त़रह़ बरसती रही लेकिन शुरकाए मजलिस पर बारिश का एक भी क़त़रा न गिरा।[1]

मुरीदनी की फ़रियाद रसी

एक औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुरीद हुई, उस पर एक फ़ासिक़ शख़्स आ़शिक़ था, एक दिन वोह किसी ह़ाजत के लिये पहाड़ के ग़ार की त़रफ़ गई तो उस फ़ासिक़ शख़्स को किसी त़रह़ मालूम हो गया, वोह भी उस के पीछे हो लिया ह़त्ताकि उसे पकड़ लिया, उस औ़रत ने वहीं से हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मदद व फ़रियाद के लिये बुलन्द आवाज़ से पुकारा, उस वक़्त हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मद्रसे में वुज़ू फ़रमा रहे थे, फ़रियाद सुन कर अपनी खड़ाऊं (यानी लकड़ी की बनी हुई जूतियों) को ग़ार की त़रफ़ फेंका, वोह खड़ावें उस फ़ासिक़ के सर पर पड़ने लगीं ह़त्ताकि वोह मर गया, औ़रत आप की नालैने मुबारक ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई और आप की मजलिस में सारा क़िस्सा बयान कर दिया।[2]

ग़ौसे आज़म ब मने बे सरो सामां मददे   क़िब्लए दीं मददे काबए ईमां मददे

तर्जमा : ऐ ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! मुझ बे सरो सामां की मदद फ़रमाइये। ऐ क़िब्लए दीं...!! मेरी मदद फ़रमाइये। ऐ काबए ईमां...!! मेरी मदद फ़रमाइये।

एक वस्वसा और इस का जवाब

हो सकता है कि येह वाक़िआ़ सुन कर किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा पैदा हो कि आख़िर अब मुसीबत के वक़्त दस्तगीरी के लिये ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कैसे पुकारा जा सकता है, वोह तो वफ़ात पा चुके हैं और ज़ेहन में येह वस्वसा

1...بہجۃالاسرار،ذکرفصول من کلامہ...الخ،ص۱۴۷

2...تفریح الخاطر،ص۳۷

आए कि "मुर्दों को पुकारना तो शिर्क है" तो याद रखिये कि मुर्दों को पुकारना शिर्क नहीं, आइये ! इस ज़िम्न में एक कुरआनी वाक़िआ और इस के तहत शैखुल हदीस हज़रते मुफ़्ती अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान कर्दा मदनी फूल सुनते हैं, اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इस वस्वसे का जड़ से ख़ातिमा हो जाएगा। चुनान्चे,

हज़रत मुफ़्ती साहिब लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक मरतबा ख़ुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के दरबार में येह अ़र्ज़ किया कि या **अल्लाह** ! तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम ! क्या इस पर तुम्हारा ईमान नहीं है, तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि क्यूं नहीं ? मैं इस पर ईमान तो रखता हूं लेकिन मेरी तमन्ना येह है कि इस मन्ज़र को अपनी आंखों से देख लूं ताकि मेरे दिल को क़रार आ जाए, तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया कि तुम चार परिन्दों को पालो और उन को ख़ूब खिला पिला कर अच्छी त़रह़ अपने साथ मानूस कर लो, फिर तुम उन्हें ज़ब्ह़ कर के उन का क़ीमा बना कर अपने गिर्दो नवाह़ के चन्द पहाड़ों पर थोड़ा थोड़ा गोश्त रख दो। फिर उन परिन्दों को पुकारो तो वोह परिन्दे ज़िन्दा हो कर दौड़ते हुए तुम्हारे पास आ जाएंगे और तुम मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र अपनी आंखों से देख लोगे। इस पूरे वाक़िए को कुरआने करीम में इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान किया गया है :

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰىؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْؕ قَالَ بَلٰى وَ لٰكِنْ لِّیَطْمَىٕنَّ قَلْبِیْؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूं कर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले

www.dawateislami.net

اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۠﴿۲۶۰﴾

(پ۳، البقرة: ۲۶۰)

कर अपने साथ हिला ले फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है।

आयते मुबारका नक़्ल करने के बाद अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस से येह मस्अला साबित हो गया कि मुर्दों को पुकारना शिर्क नहीं है क्यूंकि जब मुर्दा परिन्दों को **अल्लाह** पाक ने पुकारने का हुक्म फ़रमाया और एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर ने उन मुर्दों को पुकारा तो हरगिज़ हरगिज़ येह शिर्क नहीं हो सकता क्यूंकि ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ कभी भी किसी को शिर्क का हुक्म नहीं देगा, न कोई नबी हरगिज़ हरगिज़ कभी शिर्क का काम कर सकता है। तो जब मरे हुए परिन्दों को पुकारना शिर्क नहीं तो वफ़ात पाए हुए ख़ुदा के वलियों और शहीदों का पुकारना क्यूंकर शिर्क हो सकता है, लिहाज़ा जो लोग वलियों और शहीदों के पुकारने को शिर्क कहते हैं और या ग़ौस का नारा लगाने वालों को मुशरिक कहते हैं उन्हें थोड़ी देर सर झुका कर सोचना चाहिये, क्या ख़बर कि इस क़ुरआनी वाक़िए की रौशनी में उन्हें हिदायत का नूर नज़र आ जाए और वोह अहले सुन्नत के त़रीक़े पर सिराते़ मुस्तक़ीम की शाहराह पर चल पड़ें।[1]

उम्मीद है कि शैत़ान का डाला हुवा वस्वसा जड़ से कट गया होगा क्यूंकि मुसलमान का क़ुरआने करीम पर ईमान होता है और वोह क़ुरआने करीम के ख़िलाफ़ कोई दलील तस्लीम करता ही नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 57 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

दिल मेरी मुठ्ठी में हैं

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "जिन्नात का बादशाह" सफ़ह़ा 5 पर तह़रीर करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बज़्ज़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार जुम्अ़तुल मुबारक के रोज़ मैं हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जा रहा था, मेरे दिल में ख़याल आया कि ह़ैरत है ! जब भी मैं मुर्शिद के साथ जुम्आ़ को मस्जिद की त़रफ़ आता हूं तो सलाम व मुसाफ़ह़ा करने वालों की भीड़ भाड़ के सबब गुज़रना मुश्किल हो जाता है, मगर आज कोई नज़र तक उठा कर नहीं देखता ! मेरे दिल में इस ख़याल का आना ही था कि हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कुराए और बस, फिर क्या था ! लोग लपक लपक कर मुसाफ़ह़ा करने के लिये आने लगे यहां तक कि मेरे और मुर्शिदे करीम के दरमियान एक हुजूम ह़ाइल हो गया । मेरे दिल में आया कि इस से तो वोही ह़ालत बेहतर थी । दिल में येह ख़याल आते ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुम ही तो हुजूम के त़लबगार थे, तुम जानते नहीं कि लोगों के दिल मेरी मुठ्ठी में हैं, अगर चाहूं तो अपनी त़रफ़ माइल कर लूं और चाहूं तो दूर कर दूं ।[1]

कुंजियां दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि येह सीना हो मह़ब्बत का ख़ज़ीना तेरा[2]

शेर की वज़ाह़त : ऐ मेरे ग़ौसे आज़म ! रब्बुल आलमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने दिलों की चाबियां आप को इनायत फ़रमा दी हैं, तो अब मेहरबानी फ़रमाइये नां ! कि मेरे सीने को अपनी मह़ब्बत का गन्जीना बना दीजिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...بهجة الاسرار، ذکر فصول من کلامه...الخ، ص ۱۴۹

2 .....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 31

अल मदद या ग़ौसे आज़म

हज़रते सय्यिदुना बिशर क़रज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का बयान है कि मैं शकर से लदे हुए 14 ऊंटों समेत एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ था। हम ने रात एक ख़ौफ़नाक जंगल में पड़ाव किया, शब के इब्तिदाई हिस्से में मेरे चार लदे हुए ऊंट ला पता हो गए जो काफ़ी तलाश के बा वुजूद न मिले। क़ाफ़िला भी कूच कर गया, शुतुरबान (यानी ऊंट हांकने वाला) मेरे साथ रुक गया। सुब्ह़ के वक़्त मुझे अचानक याद आया कि मेरे पीरो मुर्शिद हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मुझ से फ़रमाया था : जब भी तू किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाए तो मुझे पुकारना वोह मुसीबत जाती रहेगी। पस मैं ने यूं फ़रियाद की : या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर ! मेरे ऊंट गुम हो गए हैं। या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर ! मेरे ऊंट गुम हो गए हैं। यकायक जानिबे मशरिक़ टीले पर मुझे सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक बुज़ुर्ग नज़र आए जो इशारे से मुझे अपनी जानिब बुला रहे थे। मैं अपने शुतुरबान को ले कर जूं ही वहां पहुंचा तो वोह बुज़ुर्ग निगाहों से ओझल हो गए मगर मेरे चारों गुमशुदा ऊंट वहां मौजूद थे, हम ने उन्हें लिया और अपने क़ाफ़िले से जा मिले।[1]

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं

आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आज़म दस्तगीर[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ...الخ، ص ۱۹۶

2 .....वसाइले बख़्शिश, स. 522

बिइज़्ने इलाही बन्दे भी मदद करते हैं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है येह सुन कर किसी को येह वस्वसा आए कि अल्लाह पाक के सिवा किसी से मदद मांगनी ही नहीं चाहिये क्यूंकि जब अल्लाह पाक मदद करने पर क़ादिर है तो फिर ग़ौसे पाक या किसी और बुज़ुर्ग से मदद क्यूं मांगें ? जवाबन अ़र्ज़ है कि येह शैत़ान का ख़त़रनाक तरीन वार है और इस त़रह़ वोह न जाने कितने लोगों को गुमराह कर देता है। ह़ालांकि अल्लाह पाक ने किसी नबी, वली या नेक मोमिन से मदद मांगने से मन्अ़ ही नहीं फ़रमाया बल्कि क़ुरआने करीम में जगह जगह अल्लाह पाक ने दूसरों से मदद मांगने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई है, हर हर त़रह़ से क़ादिरे मुत़्लक़ होने के बा वुजूद ब ज़ाते ख़ुद अपने बन्दों से दीने ह़क़ की मदद के लिये तरग़ीब इरशाद फ़रमाई है।

चुनान्चे **पारह 26, सूरए मुह़म्मद, आयत नम्बर 7** में इरशाद होता है :

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ

(پ۲۶، محمد:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।

सय्यिदुना ईसा عَلَیْهِ السَّلَام का मदद त़लब फ़रमाना

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूह़ुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने ह़वारियों से मदद त़लब फ़रमाई। चुनान्चे, **पारह 28, सूरतुस्सफ़्फ़, आयत नम्बर 14** में इरशादे बारी तआ़ला है :

قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ لِلْحَوَارِیّٖنَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

(پ۲۸، الصف:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईसा बिन मरयम ने ह़वारियों से कहा था कौन है जो अल्लाह की त़रफ़ हो कर मेरी मदद करें ह़वारी बोले हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं।

सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मदद त़लब फ़रमाना

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को जब तब्लीग़ के लिये फ़िरऔ़न के पास जाने का हुक्म हुवा तो उन्हों ने बन्दे की मदद ह़ासिल करने के लिये बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ की :

وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اَهْلِیْ ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ اَخِی ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿۳۱﴾ (پ۱۶،طٰهٰ:۲۹تا۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे लिये मेरे घरवालों में से एक वज़ीर कर दे वोह कौन मेरा भाई हारून उस से मेरी कमर मज़्बूत़ कर।

जिब्राईल, मोमिनीन और फ़िरिश्ते भी मददगार हैं

अल्लाह पाक ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام, नेक मोमिनीन और फ़िरिश्तों को भी मददगार बनाया है। चुनान्चे, **पारह 28, सूरतुत्तह़रीम, आयत नम्बर 4** में इरशाद होता है :

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَۚ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ﴿۴﴾ (پ۲۸،التحریم:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और इस के बाद फ़िरिश्ते मदद पर हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि कुरआने करीम बिल्कुल साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में येह एलान कर रहा है कि **अल्लाह** पाक तो मददगार है ही मगर उस की अ़त़ा व इजाज़त से ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام और **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दे (यानी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰه) और फ़िरिश्ते भी मददगार हैं। अब तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह वस्वसा जड़ से कट जाएगा कि "**अल्लाह** पाक के सिवा कोई मदद कर ही नहीं सकता।"

दिलचस्प बात तो येह है कि जो मुसलमान मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंचे वोह मुहाजिर कहलाए और उन के मददगार अन्सार कहलाए और येह हर समझदार जानता है कि "**अन्सार**" के लुग़वी मा'ना "**मददगार**" हैं।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात !!!

अहलुल्लाह ज़िन्दा हैं

अब शायद शैतान दिल में येह "**वस्वसा**" डाले कि ज़िन्दों से मदद मांगना तो दुरुस्त है मगर बा'दे वफ़ात मदद नहीं मांगनी चाहिये। इस आयते मुबारका और इस के बा'द बयान किये जाने वाले मदनी फूल तवज्जोह से सुनने के बाद इस पर ग़ौर करेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस वस्वसे की जड़ भी कट जाएगी।

चुनान्चे, **पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 154** में इरशाद होता है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं।

जब शुहदा की ज़िन्दगी का येह हाल है तो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो कि शहीदों से मर्तबा व शान में बिल इत्तिफ़ाक़ आ'ला और बरतर हैं, उन के हयात (या'नी ज़िन्दा) होने में क्यूंकर शुबा किया जा सकता है !

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हयाते अम्बिया के बारे में एक रिसाला भी लिखा है और "**दलाइलुन्नुबुव्वह**" में फ़रमाते हैं कि हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام शुहदा की तरह अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास ज़िन्दा हैं।[(1)]

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अम्बिया, औलिया और शुहदा के अजसाम क़ब्रों में भी न तो मुतग़य्यिर होते हैं

❶...دلائل النبوۃ، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ...الخ، ۲/ ۳۸۸

www.dawateislami.net

और न ही बोसीदा क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने उन के जिस्मों को गोश्त के गलने सड़ने की ख़राबी से महफ़ूज़ रखा है।(1)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : औलियाउल्लाह की दोनों ह़ालतों (यानी ज़िन्दगी और मौत) में अस्लन कोई फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।(2)

हज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के औलिया इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गए हैं और अपने परवर दगार के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है, वोह ख़ुशह़ाल हैं और लोगों को इस का शुऊर नहीं।(3)

हज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शाने अ़ज़मत निशान बयान करते हुए तह़रीर करते हैं : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी क़ब्र शरीफ़ में ज़िन्दों की त़रह़ तसर्रुफ़ करते हैं (यानी ज़िन्दों ही की त़रह़ बा इख़्तियार हैं।)(4)

हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी
दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा (5)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किताब "ग़ौसे पाक के ह़ालात" का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सीरत व करामात के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे

❶...روح البیان، پ۱۰، التوبة، تحت الآیة:۴۱، ۳/۴۳۹

❷...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلاۃ باب الجمعة، الفصل الثالث، ۳/۴۵۹، تحت الحدیث:۱۳۶۶

❸...اشعة اللمعات، کتاب الجهاد، باب حکم الاسراء، ۳/۴۲۳

❹...ھمعات، ھمعه۱۱، ص۶۱

❺.....ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 30

www.dawateislami.net

मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 106 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"ग़ौसे पाक के हालात"** का मुतालआ निहायत मुफ़ीद है, इस किताब में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बहुत सी करामात के इलावा बचपन के वाक़िआत, इल्मो तक़्वा, फ़रामीन, मनाक़िब व औसाफ़ और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की आप के साथ अ़क़ीदत के इज़्हार से मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाल वग़ैरा निहायत उ़म्दा अन्दाज़ व तरतीब के साथ बयान किये गए हैं, इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर खुद भी इस का मुतालआ फ़रमाइये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इसे पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

बयान का खुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शानो अ़ज़्मत और करामात के बारे में सुना कि अल्लाह पाक ने आप को विलायत के ऐसे बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ फ़रमाया कि मशाइख़े औलिया में से कोई भी आप का हम पल्ला न था और न ही किसी साहिबे विलायत से इस क़दर ज़ियादा करामतें ज़ाहिर हुई जितनी आप से हुईं, आप के नाम की बरकत से मूज़ी जानवरों से नजात नसीब होती है और मुसीबत में आप को पुकारा जाए तो अल्लाह पाक की अ़ता से आप दस्तगीरी फ़रमाते हैं, मादर ज़ाद अन्धे और कोढ़ के मरीज़ आप के दर से बीनाई और सिह्हत की दौलत पाते, मुर्दे आप की करामत से ज़िन्दा हो जाते, लोग आप की दुआ से माली नुक़्सानात से महफ़ूज़ रहते, चोर डाकू, फ़ासिक़ो फ़ाजिर और त़रह त़रह के गुनाहों में मुलव्विस लोग आप के हाथ पर ताइब होते और आप के बयान में शरीक लोगों को बारिश से परेशानी हुई तो आप

के हुक्म से बादल शुरकाए इजतिमाअ़ पर बरसना बन्द हो गया। आप की शानो अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जब पांच बरस की उ़म्र में बिस्मिल्लाह ख़्वानी की रस्म हुई तो आप ने اَعُوْذُ بِاللّٰہ और बिस्मिल्लाह पढ़ कर 18 पारे ज़बानी सुना दिये कि "येह मेरी वालिदा को याद थे और वोह पढ़ा करती थीं तो मैं ने इन के पेट में ही याद कर लिये।"

दुआ़ है : अल्लाह पाक हमें अपने तमाम मुक़र्रब बन्दों से सच्ची महब्बत व उल्फ़त नसीब फ़रमाए और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। آمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मजलिसे तौक़ीत का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों की ख़िदमत और नेकी की दावत को आ़म करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़्त कमो बेश 103 शोबाजात का क़ियाम अ़मल में आ चुका है। इन्ही शोबाजात में से एक "**मजलिसे तौक़ीत**" भी है।

तौक़ीत से मुराद ऐसा इल्मो फ़न है जिस की मदद से येह मालूम हो जाता है कि अगर आफ़्ताब अपने मख़्सूस मदार के किस मख़्सूस ह़िस्से पर हो तो घड़ी के एतिबार से वोह कौन सा वक़्त होगा, इसी फ़न्ने तौक़ीत के ज़रीए़ हमारे उ़लमाए किराम तुलूए़ फ़ज्र, तुलूए़ शम्स, ज़वाले शम्स, अ़स्र, गुरूब और इ़शा के अवक़ात निकालते हैं।[1] आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने एक मक्तूब में इस इल्म की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़

1.....तह़क़ीक़ाते इमाम इल्मो फ़न, स. 220

फ़रमाया : अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "**अज़्ज़वाजिर**" में इस (इ़ल्म) को फ़र्ज़े किफ़ाया लिखा है।[1] नमाज़ की वक़्त में अदाएगी का मस्अला हो या रोज़े की दुरुस्ती का या फिर अवक़ाते सौमो सलात की मारिफ़त दरकार हो, येह सब इ़ल्मे तौक़ीत के ज़रीए़ मुमकिन है, लिहाज़ा इस इ़ल्म की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़्त बा क़ाइ़दा एक शोबा क़ाइम है, जिस का काम इ़ल्मे तौक़ीत के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ मक़ामात के अवक़ाते सौमो सलात के दुरुस्त नक़्शाजात तय्यार करने के साथ साथ इस इ़ल्म को आ़म करना भी है। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे तौक़ीत ने अब तक न सिर्फ़ इ़ल्मे तौक़ीत के उसूलो क़वानीन के मुत़ाबिक़ बे शुमार शहरों के अवक़ातुस्सलात के नक़्शाजात तय्यार किये हैं बल्कि इस सिलसिले में मज़ीद एक क़दम बढ़ाते हुए दावते इस्लामी की मायानाज़ मजलिसे आई टी के तआ़वुन से एक ऐसा सॉफ़्टवेर बनाम "**अवक़ातुस्सलात**" भी मुतआ़रिफ़ करवाया है जो कम्प्यूटर और मोबाइल वग़ैरा पर नमाज़ों के दुरुस्त वक़्त की निशानदेही में ह़द दर्जा मुफ़ीद है। चुनान्चे,

कम्प्यूटर सॉफ़्टवेर के ज़रीए़ दुन्या भर के तक़रीबन 27 लाख मक़ामात जब कि मोबाइल एप्लीकेशन (Mobile Application) के ज़रीए़ तक़रीबन 10 हज़ार मक़ामात के लिये दुरुस्त अवक़ाते नमाज़ व सम्ते क़िब्ला ब आसानी मालूम किये जा सकते हैं।

निज़ामुल अवक़ात से मुतअ़ल्लिक़ किसी भी क़िस्म का मस्अला या तजवीज़ हो तो मजलिस के अराकीन व ज़िम्मेदारान से मदनी मर्कज़ के फ़ोन नम्बर पर या इस ई-मेल एड्रेस (prayer@dawateislami.net) के ज़रीए़ राबित़ा किया जा सकता है।

---

1 .....ह़याते मलिकुल उ़लमा, स. 8

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी के शोबाजात में दिन ब दिन इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है और इस का मदनी काम मज़ीद तरक़्क़ी की त़रफ़ गामज़न है। हमें भी नेकी की दावत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेना चाहिये। इन 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम **"हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत"** भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस इजतिमाअ़ में शिर्कत की बड़ी बरकतें हैं। इ़ल्मे दीन के इजतिमाअ़ में शिर्कत का सवाब मिलता है और इ़ल्मे दीन सीखने की फ़ज़ीलत के बारे में ह़दीस में है कि "जो शख़्स इ़ल्म की त़लब में किसी रास्ते पर चले **अल्लाह** पाक उसे जन्नत के रास्ते पर ले जाता है और त़ालिबे इ़ल्म की ख़ुशनूदी के लिये फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं।"(2)

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कर के इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की बड़ी बरकतें हैं आइये ! इजतिमाअ़ में शिर्कत की एक मदनी बहार सुनते हैं :

सिनेमा घर के मालिक की तौबा

एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि ग़ालिबन येह 1991 ई. के किसी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ वाली रात की बात है, मेरी मुलाक़ात एक

1.....वसाइले बख़्शिश, स. 315

2...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/ ۳۱۲، حدیث:۲۶۹۱

सिनेमा घर के मालिक से हुई जो शराबी और गुनाहों का आ़दी था। मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए उसे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दावत पेश की, कुछ पसो पेश के बाद वोह मेरे हमराह चल पड़ा। इख़्तितामी दुआ़ के दौरान सिनेमा घर के मालिक की ह़ालत ग़ैर हो गई। ह़त्ताकि दुआ़ ख़त्म होने के बाद भी उस का हिचकियों के साथ रोना बन्द न हुवा। बाद में उस ने बताया कि "मैं ने जब दुआ़ के लिये हाथ उठाए और आंखें बन्द कीं तो ऐसा लगा जैसे दुआ़ की बरकत से मेरे दिल की सख़्ती दूर हो रही है, मुझे अपने किये हुए गुनाह याद आने, उन का अन्जाम डराने और ख़ौफ़े ख़ुदा में रुलाने लगा। इसी दौरान जिस वक़्त मेरी आंखें बन्द थीं, मैं ने ख़ुद को मदीनए मुनव्वरा में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू ब रू पाया, हर त़रफ़ नूर फैला हुवा था और भीनी भीनी ख़ुश्बू से फ़ज़ा महक रही थी। मैं काफ़ी देर तक सब्ज़ गुम्बद के जल्वों से अपने दिल को मुनव्वर करता और रोता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली है।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! वोह मेरे साथ पाबन्दी से इजतिमाअ़ में आने लगे, पन्ज वक़्ता नमाज़ भी शुरूअ़ कर दी। एक दिन जब मैं मुलाक़ात के लिये पहुंचा तो उन्हों ने बताया कि मेरे बाज़ वोह दोस्त जिन्हों ने बदकारी के मुआ़मलात से आज तक मुझे नहीं रोका बल्कि मेरे साथ शराबो रबाब की मह़फ़िलों में हमेशा आगे आगे रहते थे, मेरी इजतिमाअ़ में शिर्कत और नेकियों की त़रफ़ रग़बत का सुन कर मेरे पास आ पहुंचे और मुझे वर्ग़लाने की कोशिश की, मैं ने कहा : दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल मैं ने सिर्फ़ सुन कर नहीं बल्कि देख कर अपनाया है, मैं ने तो दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की और वहां मुझे इस इस त़रह़ मदीनए मुनव्वरा की ज़ियारत हुई, अब तुम बताओ जिन आ़शिक़ाने रसूल के इजतिमाआ़त में गुम्बदे ख़ज़्रा के जल्वे नज़र आते हों येह किस त़रह़ ग़लत़ हो

www.dawateislami.net

सकते हैं ? मेरा तो मश्वरा है कि तुम भी दावते इस्लामी के मदनी माहोल में शामिल हो जाओ। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो कोई मेरे बच्चों के गलों पर छुरी फेर दे तब भी मैं दावते इस्लामी का मदनी माहोल नहीं छोड़ सकता।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"[2]

लिबास के चन्द मदनी फूल सुनते हैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : ....जिन्न की आंखों और लोगों के सत्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो बिस्मिल्लाह कह ले।[3] मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह से आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** पाक का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस (यानी शर्मगाह) को देख न सकेंगे।[4] ....जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ैबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (यानी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे **अल्लाह** पाक उस को करामत का ह़ुल्ला पहनाएगा।[5] ....लिबास ह़लाल कमाई से हो और

1 .....ग़ीबत की तबाहकारियां स. 432

2 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنۃ...الخ، ۴/۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

3 ...معجم اوسط، ۲/۵۹، حدیث: ۲۵۰۴

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1/268

5 .....ابوداود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ۴/۳۲۶، حدیث: ۴۷۷۸

www.dawateislami.net

जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती।[1] ....(लिबास) पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) मसलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाखि़ल कीजिये फिर उल्टा हाथ उल्टी आस्तीन में।[2] ....इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाखि़ल कीजिये और जब (कुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये यानी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये । ....सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो।[3] ....सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे।[4] ....मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिहाज़ रखिये। ...तकब्बुर के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। तकब्बुर है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बाद भी वोही ह़ालत है तो मालूम हुवा कि इन कपड़ों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो तकब्बुर आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि तकब्बुर बहुत बुरी सिफ़त है।[5]

---

❶...کشف الالتباس، ص۴۱

❷...کشف الالتباس، ص۴۳

❸...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/۵۷۹

❹.....मिरआतुल मनाजीह़, 6/94

❺.....बहारे शरीअ़त, 3/409, ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/۵۷۹

www.dawateislami.net

तृरह तृरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मतृबूआ़ दो कुतुब (1)...**312 सफ़्ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 और (2)...**120 सफ़्ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

इ़ल्म ह़ासिल करो, जहल ज़ाइल करो पाओगे राह़तें, क़ाफ़िले में चलो
सुन्नतें सीखने, तीन दिन के लिये हर महीने चलें, क़ाफ़िले में चलो[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने बारे में बुराई सुनें तो क्या करें ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे जब भी किसी शख़्स की तृरफ़ से कोई नापसन्दीदा बात पहुंची तो मैं ने उस की छान बीन करने के बजाए उसी से पूछना ज़ियादा मुनासिब जाना, अगर उस ने कह दिया कि "**मैं ने ऐसा नहीं कहा**" तो उस का येह कहना मुझे उस के ख़िलाफ़ आठ गवाहों से ज़ियादा अच्छा लगा और अगर कहा कि "**मैं ने ऐसा कहा है**" और फिर माज़िरत भी न की तो जितना वोह मुझे अच्छा लगता था उतना ही बुरा लगने लगा। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को फ़रमाते सुना : जब भी मुझे मेरे किसी भाई की तृरफ़ से कोई नापसन्दीदा बात पहुंची तो मैं ने उसे तीन मरातिब पर रखा : अगर वोह मुझ से **बड़ा** है तो मैं ने उस की क़द्रो मन्ज़िलत पहचान ली, अगर **मेरे बराबर** का है तो उस पर मेहरबानी की और अगर **छोटा** है तो परवा ही नहीं की, मेरा येह तृरीक़ा अपने लिये है जो इस से हट कर चलना चाहे तो बेशक **अल्लाह** पाक की ज़मीन बहुत बड़ी है।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، ۴/ ۸۸، رقم: ۴۸۳۵)

---

1 .....वसाइले बख़्शिश, स. 669, 670

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रामीने ग़ौसे आ'ज़म

दा'वते इस्लामी के ग्यारहवीं शरीफ़ के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है ।(1)

इस पे है नाज़ मुझ को हूं तेरा ग़ुलाम या नबी ! तुझ पे लाखों दुरूदो सलाम
मुझ से आ़सी का भी नाज़ बरदार है(2) अपनी रह़मत से तू शाहे ख़ैरुल अनाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं शब को ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मोहिय्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ख़ास निस्बत है । आज की इस मुबारक और बड़ी रात में हम, आप के गुलिस्तान से कुछ महकते मदनी फूल चुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तवील अ़र्से तक अपने मल्फ़ूज़ात, तालीफ़ात और बयानात के ज़रीए लोगों को गुमराही से बचाते और राहे हिदायत पर गामज़न फ़रमाते रहे । आप की मजलिस वाज़ो नसीह़त का ख़ज़ीना और गुमराहों के लिये हिदायत का ज़ीना थी । येह सब हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ास करम नवाज़ी थी, आइये ! इस ज़िम्न में एक दिलचस्प वाक़िआ़ सुनते हैं ।

---

1 ...ابن عساکر، رقم، ۸۱۲۷ابوعمرو ناشب بن عمرو الشیبانی، ۶۱/ ۳۸۱، حدیث: ۱۲۶۶۱

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 481

लुआ़बे रसूल की बरकत

मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कुर्सी पर बैठे फ़रमा रहे थे कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप ने मुझ से फ़रमाया : बेटा ! तुम बयान क्यूं नहीं करते ? मैं ने अ़र्ज़ की : नानाजान ! मैं एक अ़जमी मर्द हूं, बग़दाद में फ़ुसहा [फ़सीह़ (अच्छा) कलाम करने वालों] के सामने बयान कैसे करूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : बेटा ! अपना मुंह खोलो । मैं ने अपना मुंह खोला तो आप ने मेरे मुंह में सात मरतबा अपना मुबारक लुआ़ब डाला और इरशाद फ़रमाया : लोगों के सामने बयान किया करो और उन्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उ़म्दा ह़िक्मत और नसीह़त के साथ बुलाओ ! फिर मैं ने नमाज़े ज़ोहर अदा की और बैठ गया । मेरे पास बहुत से लोग आए तो मुझ पर लर्ज़ा त़ारी हो गया, इस के बाद मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप ने फ़रमाया : बेटा ! तुम बयान क्यूं नहीं करते ? मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ वालिदे गिरामी ! मैं घबरा जाता हूं । फ़रमाया : अपना मुंह खोलो ! मैं ने अपना मुंह खोला तो आप ने मेरे मुंह में छे मरतबा लुआ़ब डाला, मैं ने अ़र्ज़ की, कि आप ने सात मरतबा क्यूं नहीं डाला ? फ़रमाने लगे : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदब की वज्ह से । फिर आप मेरी आंखों से ओझल हो गए ।(1)

इस वाक़िए़ के बाद हुज़ूरे ग़ौसे आज़म, सय्यिदुना शैख़ मोह़िय्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने शव्वालुल मुकर्रम 521 हिजरी को एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिमाअ़ में पहली बार बयान फ़रमाया जिस में हैबत व रौनक़

(1)... بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ...الخ، ص ۵۸

www.dawateislami.net

छाई हुई थी। औलियाए किराम और फ़िरिश्तों ने उसे ढांपा हुवा था, आप ने कुरआनो सुन्नत की रौशनी में बयान फ़रमाया और लोगों को **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की त़रफ़ बुलाया तो वोह सब इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी के लिये जल्दी करने लगे।[1]

लुआ़ब अपना चटाया अह़मदे मुख़्तार ने उन को
तो फिर कैसे न होता बोलबाला ग़ौसे आज़म का[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पहला बयान

प्यारे इस्लामी भाइयो! हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के तरग़ीब दिलाने और लुआ़बे मुबारक से फ़ैज़ पाने के बाद पहला बयान फ़रमाया और पहले ही बयान से लोगों के दिल आप की त़रफ़ माइल हो गए और जौक़ दर जौक़ लोग आप की सोह़बते बा बरकत से फ़ैज़ ह़ासिल करने लगे। आप की मह़ाफ़िल में ज़िन्दगी के तमाम शोबों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले अफ़राद शरीक होते, उ़लमा व फ़ुक़हा सब जम्अ़ होते। आप की मजलिसे वाज़ का येह आ़लम था कि बयक वक़्त चार चार सौ अफ़राद क़लम दवात ले कर ह़ाज़िर होते और आप के मल्फ़ूज़ात तह़रीर करते।[3]

मुह़र्रिर चार सौ मजलिस में ह़ाज़िर हो के लिखते थे
हुवा करता था जो इरशादे वाला ग़ौसे आज़म का[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...بہجۃ الاسرار، ذکر وعظہ، ص ۱۷۴

2 .....क़बालए बख़्शिश, स. 53

3 ...اخبار الاخیار، ص ۱۲

4 .....क़बालए बख़्शिश, स. 54

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मवाइज़े ह़सना (अच्छी नसीह़तें), सब्रो रिज़ा, ज़ोहदो तक़्वा और ख़ौफ़े ख़ुदा की आईनादार होतीं। आप वाज़ो नसीह़त के ज़रीए़ मह़ब्बतो उख़ुव्वत का दर्स देते, लोगों को आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह करते, ह़ुब्बे जाहो माल, निफ़ाक़, रियाकारी और बुग़्ज़ो कीना समेत तमाम बाति़नी बीमारियों से बचने का दर्स देते जब कि दुन्या की बे सबाती, ईमान पर पुख़्तगी, आमाले सालेह़ा की अहम्मिय्यत और अख़्लाक़े कामिल को अपनाने की तरग़ीब भी देते, आप के फ़रामीने मुक़द्दसा दिल से निकलते और दिल में उतर जाते थे।

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कोई मह़फ़िल ऐसी न होती जिस में ग़ैर मुस्लिम आप के दस्ते ह़क़ परस्त पर दौलते ईमान से मुशर्रफ़ न होते और ना फ़रमान, डाकू, गुमराह और बद मज़्हब अफ़राद आप के हाथ पर ताइब न होते। जब 500 से ज़ियादा ग़ैर मुस्लिम और लाखों सियाहकार आप के हाथ पर ताइब हो चुके और अपनी बद आमालियों से बाज़ आ चुके थे तो दीगर लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है (यानी बे शुमार लोग आप से मुस्तफ़ीद हुए।)(1)

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر यानी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के मुआ़मले में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हुक्कामे बाला की परवा न करते और ख़ुलफ़ा, वुज़रा, सलाती़न और अ़वामो ख़वास सभी को नेकी की दावत देते। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बर सरे मिम्बर एलाने ह़क़ फ़रमाते और जो किसी ज़ालिम को लोगों पर ह़ाकिम बनाता आप उस पर एतिराज़ करते।(2)

1...اخبار الاخیار، ص ۱۳

2...تاریخ الاسلام للذھبی، رقم ۲۳، عبد القادر بن ابی صالح عبد اللہ، ۳۹/۹۹

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी उ़म्र मुबारक के 33 बरस दर्सो तदरीस और फ़तवा नवेसी में बसर फ़रमाए जब कि 40 साल मख़्लूक़े ख़ुदा में वाज़ो नसीह़त के मदनी फूल लुटाए और 90 साल की उ़म्र पा कर सिने 561 हिजरी में विसाल फ़रमाया ।(1)

सलात़ीने जहां क्यूंकर न उन के रोब से कांपें
न लाया शेर को ख़त़रे में कुत्ता ग़ौसे आज़म का (2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ाएदे मन्द कारतूस

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चूंकि ख़ुद बा अ़मल थे इसी लिये आप के नेकी की दावत पर मुश्तमिल कलिमात तासीर का तीर बन कर लोगों के सीनों में पैवस्त हो जाते और उन के दिल की दुन्या बदल जाती । याद रखिये ! अगर **कारतूस** बेहतरीन बन्दूक़ से चलाया जाए तो उस से शेर भी मारा जा सकता है, हमारी नेकी की दावत के अल्फ़ाज़ "**कारतूस**" की त़रह़ हैं और हमारा किरदार मिस्ले **बन्दूक़** है, अगर नेकी की दावत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला ख़ुद बा अ़मल होगा तो उस की बात में भी असर होगा, लिहाज़ा अपनी बात में तासीर पैदा करने के लिये हमें अपनी अ़मली ह़ालत दुरुस्त करनी होगी ।

पहले अ़मल फिर नसीह़त

हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अ़मल किये बिग़ैर की जाने वाली नसीह़त के बारे में फ़रमाते हैं : ख़ुद अ़मल किये बिग़ैर दूसरों को नसीह़त करना कुछ अहम्मिय्यत नहीं रखता है ।(3)

---

1 ...اخبار الاخیار، ص ۹

2 .....क़बालए बख़्शिश, स. 53

3 ...فتح الربانی، المجلس العشرون، ص ۷۸

www.dawateislami.net

बे अ़मल नासेह़ की मिसाल

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : खुद अ़मल न कर के दूसरों को नसीह़त करना ऐसा ही है जैसे **बिग़ैर दरवाज़े का घर हो** और उस में ज़रूरिय्याते ख़ानादारी भी न हों और **ऐसा ख़ज़ाना है जिस में से कुछ ख़र्च न किया जाए** और येह **ऐसे दावे की त़रह़ है जिस का कोई गवाह न हो** ।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी त़बीब के पास हर बीमारी की अच्छी से अच्छी दवा मौजूद हो और दूसरे लोग उस से फ़ाएदा भी उठाते हों मगर जब खुद उस त़बीब को वोह मरज़ लाह़िक़ हो तो ला परवाई से काम लेता रहे और बिल आख़िर जान से हाथ धो बैठे तो उसे बे वुक़ूफ़ ही कहा जाएगा । बिल्कुल इसी त़रह़ जो लोग दूसरों को तो गुनाहों से बचने और नेकियां करने की नसीह़त करते हैं मगर खुद अ़मल की कोशिश नहीं करते वोह भी सरासर नुक़्सान में हैं ।

बे अ़मल वाइज़ का अन्जाम

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कुछ जन्नती लोग जहन्नमिय्यों की त़रफ़ जाएंगे तो उन से पूछेंगे कि तुम जहन्नम में किस वज्ह से दाख़िल हुए ह़ालांकि **अल्लाह** पाक की क़सम ! हम तो तुम्हारी ही तालीम से जन्नत में दाख़िल हुए हैं । वोह कहेंगे : हम जो बात कहा करते थे उस पर खुद अ़मल नहीं करते थे ।(2)

1...فتح الربانی، المجلس العشرون، ص٧٨

2...معجم کبیر، ٢٢/١٥٠، حدیث:٤٠٥

www.dawateislami.net

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे अ़मल आ़लिम की मिसाल

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों को इ़ल्म सिखाने और ख़ुद को भूल जाने वाले की मिसाल उस चराग़ की सी है जो लोगों को रौशनी देता है और अपने आप को जलाता है।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बे अ़मल मुबल्लिग़ के लिये आख़िरत में इस से बढ़ कर ख़सारे की बात और क्या होगी कि उस के बयानात सुन कर अ़मल करने वाले तो जन्नत की अबदी नेमतें पाने में कामयाब हो जाएं और येह ख़ुद अ़मल न करने के सबब जहन्नम के अ़ज़ाब का मुस्तहि़क़ ठहरे। लिहाज़ा हर मुबल्लिग़ व मज़्हबी शख़्सिय्यत को चाहिये कि लोगों की नज़र में नेक बनने के बजाए रिज़ाए इलाही की ख़ाति़र अपने इ़ल्म पर अ़मल की कोशिश करता रहे और दूसरों को भी नेकी की दावत देता रहे।

सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत　　हर किसी को दूं नेकी की दावत
नेक मैं भी बनूं इल्तिजा है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 102, 105

2...معجم کبیر، ۲/۱۶۵، حدیث:۱۶۸۱

3.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 139

www.dawateislami.net

इन्सान के ह़क़ीक़ी दुश्मन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नफ़्सो शैत़ान इन्सान के ह़क़ीक़ी दुश्मन हैं। इन में से नफ़्स शैत़ान से भी ज़ियादा ख़त़रनाक है क्यूंकि इसी ने शैत़ान के ईमान को बरबाद कर के उसे हमेशा की लानत का मुस्तह़िक़ ठहराया। हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : नफ़्स के कई मआ़नी हैं जिन में से एक येह है कि नफ़्स उसे कहते हैं जो इन्सान में शहवत और गु़स्से को उभारता है। सूफ़ियाए किराम इस लफ़्ज़ को अक्सर इस्तिमाल करते हैं क्यूंकि उन के नज़दीक नफ़्स से मुराद इन्सान में मज़्मूम (बुरी) सिफ़ात जम्अ़ करने वाली कु़व्वत है।[1]

नफ़्स की फ़ित़रत

इस में कोई शक नहीं कि जिस ने अपने नफ़्स की पैरवी की नफ़्स ने उसे तबाहियो बरबादी के गढ़े में पहुंचा दिया। नफ़्स की हलाकतों से बचने का त़रीक़ा बयान करते हुए सरकारे बग़दाद, हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : नफ़्स बुराई का ही मश्वरा देता है, येह इस की फ़ित़रत है। एक मुद्दत के बाद येह इस्लाह़ पज़ीर होगा, तुम पर लाज़िम है कि हर वक़्त नफ़्स से मुजाहदा करते रहो (यानी इस की मुख़ालफ़त पर कमर बस्ता रहो)।[2]

ह़क़ीक़ी दोस्त और दुश्मन

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : अपने नफ़्स से हमेशा कहते रहो कि तेरी नेक कमाई तुझे फ़ाएदा देगी और तेरी बुरी कमाई तेरे लिये वबाल साबित होगी, कोई दूसरा तेरे साथ न तो अ़मल करेगा और न ही अपने आमाल में से कुछ

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب شرح عجائب القلب، بیان معنی النفس والروح...الخ، ۵/۳

2 ...فتح الربانی، المجلس الثالث والاربعون، ص۱۳۹

देगा। (ऐ बन्दे ! याद रख) नेक आमाल करते रहना और नफ़्स से मुजाहदा करना बे ह़द ज़रूरी है, तेरा दोस्त वोही है जो तुझे बुराई से रोके और तेरा दुश्मन वोही है जो तुझे गुमराह करे।[(1)]

क़ुर्बे इलाही कैसे ह़ासिल हो ?

मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक नफ़्स नजासतों और बुरी ख़्वाहिशात से पाक न होगा उसे अल्लाह पाक की बारगाह का क़ुर्ब कैसे ह़ासिल हो सकता है ? अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात और उम्मीदों को ख़त्म कर तभी तेरा नफ़्स तेरी बात मानेगा।[(2)]

अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई नफ़्स की बात मानना और इस के मुक़ाबले से ग़ाफ़िल हो जाना सरासर बे वुक़ूफ़ी है। इस लिये हम पर लाज़िम है कि नफ़्स का मुक़ाबला करें और इस पर क़ाबू पाने की कोशिश करें, इस की ख़्वाहिशात कम करें यानी इस की लज़्ज़तें छुड़वाएं, इसे ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादतों की त़रफ़ माइल करें नीज़ इस की आफ़तों और शरारतों से बचने के लिये अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ भी करते रहें। यक़ीनन अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा भी येही है कि दुश्मन को दुश्मन समझ कर उस का मुक़ाबला किया जाए न कि उस से ला परवाई बरती जाए।

अ़क़्लमन्द और बे वुक़ूफ़ की पहचान

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बे मिसाल है : अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स को अपना ताबेदार बना

1...فتح الربانی، المجلس الثالث والاربعون، ص ۱۴۰

2...فتح الربانی، المجلس الثالث والاربعون، ص ۱۳۹

www.dawateislami.net

ले और मौत के बाद के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ो बे वुक़ूफ़ वोह है जो अपनी ख़्वाहिशात पर चलता हो और रह़मते इलाही का उम्मीदवार भी हो।(1)

फ़रियाद है नफ़्स की बदी से / अल्लाह अल्लाह के नबी से
तेरी नापाक ज़िन्दगी से / ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स!
गुज़रा मैं तेरी दोस्ती से (2) / गहरे प्यारे पुराने दिलसोज़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नफ़्स पर क़ाबू न पा सकने की एक वज्ह इस की पहचान न होना भी है कि नफ़्स अपने जाल में किस त़रह़ फंसाता है, अपनी चालें किस त़रह़ आज़्माता है इस की मारिफ़त न होने की वज्ह से भी बन्दा नफ़्स का शिकार हो जाता है। नफ़्स की चालों और इस के मक्रो फ़रेब को पहचानने के लिये **अल्लाह** पाक के मह़बूब और नेक बन्दों की सोह़बत इख़्तियार की जाए।

औलिया की सोह़बत के फ़वाइद

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इसी बात की त़रफ़ निशानदेही करते हुए फ़रमाते हैं : مَنْ اَکْثَرَ مِنْ مُّخَالَطَۃِ الْعَارِفِیْنَ بِاللّٰہِ عَرَفَ نَفْسَہٗ यानी जो शख़्स **अल्लाह** पाक की मारिफ़त रखने वालों की सोह़बत में रहता है वोह अपने नफ़्स को पहचान लेता है।(3) मज़ीद फ़रमाते हैं : बेशक औलियाउल्लाह की सिफ़ात में से येह भी है कि जब वोह किसी शख़्स की त़रफ़ नज़र करें और उस के दिल पर तवज्जोह कर दें तो उस के ईमान, यक़ीन और साबित क़दमी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है।(4)

---

1 ...ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب فی اوانی صفة الحوض، ۴/۲۰۷، حدیث:۲۴۶۷

2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 145

3 ...فتح الربانی، المجلس الرابع والخمسون، ص۱۸۰

4 ...فتح الربانی، المجلس الثانی والستون، ص۲۱۹

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की सोह़बत में रहने की बरकत से दिल की दुन्या बदल जाती है। फ़ी ज़माना अच्छी सोह़बत पाने का एक ज़रीआ़ दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी भी है। हमें भी इस मदनी माह़ोल में रहते हुए गुनाहों से बचने और नेकियों का जज़्बा पाने के लिये हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़, इजतिमाई तौ़र पर देखे जाने वाले हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे और दीगर मदनी कामों में शिर्कत के साथ साथ हर महीने तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते रहना चाहिये नीज़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की आ़दत बनानी चाहिये क्यूंकि नेक लोगों की घड़ी भर की सोह़बत बड़े बड़े गुनाहगारों की बिगड़ी बना देती है। चुनान्चे,

डाकू क़ुत़ुब कैसे बना ?

मन्क़ूल है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मदीनए मुनव्वरा में ह़ाज़िरी दे कर नंगे पाउं बग़दाद शरीफ़ की त़रफ़ आ रहे थे कि रास्ते में एक डाकू मुसाफ़िरों को लूटने के इन्तिज़ार में खड़ा था, आप जब उस के क़रीब पहुंचे तो पूछा : तुम कौन हो ? उस ने जवाब दिया : दीहाती हूं। मगर आप ने कश्फ़ के ज़रीए़ उस की मासिय्यत (गुनाह) और बद किरदारी को लिखा देख लिया, उस के दिल मे ख़याल आया : "शायद येह ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं।" आप को उस के दिल में पैदा होने वाले इस ख़याल का भी इ़ल्म हो गया, तो आप ने फ़रमाया : मैं अ़ब्दुल क़ादिर हूं। येह सुनते ही वोह फ़ौरन आप के मुबारक क़दमों पर गिर पड़ा और उस की ज़बान पर "يَاسَيِّدِیْ عَبْدَالْقَادِرِ شَيْئًا لِلّٰهِ (यानी ऐ मेरे आक़ा अ़ब्दुल क़ादिर ! ख़ुदा के लिये मुझे कुछ अ़त़ा हो)" जारी हो गया।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उस की हालत पर रहम आ गया और उस की इस्लाह के लिये बारगाहे इलाही में मुतवज्जेह हुए तो ग़ैब से निदा आई : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! इसे सीधा रास्ता दिखा दो और हिदायत की त़रफ़ रहनुमाई फ़रमाते हुए क़ुतुब बना दो।" चुनान्चे, आप की निगाहे फ़ैज़ रसां से वोह क़ुतबिय्यत के दरजे पर फ़ाइज़ हो गया।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इक निगाहे फ़ैज़ से उस लुटेरे के नफ़्स की मुंह ज़ोरी और दिल की आलूदगी सब धुल गई और आप ने उसे वक़्त का क़ुतुब बना दिया। मालूम हुवा कि जब **अल्लाह** पाक के वली की निगाह से चोर और डाकू क़ुतुब बन सकते हैं तो हमारे गुनाहों के मैल और दिलों के ज़ंग को धोना उन के लिये क्या बड़ी बात है ? लिहाज़ा हमें भी नेक लोगों की सोहबत में रहना चाहिये।

दिल के लिये सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुक़द्दस हस्तियों की क़ुर्बत और उन से मह़ब्बत के फ़वाइद बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि नेकों से मह़ब्बत करना, उन की सोह़बत में रहना और उन के अफ़्आ़लो अक़्वाल देख कर अ़मल करना इन्सान के दिल के लिये सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है।(2)

गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं — पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा — गुनाहों से हर दम बचा या इलाही(3)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1).....सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 130, अज़ ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 38

(2).....تنبیہ المغترین، الباب الاوّل، غیرھم اذا انتھکت حرماتہ، ص۴۱ بتغیر قلیل

(3).....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105

www.dawateislami.net

आख़िरत के बारे में गौरो फ़िक्र करो !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेक लोगों की सोह़बत में रहिये, गुनाहों से बचिये, ख़ूब ख़ूब नेकियां कीजिये, दुन्या की फ़ानी रौनक़ों से मुंह मोड़िये और फ़िक्रे आख़िरत करते हुए इस की तय्यारी में मगन रहिये। याद रखिये ! दुन्या की ह़ैसिय्यत एक गुज़र गाह (रास्ते) की सी है जिसे तै करने के बाद ही हम मन्ज़िल तक पहुंच सकते हैं। अब वोह मन्ज़िल जन्नत होगी या जहन्नम ! इस का इन्ह़िसार इस बात पर है कि हम ने येह सफ़र किस त़रह़ तै किया ? अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में तै किया या ना फ़रमानी में ? अफ़्सोस है उस पर जो दुन्या की रंगीनियां देख कर उस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो जाए।

मौत के लिये हर वक़्त तय्यार रहो

हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार करते हुए फ़रमाते हैं : "ऐ अल्लाह पाक के बन्दे ! अपनी उम्मीदों के चराग़ गुल कर, अपनी ह़िर्स की चादर को लपेट, और रुख़्सत होने वाले की सी नमाज़ पढ़ा कर (यानी हर नमाज़ को आख़िरी नमाज़ समझ कर अदा कर) याद रख ! मोमिन को येह ज़ैब नहीं देता कि वोह इस ह़ाल में सोए कि उस की तह़रीर शुदा वसिय्यत उस के सिरहाने न रखी हो।"(1)

यानी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमें येह एह़सास दिला रहे हैं कि मौत किसी भी वक़्त आ सकती है, इस लिये बन्दा **हर दिन** को अपना **आख़िरी दिन** और **हर नमाज़** को **आख़िरी नमाज़** और **हर नींद** को अपनी **आख़िरी नींद** समझे।

1...فتح الربانی، المجلس الثانی والستون، ص ٢٢٠

www.dawateislami.net

दुन्या में किस त़रह़ रहा जाए ?

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : "ऐ बन्दे तेरा खाना पीना, अहलो अ़याल में रहना सहना और अपने दोस्त अह़बाब से मिलना मिलाना रुख़्सत होने वाले शख़्स की त़रह़ होना चाहिये क्यूंकि जिस शख़्स की ज़िन्दगी की डोर और तमाम इख़्तियारात दूसरे के क़ब्ज़े में हों उस को इसी त़रह़ दुन्या में रहना चाहिये ।"(1)

मेह़नतो मशक़्क़त के बिग़ैर कुछ मुमकिन नहीं

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल लोगों को तम्बीह करते हुए फ़रमाते हैं : बन्दे ! ज़रा ग़ौर कर ! जब इस फ़ना होने वाली दुन्या (की नेमतों) का ह़ुसूल बिग़ैर मेह़नतो मशक़्क़त के मुमकिन नहीं है तो वोह चीज़ जो **अल्लाह** पाक के पास है उस का बिग़ैर रियाज़तो मेह़नत के मिलना किस त़रह़ मुमकिन है ?(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे बग़दाद, ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमें दुन्या की फ़ानी रौनक़ों से पीछा छुड़ाने और क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी का ज़ेहन बनाने की तरग़ीब दिला रहे हैं । वाक़ेई अ़क़्लमन्द वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का मदनी चराग़ क़ब्र में साथ लेता जाए और यूं क़ब्र की रौशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिह़ाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ! अमीर हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर अगर किसी के

1... فتح الربانی، المجلس الثانی والستون، ص ۲۲۰

2... فتح الربانی، المجلس الثانی والستون، ص ۲۲۲

www.dawateislami.net

साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, नमाज़ें क़स्दन (जानबूझ कर) क़ज़ा कीं, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शरई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शरई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, ड्रामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुन्डवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे, अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरतो नदामत के कुछ हाथ न आएगा।

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है
तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल
करे दावा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है
ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पर न हो ग़ुर्रा
ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़क़ीक़त से किसी मुसलमान को इन्कार नहीं हो सकता कि इस मुख़्तसर ज़िन्दगी के बाद हर एक को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तमाम आमाल का ह़िसाब देना है। जिस के बाद रह़मते इलाही हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह होने की सूरत में जन्नत की आला नेमतें

हमारा मुक़द्दर बनेंगी या फिर مَعَاذَاللّٰه गुनाहों की शामत के सबब जहन्नम की हौलनाक सज़ाएं हमारा नसीब होंगी। लिहाज़ा दुन्यावी ज़िन्दगी की रौनक़ों, मसर्रतों और रानाइयों में खो कर हिसाबे आख़िरत के बारे में ग़फ़्लत का शिकार हो जाना यक़ीनन नादानी है। याद रखिये ! नजात इसी में है कि हम रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ और उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करते हुए अपने लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें और गुनाहों के इरतिकाब से परहेज़ करें। इस मक़्सदे अ़ज़ीम में कामयाबी के लिये दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा का होना बेह़द ज़रूरी है क्यूंकि जब तक येह नेमत ह़ासिल न हो गुनाहों से फ़रार और नेकियों से प्यार तक़रीबन ना मुमकिन है।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! तू **अल्लाह** पाक से बे ख़ौफ़ न हो बल्कि ख़ौफ़ को लाज़िम पकड़, अगर **अल्लाह** पाक जन्नत और जहन्नम को पैदा न फ़रमाता तब भी उस की ज़ात इस बात की मुस्तह़िक़ थी कि उस से डरा जाए और उसी से उम्मीद रखी जाए।[1]

याद रहे ! ख़ौफ़े ख़ुदा से मुराद सिर्फ़ येह नहीं कि क़ब्रो ह़श्र और ह़िसाब व मीज़ान वग़ैरा के ह़ालात सुन या पढ़ कर मह़ज़ चन्द आहें भर ली जाएं....या....अपने सर को चन्द मरतबा इधर उधर फेर लिया जाए....या....कफ़े अफ़्सोस मल कर आंखों से चन्द आंसू बहा लिये जाएं बल्कि इस के साथ साथ ख़ौफ़े ख़ुदा के अ़मली तक़ाज़ों को पूरा करते हुए गुनाहों को तर्क कर देना और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल होना उख़रवी नजात के लिये बेह़द ज़रूरी है।

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस की ज़ात के त़ालिब बन कर उस की इत़ाअ़त करो। उस के अह़कामात को बजा लाने, उस की ममनूआ़त

1...فتح الربانی، المجلس التاسع عشر فی مخافۃ اللہ، ص۷۵

www.dawateislami.net

से बाज़ रहने और उस की क़ज़ा व क़दर पर सब्र करने में उस की इताअ़त है। तुम उस की बारगाह में तौबा करो और उस के सामने ख़ूब ख़ूब आ़जिज़ी और गिर्याओ ज़ारी करो और जब तुम सिदक़े दिल से तौबा करोगे और आमाले सालेहा पर हमेशगी इख़्तियार करोगे तो अल्लाह पाक तुम्हें नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाएगा।[1]

ख़ौफ़े ख़ुदा और अपना मुहासबा

हमें भी अपना मुहासबा करना चाहिये कि अब तक हम ज़िन्दगी की कितनी सांसें ले चुके हैं ? बचपन, जवानी और बुढ़ापा अपनी उ़म्र के कितने अदवार हम गुज़ार चुके हैं ? इस दौरान कितनी मरतबा हम ने ख़ौफ़े ख़ुदा को अपने दिल में महसूस किया ? क्या कभी हमारे बदन पर भी अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से लर्ज़ा तारी हुवा ? क्या कभी हमारी आंखों से ख़शिय्यते इलाही की वज्ह से आंसू निकले ? अगर जवाब हां में हो तो सोचिये कि अगर हम ने इन कैफ़िय्यात को महसूस भी किया तो क्या ख़ौफ़े ख़ुदा के अ़मली तक़ाज़ों को पूरा करते हुए बक़िय्या ज़िन्दगी अल्लाह पाक की इताअ़त में गुज़ारने की सआ़दत हासिल है ? या महज़ इन कैफ़िय्यात के दिल पर तारी होने पर मुत़्मइन हो गए कि हम अल्लाह पाक से डरने वालों में से हैं और मुख़्तलिफ़ गुनाहों से अपना नामए आमाल सियाह (काला) करने का अ़मल ब दस्तूर जारी है और अगर इन सुवालात का जवाब नफ़ी में आए तो ग़ौर कीजिये, कहीं ऐसा तो नहीं कि गुनाहों की कसरत के नतीजे में हमारा दिल सख़्त से सख़्त तर हो चुका हो, जिस की वज्ह से हम इन कैफ़िय्यात से अब तक नाआश्ना हों। अगर वाक़ेई ऐसा है तो मक़ामे तश्वीश है कि हमारी क़सावते क़ल्बी (दिल की सख़्ती) और इस के नतीजे में पैदा होने वाली ग़फ़्लत कहीं हमें जहन्नम की गहराइय्यों में न गिरा दे।

सिलसिला आह ! गुनाहों का बढ़ा जाता है
नित नया जुर्म हर इक आन हुवा जाता है

1...فتح الربانی، المجلس التاسع عشر فی مخافۃ اللہ، ص ۷۵

www.dawateislami.net

अपनी उल्फ़त का मुझे जाम पिला दो साक़ी !
क़ल्ब दुन्या की महब्बत में फंसा जाता है
आह ! जाती नहीं है आ़दते यावहगोई
वक़्त अनमोल यूं बरबाद हुवा जाता है(1)

ग़नीमत समझो

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इन्सान से गुनाह हो ही जाते हैं, लेकिन उस पर हमेशगी इख़्तियार कर लेना और तौबा को बिल्कुल भूल जाना बड़ी बद नसीबी है। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ मुसलमानो ! जब तक ज़िन्दगी का दरवाज़ा खुला है उसे ग़नीमत समझो क्यूंकि वोह अ़न क़रीब तुम पर बन्द कर दिया जाएगा। जब तक नेक अ़मल करने की क़ुदरत रखते हो उसे ग़नीमत समझो और तौबा के दरवाज़े को ग़नीमत समझो कि जब तक वोह खुला हुवा है उस में दाख़िल हो जाओ।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़ ब रोज़ उठते जनाज़े और आए दिन रूनुमा होने वाले इ़ब्रतनाक वाक़िआत हमें ख़बर दार करते और झंझोड़ते हुए मौत से पहले ह़यात को ग़नीमत जानने की सदा दे रहे हैं मगर इस पर वोही कान धरता है जिसे आख़िरत की बेहतरी की फ़िक्र दामन गीर होती है। आए दिन मौत से हम कनार होने वालों में जवान, बूढ़े और बच्चे सभी होते हैं, मौत किसी की उ़म्र व मर्तबा नहीं देखती, किसी नादारो मालदार की परवा नहीं करती, किसी की मशग़ूलिय्यत या फ़ुर्सत को ख़ातिर में नहीं लाती। बस सांसें पूरी हो जाएं तो मौत घड़ी भर में क़ब्र के ह़वाले कर देती है। लिहाज़ा ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए आज ही गुनाहों पर नादिम हो कर सच्ची तौबा कीजिये, अगर फिर गुनाह कर बैठें तो फिर तौबा कर लीजिये।

---

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 432

2 ...فتح الربانی، المجلس الرابع فی التوبة، ص۲۹

www.dawateislami.net

पारह 6, सूरतुल माइदह, आयत नम्बर 39 में इरशाद होता है :

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَتُوْبُ عَلَیْهِؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۹﴾ (پ۶، المآئدۃ:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने जुल्म के बाद तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेहर से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

पारह 18, सूरतुन्नूर, आयत नम्बर 31 में इरशाद होता है :

وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ (پ۱۸، النور:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

तौबा का सब से ज़ियादा मोह़ताज कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने तमाम मुसलमानों को तौबाओ इस्तिग़फ़ार का हुक्म फ़रमाया क्यूंकि फ़ित़रती त़ौर पर इन्सान कमज़ोर है, बा वुजूद कोशिश के वोह किसी न किसी ग़लत़ी में पड़ ही जाता है। इमाम कुशैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तौबा का सब से ज़ियादा मोह़ताज वोह है जो अपने लिये तौबा की ज़रूरत मह़सूस न करे।" इस आयते मुबारका में रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ते सत्तारी का बहुत ज़ियादा ज़ुहूर है कि उस ने तमाम अहले ईमान को तौबा का हुक्म इरशाद फ़रमाया ताकि मुजरिम रुस्वा न हों क्यूंकि अगर सिर्फ़ मुजरिमों को ख़ित़ाब होता तो उन की रुस्वाई होती, इस फ़रमान से उम्मीद बन्ध जाती है कि जैसे दुन्या में रुस्वा नहीं किया ऐसे ही आख़िरत में भी रुस्वा नहीं करेगा।(1)

रह़मतों की बारिश

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **अल्लाह** पाक की रह़मत बेह़द व बे

❶...تفسیر روح البیان، پ۱۸، النور، تحت الآیة:۳۱، ۶/۱۴۵

www.dawateislami.net

हि़साब है कि उस के गुनाहगार बन्दे चाहे उस की कितनी ही ना फ़रमानियां करते रहें, दिन रात उस के हुक़ूक़ की पामाली से भी दरेग़ न करें मगर फिर भी वोह करीम रब عَزَّوَجَلَّ हमें मुसल्सल मोहलत देता रहे और अगर हम सच्ची तौबा कर लें तो हमारी सारी ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा दे, येही नहीं बल्कि अपने बन्दों पर रह़मतों की मज़ीद बारिश बरसाते हुए उन की ख़ताओं को नेकियों में तब्दील फ़रमा देता है। चुनान्चे,

पारह 19, सूरतुल फुरक़ान, आयत नम्बर 70 में इरशाद होता है :

اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝

(پ۱۹، الفرقان:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

सब से बड़ा नादान

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि हमारा रह़ीमो करीम रब عَزَّوَجَلَّ हमें किस त़रह़ तौबा की तरग़ीब दिला रहा है और इस पर कैसी कैसी अ़ज़ीम बिशारतें भी सुना रहा है। **अल्लाह** पाक की ऐसी करम नवाज़ियों के बाद भी अगर कोई गुनाहों पर डटा रहे और तौबा में ताख़ीर करता रहे तो उस से बड़ा नादान कौन हो सकता है ? तौबा की अहम्मिय्यत दिल में बिठाने और गुनाहों से ख़ुद को बचाने के लिये तौबा की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

तौबाओ इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

﴾1﴿....इरशाद फ़रमाया : "सारे इन्सान ख़त़ाकार हैं और ख़त़ाकारों में बेहतर वोह हैं जो तौबा कर लेते हैं।"(1)

1...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبہ، ۴/۴۹۱، حدیث:۴۲۵۱

www.dawateislami.net

﴾2﴿....इरशाद फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि उस का नामए आमाल उसे खुश करे तो वोह उस में इस्तिग़फ़ार का इज़ाफ़ा करे।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे मज़ाराते औलिया

प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के फ़रामीन सुन कर तौबा की तौफ़ीक़ मिलती, इन की सीरते मुबारका पढ़ कर नफ़्से अम्मारा पर क़ाबू पाने की हिम्मत पैदा होती और इ़बादत व इत़ाअ़त वाली ज़िन्दगी बसर करने का ज़ेहन बनता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी के तह़त लोगों के दिलों में औलियाउल्लाह की मह़ब्बत व अ़क़ीदत बढ़ाने के लिये एक शोबा "**मजलिसे मज़ाराते औलिया**" क़ाइम है। इस शोबे के तह़त दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देना मसलन ह़त्तल मक्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो नात का इन्अ़क़ाद करना, मज़ारात से मुत्तसिल मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाना और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते़ में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाना जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़ दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है। अय्यामे उ़र्स में साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करने की कोशिश की जाती है नीज़ मुमकिना सूरत में साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के

(1)...معجم اوسط،۱/۲۴۵، حدیث:۸۳۹

www.dawateislami.net

सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहिबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दावते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी कामों से आगाह किया जाता है।

***अल्लाह* करम ऐसा करे तुझ पे जहां में**
ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हमेशा अपने फ़रामीन के ज़रीए़ अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की इस्लाह़ व तरबियत फ़रमाई। आप ने नेक लोगों को नेकियों पर गामज़न रहने जब कि गुनाहगारों और दुन्यादारों को दुन्या की मह़ब्बत छोड़ कर इश्क़े ह़क़ीक़ी के जाम पीने का दर्स दिया। आप की नज़रे विलायत और फ़रामीने आ़लिया से कई अफ़राद राहे रास्त पर आ गए। आप ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात को दबाने और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की सोह़बत से वाबस्ता रहने को नफ़्स का इलाज तजवीज़ फ़रमाया। यूंही आप ने हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में सरशार रहने और इ़ल्म पर अ़मल की तरग़ीब दिलाई। आप ने नफ़्सो शैत़ान पर क़ाबू पाने का एक त़रीक़ा अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा की शम्अ़ रौशन करना भी बताया।

ऐ काश ! हमें भी ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए तो नेकियां करना और गुनाहों से बचना निहायत आसान हो सकता है। **अल्लाह** पाक हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की ख़िदमत के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। येह 12 मदनी काम मुसलमानों को राहे सुन्नत पर चलाने और आ़शिक़ाने रसूल में सुन्नतों की मदनी बहारें आ़म करने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम, हर माह तीन दिन के "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना" भी है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से जहां इ़ल्मे दीन सीखना, इ़ल्मे दीन से माला माल कुतुबो रसाइल पढ़ना मुयस्सर आता है, वहीं लोगों को नेकी की दावत देने और बुराई से मन्अ़ करने का सवाब भी हाथ आता है। याद रखिये ! हमारी नेकी की दावत से अगर कोई एक इस्लामी भाई भी सुन्नतों का पैकर और नमाज़ी बन गया तो उसे इन नेक आमाल का सवाब तो मिलेगा ही, साथ ही हमारे नामए आमाल में भी सवाब लिखा जाता रहेगा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : "नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है।"(1)

आप भी हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मदनी क़ाफ़िले की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : दावते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं गुनाहों के दलदल में फंसा हुवा था, مَعَاذَاللّٰہ बिलानाग़ा शराब पीना, मां बाप को सताना और नमाज़ें क़ज़ा करना मेरा मश्ग़ला था, फिर एक दिन मेरे भांजे ने मुझे दावते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر کفاعلہ، ۴/ ۳۰۵، حدیث:۲۶۷۹

सफ़र की दावत पेश की, पहले तो मैं टाल मटोल से काम लेता रहा, लेकिन उन्हों ने हिम्मत न हारी और मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश जारी रखी, आख़िरे कार मैं ने माहे मुहर्रमुल ह़राम में शहीदाने करबला के ईसाले सवाब की निय्यत से मदनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार कर लिया, दौराने मदनी क़ाफ़िला नेकी की दावत और सुन्नतों भरे बयानात सुनने और बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर मुश्तमिल रसाइल का मुत़ालआ़ करने का मौक़अ़ मिला। इन बयानात और पुर तासीर तह़रीर का मुझ गुनाहगार पर ऐसा असर हुवा कि मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। अल ग़रज़ ! मदनी क़ाफ़िले की बरकत से मुझे अपनी साबिक़ा गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत होने लगी, मेरा सर शर्म से झुक गया और मैं ने अपने पिछले तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस शराब नोशी से सच्ची तौबा की, नमाज़ों की पाबन्दी और मां बाप की फ़रमां बरदारी का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मदनी क़ाफ़िले की बरकत से मैं ने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ रखने की भी निय्यत कर ली और अब एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन की हैसिय्यत से ख़िदमात सर अन्जाम दे रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"(1)

1...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

अंगूठी पहनने के मदनी फूल

....मर्द को सोने की अंगूठी पहनना ह़राम है। .... (ना बालिग़) लड़के को सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना ह़राम है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा। ....लोहे की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है।[1] ....मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो सिर्फ़ एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये ना जाइज़ है[2] ....बिग़ैर नगीने की अंगूठी पहनना ना जाइज़ है कि येह अंगूठी नहीं, छल्ला है। ....ह़ुरूफ़े मुक़त़्त़आत की अंगूठी पहनना जाइज़ है मगर ह़ुरूफ़े मुक़त़्त़आत वाली अंगूठी बिग़ैर वुज़ू पहनना और छूना या मुसाफ़ह़े के वक़्त हाथ मिलाने वाले का उस अंगूठी को बे वुज़ू छू जाना जाइज़ नहीं। ....इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी ना जाइज़ है। ....चांदी की एक अंगूठी एक नग (यानी नगीने) की, कि वज़्न में साढ़े चार माशे (यानी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है, हां तकब्बुर या ज़नाना पन का सिंगार (यानी लेडीज़ स्टाइल की टीपटॉप) या और कोई ग़रज़े मज़्मूम (यानी क़ाबिले मज़म्मत मक़्सद) निय्यत में हो तो एक अंगूठी (ही) क्या इस निय्यत से (तो) अच्छे कपड़े पहनने भी जाइज़ नहीं[3] ....ईदैन में अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है।[4] ....लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दिया कि लोहा बिल्कुल न दिखाई देता हो, उस

---

1 ...ترمذی، کتاب اللباس، ۴۳-باب ماجاء فی الخاتم الحدید، ۳/ ۳۰۵، حدیث: ۱۷۹۲

2 ...ردّالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/ ۵۹۷

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 22/141

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/ 780

अंगूठी के पहनने की (मर्द व औ़रत किसी को भी) मुमानअ़त नहीं[1] .... मन्नत का या दम किया हुवा धात (METAL) का कड़ा (लकी) भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरह या अजमेर शरीफ़ या किसी भी दरगाह के चांदी या किसी भी धात के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ....अगर किसी इस्लामी भाई ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी या धात की ज़न्जीर (BRACELET-CHAIN) पहनी है तो अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये और आयिन्दा न पहनने का अ़हद कीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)...**312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आओ मदनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र
सुन्नतें सीखेंगे इस में اِنْ شَآءَ اللّٰه सर बसर[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि आदमी **गुनाहगार** कब होता है? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : जब उसे येह गुमान हो कि मैं **नेकूकार** यानी नेक आदमी हूं। (एह़याउल उ़लूम, 3/452)

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذھب والفضۃ، ۵/۳۳۵

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635

www.dawateislami.net

MUSALMAN KI PARDA POSHI K
FAZAIL (HINDI BAYAAN)

मुसलमान की पर्दापोशी के फ़ज़ाइल

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : जब जुमेरात का दिन आता है, **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है, जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह जुमेरात और शबे जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं ।(1)

क्यूं कहूं बेकस हूं मैं क्यूं कहूं बेबस हूं मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोड़ों दुरूद(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बन्दों के ऐब नज़र न आएं

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौजवान को वुज़ू करते देखा, उस से वुज़ू में इस्तिमाल शुदा पानी के क़तरे टपक रहे थे । आप ने फ़रमाया : "**बेटा ! मां-बाप की ना फ़रमानी से तौबा कर लो ।**" उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । एक और शख़्स के वुज़ू के पानी को देख कर फ़रमाया : "ऐ

(1)...ابن عساکر، رقم ۵۰۱۲، ابو الحسن علی بن محمد الھمدانی، ۴۳/ ۱۴۲، حدیث: ۹۱۲۶
(2).....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 270

www.dawateislami.net

मेरे भाई ! बदकारी से तौबा कर लो ।'' उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । एक और शख़्स के वुज़ू के पानी को देखा तो उस से फ़रमाया : **''शराब पीने और गाने बाजे सुनने से तौबा कर लो ।''** उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़ैबी बातों के इज़्हार के बाइ़स चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे, लिहाज़ा आप ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में ग़ैबी बातों के इज़्हार के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी, **अल्लाह** पाक ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए ।[1]

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा तो बे मिसाल आप का है फ़तवा

हैं इ़ल्मो तक़्वा के आप संगम इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो ह़िकायत हम ने अभी सुनी इस से येह भी पता चला कि हमारे इमाम, करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बड़ी शानो अ़ज़मत है, आप बा करामत बुज़ुर्ग हैं, आप की निगाहे विलायत कश्फ़ के ज़रीए़ वुज़ू में इस्तिमाल होने वाले पानी में लोगों की ना फ़रमानियां देख लेती थी, बेशक येह आप की अ़ज़ीम करामत थी, ताहम आप को लोगों के उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होना गवारा न हुवा और दुआ़ के ज़रीए़ ग़ैबी बातों का इज़्हार होना ख़त्म करवा दिया । यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़ब्बत का दम तो भरते हैं मगर ज़बरदस्ती उल्टे सीधे सुवालात (Cross Questions) कर के

1 ...میزان الکبری للشعرانی، کتاب الطهارة، ۱/ ۱۳۰

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 573

www.dawateislami.net

लोगों के ऐबों को उछालने में मश्ग़ूल रहते हैं, याद रखिये ! बिला मस्लहते शरई जान बूझ कर किसी मुसलमान का ऐब मालूम करना या उछालना गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

पारह 26, सूरतुल हुजुरात, आयत नम्बर 12 में खुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों की बुराइयों को तलाश करने से यूं मन्अ़ फ़रमाया :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶،الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंढो।

तफ्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तहत लिखते हैं : यानी मुसलमानों की ऐबजूई न करो और उन के छुपे हाल की तलाश में न रहो जिसे अल्लाह पाक ने अपनी सत्तारी से छुपाया। हदीस शरीफ़ में है : "गुमान से बचो, गुमान बड़ी झूटी बात है और मुसलमानों की ऐबजूई न करो, उन के साथ लालच व हसद, बुग़्ज़ व बे मुरव्वती न करो, ऐ अल्लाह पाक के बन्दो ! भाई भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया, मुसलमान मुसलमान का भाई है, उस पर ज़ुल्म न करे, उस को रुस्वा न करे, उसे हक़ीर न समझे (फिर अपने सीनए अक़्दस की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है। आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसलमान भाई को हक़ीर देखे। हर मुसलमान मुसलमान पर हराम है, उस का ख़ून भी, उस की आबरू भी, उस का माल भी। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 26, अल हुजुरात, तहतुल आयत : 12 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

पर्दापोशी का मुअस्सिर त़रीक़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिलाशुबा खुश नसीब हैं वोह मुसलमान जो अपने काम से काम रखते हुए अपने नफ़्स की निगहबानी करते हैं और दूसरों के ऐ़ब ढूंडने के बजाए शबो रोज़ अपनी ज़ात में मौजूद ऐ़बों को दूर करने में लगे रहते हैं नीज़ अगर उन्हें अपने मुसलमान भाइयों के उ़यूब किसी त़रह़ मालूम हो भी जाएं तो शैत़ान के बहकावे में आ कर उन के ऐ़ब उछालने के बजाए रिज़ाए इलाही के लिये पर्दापोशी करते और सवाबे आख़िरत के ह़क़दार बनते हैं। अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा भी येही है कि जब कभी दूसरे के ऐ़ब बयान करने को जी चाहे तो उस वक़्त अपने उ़यूब की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर उन को दूर करने में लग जाना चाहिये, खुदा पाक की क़सम ! येह बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी है।

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : طُوْبٰی لِمَنْ شَغَلَهٗ عَيْبُهٗ عَنْ عُيُوْبِ النَّاسِ यानी उस के लिये खुश ख़बरी है जिसे अपना ऐ़ब लोगों के ऐ़ब बयान करने से बाज़ रखे।[(1)]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि अपने मुसलमान भाइयों की ग़ीबतों और बुराइयों से बचने का एक मुअस्सिर त़रीक़ा येह भी है कि इन्सान अपने अन्दर पाई जाने वाली ख़ामियों की त़रफ़ नज़र करे क्यूंकि जब उस की नज़र अपनी बुराइयों पर पड़ेगी तो यक़ीनन उस के दिल में येह ख़्वाहिश पैदा होगी कि मेरी इन बुराइयों का किसी को पता न चले, लिहाज़ा अपनी ग़लत़ियों को पोशीदा रखने का येही एह़सास उसे अपने मुसलमान भाई की ग़लत़ी और बुराई को पोशीदा रखने पर आमादा कर लेगा। आइये ! इस ज़िम्न में बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नसीह़तों

---

1 ...مسند فردوس، ۲/۴۶، حدیث: ۳۷۴۲

पर मुश्तमिल चन्द मदनी फूल सुनते हैं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के ऐबों की पर्दापोशी करने का ज़ेहन बनेगा। चुनान्चे,

अपनी बुराइयां याद कर लिया करो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान है : اِذَا اَرَدْتَ اَنْ تَذْکُرَ عُیُوْبَ صَاحِبِكَ فَاذْکُرْ عُیُوْبَكَ यानी जब तुम अपने **साथी की बुराइयां** बयान करना चाहो तो **अपनी बुराइयां** याद कर लिया करो।(1)

सब से ज़ियादा पसन्दीदा बन्दा

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकते जब तक लोगों के उ़यूब तलाश करना तर्क न कर दो, जो उ़यूब तुम्हारे अपने अन्दर पाए जाते हैं उन की इस्लाह़ शुरूअ़ कर दो और उन्हें अपनी ज़ात से दूर कर लो, जब तुम ऐसा करोगे तो येह चीज़ तुम्हें अपनी ही ज़ात में मश्ग़ूल कर देगी और अल्लाह पाक के नज़्दीक ऐसा बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा है।(2)

फ़िरिश्तों की दुआ़

मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई का भलाई के साथ ज़िक्र करता है तो उस के साथ रहने वाले फ़िरिश्ते उसे दुआ़ देते हैं कि तुम्हारे लिये भी इसी त़रह़ हो और जब कोई अपने भाई को बुराई से याद करता (यानी उस की ग़ीबत करता) है तो फ़िरिश्ते

(1)...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، باب الغیبۃ وذمھا، ۴/۳۵۷، رقم:۵۶

(2)...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، باب الغیبۃ وذمھا، ۴/۳۵۹، رقم:۶۰

www.dawateislami.net

कहते हैं : ऐ आदमी ! तू ने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! ज़रा अपनी त़रफ़ देख और अल्लाह पाक का शुक्र कर कि उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है।[(1)]

मह़ब्बते इलाही की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھَا फ़रमाया करती थीं : बन्दा जब अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का मज़ा चख लेता है तो अल्लाह पाक उसे उस के ऐ़बों पर मुत्त़लअ़ फ़रमा देता है और इस वज्ह से वोह लोगों के ऐ़बों में मश्ग़ूल नहीं होता।[(2)]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर शख़्स को चाहिये कि वोह जिस त़रह़ अपनी बुराइयों और ऐ़बों के बारे में दूसरों से पर्दापोशी की ख़्वाहिश रखता है, इसी त़रह़ दूसरों के ऐ़बों पर पर्दा डालना भी पसन्द किया करे क्यूंकि ईमान के कामिल होने की अ़लामत येह है कि मुसलमान दूसरों के लिये भी वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। चुनान्चे,

कामिल मुसलमान की निशानी

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی یُحِبَّ لِاَخِیْہِ مَا یُحِبُّ لِنَفْسِہٖ यानी तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वोही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[(3)]

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जान लो कि इन्सान का ईमान उस वक़्त तक कामिल नहीं होता जब

❶...تنبیہ الغافلین، باب الغیبۃ، ص۸۸

❷...تنبیہ المغترین، ومن اخلاقھم: الاشتغال بعیوب انفسھم...الخ، ص۱۹۷

❸...بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان...الخ، ۱/۱۶، حدیث:۱۳

www.dawateislami.net

तक कि वोह अपने भाई के लिये उस चीज़ को पसन्द न करे जो वोह अपने लिये पसन्द करता है और भाईचारे का कमतर दरजा येह है कि अपने भाई से ऐसा मुआ़मला किया जाए जैसा उस की त़रफ़ से अपने ह़क़ में पसन्द करता है। इस बात में कोई शक नहीं कि तुम अपने भाई से अपने ह़क़ में पर्दापोशी, बुराइयों और ऐ़बों पर सुकूत की उम्मीद करोगे और अगर उम्मीद के बर ख़िलाफ़ कुछ ज़ाहिर हो तो यक़ीनन उस पर ग़ज़बनाक होगे, तो येह कैसी बे अ़क़्ली है कि तुम उस से तो पर्दापोशी की उम्मीद रखो जब कि ख़ुद उस के ऐ़बों पर पर्दा न डालो।(1)

ह़दीसे क़ुदसी में है : عَجِبْتُ لِمَنْ يَّشْتَغِلُ بِعُيُوْبِ النَّاسِ وَهُوَ غَافِلٌ عَنْ عُيُوْبِ نَفْسِهٖ यानी ह़ैरत है उस शख़्स पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल है।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुसलमानों के ऐ़ब उछालने से मन्अ़ करते हुए पर्दापोशी के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं। तरग़ीब के लिये पर्दापोशी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा पेशे ख़िदमत हैं :

पर्दापोशी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीस

﴾1﴿....इरशाद फ़रमाया : مَنْ رَاٰى عَوْرَةً فَسَتَرَهَا كَانَ كَمَنْ اَحْيَا مَوْءُوْدَةً مِّنْ قَبْرِهَا यानी जिस ने किसी का पोशीदा ऐ़ब देखा और उसे छुपा लिया तो वोह उस शख़्स की

1...احیاء العلوم، کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ...الخ، باب فی حقوق الاخوۃ والصحبۃ، ۲/۲۲۲

2...مجموعۂ رسائل امام غزالی، المواعظ فی الاحادیث القدسیۃ، الموعظۃ الاولی، ص ۵۲۵

www.dawateislami.net

तृरह है कि जिस ने ज़िन्दा दफ़्नाई गई बच्ची को क़ब्र से निकाल कर उस की जान बचा ली।[1]

﴾2﴿....इरशाद फ़रमाया : اِذَااَرَادَاللّٰہُ بِعَبْدٍ خَیْرًا بَصَّرَہٗ عُیُوْبَہٗ यानी जब अल्लाह पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उस के ऐबों से बा ख़बर फ़रमा देता है।[2]

﴾3﴿....इरशाद फ़रमाया : مَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَہُ اللّٰہُ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ यानी जिस ने किसी मुसलमान की पर्दापोशी की ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।[3]

शर्हे ह़दीस

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस तीसरी ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यानी अगर कोई ह़यादार आदमी पोशीदा तौर पर ना मुनासिब ह़रकत कर बैठे फिर पछताए तो तुम उसे पोशीदा तौर पर ही समझा दो कि उस की इस्लाह़ हो जाए, उसे बदनाम न करो। अगर तुम ने अपने भाई का पर्दा रखा तो अल्लाह पाक क़ियामत में तुम्हारे गुनाहों का ह़िसाब पोशीदा तौर पर ही लेगा, तुम्हें रुस्वा न करेगा। हां ! जो किसी को तक्लीफ़ पहुंचाने की ख़ुफ़्या तदबीरें कर रहा हो या छुप कर बुरी ह़रकतें करने का आ़दी हो चुका हो तो उस का इज़्हार ज़रूर कर दो ताकि वोह शख़्स ईज़ा से बच जाए या येह शख़्स तौबा कर ले। ग़रज़ कि सिर्फ़ बदनामी से किसी को बचाना अच्छा है मगर उस के पोशीदा ज़ुल्म से किसी दूसरे को बचाना या उस की इस्लाह़

1...مسند احمد، حدیث عقبۃ بن عامر الجھنی، ۶/۱۲۶، حدیث: ۱۷۳۳۴

2...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الأمل، ۷/۳۴۷، حدیث: ۱۰۵۳۵ ملتقطاً

3...بخاری، کتاب المظالم والغصب، باب لا یظلم المسلم...الخ، ۲/۱۲۶، حدیث: ۲۴۴۲

www.dawateislami.net

करना भी अच्छा है, येह फ़र्क़ ख़याल में रहे। यहां साहिबे मिरक़ात ने फ़रमाया : जो मुसलमान की एक ऐबपोशी करे रब तआला उस की 700 बुराइयों की ऐबपोशियां करेगा।[1]

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और

सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि अगर किसी शख़्स के अन्दर ऐसी बुराई पाई जाए जो दूसरे मुसलमानों के लिये बाइसे तक्लीफ़ हो तो ऐसी सूरत में मुसलमानों को उस शख़्स के नुक़्सान से बचाने की निय्यत से उस की वोह बुराई ज़ाहिर करने में कोई हरज नहीं बल्कि येह अच्छी बात है, मगर इस बात का भी ख़ास ख़याल रखना चाहिये कि अगर ज़रूरतन दूसरों के सामने किसी की बुराई ज़ाहिर करनी पड़ जाए तो बढ़ा चढ़ा कर बयान करने के बजाए सिर्फ़ उतनी ही बुराई ज़ाहिर की जाए कि जिस क़दर उस की ज़ात में मौजूद है।

बर्हना करने से भी बड़ा गुनाह

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने हवारियों से इरशाद फ़रमाया : अगर तुम अपने भाई को इस हाल में सोता पाओ कि हवा ने उस से कपड़ा हटा दिया है तो तुम क्या करोगे ? उन्हों ने अर्ज़ की : उस की पर्दापोशी करेंगे और उसे ढांप देंगे। तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : बल्कि तुम उस का पर्दा खोल दोगे। हवारियों ने हैरत से कहा : भला ऐसा कौन करता है ? इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई अपने भाई के बारे में कुछ सुनता है तो उसे बढ़ा चढ़ा कर बयान करता है और येह उसे बर्हना करने से (भी) बड़ा गुनाह है।[3]

1.....मिरआतुल मनाजीह, 6/551, 552 बित्तग़य्युर क़लील

2.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 83

3...احیاء العلوم، کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ...الخ، باب فی حقوق الاخوۃ والصحبۃ، ۲/۲۲۲

www.dawateislami.net

अल्लाह अल्लाह ! देखा आप ने कि अगर्चे ज़रूरतन ही किसी की बुराई ज़ाहिर करनी पड़े मगर उसे बढ़ा चढ़ा कर बयान करना कितना बड़ा गुनाह है। ज़ाहिर है कि अपनी त़रफ़ से जितना इज़ाफ़ा किया वोह सब झूट होगा और झूट बोलना कबीरा गुनाह है। बहर ह़ाल किसी की पोशीदा बुराई दूसरों के सामने बयान करने की इजाज़त सिर्फ़ उसी सूरत में है कि जब वोह बुराई दूसरों के ह़क़ में नुक़्सान देह हो और अगर ऐसा नहीं तो दूसरों को बताने और सब की नज़रों में एक मुसलमान को ज़लीलो रुस्वा करने के बजाए तन्हाई में नर्मी के साथ उस की इस्लाह़ की कोशिश की जाए क्यूंकि अगर सब के सामने आप किसी की इस्लाह़ की कोशिश करेंगे तो ऐन मुमकिन है कि वोह ज़िद्दी बन जाए और अपनी ग़लती तस्लीम करने के बजाए उल्टा आप को रुस्वा कर दे, लिहाज़ा ह़त्तल इमकान तन्हाई में नसीह़त की जाए कि येह निहायत मुअस्सिर साबित होती है।

नसीह़त तन्हाई में होनी चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : जिस ने अपने मुसलमान भाई को तन्हाई में समझाया उस ने उसे नसीह़त की और ज़ीनत बख़्शी और जिस ने सब के सामने समझाया उस ने उसे रुस्वा और बदनाम किया।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : क्या आप उस शख़्स को पसन्द करते हैं जो आप को आप के ऐ़बों पर ख़बरदार करे ? फ़रमाया : अगर तन्हाई में नसीह़त करे तो पसन्द है और अगर सरे आ़म समझाए तो नहीं।(2)

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، ۹/ ۱۴۹، رقم: ۱۳۴۲۴

2 ...احیاء العلوم، کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ...الخ، باب فی حقوق الاخوۃ والصحبۃ، ۲/ ۲۲۷

www.dawateislami.net

सीनों की सफ़ाई

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बाज़ लोगों की आ़दत होती है कि वोह दूसरों की टोह में रहते हैं और अपने ही मुसलमान भाइयों के ऐ़ब और बुराइयां तलाशते रहते हैं और जब अपने मक्सद में कामयाब हो जाते हैं तो मौक़अ़ की तलाश में लग जाते हैं और फिर उस की इ़ज़्ज़त, वक़ार ख़त्म करने और दूसरों की नज़र में उसे नीचा दिखाने के लिये किसी ऐसी महफ़िल में या ऐसी मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत के सामने उस की पोलें खोलते (ऐ़ब बयान करते) हैं कि वोह किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहता और शर्म से पानी पानी हो जाता है ह़ालांकि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तालीमे उम्मत के लिये सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : मुझे कोई सहा़बी **किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए** मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास **साफ़ सीना आया करूं ।**[1]

मशहूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान कर्दा ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**मुझे कोई सहा़बी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए**" की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : यानी किसी की कोताही, बुरे फ़ेल, बुरी आ़दत, उस ने येह किया या उस ने येह कहा, फुलां इस त़रह कह रहा था (अल ग़रज़ इस त़रह की बातें कोई भी किसी के बारे में न पहुंचाया करे) ।[2] नीज़ ह़दीस शरीफ़ के इस ह़िस्से "**मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं**" का ख़ुलासा करते हुए मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : (यानी) किसी की दुश्मनी, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे । येह भी हम लोगों के लिये

1... ابوداود، کتاب الادب، باب رفع الحدیث من المجلس، ۴/۳۴۸، حدیث:۴۸۶۰

2... اشعۃ اللّمعات، کتاب الاداب، باب حفظ اللسان...الخ، ۴/۸۳

एक क़ानून का बयान है कि अपने सीने (मुसलमानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि इन में मदीने के अन्वार देखो वरना **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का सीनए रह़मत नूरे करामत का ख़ज़ाना है, वहां बुग़्ज़ो कीने की पहुंच ही नहीं ।**(1)

बहर ह़ाल इस बात में कोई शक नहीं कि दूसरों की ज़ात में ऐ़ब ढूंडने वाले अगर अपना एह़तिसाब करें और अपने ऐ़बों पर एक सरसरी नज़र दौड़ाएं तो शायद अपनी ज़ात में मौजूद ऐ़बों की कसरत देख कर वोह ख़ुद भी ह़ैरत के समुन्दर में ग़र्क़ हो जाएं मगर आह ! लम्बी लम्बी उम्मीदें, दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत की चमक दमक, ख़ौफ़े ख़ुदा से मह़रूमी और गुनाह पर गुनाह किये जाने के बा वुजूद रह़मते इलाही पर बेजा यक़ीन उन्हें अपनी इस्लाह़ से ग़ाफ़िल कर देता है । ऐसे नादान दुन्या में भी ज़िल्लत का मज़ा चखते हैं और आख़िरत में भी उन्हें रुस्वाई के इ़लावा कुछ हाथ न आएगा । इस ज़िम्न में एक ह़दीसे पाक सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये । चुनान्चे,

मुसलमानों के उ़यूब तलाश करने की सज़ा

अल्लाह पाक के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ वोह लोगो जो ज़बानों से तो ईमान ले आए हो, मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उन के उ़यूब तलाश न किया करो क्यूंकि जो मुसलमानों के उ़यूब तलाश करेगा **अल्लाह** पाक उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और **अल्लाह** पाक जिस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमाता है उसे रुस्वा कर देता है, अगर्चे वोह अपने घर में हो ।(2)

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 6/472 मुलख़्ख़सन

2...شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، ۵/۲۹۶، حدیث: ۶۷۰۴

www.dawateislami.net

एक रिवायत में है, इरशाद फ़रमाया : त़ाना देने, ग़ीबत व चुग़ल ख़ोरी करने और बे गुनाह लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को अल्लाह तआ़ला (बरोज़े क़ियामत) कुत्तों की शक्ल में उठाएगा।[1]

न थी ह़ाल की जब हमें अपने ख़बर रहे देखते औरों के ऐ़बो हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र तो निगाहों में कोई बुरा न रहा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ओ़हदा मिलने पर मिज़ाज में तब्दीली

याद रहे ! ओ़हदा, वज़ारत या कोई बड़ा मर्तबा व मक़ाम मिल जाना यक़ीनन नेमते ख़ुदावन्दी है, मगर ओ़हदा वग़ैरा मिलने के बाद बाज़ों के मिज़ाज में बिल्कुल ही तब्दीली आ जाती है कि फिर वोह अपने मुतअ़ल्लिक़ कोई ख़िलाफ़े शान बात या नसीह़त सुनना भी गवारा नहीं करते और बिलफ़र्ज़ अगर कोई बेचारा इस्लाह़ की ग़रज़ से उन में मौजूद किसी ह़क़ीक़ी ऐ़ब की निशान देही कर दे तो वोह आपे से बाहर हो जाते हैं, नतीजतन ख़ामी बयान करने वाले की शामत आ जाती है, उस ग़रीब पर गालियों की बोछाड़ कर दी जाती है, अगर इस से भी ग़ुस्सा ठन्डा नहीं होता तो लातें और घूंसे भी रसीद किये जाते हैं और बाज़ अवक़ात इस जुर्म के बदले उसे धक्के दे कर नौकरी से भी निकाल दिया जाता है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام बे शुमार ख़ूबियों के मालिक थे और ओ़हदे वग़ैरा मिल जाने के बाद भी उन के रोज़ मर्रा के मामूलात में कोई मन्फ़ी फ़र्क़ न आता था बल्कि मज़ीद मोह़तात़ हो जाते थे, येह ह़ज़रात नफ़्सो शैत़ान की चालों से होशियार रहते और वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मातह़तों से अपने मुतअ़ल्लिक़ पूछा करते, अगर कोई बताता भी कि आप में फ़ुलां फ़ुलां ऐ़ब है तो उन के चेहरों पर ना गवारी का ज़र्रा बराबर भी असर दिखाई न देता था। चुनान्चे,

---

1 ...الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الترهيب في النميمة، ٣/ ٣٩٥، حديث: ٤٣٣٣

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ए राशिद का तर्ज़े अ़मल

ख़लीफ़ए दुवुम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़यूब पर मुत्तलअ़ किये जाने को तोह़फ़ा ख़याल करते और फ़रमाते : **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रह़म फ़रमाए, जो अपने भाई को ऐ़ब पर मुत्तलअ़ करने की सूरत में उसे तोह़फ़ा देता है।[1] नीज़ यक़ीनी जन्नती होने और उ़यूब के बजाए बे शुमार ख़ूबियों का मालिक होने के बा वुजूद फ़रमाते : **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रह़म फ़रमाए, जो मुझे मेरे ऐ़ब बताए।

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने उन से पूछा : मुझ में कौन सी बात आप को ना पसन्दीदा मालूम होती है ? ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताने से माज़िरत की, अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसरार किया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : मुझे पता चला है कि आप के दस्तर ख़्वान पर दो खाने होते हैं और आप के पास कपड़े के दो जोड़े हैं, एक दिन में पहनतें हैं और दूसरा रात में। अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इस के इ़लावा कोई बात ? अ़र्ज़ की : "नहीं।" इस पर आप ने फ़रमाया : **"इन दोनों बातों के मुतअ़ल्लिक़ आप तसल्ली रखिये।"**[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा कि अगर कोई हमदर्द व मुख़्लिस इस्लामी भाई हमें हमारे अन्दर मौजूद किसी ऐ़ब से मुतअ़ल्लिक़ बताए तो रंजीदा या नाराज़ हो कर ईंट का जवाब पथ्थर से देने या उल्टा उसी की पोलें (कमज़ोरियां) दूसरों को बताने की ग़लती करने के बजाए उस का शुक्रिय्या अदा करना चाहिये कि

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب آداب الالفة والاخوة...الخ، باب فی حقوق الاخوة والصحبة، ۲/۲۲۸

2 ...احیاء العلوم، کتاب ریاضة النفس وتھذیب الاخلاق، بیان الطریق الذی یعرف بہ...الخ، ۳/۷۹ ملخصاً

दर ह़क़ीक़त वोह हमारा सब से बड़ा मोह़सिन है क्यूंकि अगर वोह इस ऐ़ब को हम से छुपा लेता तो मुमकिन था कि वोही ऐ़ब हमें हलाकत व बरबादी की वादियों में गिरा देता। अह़ादीसे मुबारका में तो अपने मुसलमान भाई को उस के उ़यूब पर मुत्तलअ़ करने की बा क़ाइदा तरग़ीब भी इरशाद फ़रमाई गई है। चुनान्चे,

मोमिन मोमिन का आईना है

सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُ مِرْاٰۃُ الْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ اَخُو الْمُؤْمِنِ یَکُفُّ عَنْہُ ضَیْعَتَہٗ وَیَحُوْطُہٗ مِنْ وَّرَائِہٖ यानी मोमिन मोमिन का आईना है और मोमिन मोमिन का भाई है कि उस से नुक़्सान को दूर करता है और उस की ग़ैर मौजूदगी में उस की ह़िफ़ाज़त करता है।(1)

एक रिवायत में है : اِنَّ اَحَدَکُمْ مِرْاٰۃُ اَخِیْہِ فَاِنْ رَاٰی بِہٖ اَذًی فَلْیُمِطْہُ عَنْہُ यानी तुम में से हर एक अपने मुसलमान भाई का आईना है पस अगर उस में बुराई देखे तो उस से बुराई को दूर कर दे।(2)

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं कि जैसे आईना चेहरे के सारे ऐ़ब व ख़ूबियां ज़ाहिर कर देता है, ऐसे ही मुसलमान अपने मुसलमान भाई के ऐ़ब पर उसे मुत्तलअ़ करता रहे ताकि वोह अपनी इस्लाह़ करे। ग़रज़ कि रुस्वाई करना ममनूअ़ है, इस्लाह़ करना सवाब, (फिर येह कि) आईना इस लिये देखते हैं कि अपने चेहरे के छोटे बड़े दाग़ धब्बे नज़र आ जाएं। त़बीब के पास इसी लिये जाते हैं कि वहां इलाज हो जाए, ऐसे ही मोमिनों की सोह़बत निहायत मुफ़ीद है। इस

❶... ابو داود، کتاب الادب، باب فی النصیحۃ والحیاطۃ للمسلم، ۴/۳۶۵، حدیث: ۴۹۱۸

❷... ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب، ماجاء فی شفقۃ المسلم... الخ، ۳/۳۷۳، حدیث: ۱۹۳۶

लिये सूफ़िया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی फ़रमाते हैं कि हमेशा अपने मुरीदों, अपने शागिर्दों के पास न बैठो जो हर वक़्त तुम्हारी तारीफ़ें ही करते हैं बल्कि कभी कभी अपने मुर्शिदों, अपने उस्तादों, अपने बुज़ुर्गों के पास भी बैठो जहां तुम्हें अपनी कमतरी नज़र आए। हाथी पहाड़ को देख कर अपनी ह़क़ीक़त को पहचानता है। हमेशा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतों में ग़ौर किया करो ताकि अपनी गुनहगारी, अपनी कमतरी महसूस होती रहे। मुह़क़्क़िक़ीन सूफ़िया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی इस ह़दीस के येह माना करते हैं कि मोमिन जब किसी मुसलमान में ऐ़ब देखे तो समझे कि येह ऐ़ब मुझ में है जो उस के अन्दर मुझे नज़र आ रहा है, जैसे आईने में अपने जो दाग़ धब्बे नज़र आते हैं वोह अपने चेहरे के होते हैं न कि आईने के।[1]

तू ने दुन्या में भी ऐ़बों को छुपाया या ख़ुदा
ह़श्र में भी लाज रख लेना कि तू सत्तार है[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे मुबारक और इस की शर्ह़ से मालूम हुवा कि हमें ऐसों की सोह़बत से फ़ैज़याब होना चाहिये कि जिन की बरकत से हमें अपनी ज़ात में मौजूद ऐ़बों की इस्लाह़ का मौक़अ़ नसीब हो। अफ़्सोस कि अब ऐसी मदनी सोच कहां ! अब तो वोह नाज़ुक दौर आ गया है कि हम अपनी झूटी तारीफ़ें करने वालों और हां में हां मिलाने वालों को ही अपना मह़बूब व मोह़सिन समझते हैं और जो हमारी इस्लाह़ के लिये हमें आईना दिखा कर हमारी अस्लिय्यत बताए, उसे अपना सब से बड़ा दुश्मन समझते हैं।

---

1 .....माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 6/571
2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 480

कमज़ोरिये ईमान की अ़लामत

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1285 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**एह़याउल उ़लूम**" **जिल्द 3, सफ़ह़ा 196** पर हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : दीनदार लोगों की येह ख़्वाहिश हुवा करती थी कि वोह दूसरों के बताने से अपने उ़यूब पर मुत्त़लअ़ हों लेकिन अब ऐसा दौर आ गया है कि हमें नसीह़त करने और हमारे ऐ़बों पर मुत्त़लअ़ करने वाला हमें सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा मालूम होता है और येह बात ईमान की कमज़ोरी की अ़लामत है। **बुरे अख़्लाक़** डंसने वाले **सांप** और **बिच्छू** हैं। अगर कोई हमें येह बताए कि तुम्हारे कपड़ों के नीचे बिच्छू है तो हम ख़ुश हो कर उस का एह़सान मानने वाले हो जाते हैं और बिच्छू को अपने से दूर कर के मार देते हैं, ह़ालांकि बिच्छू का ज़हर सिर्फ़ बदन तक मह़्दूद है और उस की तक्लीफ़ एक या दो दिन तक रहती है, जब कि बुरे अख़्लाक़ के ज़हर का असर हमारे ज़मीर पर होता है और इस बात का ख़ौफ़ होता है कि मरने के बाद हमेशा या मुद्दतों इस का असर बाक़ी रहे। अब ह़ालत येह है कि कोई हमें हमारे उ़यूब पर मुत्त़लअ़ करे तो हमें येह सुन कर ख़ुशी नहीं होती और न ही हम उस के कहने पर उन उ़यूब को दूर करने की कोशिश करते हैं बल्कि हम नसीह़त करने वाले को तन्क़ीद का निशाना बनाते हैं और उसे कहते हैं कि तुम में भी तो फ़ुलां फ़ुलां ऐ़ब हैं।(1)

बहर ह़ाल इस बात में कोई शक नहीं कि ह़ाकिम हो या मह़्कूम, सेठ हो या नौकर, अफ़्सर हो या मज़्दूर, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मिस्तरी, उस्ताद हो या त़ालिबे इ़ल्म, भाभी हो या देवरानी, सास हो या बहू, अल ग़रज़ ऐ़ब

---

(1)... احیاء العلوم، کتاب رضایۃ النفس وتھذیب الاخلاق، بیان الطریق الذی یعرف...الخ، ۷۹/۳

जूई की इस मन्हूस बीमारी ने हर त़बके़ में अपने पंजे गाड़े हुए हैं। इन्सान जब किसी की पोलें (कमज़ोरियां) खोलने पर आ जाता है तो वोह अख़्लाक़ियात की तमाम ह़दें पार कर डालता है और ख़ूनी रिश्ते भी उस की नज़र में बे क़द्रो बे क़ीमत हो जाते हैं ह़त्ताकि कभी कभार ऐसी बदबख़्ती ग़ालिब आ जाती है कि हिदायत के रौशन तारों यानी सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जैसी मुक़द्दस हस्तियों पर भी तानो तशनीअ़ करने में मुब्तला हो जाता है और उन की पाकीज़ा शख़्सिय्यात भी उस बद नसीब को مَعَاذَ الله ऐ़बदार नज़र आने लगती हैं। ऐसों को अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डर जाना चाहिये, क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की शान में गुस्ताख़ी करने वाला दुन्या में भी ज़िल्लत का मज़ा चखता है और मरने के बाद भी ज़िल्लतो ख़्वारी उस का मुक़द्दर बन जाएगी, जैसा कि

शाने सह़ाबा ब ज़बाने मुस्त़फ़ा

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरे सह़ाबा के बारे में अल्लाह पाक से डरो, मेरे बाद उन्हें (तन्क़ीद का) निशाना न बनाना, जिस ने उन से मह़ब्बत रखी तो उस ने मेरी मह़ब्बत के सबब उन से मह़ब्बत रखी और जिस ने उन से बुग़्ज़ रखा तो उस ने मुझ से बुग़्ज़ के सबब उन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उन्हें अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह पाक को अज़िय्यत दी और क़रीब है कि अल्लाह पाक उस की पकड़ फ़रमा ले।(1)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! अब मैं आप के सामने सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की शान में ऐ़ब तलाश करने वाले एक बद नसीब शख़्स के इब्रतनाक अन्जाम पर मुश्तमिल एक ह़िकायत पेश करता हूं। चुनान्चे,

1...ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سبّ اصحاب النبی، ۵/۴۶۳، حدیث: ۳۸۸۸

www.dawateislami.net

सहाबए किराम में ऐब निकालने का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक्ल फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरा एक पड़ोसी गुमराही की बातें किया करता था, उस के मरने के बाद मैं ने उसे ख़्वाब में देखा वोह काना है। मैं ने पूछा : येह क्या मुआमला है ? जवाब दिया : मैं ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक शान में ऐब निकाले तो **अल्लाह** पाक ने मुझे ऐबदार कर दिया। येह कह कर उस ने अपनी फूटी हुई आंख पर हाथ रख लिया।(1)

महफ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो(2)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए से जहां हमें सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शानो अज़्मत का पता चला वहीं येह भी सीखने को मिला कि अगर ज़बान को आज़ाद छोड़ दिया जाए तो बाज़ अवक़ात येह ऐबजूई में इस ख़त़रनाक ह़द तक बे क़ाबू हो जाती है कि अल्लाह वालों की शान में भी बकबक करने लगती है, लिहाज़ा इसे क़ाबू में रखना इन्तिहाई ज़रूरी है वरना कहीं ऐसा न हो कि येही ज़बान हमें रोज़े महशर ज़लीलो रुस्वा करवा दे, जैसा कि

ज़बान एक दरिन्दे की मिस्ल है

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़बान एक दरिन्दे की त़रह़ है, अगर तुम इसे बांध कर नहीं रखोगे तो येह तुम्हारी दुश्मन बन जाएगी और तुम्हें नुक़्सान पहुंचाएगी।(3)

---

1 ...شرح الصدور، باب فی نبذ من اخبار...الخ، ص ٢٨٠

2 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

3 ...المستطرف، الباب الثالث عشر فی الصمت وصون اللسان...الخ، ١/ ١٤٦

www.dawateislami.net

याद रहे कि एक मुसलमान पर ह़क़ है कि वोह न तो किसी को गाली दे, न बिला इजाज़ते शरई किसी को बुरा कहे, न किसी की ग़ीबत करे और सुने, न किसी के उ़यूब उछाले, न किसी का राज़ खोले, न किसी को तक्लीफ़ दे, न किसी की दिल आज़ारी करे, न बिला इजाज़ते शरई किसी को मारे और न ही किसी को बेजा तन्क़ीद का निशाना बनाए।

कामिलुल ईमान मुसलमान

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ यानी कामिल मुसलमान वोह है कि जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें।(1)

बुराई का साथ न दीजिये

बाज़ लोग खुद तो ऐ़बजूई नहीं करते मगर शैत़ाने मक्कार और त़रीक़ों से उन्हें अपने जाल में फांसने की कोशिश करता है और वोह इस त़रह़ कि जब किसी मजलिस में मुसलमानों के ऐ़बों को उछालने का सिलसिला शुरूअ़ होता है तो ऐसे लोग उन्हें इस बुरे काम से रोकने या वहां से उठने के बजाए उल्टा उन की बातों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते और क़हक़हे बुलन्द करते नज़र आते हैं और इस त़रह़ मुसलमानों की इ़ज़्ज़तों का सरे आ़म तमाशा बनाने में शरीक हो जाते हैं, ह़ालांकि होना येह चाहिये कि अगर कोई किसी की ख़त़ा या उस के ऐ़ब का तज़किरा उस की मौजूदगी में या पीठ पीछे शुरूअ़ करे तो कोई शरई मस्लह़त न होने की सूरत में सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से फ़ौरन मुसलमान की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करते हुए बुराई बयान करने वाले को उस बुरे काम से अह़सन अन्दाज़ में मन्अ़ किया जाए, वरना कम अज़ कम दिल में बुरा जानते हुए उस मजलिस को छोड़ दिया जाए।

(1)... بخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من... الخ، ۱/۱۵، حدیث:۱۰

www.dawateislami.net

इ़ज़्ज़ते मुस्लिम के तह़फ़्फ़ुज़ की फ़ज़ीलत

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जो अपने मुसलमान भाई की पीठ पीछे उस की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ करे तो **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे ।(1)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की तो **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा ।(2)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन पहले के मुसलमानों में ख़ौफ़े ख़ुदा कूट कूट कर भरा होता था बिल ख़ुसूस मुसलमानों के ऐ़बों की पर्दापोशी और उन की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में तो उन का इन्तिहाई ज़बरदस्त मदनी ज़ेहन बना होता था, अगर उन के सामने कोई शख़्स किसी मुसलमान की ग़ीबत करता या उस की मामूली सी भी बुराई करता तो उन की ग़ैरते ईमानी जाग उठती और वोह अपने पराए की परवा किये बिग़ैर ऐ़बजूई करने वाले को दो टोक अन्दाज़ में इस बुरे काम पर ख़बरदार कर दिया करते थे । इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

बेटे को नसीह़त

﴾1﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बचपन का वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मैं बचपन में अपने वालिदे मोह़तरम के साथ शब बेदारी में

1...مسند احمد، من حديث اسماء ابنة يزيد، ۱۰/۴۴۵، حديث: ۲۷۶۸۰

2...موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب الغيبة و النميمة، باب ذم المسلم عن عرض اخيه، ۴/۳۸۵، حديث: ۱۰۵

www.dawateislami.net

मसरूफ़ था और कुरआने पाक की तिलावत कर रहा था। हमारे इर्द गिर्द कुछ लोग सोए हुए थे। मैं ने अपने वालिद साहिब से कहा : इन लोगों में एक भी ऐसा नहीं जो बेदार हो कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर लेता, इस त़रह़ सोए हुए हैं गोया मर चुके हैं। येह सुन कर वालिदे मोह़तरम ने जवाब दिया : जाने पिदर ! लोगों की ऐ़बजूई करने से बेहतर था कि तू भी सो ही जाता।(1)

अमानत में ख़ियानत करने वाला

﴾2﴿....एक अ़क़्लमन्द के सामने किसी जान पहचान वाले ने एक मुसलमान की ग़ीबत की तो उस अ़क़्लमन्द ने कहा : ऐ शख़्स ! पहले मेरा दिल फ़ारिग़ था अब तू ने ग़ीबत के ज़रीए़ मेरा दिल उस मुसलमान के ऐ़बों के मुतअ़ल्लिक़ वस्वसों और नफ़रतों में मश्ग़ूल कर दिया और उस मुसलमान को मेरी नज़र में कमतर बनाने की कोशिश की और इस त़रह़ से तू भी मेरे नज़्दीक गन्दा हुवा क्यूंकि मैं समझता था कि तू अमानत दार है और बात को ख़ूब छुपाता है, अब जब कि तू ने उस का ऐ़ब खोला तो मालूम हो गया कि तू अमानत दार नहीं है, तेरे दिल में कोई बात रुकती नहीं।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि येह ह़ज़रात मुसलमानों की इ़ज़्ज़तो नामूस का किस ह़सीन अन्दाज़ में दिफ़ाअ़ फ़रमाते कि अगर उन का कोई अपना भी किसी मुसलमान की ग़ीबत या बुराई करता तो रिश्तेदारी या दोस्ती का लिह़ाज़ करते हुए उस की बात को ख़ामोशी से सुन लेने या हां में हां मिलाने की नादानी करने के बजाए इस्लाह़ की निय्यत से अह़सन अन्दाज़ में उसे नेकी की दावत देते और इस बात का एह़सास दिलाते कि मुसलमान की ग़ीबत करने या उस

1.....ह़िकायाते गुलिस्ताने सादी, ह़िकायत नम्बर 48, स. 75 मुलख़्ख़सन

2...تنبیہ الغافلین، باب النمیمۃ، ص ۹۲ مفهومًا

www.dawateislami.net

के उ़यूब ज़ाहिर करने से जहां एक मुसलमान की इ़ज़्ज़त ख़राब होती है वहीं ख़ुद ग़ीबत करने और ऐ़ब उछालने वाला भी लोगों की नज़रों में अपनी अहम्मिय्यत खो बैठता है। याद रखिये ! लोगों के ऐ़बों की टोह में रहने वाला शख़्स दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** पाक की दुश्मनी मोल लेता है। चुनान्चे,

ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दे मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह लोगों के ऐ़बों का वकील बना हुवा है तो जान लो कि वोह **अल्लाह** पाक का दुश्मन है और **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार है।[1]

अपनी आंख का शहतीर नज़र नहीं आता

तफ़्सीर सिरातु़ल जिनान में है कि ख़ुद बड़े बड़े ऐ़बों में मुब्तला होना और दूसरों पर त़ान करना काफ़िरों का त़रीक़ा है। येह बीमारी हमारे हां भी आ़म है कि लोग सारी दुन्या की बुराइयां और ग़ीबतें बयान करते और ख़ुद इस से बढ़ कर ऐ़बों की गन्दगी से आलूदा होते हैं। एक ह़दीसे पाक में भी इस बीमारी को बयान किया गया है।[2] चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : يُبْصِرُ اَحَدُكُمُ الْقَذَاةَ فِيْ عَيْنِ اَخِيْهِ وَيَنْسَى الْجِذْعَ فِيْ عَيْنِهٖ तुम में से किसी को अपने भाई की आंख का तिन्का तो नज़र आ जाता है लेकिन अपनी आंख में शहतीर नज़र नहीं आता (यानी दूसरे की छोटी से छोटी बुराई भी नज़र आ जाती है और अपनी बड़ी से बड़ी बुराई भी नज़र नहीं आती)।[3]

---

1 ...تنبیہ المغترین، الباب الثالث...الخ، ومن اخلاقھم: الاشتغال بعیوب الناس...الخ، ص۱۹۷

2 .....सिरातु़ल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 217, 1/333

3 ...ابن حبان، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الغیبۃ، ذکر الاخبار...الخ، ۷/۵۰۶، حدیث: ۵۷۳۱

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आफ़िय्यत इसी में है कि ख़्वाह मख़्वाह मुसलमानों के ऐबों की टोह में लगे रहने के बजाए हमेशा उन की ख़ूबियों पर ही नज़र रखी जाए और अपने अन्दर भरे उ़यूबो नक़ाइस को दूर कर के अपनी इस्लाह़ की जानिब भी पेश क़दमी की जाए। मुसलमानों की ऐबजूई की बुरी आ़दत से पीछा छुड़ाने, अपने ऐबों पर नज़र रखने और उन्हें दूर करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मदनी इन्आ़मात में मुसलमानों के उ़यूब की पर्दापोशी की बा क़ाइदा तरग़ीब दिलाई गई है। चुनान्चे, **72 मदनी इन्आ़मात** में से मदनी इन्आ़म नम्बर 42 है : **"आज आप ने किसी मुसलमान के उ़यूब पर मुत्तलअ़ हो जाने पर उस की पर्दापोशी फ़रमाई या (बिला मस्लह़ते शरई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिग़ैर उस की इजाज़त) दूसरे को बता कर ख़ियानत तो नहीं की ?"**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "ग़ीबत की तबाहकारियां" का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों के उ़यूब की पर्दापोशी के फ़ज़ाइल और उन की ग़ीबत व ऐबजूई की तबाहकारियों से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की तस्नीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम के बाब **"ग़ीबत की तबाहकारियां"** का मुत़ालआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस किताब में ग़ीबत की तारीफ़ात, ग़ीबत करने वालों के अ़ज़ाब के दर्दनाक वाक़िआ़त, चुग़ल ख़ोरी व तकब्बुर और दीगर गुनाहों की आफ़ात, उ़लमा की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ अहम मालूमात, ग़ीबत के इलाज, मुसलमानों के उ़यूब की पर्दापोशी के फ़ज़ाइल, ऐब उछालने की वईदें, कई मौज़ूआ़त पर ग़ीबत की सेंकड़ों मिसालें, हिकायात और दीगर बे शुमार मदनी फूल मौजूद हैं, लिहाज़ा आज

www.dawateislami.net

ही इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन तृलब फ़रमाइये, खुद भी इस का मुतालआ कीजिये और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये।

दावते इस्लामी की वेब साइट से इसे पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना का तआ़रुफ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और दीगर नेक कामों पर इस्तिक़ामत हासिल करने के लिये दावते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्याओ आख़िरत की ढेरों भलाइयां हासिल होंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी कमो बेश 103 शोबाजात में सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, इन्ही में से एक शोबा **जामिअ़तुल मदीना** भी है। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इल्मे दीन को आ़म करने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त दावते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम **जामिअ़तुल मदीना** अब तक दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक मसलन हिन्द, जुनूबी अफ़्रीक़ा, इंग्लेन्ड, नेपाल और बंग्ला देश वग़ैरा में सेंकड़ों **जामिअ़तुल मदीना** लिल बनीन और लिल बनात क़ाइम हैं, जिन में हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इल्मे दीन हासिल कर के न सिर्फ़ अपनी इल्मी प्यास बुझा रहे हैं बल्कि दूसरों को भी फ़ैज़ाने इल्म से मुनव्वर करने में मसरूफ़ हैं। इन **जामिअ़तुल मदीना** की खुसूसिय्यत येह है कि दीनी तालीम से आरास्ता करने के साथ साथ तृलबा की अख़्लाक़ी और रूहानी तरबियत भी की जाती है, लिहाज़ा आप भी अपनी औलाद को **जामिअ़तुल मदीना** में दाखि़ल करवा कर उन की और अपनी दुन्याओ आख़िरत को बेहतर बनाने की कोशिश कीजिये।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दावते इस्लामी तेरी धूम मची हो [1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने मुसलमानों के ऐ़ब ज़ाहिर करने की मज़म्मत, उन के ऐ़बों पर पर्दा डालने की फ़ज़ीलत और अपने उ़यूब पर नज़र रखते हुए उन की इस्लाह़ करने के बारे में क़ुरआनो ह़दीस के इरशादात और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वालो वाक़िआ़त सुने, क़ुरआने करीम में दूसरों के उ़यूब ढूंडने से मन्अ़ करते हुए इरशाद फ़रमाया गया ﴾وَلَا تَجَسَّسُوْا और ऐ़ब न ढूंढो﴿ नीज़ ह़दीसे पाक में उस शख़्स को ख़ुश ख़बरी अ़त़ा की गई है जिसे अपने उ़यूब की इस्लाह़ की मश्ग़ूलिय्यत दूसरों के उ़यूब बयान करने से बाज़ रखे नीज़ **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से बन्दे के ह़क़ में येह भलाई की बात है कि उसे अपने उ़यूब दिखाई देने लगें। येही वज्ह है कि हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی दूसरों के उ़यूब देखने सुनने से आ़फ़िय्यत त़लब करते जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दुआ़ कर के लोगों के आज़ाए वुज़ू से बहने वाले क़त़रों के ज़रीए़ उन के गुनाहों पर मुत्त़लअ़ हो जाने वाले कश्फ़ को ख़त्म करवा दिया, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बचपन में ग़ैर इरादी त़ौर पर लोगों की बुराई सरज़द हुई तो उन के वालिदे माजिद ने फ़ौरन तम्बीह करते हुए फ़रमाया : लोगों की ग़ीबत करने के बजाए अगर तुम सोए रहते तो ज़ियादा अच्छा था।

---

1 .....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315

बहर हाल दूसरों की बुराई करने वालों या बुराई सुन कर लुत्फ़ अन्दोज़ होने वालों को चाहिये कि **अल्लाह** पाक से डरें, कहीं ऐसा न हो कि लोगों के ऐ़ब उछालने की वज्ह से **अल्लाह** पाक हमारे छुपे ऐ़ब लोगों पर ज़ाहिर फ़रमा दे, लिहाज़ा फ़ौरन इस गुनाह से तौबा कीजिये नीज़ जिन की ग़ीबतें और बुराइयां बयान कर के उन्हें ज़लीलो रुस्वा किया उन से मुआ़फ़ी भी मांग लीजिये और आयिन्दा के लिये दूसरों की बुराई से बचने, सिर्फ़ अपने उ़यूब पर नज़र रखने और उन की इस्लाह़ की कोशिश करने की निय्यत कर लीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "मदनी दौरा"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से बचने, नेकियां करने और अपने अन्दर अख़्लाक़ी ख़ूबियां पैदा करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम मुसलमानों को नेकी की राह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में बहुत मुआ़विन हैं। इन 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "**मदनी दौरा**" भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना निहायत ही अ़ज़ीमुश्शान काम है। चुनान्चे,

जिहाद की चार क़िस्में हैं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि शाहे आदमो बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुअ़ज़्ज़म है : जिहाद की चार क़िस्में हैं : (1) नेकी का हुक्म देना (2) बुराई से मन्अ़ करना (3) सब्र के

मक़ाम पर सच कहना और (4) फ़ासिक़ों से बुग़्ज़ रखना। जिस ने नेकी का हुक्म दिया उस ने मोमिनीन के हाथ मज़बूत किये और जिस ने बुराई से मन्अ़ किया उस ने फ़ासिक़ों की नाक ख़ाक आलूद की।[1]

लोगों में बेहतर कौन ?

एक ह़दीस में है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : लोगों में बेहतर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा डरने वाला, रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी ज़ियादा करने वाला, बहुत ज़ियादा **नेकी का हुक्म देने** और **बुराई से मन्अ़ करने** वाला।[2]

आइये ! बतौरे तरग़ीब "**मदनी दौरे**" की एक मदनी बहार सुनते और अपने अन्दर नेकी की दावत का जज़्बा बेदार करने की कोशिश करते हैं। चुनान्चे,

बाग़ का झूला

हैदराबाद के एक मह़ल्ले में "**मदनी दौरे**" से मुतास्सिर हो कर एक मॉडर्न नौजवान मस्जिद में आ गया। बयान में मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाई गई तो उस ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये नाम लिखवा दिया। अभी मदनी क़ाफ़िले में उस की रवानगी में कुछ दिन बाक़ी थे कि क़ज़ाए इलाही से उस का इन्तिक़ाल हो गया। अहले ख़ाना में से किसी ने मर्ह़ूम को ख़्वाब में इस ह़ालत में देखा कि वोह एक हरियाले बाग़ में हश्शाश बश्शाश झूला झूल रहे हैं। पूछा : यहां कैसे आ गए ? जवाब दिया : दावते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ आया हूं, **अल्लाह** पाक का बड़ा करम हुवा है, मेरी मां से कह देना कि मेरा ग़म न करे मैं यहां बहुत चैन से हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ...حلية الاولياء، محمد بن سوقة، ٥/١١، حديث: ٦١٣٠

2 ...شعب الايمان، باب في صلة الارحام، ٦/٢٢٠، حديث: ٧٩٥٠

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"[1]

छींकने की सुन्नतें और आदाब

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा : ﴾1﴿....**अल्लाह** पाक को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द।[2] ﴾2﴿....जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए।[3] ....छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़िमाक़त है।[4] ....छींक आने पर اَلْحَمْدُلِلّٰه कहना चाहिये[5] बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे ....सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन يَرْحَمُكَ الله (यानी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले।[6] ....जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷

2 ...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یدہ علی فیہ، ۴/ ۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶

3 ...معجم کبیر، ۱۱/ ۳۵۸، حدیث: ۱۲۲۸۴

4 ...ردالمحتار، کتاب الحضر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/ ۶۸۴

5 .....तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, सूरए फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 1 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को **सुन्नते मुअक्कदा** लिखा है।

6 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3/476-477

तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे)।[1] ....जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा।[2] ....मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा।[3]

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब (1)...**312 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 और (2)...**120 सफ़ह़ात** की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दावते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मांगो आ कर दुआ़, पाओगे मुद्दआ़ दर करम के खुलें, क़ाफ़िले में चलो[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस बिन कैसान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : मय्यित के लिये सब से बेहतरीन दुआ़ कौन सी है? फ़रमाया : **इस्तिग़फ़ार** (यानी दुआ़ए मग़फ़िरत)।" (حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، ۴/ ۱۵، رقم: ۴۶۱۳)

1...فتاوى هندية، كتاب الكراهية، الباب السابع فى السلام وتشميت العاطس، ۵/ ۳۲۶

2.....मिरआतुल मनाजीह़, 6/396

3...مصنف ابن ابى شيبة، كتاب الدعاء، باب فى العطسة اذا عطس...الخ، ۷/ ۱۳۱، حديث:۱

4.....वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	5	औलादे रसूल को अपनी औलाद पर तरजीह दी	28
किताब पढ़ने की निय्यतें	6	अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर	29
तआ़रुफ़े इल्मिय्या (अज़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)	7	सादात की ख़ैर ख़्वाही की फ़ज़ीलत	30
पहले इसे पढ़ लीजिये	9	बयान का ख़ुलासा	32
मुहर्रमुल ह़राम के बयानात		मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई	33
बयान : सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इश्क़े रसूल		मदनी माह़ोल की तरबियत	34
		छींकने की सुन्नतें और आदाब	36
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	12	**बयान : शाने सह़ाबा**	
फ़ारूक़े आज़म और सरकार की दिलजूई	13	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	38
		सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बए ईसार	38
सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तआ़रुफ़	16	सह़ाबी की तारीफ़	40
		शाने सह़ाबा ब ज़बाने क़ुरआन	41
हर शै से मह़बूब	18	नेकूकार हस्तियां	43
ईमाने कामिल की अ़लामत	19	हिदायत के चश्मो चराग़	44
जैसे मेरे सरकार हैं ऐसा नहीं कोई	20	शर्ह़े ह़दीस	45
मैं ग़ुलामे मुस्त़फ़ा हूं	21	उम्मत में सह़ाबा की अहम्मिय्यत	46
वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया	23	सह़ाबए किराम की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत	46
शहरे मदीना में शहादत की मौत	24	शर्ह़े ह़दीस	47
ख़लीफ़ए सानी और इत्तिबाए़ रसूल	25	क़ुर्बे मुस्त़फ़ा की बरकतें	48
गिरा हुवा लुक़्मा खाने में आ़र मह़सूस न की	26	बुग़्ज़े सह़ाबा, नाराज़िये मुस्त़फ़ा का सबब है	50

www.dawateislami.net

लानते ख़ुदावन्दी का मुस्तहिक़	51
कहीं ईमान बरबाद न हो जाए	52
गुस्ताख़ाने सहाबा का अन्जाम	53
हिकायत : शैख़ैन का वसीला काम आ गया	57
कुर्बे मुस्तफ़ा पाने वाला ख़ुश नसीब	57
निफ़ाक़ से बराअत	58
कुतुब का तआरुफ़	58
बयान का ख़ुलासा	59
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़	59
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "सदाए मदीना"	60
अमीरुल मोमिनीन और सदाए मदीना	61
मदनी बहार	61
चलने की सुन्नतें और आदाब	62
बयान : हसनैने करीमैन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की शानो अज़मत	
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	65
हसनैने करीमैन और भयानक अज़्दहा	65
महबूबे ख़ुदा के सब से ज़ियादा महबूब	67
शर्हे हदीस	67
नाम, कुन्यत और अल्क़ाबात	68
नाम अच्छे रखा करो	70
फ़ज़ाइले हसनैन ब ज़बाने मुस्तफ़ा	71
हसनैने करीमैन से महब्बत वाजिब है	72
ईमाने कामिल की निशानी	73
फ़ज़ाइले अहले बैत ब ज़बाने क़ुरआन	74
हसनैने करीमैन की नाज़ बरदारियां	75
इमामे हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से शफ़्क़त व महब्बत	76
बच्चों को ख़ुश रखने की फ़ज़ीलत	77
बच्चों से कैसा बरताव किया जाए ?	77
दम-दुरूद करने का जवाज़	78
शर्हे हदीस	79
क़ुरआने पाक में बीमारियों से शिफ़ा है	79
ख़िलाफ़े शरअ़ तावीज़ात व कलिमात का हुक्म	80
मजलिसे मक्तूबातो तावीज़ाते अ़त्तारिय्या	80
एक सीने तक मुशाबेह इक वहां से पाउं तक	81
शर्हे हदीस	83
सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत से महब्बत	83
फ़ारूक़े आज़म की इमामे हुसैन से महब्बत	84
मौला अ़ली की बेटे पर शफ़्क़त	85
आफ़िय्यत में रहने वालों की तमन्ना	86
शर्हे हदीस	86
मोमिन को आज़माइश में मुब्तला करने की हिक्मत	87
हसनैने करीमैन की आपस की महब्बत	88
मग़्फ़िरत से महरूम	89

www.dawateislami.net

क़त्ए रेहमी का वबाल	90	यज़ीद की क़ब्र का हाल	110
नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये	90	अहले बैत को तक्लीफ़ देने का अन्जाम	111
सिलए रेहमी के फ़वाइद	91	वोह रसूलुल्लाह को क्या मुंह दिखाएंगे ?	111
बयान का ख़ुलासा	91	एलाने जंग	112
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "फ़िक्रे मदीना"	92	तुम यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहते हो ?	113
		यज़ीद को "पलीद" कहना कैसा ?	114
मदनी इन्आमात के रिसाले की बरकत	93	क्या कामिलुल ईमान शख़्स यज़ीद का हिमायती हो सकता है ?	114
पानी पीने की सुन्नतें और आदाब	94		
बयान : यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम		मेरा बाप ना लाइक़ था	114
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	96	यज़ीद को "शहज़ादा" कहने वाला मुस्तह़िक़्क़े नार है	115
यज़ीदे पलीद कौन था ?	97		
यज़ीदे पलीद के बारे में ग़ैबी ख़बर	97	शहज़ादए हुसैन का सब्रो इस्तिक़्लाल	116
लड़कों की हुक्मरानी से पनाह	98	पैग़ामे करबला	117
यज़ीदे पलीद की जफ़ाकारियां	98	मसाइबो आलाम पर सब्र की फ़ज़ीलत	117
गुलशने नबुव्वत के फूल	101	बे सब्री का नुक़्सान	118
नवासए रसूल का ख़ुत्बा	101	मालो दौलत और दुन्या की मह़ब्बत का वबाल	119
रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एलाने जंग	104	किताब "सवानेह़े करबला" का तआरुफ़	120
		जामिअ़तुल मदीना का तआरुफ़	120
क़ातिलाने हुसैन से इन्तिक़ाम	105	अमीरे अहले सुन्नत की त़लबा से मह़ब्बत	121
उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद की हलाकत	105	बयान का ख़ुलासा	122
आ गया आ गया	106	12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"	123
शुहदा का ख़ून रंग लाता है	107		
यज़ीद ज़िल्लतो रुस्वाई की मौत मरा	109	राहे ख़ुदा में सफ़र की बरकतें	124
यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम	109	इसी माहोल ने अदना को आला कर दिया देखो	124

www.dawateislami.net

इमामा शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब	126	बयान का ख़ुलासा	149
बयान : झूट की तबाहकारियां		मजलिसे वुकला व जजिज़ का तआ़रुफ़	150
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	128	12 मदनी कामों में से एक मदनी काम	
झूटा चोर	128	"मद्रसतुल मदीना बालिग़ान"	150
झूट किसे कहते हैं ?	129	कुरआने मजीद सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत	151
कुरआन में झूट की मज़म्मत	130	मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई	151
ईमान कमज़ोर कर देने वाला मरज़	131	आदाबे कुरआन के मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	152
झूट की मज़म्मत पर मुश्तमिल तीन		**सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के बयानात**	
फ़रामीने मुस्तफ़ा	131	**बयान : जवानी की इबादत**	
जबड़े चीरने का अ़ज़ाब	133	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	155
मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं	135	इबादत गुज़ार नौजवान	155
हर अ़मल का नतीजा	136	जवानी एक बार ही मिलती है	157
झूट के भयानक नताइज	137	पांच सुवालात	158
सच बोलने के फ़वाइद	138	इबादत गुज़ार नौजवान का मक़ाम	159
सच्चा चरवाहा	139	72 सिद्दीक़ीन के सवाब का हक़दार	159
सच बोलने से जान बच गई	140	अल्लाह पाक का हक़ीक़ी बन्दा	159
बच्चों से झूट बोलना	141	अल्लाह पाक का महबूब बन्दा	160
झूटे अल्क़ाबात लगाना	142	आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़ौक़े इबादत	160
ग़ैरे सय्यिद का सादात बनना	144	मक़ामे मुस्तफ़ा	162
नसब तब्दील करने का वबाल	145	जवानी को बुढ़ापे से पहले ग़नीमत जानो	164
मज़ाक़ में झूट बोलना	146	हिकायत : सालेह नौजवान के लिये	
झूटी गवाही और झूटी क़समें	147	दो जन्नतें	164
झूटी क़समों की मज़म्मत	147	मुफ़्त का सवाब	166
झूट बोलने की जाइज़ सूरतें	148	शर्हे हदीस	167

www.dawateislami.net

बुढ़ापे में भी जवानी	167	औलियाए किराम ह़यात हैं	194
इन्टरनेट छुरी की मानिन्द है	169	ह़ाज़िरिये मज़ारात, बरकत का सबब	196
एक गुनाह के साथ 10 बुराइयां	171	ईसाले सवाब की अहम्मिय्यत	197
तौबा में ताख़ीर मत कीजिये	172	मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब	198
नौजवानों की इस्लाह़ और दावते इस्लामी का किरदार	174	लंगर वग़ैरा बांटना बाइसे अज्र है	199
		नियाज़ तक़्सीम करने की एह़तियातें	199
रिसाला "जवानी कैसे गुज़ारें ?" का तआ़रुफ़	176	खाना गिर जाए तो ?	200
		रोटी वग़ैरा का एह़तिराम करो	200
बयान का ख़ुलासा	177	खाना ज़ाएअ़ मत कीजिये	200
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी इन्आ़मात पर अ़मल"	177	बयान का ख़ुलासा	201
		मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान	202
मदनी बहार : मीठे बोलों में खो गए	179	12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत"	203
हाथ मिलाने की सुन्नतें और आदाब	180		
बयान : सीरते दाता अ़ली हजवेरी			
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	183	सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार	204
साबिरो शाकिर नौजवान	183	बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब	206
बुराई को भलाई से टालने वाले	184	**बयान : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इश्क़े रसूल**	
मसाइबो आलाम पर सब्रो रिज़ा की फ़ज़ीलत	185		
आप का तआ़रुफ़	187	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	208
राहे ख़ुदा में सफ़र	188	आला ह़ज़रत का इश्क़े रसूल	208
इल्मे दीन के ह़ुसूल का शौक़	189	इश्क़ और मह़ब्बत किसे कहते हैं ?	210
कितना इल्म सीखना फ़र्ज़ है ?	189	अल्लाह व रसूल से इश्क़ो मह़ब्बत का मत़लब	211
मर्कज़ुल औलिया में तशरीफ़ आवरी	191		
दाता साह़िब और ह़ाज़िरिये मज़ारात	193	मह़ब्बत की अ़लामत	211

www.dawateislami.net

इश्क़े रसूल के फ़वाइद	211	**बयान : ताज़ीमे मुस्तफ़ा**	
आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का तआ़रुफ़	212	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	241
आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के अल्क़ाबात	213	नामे मुस्त़फ़ा की ताज़ीम बख़्शिश का सबब बन गई	241
सुन्नत से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत	216		
ह़दीस शरीफ़ का अदबो एह़तिराम	216	क़ुरआने करीम में ताज़ीमे मुस्त़फ़ा का हुक्म	243
अस्माए मुक़द्दसा का अदब	218	ईमान, ताज़ीम और इ़बादत	243
ख़िलाफ़े अदब अल्फ़ाज़ न लिखे	218	तर्के ताज़ीम की तबाहकारियां	245
नामूसे रिसालत पर अपनी नामूस क़ुरबान	219	ताज़ीम पर इन्आ़मो इकराम का वादा	247
		नाम ले कर पुकारने की मुमानअ़त	248
ईमाने कामिल की अ़लामत	222	ताज़ीमे मुस्त़फ़ा के बे मिसाल वाक़िआ़त	250
सादाते किराम से अ़क़ीदत की वज्ह	223	मीलाद मनाना भी ताज़ीमे मुस्त़फ़ा है	252
नाम लेने वाले की इस्लाह़ फ़रमाई	224	पूरी काएनात में ख़ुशी की लहर	253
सय्यिद ज़ादे की अनोखी ताज़ीम	225	मीलाद मनाने की बरकतें	254
दरबारे रिसालत में इन्तिज़ार	231	क़ुरआनो सुन्नत से मीलाद मनाने का सुबूत	255
किताब ''मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत'' का तआ़रुफ़	232		
		आयते मुबारका की तफ़्सीर	256
ह़दाइक़े बख़्शिश का तआ़रुफ़	233	अफ़्ज़ल तरीन मुस्तह़ब अ़मल	257
मक्तबतुल मदीना का क़ियाम	234	ई़दे मीलादुन्नबी और दावते इस्लामी	258
बयान का ख़ुलासा	235	मक्तूबे अ़त्त़ार	259
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम ''चौक दर्स''	237	बयान का ख़ुलासा	264
		मजलिसे तराजिम	265
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की फ़ज़ीलत	237	12 मदनी कामों में से एक मदनी काम ''हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा''	266
मदनी बहार	237		
मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब	239	मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली	267

www.dawateislami.net

सलाम की सुन्नतें और आदाब	268

रबीउ़ल अव्वल के बयानात

बयान : इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	270
सोने की अंगूठी न उठाई	270
अल्लाह व रसूल की इत़ाअ़त वाजिब है	271
ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन नमूना	272
तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान	273
इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा में ही नजात है	274
सीरत भी अच्छी बनाओ और सूरत भी	274
बात करते वक़्त मुस्कुराया करते	275
सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द अपनी पसन्द	275
इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा पर मुश्तमिल सह़ाबए किराम के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत	276
सय्यिदा आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا और फ़रमाने रसूल	276
मेहमान नवाज़ी की अक़्साम और इन के तक़ाज़े	277
सह़ाबियात और इत़ाअ़ते रसूल	278
मौजूदा ज़माने की औ़रतों की ह़ालते ज़ार	278
जन्नत में दाख़िले से मह़रूम	280
सय्यिदुना रबीआ़ और इत़ाअ़ते रसूल	281
इस्लामी तालीमात और दौरे जाहिलिय्यत की ग़लत़ रस्में	283
सह़ाबियात और हुक्मे रसूल पर अ़मल	284
सोग की शरई ह़ैसिय्यत	284
किन कामों में इत़ाअ़त लाज़िम है ?	286
फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	287
वई़दों पर मुश्तमिल 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	288
मजलिस मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़	290
बयान का ख़ुलासा	290
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़"	291
फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं	292
हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार	292
सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	294

बयान : इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	296
अ़ज़ीम रात !	296
शबे क़द्र से अफ़्ज़ल रात	297
इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा	298
शर्हे ह़दीस	300
मैदाने मह़शर और शाने मुस्त़फ़ा	301
आयाते मुबारका और इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा	303
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	304
मह़बूब किया मालिको मुख़्तार बनाया	304
इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा पर मुश्तमिल चन्द वाक़िआत	305

www.dawateislami.net

फ़र्ज़िय्यते हज और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	305	एक आराबी का वाक़िआ	327
उम्मत पर शफ़्क़त व मेहरबानी	307	बुर्दबारी अपनाओ	328
प्यारे आक़ा की मिस्वाक से महब्बत	308	रसूलुल्लाह का महबूबो मुक़र्रब	329
मुंह की पाकीज़गी और रिज़ाए रब	308	हुस्ने अख़्लाक़ की अलामात	329
हरम शरीफ़ की घास और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	309	तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा	330
अक़ीदए सहाबा	309	हिल्म की तारीफ़ और इस की अहम्मिय्यत	331
पन्ज वक़्ता नमाज़ और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	310	बुर्दबारी की फ़ज़ीलत	331
रोज़े का कफ़्फ़ारा	311	हिल्मे मुस्तफ़ा	333
सज़ा को इन्आम में बदल दिया	312	जंगे उहुद से भी सख़्त दिन	334
गवाही और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	313	जाओ ! तुम सब आज़ाद हो	336
इद्दत का हुक्म और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	314	**हिल्मे मुस्तफ़ा पर मुश्तमिल चन्द रिवायात**	337
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	314		
क़ुरबानी और इख़्तियारे मुस्तफ़ा	315	हुदूदुल्लाह की पामाली पर शदीद गुस्सा फ़रमाते	339
क़ुरबानी के जानवरों की उम्र	316		
अहकाम हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिपुर्द हैं	317	जहां तक हो सके बुराई को रोको	340
		नेकी की दावत और मदनी चैनल	341
नूर का खिलौना / डूबा सूरज पलट आया	319	नर्मी अपनाएं, फ़ाएदा उठाएं !	342
किताब "सीरते मुस्तफ़ा" का तआरुफ़	321	नर्मी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	343
मजलिसे मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन	321		
बयान का ख़ुलासा	322	आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का समझाने का प्यारा अन्दाज़	344
तम्बीह	324		
जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब	324	बयान का ख़ुलासा	347
बयान : हिल्मे मुस्तफ़ा		12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दर्स"	348
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	326		

www.dawateislami.net

मदनी दर्स की मदनी बहार	349	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तआ़रुफ़	377
सफ़र की सुन्नतें और आदाब	350	बयान का ख़ुलासा	378
बयान : जमाले मुस्त़फ़ा		12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दौरा"	378
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	352		
हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा	353	मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली !	379
हुस्ने यूसुफ़ की रानाइयां	356	घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब	380
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	356		
हुस्ने यूसुफ़ और हुस्ने मुस्त़फ़ा	357	**बयान : सख़ावते मुस्त़फ़ा**	
सब से ज़ियादा ह़सीनो जमील	358	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	382
चांद से तश्बीह देने में ह़िक्मत	359	सख़ावते मुस्त़फ़ा	382
इक झलक देखने की ताब नहीं आ़लम को	360	बड़ी और पसन्दीदा नेमत	385
चेहरए मुबारक	361	दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है	385
चश्माने मुबारक	362	शर्हे ह़दीस	386
अब्रूए मुबारक	363	सदक़े से माल कम नहीं होता	386
बीनिये मुबारक	363	आक़ा की शाने बे नियाज़ी	387
पेशानिये मुबारक	364	सब से बढ़ कर सख़ी	387
कान मुबारक	365	कीना ख़त्म और महब्बत पैदा हो	390
दहने मुबारक	365	शर्हे ह़दीस	390
मुबारक लुआ़बे दहन की बरकतें	366	ह़राम की नुहूसत	391
ज़बान मुबारक	367	**सख़ावते मुस्त़फ़ा के वाक़िआ़त**	393
हाथ मुबारक	368	विसाले ज़ाहिरी के बाद सख़ावत	395
क़दमैने शरीफ़ैन	369	**विसाले ज़ाहिरी के बाद ह़ाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के वाक़िआ़त**	397
मूए मुबारक	369		
जाइज़ और नाजाइज़ ज़ीनत	374		

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइले सख़ावत पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा	400	दुन्या तालिब भी है और मतलूब भी	422
		तिलावते कुरआन का शौक़ महब्बते इलाही का ज़रीआ	423
शर्हे हदीस	401	महब्बते इलाही की अलामत	423
सख़ावत की नेमत कैसे हासिल हो ?	402	मुहिब के सच्चा होने की अलामत	423
शैतान का गुलाम	402	तालीमे कुरआन और दावते इस्लामी	424
कर भला तो हो भला	403	मदारिसुल मदीना की कारकर्दगी	425
बयान का खुलासा	404	अफ़्ज़ल इबादत	426
मजलिसे अइम्मए मसाजिद	404	तिलावते कुरआन का शौक़ कैसे मिला ?	426
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"	405	नेमते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र महब्बते इलाही का ज़रीआ	428
इल्मे दीन हासिल करने की फ़ज़ीलत	406	400 सालह इबादत और एक नेमत	429
फ़िल्मों ड्रामों का शैदाई	407	इस्लाह का अनोखा अन्दाज़	429
बातचीत करने की सुन्नतें और आदाब	408	महब्बते इलाही का एक आसान ज़रीआ	430
रबीउस्सानी के बयानात		अल्लाह पाक की बन्दे से महब्बत	430
बयान : अल्लाह की महब्बत कैसे हासिल हो ?		दीन सीखने की तौफ़ीक़	431
		मख़्लूक़ में ज़िक्रे ख़ैर	431
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	411	सलातुत्तौबा	433
हक़ीक़ी बन्दे और सच्चे महबूब	411	बयान का खुलासा	434
अल्लाह तआला से महब्बत	413	मजलिस अल मदीना लाइब्रेरी का तआरुफ़	435
तफ़्सीर सिरातुल जिनान की ख़ुसूसिय्यात	413	हाथ मिलाने की सुन्नतें और आदाब	436
महब्बते इलाही का मज़बूत तरीन ज़रीआ	416	**बयान : ग़ौसे पाक की करामात**	
नवाफ़िल की कसरत महब्बते इलाही का ज़रीआ	418	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	438
मुसीबत पर सब्र महब्बते इलाही का ज़रीआ	420	मुरग़ी ज़िन्दा कर दी	438
दुन्या की महब्बत न होना महब्बते इलाही का ज़रीआ	421	ब हुक्मे इलाही मुर्दे ज़िन्दा करना	439

www.dawateislami.net

मोतियों की लड़ी	441	किताब "ग़ौसे पाक के हालात" का तआ़रुफ़	461
मूज़ी जानवरों से हिफ़ाज़त	441		
करामत की तारीफ़ और इस का हुक्म	441	बयान का ख़ुलासा	462
ख़ानदानी पस मन्ज़र	442	मजलिसे तौक़ीत का तआ़रुफ़	463
ग़ौसे पाक का नाम व नसब	442	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत	465
हैरत अंगेज़ वाक़िआ़त	443		
आप का हुल्या मुबारक	445	सिनेमा घर के मालिक की तौबा	465
इल्मे दीन का शौक़	445	लिबास की सुन्नतें और आदाब	467
60 डाकू ताइब हो गए	447	**बयान : फ़रामीने ग़ौसे आज़म**	
अ़सा मुबारक रौशन हो गया	449	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	470
दस्ते मुबारक की करामत	450	लुआ़बे रसूल की बरकत	471
अन्धों को बीना और मुर्दों को ज़िन्दा करना	450	ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का पहला बयान	472
ला इलाज मरीज़ों का इलाज	452	फ़ाएदे मन्द कारतूस	474
बादलों पर भी हुक्मरानी	452	पहले अ़मल फिर नसीहत	474
मुरीदनी की फ़रियाद रसी	453	बे अ़मल नासेह की मिसाल	475
एक वस्वसा और इस का जवाब	453	बे अ़मल वाइज़ का अन्जाम	475
दिल मेरी मुठ्ठी में हैं	456	बे अ़मल आ़लिम की मिसाल	476
अल मदद या ग़ौसे आज़म	457	इन्सान के हक़ीक़ी दुश्मन	477
बिइज़्ने इलाही बन्दे भी मदद करते हैं	458	नफ़्स की फ़ित्रत	477
सय्यिदुना ईसा عَلَیْهِ السَّلَام का मदद त़लब फ़रमाना	458	हक़ीक़ी दोस्त और दुश्मन	477
सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ السَّلَام का मदद त़लब फ़रमाना	459	क़ुर्बे इलाही कैसे हासिल हो ?	478
जिब्राईल, मोमिनीन और फ़िरिश्ते भी मददगार हैं	459	अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा	478
		अ़क़्लमन्द और बे वुक़ूफ़ की पहचान	478
अहलुल्लाह ज़िन्दा हैं	460	औलिया की सोहबत के फ़वाइद	479

www.dawateislami.net

डाकू कुतुब कैसे बना ?	480	पर्दापोशी का मुअस्सिर तरीक़ा	499
दिल के लिये सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श	481	अपनी बुराइयां याद कर लिया करो	500
आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करो	482	सब से ज़ियादा पसन्दीदा बन्दा	500
मौत के लिये हर वक़्त तय्यार रहो	482	फ़िरिश्तों की दुआ़	500
दुन्या में किस त़रह़ रहा जाए ?	483	मह़ब्बते इलाही की बरकत	501
मेह़नतो मशक़्क़त के बिग़ैर कुछ मुमकिन नहीं	483	कामिल मुसलमान की निशानी	501
ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत	484	पर्दापोशी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीस	502
ख़ौफ़े ख़ुदा और अपना मुह़ासबा	486		
ग़नीमत समझो	487	शर्हे ह़दीस	503
तौबा का सब से ज़ियादा मोह़ताज कौन ?	488	बर्हना करने से भी बड़ा गुनाह	504
रह़मतों की बारिश	488	नसीह़त तन्हाई में होनी चाहिये	505
सब से बड़ा नादान	489	सीनों की सफ़ाई	506
तौबाओ इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत	489	मुसलमानों के उ़यूब तलाश करने की सज़ा	507
मजलिसे मज़ाराते औलिया	490		
बयान का ख़ुलासा	491	ओ़हदा मिलने पर मिज़ाज में तब्दीली	508
12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"	492	ख़लीफ़ए राशिद का त़र्ज़े अ़मल	509
		मोमिन मोमिन का आईना है	510
मदनी क़ाफ़िले की मदनी बहार	492	कमज़ोरिये ईमान की अ़लामत	512
अंगूठी पहनने के मदनी फूल	494	शाने सह़ाबा ब ज़बाने मुस्त़फ़ा	513
बयान : मुसलमान की पर्दापोशी की फ़ज़ीलत		सह़ाबए किराम में ऐ़ब निकालने का अन्जाम	514
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	496	ज़बान एक दरिन्दे की मिस्ल है	514
बन्दों के ऐ़ब नज़र न आएं	496	कामिलुल ईमान मुसलमान	515
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	498	बुराई का साथ न दीजिये	515

www.dawateislami.net

इ़ज़्ज़ते मुस्लिम के तह़फ़्फ़ुज़ की फ़ज़ीलत	516	12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "मदनी दौरा"	522
बेटे को नसीह़त	516		
अमानत में ख़ियानत करने वाला	517	जिहाद की चार क़िस्में हैं	522
ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार	518	लोगों में बेहतर कौन ?	523
अपनी आंख का शहतीर नज़र नहीं आता	518	बाग़ का झूला	523
किताब "ग़ीबत की तबाहकारियां" का तआ़रुफ़	519	छींकने की सुन्नतें और आदाब	524
		तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	526
जामिअ़तुल मदीना का तआ़रुफ़	520	मआख़िज़ो मराजेअ़	539
बयान का ख़ुलासा	521	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	547

तस्बीहे़ फ़ाति़मा की इब्तिदा कैसे हुई ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : फ़ाति़मा को चक्की की वज्ह से हाथों में पड़ जाने वाले छालों की तक्लीफ़ हुई तो कोई ख़ादिम लेने की ख़ाति़र बारगाहे रिसालत में गईं मगर हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात न हो सकी अलबत्ता ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से मुलाक़ात हो गई और उन्हें अपना मक़्सद बताया, जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते आ़इशा ने ह़ज़रते फ़ाति़मा के आने की ख़बर दी । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ ले आए उस वक़्त हम लेटे हुए थे, हम खड़े होने लगे तो इरशाद फ़रमाया : अपनी जगह पर ही रहो इतना फ़रमा कर हमारे दरमियान तशरीफ़ फ़रमा हो गए, मैं ने आप के मुबारक क़दम की ठन्डक अपने सीने पर मह़सूस की । फिर इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जो तुम्हारे सुवाल से बेहतर हो, जब तुम सोने के लिये लेटो तो 34 मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر, 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه और 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह लिया करो, येह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है ।

(بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۲/ ۵۳۶، حدیث: ۳۷۰۵)

www.dawateislami.net

ماخذومَراجع

قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	... ...
نام کتاب	**مصنف / مؤلف**	**مطبوعہ**
ترجمۂ کنزالایمان	امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
تفسیرطبری	محمد بن جریر طبری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
روح البیان	اسماعیل حقی بروسوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۳۰ھ
تفسیرات احمدیہ	شیخ احمد المدعو بملا جیون علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کتب خانہ اکرمیہ
تفسیرابن کثیر	حافظ عماد الدین ابن کثیر علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
تفسیربیضاوی	عبد اللہ بن عمر بیضاوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۸۵ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیرخازن	علی بن محمد خازن علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیۃ بمصر ۱۳۱۷ھ
التفسیرالکبیر	محمد بن عمر رازی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیرقرطبی	محمد بن احمد قرطبی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
خزائن العرفان	نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۵ھ
نور العرفان	احمد یار خان نعیمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیربھائی کمپنی
تفسیرنعیمی	احمد یار خان نعیمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ
صراط الجنان	ابو الصالح محمد قاسم قادری مدظلہ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۶ھ
بخاری	محمد بن اسماعیل بخاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
مسلم	مسلم بن حجاج قشیری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارالکتاب العربی ۲۰۱۳ء
ترمذی	محمد بن عیسٰی ترمذی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
ابوداود	ابوداود سلیمان بن اشعث علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
نسائی	احمد بن شعیب نسائی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
ابن ماجہ	محمد بن یزید قزوینی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
دارمی	عبد اللہ بن عبد الرحمٰن دارمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۵۵ھ	دارالکتاب العربی ۱۴۰۷ھ
دارقطنی	علی بن عمر دارقطنی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	ملتان پاکستان

www.dawateislami.net

السنن الکبرٰی	احمد بن حسین بیہقی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
ابن حبان	ابوحاتم محمد بن حبان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
المصنف	عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	احمد بن محمد بن حنبل علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	ابوبکر احمد بن عمرو بزار علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
المسند	ابویعلی احمد موصلی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
المسند	حارث بن ابی اسامہ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۸۲ھ	خدمۃ السنۃ والسیرۃ ۱۴۱۳ھ
المسند	اسحاق بن ابراھیم المروزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۳۸ھ	مکتبۃ الایمان ۱۴۱۲ھ
المسند	الربیع بن الحبیب ابن عمر الازدی علیہ الرحمہ	مکتبۃ الکتب الاسلامیۃ ۱۴۲۴ھ
المسند	ابوعبد اللہ محمد بن سلامۃ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۴ھ	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۴۰۵ھ
المسند	الھیثم بن کلیب الشاشی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۳۵ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۱۰ھ
مشکاۃ المصابیح	محمد بن عبد اللہ التبریزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
مسند فردوس	حافظ شیرویہ بن شھردار دیلمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۶ھ
مجمع الزوائد	نور الدین علی بن ابی بکر ھیثمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۶ھ
الموطا	امام مالک بن انس علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
مستدرک	محمد بن عبد اللہ حاکم علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	احمد بن حسین بیہقی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
الموسوعۃ	عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
معجم کبیر	سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
معجم اوسط	سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
معجم صغیر	سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۳ھ
نوادر الاصول	محمد بن علی حسین حکیم ترمذی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	مکتبۃ الامام بخاری
کشف الخفاء	اسماعیل بن محمد عجلونی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
حلیۃ الاولیاء	احمد بن عبد اللہ اصبہانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ

الترغیب والترہیب	عبد العظیم بن عبد القوی منذری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
جمع الجوامع	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
تاریخ بغداد	احمد بن خطیب بغدادی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
شرح الزرقانی	محمد بن عبد اللہ باقی الزرقانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
الزھد	عبد اللہ بن مبارک علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
عیون الحکایات	عبد الرحمن بن علی ابن جوزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
فتح الباری	احمد بن الحجر عسقلانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
مطالب العالیۃ	احمد بن الحجر عسقلانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
شرح السنۃ	حسین بن مسعود بغوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
ابن عساکر	علی بن حسن ابن عساکر علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
تاریخ الخلفاء	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	کراچی پاکستان
اسد الغابۃ	علی بن محمد ابن اثیر جزری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۹ھ
سیر اعلام النبلاء	محمد بن احمد ذہبی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
البدایۃ والنہایۃ	اسماعیل بن عمر ابن کثیر علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
احیاء العلوم	محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۹ھ
اتحاف السادۃ...	سید محمد مرتضیٰ زبیدی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۰۹ء
المنتظم	عبد الرحمن بن علی ابن جوزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
الترغیب فی فضائل..	عمر بن احمد المعروف بابن شاہین علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	دار ابن الجوزی ۱۴۱۵ھ
المقاصد الحسنۃ	محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۰۲ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۲۵ھ
رسالہ قشیریۃ	عبد الکریم ہوازن قشیری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
الشفا	عیاض بن موسیٰ مالکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ھند
جامع بیان العلم..	یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
بہجۃ الاسرار	علی بن یوسف شطنوفی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۱۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ

www.dawateislami.net

شرح مسلم	یحیی بن شرف نووی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۱ھ
وفیات الاعیان	احمد بن محمد ابن خلکان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
سبل الہدی و…	محمد بن یوسف صالحی شافعی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی القاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
دلائل النبوۃ	احمد بن الحسین بیہقی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ
دلائل النبوۃ	احمد بن عبد اللہ اصبہانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۳۰ھ
الکامل	عبد اللہ بن عدی جرجانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
الطبقات	عبد الوہاب بن احمد شعرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۷ھ
الطبقات	محمد بن سعد بن منیع بصری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
میزان الکبری	عبد الوہاب بن احمد شعرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۰۹ء
فیض القدیر	محمد عبد الرؤف مناوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
شرح الصدور	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا ۱۴۲۳ھ
الدعاء	سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
مواہب اللدنیۃ	احمد بن محمد قسطلانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۶ھ
الکبائر	محمد بن احمد ذہبی شافعی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دار مکتبۃ الحیاۃ ۱۹۸۵ء
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابو احمد علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
تذکرۃ الاولیاء	فرید الدین عطار علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجینہ
اخبار مکہ	محمد بن عبد اللہ بن احمد الازرق علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۵۰ھ	دار الاندلس ۱۴۰۳ھ
ذخائر العقبی	احمد بن عبد اللہ الطبری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۹۴ھ	... ...
اشعۃ اللمعات	عبد الحق محدث دہلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ پاکستان
جذب القلوب	عبد الحق محدث دہلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	النوریۃ الرضویۃ پبلشنگ کمپنی
مدارج النبوۃ	عبد الحق محدث دہلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا
مکاشفۃ القلوب	محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ
مجموعۃ رسائل	محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۴ھ

کیمیائے سعادت	محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	کتب خانہ ملی ایران
تاریخ الاسلام	محمد بن احمد ذہبی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۱۰ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابواللیث ثمرقندی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۲۰ھ
الروض الفائق	شیخ شعیب حریفیش علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۱۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۶ھ
کشف المحجوب	علی بن عثمان ھجویری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۰ھ	نوائے وقت پرنٹرز لاھور
تنبیہ المغترین	عبد الوھاب بن احمد شعرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
الریاض النضرۃ	احمد بن عبد اللہ طبری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیۃ
سعادۃ الدارین	یوسف بن اسماعیل نبھانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
الصواعق المحرقۃ	احمد بن حجر ھیتمی مکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	ملتان پاکستان ۱۴۱۰ھ
فتاوی الکبری	احمد بن حجر ھیتمی مکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	مؤسسۃ التاریخ العربی
کشف الالتباس	عبد الحق محدث دھلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	دار احیاء العلوم ۱۴۲۴ھ
مساوئ الاخلاق	محمد بن جعفر المعروف بالخرائطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۲۷ھ	مؤسسۃ الکتب الثاقفیۃ ۱۴۱۳ھ
درۃ الناصحین	عثمان بن حسن بن احمد خوبوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
مجموع رسائل	عبد الرحمن بن احمد ابن رجب علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	الفاروق الحدیثیہ للطباعۃ والنشر
بحر الدموع	عبد الرحمن بن علی الجوزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبۃ دار الفجر ۱۴۲۴ھ
المدخل	احمد بن حسین بیھقی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	مکتبۃ اضواء السلف ۱۴۰۴ھ
طبقات الصوفیۃ	محمد بن الحسین سلمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۱۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
الخیرات الحسان	احمد بن حجر ھیتمی مکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۳ھ
الحاوی للفتاوی	جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
ماثبت من السنۃ	عبد الحق محدث دھلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	پنجاب نیشنل پریس لاہور
حجۃ اللہ علی...	یوسف بن اسماعیل نبھانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مرکز اھل السنۃ برکات رضا
الابریز	احمد بن المبارک المغربی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۵۵ھ	... ...
نزھۃ الخاطر	علامہ علی القاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	قادری کتب خانہ لاہور ۲۰۰۳ء
اخبار الاخیار	عبد الحق محدث دھلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	فاروق اکیڈمی ضلع خیرپور

www.dawateislami.net

النبراس	محمد عبد العزیز فرھاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۲۳۹ھ	ملتان پاکستان
تفریح الخاطر	سید عبد القادر اربلی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۱۵ھ	قادری رضوی کتب خانہ لاہور ۲۰۰۳ء
قلائد الجواھر	شیخ محمد بن یحیی حنبلی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۶۳ھ	مِصطفی البابی الحلبی ۱۳۷۵ھ
ھمعات	شاہ ولی اللہ دھلوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۷۶ھ	حیدرآباد پاکستان
فتح الربانی	شیخ عبد القادر جیلانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۶۱ھ	المکتبة العصریة ۱۴۳۳ھ
تبیین الحقائق	عثمان بن علی زیلعی حنفی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۳ھ	دار الکتب العلمیة ۱۴۲۰ھ
در مختار	محمد بن علی حصکفی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۰ھ
رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوی ھندیة	مولانا شیخ نظام علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۱۶۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۱ھ
الجوھرة النیرة	ابوبکر بن علی حداد علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۰۰ھ	کراچی پاکستان
حکایات گلستان سعدی	مصلح الدین سعدی شیرازی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۹۱ھ	مکتبة دانیال لاھور
نزہۃ القاری	مفتی شریف الحق امجدی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۲۰ھ	فرید بک سٹال لاہور ۱۴۲۸ھ
سیرت غوث الثقلین	نور بخش توکلی حنفی نقشبندی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مونال پبلی کیشنز راولپنڈی ۲۰۱۵ء
فتاوی رضویہ	امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
فتاوی افریقہ	امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	نوری کتب خانہ لاہور ۲۰۰۳ء
حدائق بخشش	امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
شرح کلام رضا	مفتی غلام حسن قادری	مشتاق بک کارنر لاہور
ملفوظات اعلی حضرت	امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
حیات اعلی حضرت	مولانا ظفر الدین قادری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۸۲ھ	مکتبہ نبویہ لاہور ۲۰۰۳ء
فاضل بریلوی علمائے...	ڈاکٹر محمد مسعود احمد علیہ الرحمہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور ۲۰۰۰ء
فیضان اعلی حضرت	محمد ریحان احمد قادری	شبیر برادرز لاہور ۱۴۳۴ھ
امام احمد رضا اور عشق...	غلام مصطفٰے انجم قادری	قادری رضوی کتب خانہ لاہور
سوانح امام احمد رضا	علامہ بدر الدین رضوی	مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۸۷ء
وصایا شریف	حسنین رضا خان بریلوی	انجمن انوار القادریہ ۱۹۹۸ء

تحقیقات امام علم وفن	خواجہ مظفر حسین رضوی	امام احمد رضا اکیڈمی ۲۰۱۲ء
حیات ملک العلما	ڈاکٹر مختار الدین احمد	معارف نعمانیہ لاہور
سیرت رسول عربی	نور بخش توکلی حنفی نقشبندی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
سیرت مصطفٰے	عبد المصطفی اعظمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ
عجائب القرآن	عبد المصطفی اعظمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ
الحق المبین	سید احمد سعید کاظمی علیہ الرحمہ	مکتبۃ المدینہ
شان حبیب الرحمٰن	احمد یار خان نعیمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
اللہ کے خاص بندے	ڈاکٹر محمد عمر خان	علم دین پبلشرز لاہور
سوانح کربلا	نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
روضۃ الشہدا (مترجم)	حسین واعظ کاشفی علیہ الرحمہ	شبیر برادرز لاہور ۲۰۰۳ء
کرامات صحابہ	عبد المصطفی اعظمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ
تاریخ کربلا	محمد امین قادری رضوی علیہ الرحمہ	مکتبہ نبویہ لاہور ۱۴۳۳ھ
شہادت نواسۂ سید الابرار	محمد عبد السلام قادری رضوی علیہ الرحمہ	نوریہ رضویہ پبلی کیشنز لاہور ۲۰۰۰ء
بہار شریعت	محمد امجد علی اعظمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
مرآۃ المناجیح	احمد یار خان نعیمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
فیضان سنت	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
کفریہ کلمات کے بارے...	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
نیکی کی دعوت	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
غیبت کی تباہ کاریاں	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
کالے بچھو	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
امام حسین کی کرامات	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
پردے کے بارے میں...	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مد ظلہ	مکتبۃ المدینہ
غوث پاک کے حالات	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ
جہنم کے خطرات	عبد المصطفی اعظمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

مزارات اولیاء کی…	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ
بزرگانِ لاہور	پیر غلام دستگیر علیہ الرحمہ	مکتبۃ المدینہ
برکات آلِ رسول	یوسف بن اسماعیل نبہانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مکتبہ قادریہ لاہور ۱۴۰۰ھ
محفلِ اولیا	علامہ شاہ مراد سہروردی	زاویہ پبلیشرز ۲۰۱۱ء
معارفِ ہجویریہ	ڈاکٹر ظہور احمد اظہر	پنجاب یونیورسٹی لاہور
اردو دائرہ معارف…	دانش گاہ پنجاب	لاہور پاکستان
وسائلِ بخشش	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مدظلہ	مکتبۃ المدینہ
سامانِ بخشش	مفتیِ اعظم ہند نوری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	شبیر برادز لاہور
الحقائق فی الحدائق	محمد فیض احمد اویسی علیہ الرحمہ	مکتبہ اویسیہ رضویہ ۱۹۹۴ء
ذوقِ نعت	مولانا حسن رضا خان	…
قبالۂ بخشش	جمیل الرحمن خان قادری رضوی علیہ الرحمہ	ضیاء الدین پبلیکیشنز کراچی
راہِ مصطفٰے	محمد یامین وارثی	کراچی پاکستان
شاہنامہ اسلام	ابو الاثر حفیظ جالندھری	الحمد پبلی کیشنز ۲۰۰۶ء

…………

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे और शहज़ादियां

...**तीन शहज़ादे थे** जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह (3) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) **चार शहज़ादियां थीं** जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2) ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या (3) ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम (4) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ)

(المواھب اللدنیۃ، الفصل الثانی فی ذکر اولاد الکرام، ۴/ ۳۱۳)

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल

﴾शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत﴿

उर्दू कुतुब :

01....राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحطِ والْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَان وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मारूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हि़स्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِإِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआफ़ हों (اَعْجَبُ الْإِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْإِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

www.dawateislami.net

14....ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़हात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़हात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़हात : 1185)

17....हदाइके़ बख़्शिश (कुल सफ़हात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़हात : 37)

अ़रबी कुतुब :

19, 20, 21, 22, 23.....جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)

(कुल सफ़हात : 570, 672, 713, 650, 483)

24....(اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی) (कुल सफ़हात : 458)

25.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़हात : 74)

26..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़हात : 62)

27..... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़हात : 93)

28.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़हात : 46)

29.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़हात : 77)

30.....اَجْلَی الْاِعْلَام (कुल सफ़हात : 70)

31.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़हात : 60)

शोबए तराजिमे कुतुब

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द
(कुल सफ़हात : 896)

02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द
(कुल सफ़हात : 625)

03.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِی حُکْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه)
(कुल सफ़हात : 112)

04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....?
(تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 112)

www.dawateislami.net

05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُون وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)
(कुल सफ़हात : 142)
06.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة)
(कुल सफ़हात : 54)
07.....जन्नत में ले जाने वाले आमाल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)
(कुल सफ़हात : 743)
08.....इमामे आज़म علیہ الرحمۃ की वसिय्यतें (وَصَایَااِمَامِ اَعْظَمعَلَیْهِ الرَّحْمَة)
(कुल सफ़हात : 46)
09.....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْکَبَائِر)
(कुल सफ़हात : 853)
10.....नेकी की दावत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْکَر)
(कुल सफ़हात : 98)
11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (کَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)
12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)
13.....राहे इल्म (تَعْلِیْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِیقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)
14.....उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जिम हि़स्सा अव्वल) (कुल सफ़हात : 412)
15.....उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जिम, हि़स्सा दुवुम)(कुल सफ़हात : 413)
16.....एह़याउल उ़लूम का खुलासा (لُبَابُ الْاِحْیَاء) (कुल सफ़हात : 641)
17.....हि़कायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़हात : 649)
18.....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاکَرَة) (कुल सफ़हात : 122)
19.....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّکْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)
20.....हुस्ने अख़्लाक़ (مَکَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)
21.....आंसूओं का दरिया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)
22.....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़हात : 63)

www.dawateislami.net

23....शाहराए औलिया (مِنۡهَاجُ الۡعَارِفِيۡن) (कुल सफ़्हात : 36)

24....बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالۡوَلَد) (कुल सफ़्हात : 64)

25....اَلدَّعۡوَة اِلَى الۡفِكۡر (कुल सफ़्हात : 148)

26....इस्लाहे आमाल जिल्द अव्वल (اَلۡحَدِيۡقَةُالنَّدِيَّة شَرۡحُ طَرِيۡقَةِ الۡمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़्हात : 866)

27....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल जिल्द दुवुम (اَلزَّوَاجِرعَنۡ اِقۡتِرَافِ الۡكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 1012)

28....आशिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحۡلَة فِى طَلَبِ الۡحَدِيۡث) (कुल सफ़्हात : 105)

29....एह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1124)

30....एह़याउल उ़लूम जिल्द दुवुम (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1393)

31....एह़याउल उ़लूम जिल्द सिवुम (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1286)

32....क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) (कुल सफ़्हात : 826)

शोबए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشيةضياء الاصباح (कुल सफ़्हात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़्हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़्हात : 325)

04....اصول الشاشى مع احسن الحواشى (कुल सफ़्हात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشيةالنوروالضياء (कुल सफ़्हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़्हात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़्हात : 280)

09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़्हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़्हात : 241)

11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़्हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو میرمع حاشية نحو منیر (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخیص اصول الشاشی (कुल सफ़हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)

16....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़हात : 95)

17....نصاب التجوید (कुल सफ़हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101)

19....تعریفاتِ نحویة (कुल सफ़हात : 45)

20....خاصیات ابواب (कुल सफ़हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)

24....انوار الحدیث (कुल सफ़हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)

26....تفسیر الجلالین مع حاشیةانوار الحرمین (कुल सफ़हात : 364)

27....ख़ुलफ़ाए राशिदीन (कुल सफ़हात : 341)

28....قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی (कुल सफ़हात : 317)

29....फ़ैज़ुल अदब (मुकम्मल हिस्से अव्वल, दुवुम) (कुल सफ़हात : 228)

30....काफ़िया मअ़ शर्हे नाजिया (कुल सफ़हात : 252)

31....अल हक़्क़ुल मुबीन (कुल सफ़हात : 128)

शोबए तख़रीज

01....सहाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल

(हिस्सा : अव्वल ता शशुम, कुल सफ़हात : 1247)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1182)
04....उम्महातुल मोमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
05....अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन(कुल सफ़हात : 422)
06....गुलदस्तए अ़काइदो आमाल (कुल सफ़हात : 244)
07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)
08....तह्क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
09....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)
10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
11....इ़ल्मुल कुरआन (कुल सफ़हात : 244)
12....सवानेहे करबला (कुल सफ़हात : 192)
13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)
16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
25.... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़हात : 207)
28....करामाते सहाबा (कुल सफ़हात : 346)
29....अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़हात : 78)
30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़हात : 875)
31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)
32....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1196)
33....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)
34....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)

www.dawateislami.net

35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)
36....फ़ैज़ाने यासिन शरीफ़ मअ़ दुआ़ए निस्फ़ शाबानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

शोबए फ़ैज़ाने सहाबा

01....ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 56)
02....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 72)
03....ह़ज़रते सय्यिदुना साद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 89)
04....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 60)
05....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 132)
06....फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद (कुल सफ़ह़ात : 32)
07....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 720)

शोबए इस्लाही कुतुब

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)
05....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)
06....नूर का खिलौना (कुल सफ़ह़ात : 32)
07....आला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)
08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 264)
09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48)

www.dawateislami.net

13....तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15....अहादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16....तरबियते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
17....कामयाब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
19....तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
20....मुफ़्तिये दावते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़हात : 160)
25....तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
28....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़हात : 200)
29....फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
30....ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33....नेक बनने और बनाने के तरीक़े (कुल सफ़हात : 696)
34....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हिकायात (कुल सफ़हात : 590)
35....ह़ज्जो उ़मरह का मुख़्तसर तरीक़ा (कुल सफ़हात : 48)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ़ ज़रूरतन **अन्डर लाइन** कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

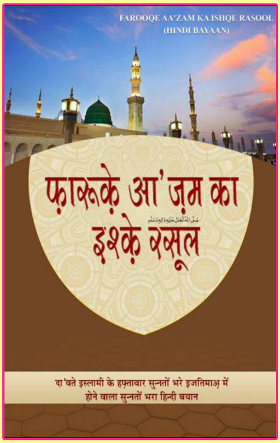
FAROOQE AA'ZAM KA ISHQE RASOOL
(HINDI BAYAAN)
फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

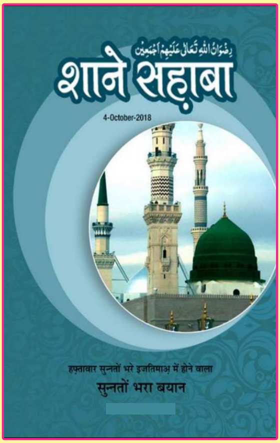
शाने सहाबा
4-October-2018
हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला
सुन्नतों भरा बयान

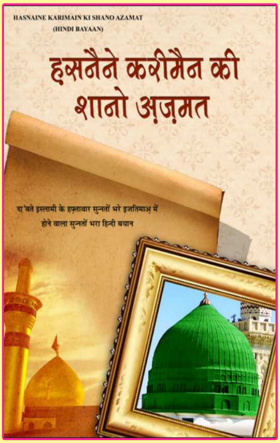
HASNAINE KARIMAIN KI SHANO AZAMAT
(HINDI BAYAAN)
हसनैने करीमैन की शानो अ़ज़मत
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

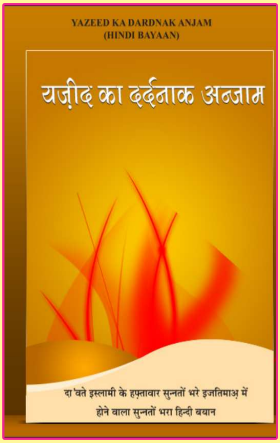
YAZEED KA DARDNAK ANJAM
(HINDI BAYAAN)
यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

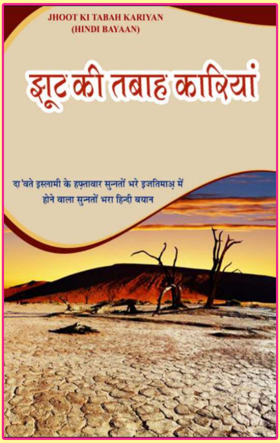
JHOOT KI TABAH KARIYAN
(HINDI BAYAAN)
झूट की तबाह कारियां
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

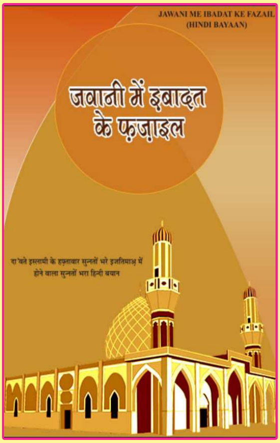
JAWANI ME IBADAT KE FAZAIL
(HINDI BAYAAN)
जवानी में इबादत के फ़ज़ाइल
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

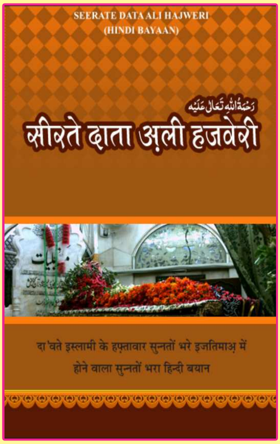
SEERATE DATA ALI HAJWERI
(HINDI BAYAAN)
सीरते दाता अ़ली हजवेरी
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

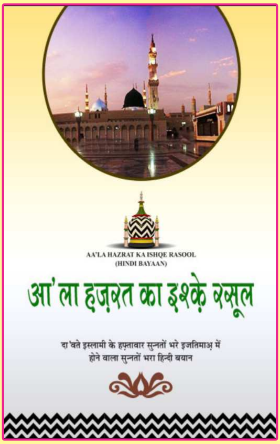
AA'LA HAZRAT KA ISHQE RASOOL
(HINDI BAYAAN)
आ'ला हज़रत का इश्क़े रसूल
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

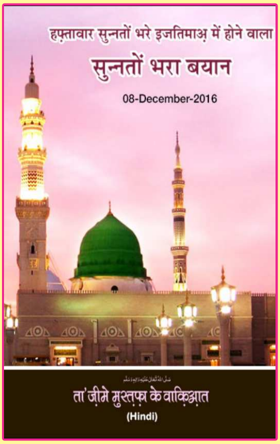
हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला
सुन्नतों भरा बयान
08-December-2016
ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा के वाक़िआत
(Hindi)

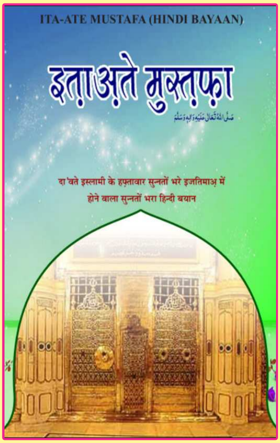
ITA-ATE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)
इताअ़ते मुस्त़फ़ा
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
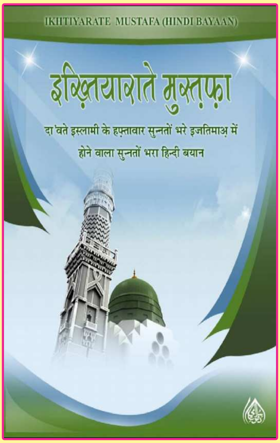
IKHTIYARATE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)
इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
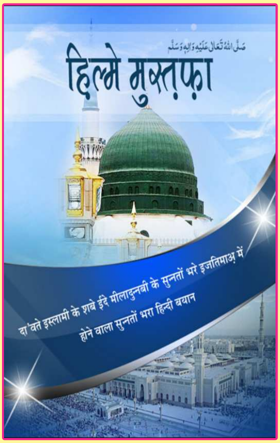
हिल्मे मुस्त़फ़ा
दा'वते इस्लामी के शबे ईदे मीलादुन्नबी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
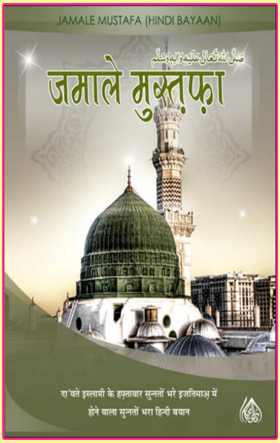
JAMALE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)
जमाले मुस्त़फ़ा
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
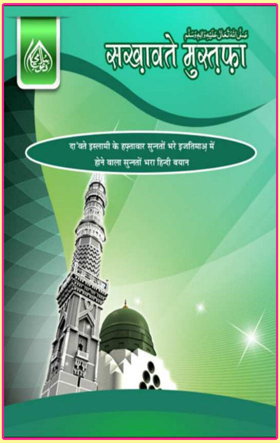
सख़ावते मुस्त़फ़ा
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
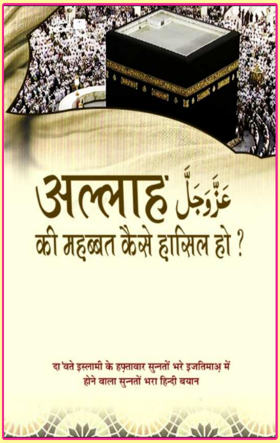
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ
की महब्बत कैसे हासिल हो ?
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
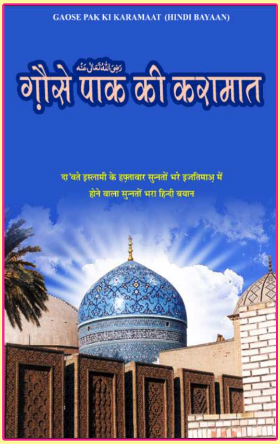
GAOSE PAK KI KARAMAAT (HINDI BAYAAN)
ग़ौसे पाक की करामात
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
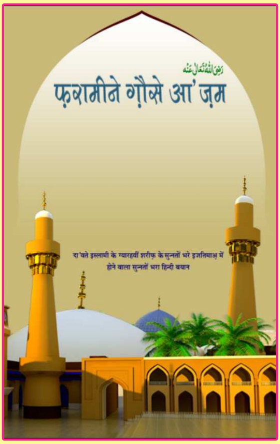
फ़रामीने ग़ौसे आ'ज़म
दा'वते इस्लामी के ग्यारहवीं शरीफ़ के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान
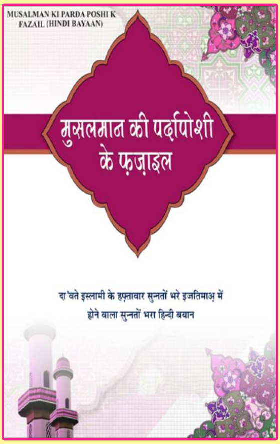
MUSALMAN KI PARDA POSHI K FAZAIL (HINDI BAYAAN)
मुसलमान की पर्दापोशी के फ़ज़ाइल
दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

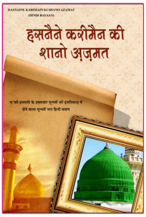

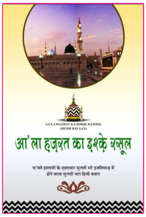

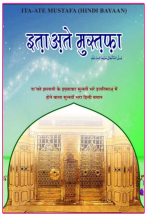

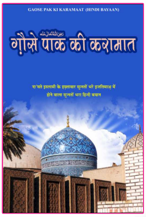

MAKTABA TUL MADINA

0133189

DAWAT-E-ISLAMI

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net